अथ सुआ-खंड ॥ ५ ॥

पदुमावति तहँ खेल दुलारी। सुआ मँदिर महँ देख मँजारी ॥
कहेसि चलउँ जउ लहि तन पाँखा। जिउ लेइ उडा ताकि बन-ढाँखा ॥
जाइ परा बन-खँड जिउ लीन्हे। मिले पंखि बहु आदर कीन्हे ॥
आनि धरे आगइ सब साखा। भुगुति न मेटइ जउ लहि राखा ॥
5 पाई भुगुति सुक्ख मन भएऊ। अहा जो दुक्ख बिसरि सब गएऊ ॥
अइ गोसाईं तूँ अइस बिधाता। जावँत जिउ सब कर भख-दाता ॥
पाहन महँ न पतंग बिसारा। जहँ तोंहि सवँर देहि तूँ चारा ॥
तउ लहि सोग बिछोह कर भोजन परा न पेट।
पुनि बिसरा भा सवँरना जनु सपने भइ भेंट ॥ ६८ ॥
पदुमावति पहँ आइ भँडारी। कहेसि मँदिर महँ परी मँजारी ॥
10 सुआ जो उतर देत ऽहा पूँछा। उडि गा पिँजर न बोलइ छूँछा ॥
रानी सुना सबहि जिउ गएऊ। जनु निसि परी असत दिन भएऊ ॥
गहनहिँ गही चाँद कइ करा। आँसु गगन जनु नखतन्ह भरा ॥
टूट पालि सरवर बहि लागे। कवँल बूड मधुकर उडि भागे ॥
एहि बिधि आँसु नखत होइ चुए। गगन छाँडि सरवर भरि उए ॥
15 छिहरि चुईं मोतिन्ह कइ माला। अब सँकेत बाँधा चहुँ पाला ॥
उडि यह सुअटा कहँ बसा खोजहु सखि सो बासु।
दहुँ हइ धरती की सरग पवन न पावइ तासु ॥ ६९ ॥

चहूँ पास समुझावहिँ सखी । कहाँ सो अब पाइअ गा पँखी ॥
जउ लहि पिंजर अहा परेवा । रहा बाँद कीन्हेसि निति सेवा ॥
तेहु बँद हुति छूटइ पावा । पुनि फिरि बंद होइ कित आवा ॥
वह उडान-फर तहिअइ खाए । जव भा पंखि पाँख तन पाए ॥ 20
पिंजर जेहि क सउँपि तेहि गएऊ । जो जा कर सो ता कर भएऊ ॥
दस वाटइँ जेहि पिंजर माहाँ । कइसइ बाँच मँजारी पाहाँ ॥
एहि धरती अस केतन लीले । तस पेट गाढ बहुरि नहिँ ढीले ॥

जहाँ न राति न दिवस हइ जहाँ न पवन न पानि ।
तेहि वन होइ सुअटा वसा को रे मिलावइ आनि ॥ ७० ॥

सुअइ तहाँ दिन दस कलि काटी । आइ बिआध ढुका लेइ टाटी ॥ 25
पइग पइग भुइँ चाँपत आवा । पंखिन्ह देखि हिअइ डर खावा ॥
देखहु किछु अचरज अनभला । तरिवर एक आवत हइ चला ॥
एहि वन रहत गई हम आऊ । तरिवर चलत न देखा काऊ ॥
आजु जो तरिवर चल भल नाहीँ । आवहु एहि वन छाँडि पराहीँ ॥
वेइ तउ उडे अउरु वन ताका । पंडित सुआ भूलि मन थाका ॥ 30
साखा देखि राजु जनु पावा । वइठ निचिंत चला वह आवा ॥

पाँच वान कर खोँचा लासा भरे सो पाँच ।
पाँख भरे तन अरुझा कित मारइ बिनु बाँच ॥ ७१ ॥

बँद भा सुआ करत सुख केली । चूरि पाँख धरि मेलेसि डेली ॥
तहवाँ पंखि बहुत खरभरहीँ । आपु आपु महँ रोदन करहीँ ॥
बिख-दाना कित देइ अँगूरा । जेहि भा मरन डहन धर चूरा ॥ 35
जउँ न होत चारा कइ आसा । कित चिरि-हार ढुकत लेइ लासा ॥
एइ बिख-चारइ सब बुधि ठगी । अउ भा काल हाथ लेइ लगी ॥
एहि झूठी माया मन भूला । चूरइ पाँख जइस तन फूला ॥
यह मन कठिन मरइ नहिँ मारा । जार न देखु देखु पइ चारा ॥

हम तउ बुद्धि गवाँई बिख-चारा अस खाइ।
40 तूँ सुअटा पंडित हुता तूँ कित फाँदा आइ॥ ७२॥

सुअइ कहा हम-हूँ अस भूले। टूट हिँडोल गरब जेहि झूले॥
केला के बन लीन्ह बसेरा। परा साथ तहँ बइरिन्ह केरा॥
सुख कुरआर फरहुरी खाना। बिख मा जबहिँ बिआध तुलाना॥
काहे क भोग-बिरिख अस फरा। आड लाइ पंखिन्ह कहँ धरा॥
45 होइ निचिंत बइठे तेहि आडा। तब जाना खोँचा हिए गाडा॥
सुख निचिंत जोरत धन करना। यह न चिंत आगइ हइ मरना॥
भूले हम-हुँ गरब तेहि माहाँ। सो बिसरा पावा जेहि पाहाँ॥
चरत न खुरुक कीन्ह जब तब रे चरा सुख सोइ।
अब जो फाँद परा गिउ तब रोए का होइ॥ ७३॥

सुनि कइ उतर आँसु सब पोँछे। कउनु पंख बाँधे बुधि ओछे॥
50 पंखिन्ह जउँ बुधि होइ उँजिआरी। पढा सुआ कित धरइ मँजारी॥
कित तीतर बन जीभ उघेला। सो कित हँकारि फाँद गिउ मेला॥
ता दिन ब्याध भएउ जिउ-लेवा। उठे पाँख मा नाउँ परेवा॥
भइ बिआधि तिसिना सँग खाधू। सूझइ भुगुति न सूझ बिआधू॥
हमहिँ लोभ वह मेला चारा। हमहिँ गरब वह चाहइ मारा॥
55 हम निचिंत वह आउ छपाना। कउनु बिआधहि दोस अपाना॥
सो अउगुन कित कीजिए जिउ दीजिअ जेहि काज।
अब कहना किछु नाहीँ मसटि भली पँखि-राज॥ ७४॥

इति सुआ खंड॥ ५॥

अथ राजा-रतन-सेन-जनम खंड ॥ ६ ॥

चितर-सेन चितउर गढ राजा। कइ गढ कोट चितर जेइ साजा ॥
तेहि कुल रतन-सेन उँजिआरा। धनि जननी जनमा अस बारा ॥
पंडित गुनि सामुदरिक देखहिँ। देखि रूप अउ लगन बिसेखहिँ ॥
रतन-सेन वहु नग अउतरा। रतन जोति मनि माँथइ वरा ॥
पदिक-पदारथ लिखी सो जोरी। चाँद सुरुज जस होइ अँजोरी ॥ 5
जस मालति कहँ भवँर बिओगी। तस ओहि लागि होइ यह जोगी ॥
सिंघल-दीप जाइ वह पावइ। सिद्ध होइ चितउर लेइ आवइ ॥
भोज भोग जस माना बिकरम साका कीन्ह।
परखि सो रतन पारखी सबइ लखन लिखि दीन्ह ॥ ७५ ॥

इति राजा-रतन-सेन-जनम खंड ॥ ६ ॥

अथ बनिजारा खंड ॥ ७ ॥

चितउर गढ़ कर एक बनिजारा। सिंघल-दीप चला बइपारा॥
बाम्हन हुत एक नसट भिखारी। सो पुनि चला चलत बइपारी॥
रिनि काहू कर लीन्हेसि काढ़ी। मकु तहँ गए होइ किछु बाढ़ी॥
मारग कठिन बहुत दुख भएऊ। नाँघि समुदर दीप ओहि गएऊ॥
5 देखि हाट किछु सूझु न ओरा। सबइ बहुत किछु देखु न थोरा॥
पइ सुठि ऊँच बनिज तहँ केरा। धनी पाउ निधनी मुख हेरा॥
लाख करोरिन्ह बसतु बिकाहीं। सहसन्ह केरि न कोइ ओनाहीं॥

सब-ही लीन्ह बिसाहना अउ घर कीन्ह बहोर।
बाम्हन तहवाँ लेइ का गाँठि साँठि सुठि थोर॥ ७६॥

झुर-इ ठाढ़ काँहे क हउँ आवा। बनिज न मिला रहा पछितावा॥
10 लाभ जानि आएउँ एहि हाटा। मूर गवाँइ चलेउँ तेहि बाटा॥
का मइँ मरन सिखाओन ... आएउँ मरइ मीचु हति लिखी॥
अपने चलत सो कीन्ह ... न देख मूर भइ हानी॥
का मइँ ... घर ... कइ पूँजी॥
तेहि ... बारू॥
15 ... ॥

तब-हिँ बिआध सुआ लेइ आवा। कंचन बरन अनूप सोहावा ॥
बेँचइ लाग हाटि लेइ ओही। मोल रतन मानिक जेहि होही ॥
सुअ को पूँछइ पतँग मदारे। चलन देख आछइ मन मारे ॥
बाम्हन आइ सुआ सउँ पूँछा। दहुँ गुनवंत कि निरगुन छूँछा ॥ 20
कहु परबते जो गुन तोहि पाहाँ। गुन न छपाइअ हिरदइ माहाँ ॥
हम तुम्ह जाति बराम्हन दोऊ। जाति-हि जाति पूँछ सब कोऊ ॥
पंडित हहु तो सुनावहु बेदू। बिनु पूँछे पाइअ नहिँ भेदू ॥
हउँ बाम्हन अउ पंडित कहु आपन गुन सोइ।
पढे के आगे जो पढइ दून लाभ तेहि होइ ॥ ७८ ॥
तब गुन मोहिँ अहा हो देवा। जब पिंजर हुति छूट परेवा ॥ 25
अब गुन कउनु जो बँद जजमाना। घालि मँजूसा बेँचइ आना ॥
पंडित होइ सो हाट न चढा। चहउँ बिकान भूलि गा पढा ॥
दुइ मारग देखउँ एहि हाटा। दइउ चलावइ दहुँ केहि बाटा ॥
रोअत रकत भएउ मुख राता। तन भा पिअर कहउँ का बाता ॥
राते साँवँ कंठ दुइ गीवा। तहँ दुइ फाँद डरउँ सुठि जीवा ॥ 30
अब हउँ कंठ फाँद गिउ चीन्हा। दहुँ गिउ फाँद चाह का कीन्हा ॥
पढि गुनि देखा बहुत महँ हइ आगे डरु सोइ।
धुंध जगत सब जानि कइ भूलि रहा बुधि खोइ ॥ ७९ ॥
सुनि बाम्हन बिनवा चिरि-हारू। करु पंखिन्ह कहँ मया न मारू ॥
कित रे निठुर जिउ बधसि परावा। हतिआ केर न तोहि डरु आवा ॥
कहसि पंखि-खाधुक मानावा। निठुर तेइ जो पर-मँस खावा ॥ 35
आवहि रोइ जाहि कइ रोना। तब-हुँ न तजहि भोग सुख सोना ॥
अउ जानहि तन होइहि नासू। पोखहि माँस पराए माँसू ॥
जउँ न होत अस पर-मँस खाधू। कित पंखिन्ह कहँ धरत बिआधू ॥
जो रे बिआध पँखिन्ह निति धरई। सो बेँचत मन लोभ न करई ॥

बाम्हन सुआ बेसाहा सुनि मति बेद गरंथ।
40 मिला आइ साथिन्ह कहँ भा चितउर के पंथ ॥ ८० ॥

तब लगि चितर-सेन सिउ साजा। रतन-सेन चितउर भा राजा ॥
आइ बात तेहि आगे चली। राजा बनिज आए सिंघली ॥
हहिं गज-मोंति भरी सब सीपी। अउरु बसतु बहु सिंघल-दीपी ॥
बाम्हन एक सुआ लेइ आवा। कंचन बरन अनूप सोहावा ॥
45 राते सावँ कंठ दुइ काँठा। राते डहन लिखा सब पाठा ॥
अउ दुइ नयन सोहावन राता। राते ठोर अमीं-रस बाता ॥
मसतक टीका काँध जनेऊ। कबि बिआस पंडित सहदेऊ ॥
बोलि अरथ सों बोलई सुनत सीस पइ डोल।
राज-मँदिर महँ चाहिअ अस वह सुआ अमोल ॥ ८१ ॥

भई रजाएसु जन दउराए। बाम्हन सुआ बेगि लेइ आए ॥
50 बिपर असीसि बिनति अउधारा। सुआ जीउ नहिं करउँ निरारा ॥
पइ यह पेट मएउ बिसुआसी। जेइ सब नाए तपा सनिआसी ॥
डासन सेज जहाँ जेहि नाहीं। भुइँ परि रहइ लाइ गिउ बाहीं ॥
आँध रहइ जो देख न नयना। गूँग रहइ मुख आउ न बयना ॥
बहिर रहइ जो स्रवन न सुना। पइ यह पेट न रह निरगुना ॥
55 कइ कइ फेरा निति बहु दोखी। बारहि बार फिरइ न सँतोखी ॥
सो मोहिं लेइ मँगावइ लावइ भूख पिआस।
जउँ न होत अस बइरी केहु काहू कइ आस ॥ ८२ ॥

सुअइ असीस दीन्ह बड साजू। बड परतापु अखंडित राजू ॥
भागवंत बिधि बड अउतारा। जहाँ भाग तहँ रूप ओहारा ॥
कोइ केहु पास आस कइ गवँना। जो निरास डिढ आसन मवँना ॥
60 कोइ बिनु पूँछे बोलि जो बोला। होइ बोलि माँटी के मोला ॥
पढि गुनि जानि बेद मति मेऊ। पूँछे बात कहइ सहदेऊ ॥

गुनी न कोई आपु सराहा। जो सो बिकाइ कहा पइ चाहा॥
जउ लहि गुन परगट नहिँ होई। तउ लहि मरम न जानइ कोई॥
　　चतुर-बेद हउँ पंडित हीरा-मनि मोहिँ नाउँ।
　　पदुमावति सउँ मइँ रवँउँ सेव करउँ तेहि ठाउँ॥ ८३॥
रतन-सेन हीरा-मनि चीन्हा। लाख टका बाम्हन कहँ दीन्हा॥　65
बिपर असिस देइ कीन्ह पयाना। सुआ सो राज-मँदिर महँ आना॥
बरनउँ कहा सुआ कइ भाखा। धनि सो नाउँ हीरा-मनि राखा॥
जो बोलइ राजा मुख जोआ। जनउँ मोति हिअ हार परोआ॥
जउँ बोलइ सब मानिक मूँगा। नाहिँ त मवन बाँधि रह गूँगा॥
मनहुँ मारि मुख अंब्रित मेला। गुरु होइ आपु कीन्ह जग चेला॥　70
सुरुज चाँद कइ कथा जो कहा। पेम क कहनि लाइ चित गहा॥
　　जो जो सुनइ धुनइ सिर राजा पिरिति अगाहि।
　　अस गुनवंत नहीँ भल (सुअटा) बाउर करिहइ काहि॥ ८४॥

इति बनिजारा खंड॥ ७॥

अथ नागमती-सुआ-संवाद खंड ॥ ८ ॥

दिन दस पाँच तहाँ जो भए। राजा कतहुँ अहेरइ गए॥
नाग-मती रुपवंती रानी। सब रनिवास पाट परधानी॥
कइ सिंगार कर दरपन लीन्हा। दरसन देखि गरब जिउ कीन्हा॥
हँसत सुआ पहँ आइ सो नारी। दीन्ह कसउटी अउपन-वारी॥
5 मलहि सुआ अउ प्यारे नाहाँ। मोरहि रूप कोई जग माहाँ॥
सुआ बानि कसि कहु कस सोना। सिंघल-दीप तोर कस लोना॥
कउनु दिसिटि तोरी रुप-मनी। दहुँ हउँ लोनि कि वेइ पदुमनी॥
जउँ न कहसि सत सुअटा तोहि राजा कइ आन।
हइ कोई एहि जगत महँ मोरहि रूप समान॥ ८५ ॥
सवँरि रूप पदुमावति केरा। हँसा सुआ रानी मुख हेरा॥
10 जेहि सरवर महँ हंस न आवा। बकुली तेहि जल हंस कहावा॥
दई कीन्ह अस जगत अनूपा। एक एक तइँ आगरि रूपा॥
कइ मन गरब न छाजा काहू। चाँद घटा अउ लागेउ राहू॥
लोन बिलोन तहाँ को कहा। लोनी सोइ कंत जेहि चहा॥
का पूँछहु सिंघल कइ नारी। दिनहि न पूजइ निसि अँधिआरी॥
15 पुहुप सुगंध सो तिन्ह कइ काया। जहाँ माँथ का बरनउँ पाया॥
गढ़ीं सो सोनइ सोंधइ भरीं सो रूपइ भाग।
सुनत रूखि भइ रानी हिअइ लोन अस लाग॥ ८६ ॥

जउँ यह सुआ मँदिर महँ अहई। कब-हुँ होइ राजा सउँ कहई॥
सुनि राजा पुनि होइ बिओगी। छाँडइ राज चलइ होइ जोगी॥
बिख राखे नहिँ होत अँगूरू। सबद न देइ बिरह तमचूरू॥
धाइ धामिनी बेगि हँकारी। ओहि सउँपा हिअ रिस न सँभारी॥ 20
देखु सुआ यह हइ मँद-चाला। भएउ न ता कर जा कर पाला॥
मुख कह आन पेट बस आना। तेहि अउगुन दस हाटि बिकाना॥
पंखि न राखिअ होइ कु-भाखी। लेइ तहँ मारु जहाँ नहिँ साखी॥

जेहि दिन कहँ हउँ निति डरउँ रहनि छपावउँ सूर।
लेइ चह दीन्ह कवँल कहँ मो कहँ होइ मँजूर॥ ८७॥

धाइ सुआ लेइ मारइ गई। समुझि गिआन हिअइ मति भई॥ 25
सुआ सो राजा कर बिसरामी। मारि न जाइ चहइ जेहि सामी॥
यह पंडित खंडित पइ रागू। दोस ताहि जेहि सूझ न आगू॥
जो तिआइँ के काज न जाना। परइ धोख पाछे पछिताना॥
नागमती नागिनि-बुधि ताऊ। सुआ मँजूर होइ नहिँ काऊ॥
जो न कत कइ आएसु माहाँ। कउनु भरोस नारि कइ बाहाँ॥ 30
मकु यह खोज होइ निसि आई। तुरइ रोग हरि माँथइ जाई॥

दुइ सो छपाए ना छपहिँ एक हतिआ एक पापु।
अंत-हु करहिँ बिनास पुनि सइ साखी देइ आपु॥ ८८॥

राखा सुआ धाइ मति साजा। भएउ खोज निसि आएउ राजा॥
रानी उतर मान सउँ दीन्हा। पंडित सुआ मँजारी लीन्हा॥
मइँ पूँछी सिंघल पदुमिनी। उतर दीन्ह तुम्ह को नागिनी॥ 35
वह जस दिन तुम्ह निसि अँधिआरी। जहाँ बसंत करील को बारी॥
का तोर पुरुख रइनि कर राऊ। उलू न जान दिवस कर भाऊ॥
का वह पंखि कोटि महँ गोटी। अस बडि बोलि जीभ कह छोटी॥
रुहिर चुअइ जो जो कह बाता। भोजन बिनु भोजन मुख राता॥

माँथइ नहिँ बइसारिश्र सुठि सुश्रा जउँ लोन।
40 कान टूट जेहि श्राभरन का लेइ करब सो सोन ॥ ८६ ॥

राजइ सुनि बिश्रोग तस माना। जइस हिश्रइ बिकरम पछिताना ॥
वह हीरा-मनि पंडित सुश्रा। जो बोलइ मुख श्रंब्रित चूश्रा ॥
पंडित दुख-खंडित निरदोखा। पंडित हुते परइ नहिँ धोखा ॥
पंडित केरि जीभ मुख सूधी। पंडित बात कहइ न बिरूधी ॥
45 पंडित सु-मति देइ पँथ लावा। जो कु-पंथ तेहि पँडित न भावा ॥
पंडित राते बदन सरेखा। जो हतिश्रार रुहिर सो देखा ॥
की परान घट श्रानहु मती। की चलि होहु सुश्रा सँग सती ॥
जनि जानहु कइ श्रउगुन मँदिर होइ सुख-राज।
श्राएसु मेँटि कंत कर का कर भा न श्रकाज ॥ ९० ॥

चाँद जइस धनि उँजिश्ररि श्रही। भा पिउ रोस गहन श्रस गही ॥
50 परम सोहाग निबाहि न पारी। भा दोहाग सेवा जब हारी ॥
एतनिक दोस बिरचि पिउ रूठा। जो पिउ श्रापन कहइ सो भूठा ॥
श्रइसइ गरब न भूलइ कोई। जेहि डर बहुत पिश्रारी सोई ॥
रानी श्राइ धाइ के पासा। सुश्रा मुश्रा सेवँरि कइ श्रासा ॥
परा पिरिति कंचन मँह सीसा। बिथरि न मिलइ सावँ पइ दीसा ॥
55 कहाँ सोनार पास जेहि जाउँ। देइ सोहाग करइ एक ठाऊँ ॥
भइँ पिउ पिरिति भरोसइ गरब कीन्ह जिश्र माँह।
तेहि रिस हउँ परहेली रूसेउ नागरि नाँह ॥ ९१ ॥

उतर धाइ तब दीन्ह रिसाई। रिस श्रापु-हि बुधि श्रउरहि खाई ॥
भइँ जो कहा रिस करहु न बाला। को न गएउ एहि रिस कर घाला ॥
तूँ रिस भरी न देखेसि श्रागू। रिस महँ का कहँ भएउ सोहागू ॥
60 बिरस बिरोध रिस-हि पइ होई। रिस मारइ तेहि मार न कोई ॥
जेहि रिस तेहि रस जोगि न जाई। बिनु रस हरदि होइ पिश्रराई ॥

जेहि कइ रिस मरिअइ रस जीजइ। सो रस तजि रिस कोह न कीजइ॥
कंत सोहाग न पाइअ साधा। पावइ सोइ जो ओहि चित बाँधा॥
रहइ जो पिउ के आएसु अउ बरतइ होइ खीन।
सोइ चाँद अस निरमर जरम न होइ मलीन॥ ६२॥
जुआ-हारि समुझी मन रानी। सुआ दीन्ह राजा कहँ आनी॥ 65
मानु मती हउँ गरब न कीन्हा। कंत तुम्हार मरम मइँ लीन्हा॥
सेवा करइ जो बरह-उ मासा। एतनिक अउगुन करहु बिनासा॥
जउँ तुम्ह देइ नाइ कइ गीवा। छाँडहु नहिँ बिनु मारे जीवा॥
मिलत-हि मँह जनु अहउ निरारे। तुम्ह सउँ अहहि अँदेस पिआरे॥
मइँ जाना तुम्ह मो-हीँ माहाँ। देखउँ ताकि त सब हिअ माहाँ॥ 70
का रानी का चेरी कोई। जा कहँ मया करहु भल सोई॥
तुम्ह सउँ कोइ न जीता हारे बररुचि भोज।
पहिलइ आपु जो खोअई करइ तुम्हारा खोज॥ ६३॥

इति नागमती-सुआ-संवाद खंड॥ ८॥

अथ राजा-सुआ-संवाद खंड ॥ ९ ॥

राजइ कहा सच कहु सूआ। बिनु सत कस जस सेवँरि भूआ ॥
होइ मुख रात सच कइ बाता। जहाँ सच तहँ धरम सँघाता ॥
बाँधी सिसिटि अहइ सत केरी। लछिमी आहि सत्त कइ चेरी ॥
सच जहाँ साहस सिधि पावा। अउ सत-बादी पुरुख कहावा ॥
5 सत कहँ सती सँवारइ सरा। आगि लाइ चहुँ दिसि सत जरा ॥
दुइ जग तरा सच जेइ राखा। अउरु पिआर दइहि सत-भाखा ॥
सो सत छाँड जो धरम बिनासा। का मति हिअइ कीन्ह सत-नासा ॥

तुम्ह सयान अउ पंडित अ-सत न भाखहु काउ।
सच कहहु तुम्ह मो सउँ दहुँ का कर अनिआउ ॥ ९४ ॥

सत्त कहत राजा जिउ जाऊ। पइ मुख अ-सत न भाखउँ काऊ ॥
10 हउँ सत लेइ निसरा एहि पतें। सिंघल-दीप राज घर हतें ॥
पदुमावति राजा कइ बारी। पदुम-गंध ससि बिधि अउतारी ॥
ससि-मुख अंग मलय-गिरि रानी। कनक सुगंध दुआदस बानी ॥
हहिं पदुमिनि जो सिंघल माहाँ। सुगँध सुरूप सो ओहि कइ छाहाँ ॥
हीरा-मनि हउँ तेहि क परेवा। काँठा फूट करत तेहि सेवा ॥
15 अउ पाएउँ मानुस कइ भाखा। नाहिं त पंखि मूठि भर पाँखा ॥

जउ लहि जिअउँ राति दिन सवँरि मरउँ ओहि नाउँ।
मुख राता तन हरिअर दुहूँ जगत पइ जाउँ ॥ ९५ ॥

हीरा-मनि जो कवँल बखाना । सुनि राजा होइ भवँर भुलाना ॥
आगे आउ पंखि उँजिआरे । कहे सो दीप पनिग के मारे ॥
रहा जो कनक सुबासिक ठाऊँ । कस न होअ हीरा-मनि नाऊँ ॥
को राजा कस दीप उतंगू । जेहि रे सुनत मन भएउ पतंगू ॥ 20
सुनि सो समुद चखु भए किलकिला । कवँलहि चहउँ भवँर होइ मिला ॥
कहु सुगंध धनि कस निरमरी । दहुँ अलि संग कि अब-हीँ करी ॥
अउ कहु तहँ जो पदुमिनि लोनी । घर घर सब के होहिँ जस होनी ॥

सबइ बखान तहाँ कर कहत सो मो सउँ आउ ।
चहउँ दीप वह देखा सुनत उठा तस चाउ ॥ ६६ ॥

का राजा हउँ बरनउँ तासू । सिंघल-दीप आहि कविलासू ॥ 25
जो गा तहाँ भुलानेउ सोई । गइ जुग बीति न बहुरा कोई ॥
घर घर पदुमिनि छतिस-उ जाती । सदा बसंत दिवस अउ राती ॥
जेहि जेहि बरन फूल फुलवारी । तेहि तेहि बरन सु-गंध सो नारी ॥
गँधरब-सेन तहाँ बड राजा । अछरिन्ह माँह इँदर बिधि साजा ॥
सो पदुमावति ता करि बारी । अउ सब दीप माँह उँजिआरी ॥ 30
चहूँ खंड के बर जो ओनाहीँ । गरबहि राजा बोलइ नाहीँ ॥

उअत सूर जस देखी चाँद छपइ तेहि धूप ।
अइसइ सबइ जाहिँ छपि पदुमावति के रूप ॥ ६७ ॥

सुनि रवि नाउँ रतन भा राता । पंडित फेरि इहइ कहु बाता ॥
तुइँ सु-रंग मूरति वह कही । चित महँ लागि चितर होइ रही ॥
जनु होइ सुरुज आइ मन बसी । सब घट पूरि हिअइ परगसी ॥ 35
अब हउँ सुरुज चाँद वह छाया । जल बिनु मीन रकत बिनु काया ॥
किरिनि करा भा पेम अँकूरू । जउँ ससि सरग मिलउँ होइ सूरू ॥
सहस-उ करा रूप मन भूला । जहँ जहँ दिसिटि कवँल जनु फूला ॥
तहाँ भवँर जिउ कवँला गंधी । भइ ससि राहु केरि रिनि-बंधी ॥

तीनि लोक चउदह खंड सबइ परइ मोहि सूझि।
40 पेम छाँडि किछु अउरु न (लोना) जो देखउँ मन बूझि॥ ९८॥

पेम सुनत मन भूलु न राजा। कठिन पेम सिर देइ तौ छाजा॥
पेम फाँद जउँ परइ न छूटा। जीउ दीन्ह बहु फाँद न टूटा॥
गिरिगिट छंद धरइ दुख तेता। खन खन रात पीत खन सेता॥
जानि पुछारि जो भा बन-बासी। रोवँ रोवँ परे फाँद नग-वासी॥
45 पाँखन्ह फिरि फिरि परा सो फाँदू। उडि न सकइ अरुझइ भइ बाँदू॥
मुएउँ मुएउँ अह-निसि चिललाई। ओहि रोस नागन्ह धरि खाई॥
पाँडक सुआ कंठ वह चीन्हा। जेहि गिउ परा चाहि जिउ दीन्हा॥

तीतर गिउ जो फाँद हइ निति-हि पुकारइ दोख।
सो कित हँकारि फाँद गिउ (मेलइ) कित मारे होइ मोख॥ ९९॥

राजइ लीन्ह ऊभि कइ साँसा। अइस बोलि जनि बोलु निरासा॥
50 भलेहि पेम हइ कठिन दुहेला। दुइ जग तरा पेम जेइ खेला॥
भीतर दुख जो पेम मधु राखा। गंजन मरन सहइ जो चाखा॥
जो नहिं सीस पेम पँथ लावा। सो पिरिथुमि महँ काहे क आवा॥
अब महँ पेम फाँद सिर मेला। पाउँ न ठेलु राखु कइ चेला॥
पेम-बार सो कहइ जो देखा। जेइ न देख का जान बिसेखा॥
55 तब लगि दुख पिरितम नहिं भेंटा। मिला तो गएउ जनम दुख मेटा॥

जस अनूप तुइँ देखी नख-सिख बरन सिंगार।
हइ मोहिं आस मिलइ कइ जउँ मेरवइ करतार॥ १००॥

इति राजा-सुआ-संवाद खंड॥ ६॥

अथ नखसिख खंड ॥ १० ॥

का सिँगार ओहि बरनउँ राजा। ओहि क सिँगार ओही पइ छाजा ॥
प्रथम-हि सीस कसतुरी केसा। बलि बासुकि को अउरु नरेसा ॥
भवँर केस वह मालति रानी। बिसहर लरहिँ लेहिँ अरघानी ॥
बेनी छोरि झारु जो बारा। सरग पतार होइ अँधिआरा ॥
कोवँल कुटिल केस नग कारे। लहरइँ भरे भुअंग बिसारे ॥ 5
बेधे जानु मलय-गिरि बासा। सीस चढे लोटहिँ चहुँ पासा ॥
घुँघुर-वार अलकइँ बिख-भरी। सँकरइँ पेम चहहिँ गिअँ परी ॥

अस फँद-वारि केस वेइ (राजा) परा सीस गिअँ फाँद।
असट-उ कूरी नाग सब उरझ केस के बाँद ॥ १०१ ॥

बरनउँ माँग सीस उपराहीँ। सेँदुर अब-हिँ चढा जेहि नाहीँ ॥
बिनु सेँदुर अस जानउँ दिआ। उंजिअर पंथ रइनि महँ किआ ॥ 10
कंचन-रेख कसउटी कसी। जनु घन महँ दाविँनि परगसी ॥
सुरुज किरन जनु गगन बिसेखी। जवुँना माँझ सरसुती देखी ॥
खाँडइ धार रुहिर जनु भरा। करवत लेइ बेनी पर धरा ॥
तेहि पर पूरि धरी जो मोती। जवुँना माँझ गाँग कइ सोती ॥
करवत तपा लीन्ह होइ चूरू। मकु सो रुहिर लेइ देइ सेँदूरू ॥ 15

कनक दुआदस बानि होइ चह सोहाग वह माँग।
सेवा करहिँ नखत अउ (तरई) उए गगन जस गाँग ॥ १०२ ॥

कहउँ लिलाट दुइज कइ जोती। दुइजहिँ जोति कहाँ जग ओती॥
सहस-किरान जो सुरुज दिपाए। देखि लिलाट सोऊ छपि जाए॥
का सरि बरनक दिएउँ मयंकू। चाँद कलंकी वह निकलंकू॥
२० ओहि चाँदहि पुनि राहु गरासा। वह बिनु राहु सदा परगासा॥
तेहि लिलाट पर तिलक बईठा। दुइज पाट जानउँ ध्रुव डीठा॥
कनक पाट जनु बइठेउ राजा। सबइ सिँगार अतर लेइ साजा॥
ओहि आगइ थिर रहइ न कोऊ। दहुँ का कहँ अस जुरा सँजोऊ॥
खरग धनुख चक बान अउ जग-मारन तेहि नाउँ।
सुनि कइ परा मुरुछि कइ(राजा) मो कहँ भए कु-ठाउँ॥ १०३॥
२५ भउँहइ सावँ धनुख जनु ताना। जा सउँ हेर मारु बिख बाना॥
ओही धनुख ओहि भउँहहिँ चढा। केइ हतिआर काल अस गढा॥
ओही धनुख किसुन पहँ अहा। ओही धनुख राघउ कर गहा॥
ओही धनुख रावँन संघारा। ओही धनुख कंसासुर मारा॥
ओही धनुख बेधा हुत राहू। मारा ओही सहस्सरबाहू॥
३० ओही धनुख मइँ वा पहँ चीन्हा। धानुक आपु बेझ जग कीन्हा॥
ओहि भउँहहिँ सरि कोइ न जीता। अछरइँ छपीँ छपीँ गोपीता॥
भउँह धनुख धन धानुक दोसर सरि न कराइ।
गगन धनुख जो उग्गवइ लाजइ सो छपि जाइ॥ १०४॥
नयन बाँक सरि पूज न कोऊ। मान समुँद अस उलथहिँ दोऊ॥
राते कवँल करहिँ अलि भवाँ। घूमहिँ माति चहहिँ अपसवाँ॥
३५ उठहिँ तुरंग लेहिँ नहिँ बागा। जानउँ उलथि गगन कहँ लागा॥
पवन झकोरहिँ देइ हिलोरा। सरग लाइ भुइँ लाइ बहोरा॥
जग डोलइ डोलत नयनाहाँ। उलटि अडार चाह पल माहाँ॥
जबहिँ फिराहिँ गगन गहि बोरा। अस वेइ भउँह भवँर के जोरा॥
समुँद हिलोर करहिँ जनु झूले। खंजन लरहिँ मिरिग बन भूले॥

सु-भर समुँद अस नयन दुइ मानिक भरे तरंग।
आवहिँ तीर फिरावहीँ काल भवँर तेहि संग ॥ १०५ ॥ 40

बरुनी का बरनउँ इमि बनी। साधी बान जानु दुहुँ अनी ॥
जुरी राम रावँन कइ सइना। बीच समुँद भए दुइ नइना ॥
वारहिँ पार बनाउरि साधे। जा सउँ हेर लाग बिख-बाँधे ॥
उन्ह बानहिँ अस को कौ न मारा। बेधि रहा सगर-उ संसारा ॥
गगन नखत जस जाहिँ न गने। वेइ सब बान ओही के हने ॥ 45
धरती बान बेधि सब राखे। साखा ठाढ ओही सब साखे ॥
रोवँ रोवँ मानुस तन ठाढे। सूतहिँ सूत बेध अस गाढे ॥

बरुनि बान अस उपनी बेधी रन बन-ढंख।
सउजहिँ तन सब रोवाँ पंखिहिँ तन सब पंख ॥ १०६ ॥

नासिक खरग देउँ केहि जोगू। खरग खीन वह बदन सँजोगू ॥
नासिक देखि लजानेउ सूआ। सूक आइ बेसर होइ ऊआ ॥ 50
सुआ जो पिअर हिरा-मनि लाजा। अउरु भाउ का बरनउँ राजा ॥
सुआ सो नाक कठोर पँवारी। वह कोवँल तिल पुहुप सँवारी ॥
पुहुप सु-गंध करहिँ सब आसा। मकु हिरिकाइ लेइ हम बासा ॥
अधर दसन पइ नासिक सोभा। दारिउँ देखि सुआ मन लोभा ॥
खंजन दुहुँ दिसि केलि कराहीँ। दहुँ वह रस को पाउ कौ नाहीँ ॥ 55

देखि अमीँ-रस अधरन्ह भएउ नासिका कीर।
पवन बास पहुँचावई असरम छाँड न तीर ॥ १०७ ॥

अधर सुरंग अमीँ-रस भरे। बिंब सुरंग लाजि बन फरे ॥
फूल दुपहरी जानउँ राता। फूल झरहिँ जो जो कह बाता ॥
हीरा लेहिँ सु-बिदरुम धारा। बिहँसत जगत होइ उँजिआरा ॥
भइ मजीँठ पानन्ह रँग लागे। कुसुम रंग थिर रहइ न आगे ॥ 60
अस कइ अधर अमीँ भरि राखे। अज-हुँ अछूत न काहू चाखे ॥

. ु तँबोल रँग ढारहिँ रसा। केहि मुख जोग सो अंम्रित बसा॥
राता जगत देखि रँग-राती। रुहिर भरे आछहिँ बिहँसाती॥
अमीँ अधर अस राजा सब जग आस करेइ।
केहि कहँ कवँल बिगासा को मधुकर रस लेइ॥ १०८॥

65 दसन चउक बइठे जनु हीरा। अउ बिच बिच रँग साँव गँभीरा॥
जनु भादउ निसि दाविँनि दीसी। चमकि उठइ तस बनी बतीसी॥
वह सो जोति हीरा उपराहीँ। हीरा देहि सो तेहि परिछाहीँ॥
जेहि दिन दसन-जोति निरमई। बहुतइ जोति जोति वह भई॥
रबि ससि नखत दिपहिँ तेहि जोती। रतन पदारथ मानिक मोती॥
70 जहँ जहँ बिहँसि सोमाओन हँसी। तहँ तहँ छिटकि जोति परगसी॥
दाविँनि चमकि न सरिवरि पूजा। पुनि ओहि जोति होइ को दूजा॥
(बिहँसत) हँसत दसन तस चमकइ पाहन उठइ झरक्कि।
दारिउँ सरि जो न कइ सका फाटेउ हिआ तरक्कि॥ १०९॥

रसना कहउँ जो कह रस-बाता। अंम्रित बयन सुनत मन राता॥
हरइ सो सुर चातक कोकिला। बीन बंसि वेइ बयन न मिला॥
75 चातक कोकिल रहहिँ जो नाहीँ। सुनि वेइ बयन लाजि छपि जाहीँ॥
भरे पेम-मधु बोलइ बोला। सुनइ सो माति घूमिँ कइ डोला॥
चतुर बेद मति सब ओहि पाहाँ। रिग जजु साँव अथरबन माहाँ॥
एक एक बोल अरथ चउ-गुना। इँदर मोहि बरम्हा सिर धुना॥
अमर पिँगल भारथ अउ गीता। अरथ जो जेहि पंडित नहिँ जीता॥
भावसती ब्याकरन सब पिंगल पाठ पुरान।
80 बेद भेद सउँ बात कह तस जनु लागहिँ बान॥ ११०॥

पुनि बरनउँ का सुरँग कपोला। एक नाराँग के दुअ-उ अमोला॥
पुहुप पंग रस अंमित साधे। केइ यह सुरँग खिरउरा बाँधे॥
तेहि कपोल बाएँ तिल परा। जेइ तिल देख सो तिल तिल जरा॥

जनु घुँघुँची ओहि तिल कर-मुहाँ। बिरह-बान साधेउ सामुहाँ ॥
अगिन-बान तिल जानउँ सूझा। एक कटाछ लाख दस जूझा ॥ 85
सो तिल गाल मेटि नहिँ गयऊ। अब वह गाल काल जग भयऊ ॥
देखत नयन परी परिछाहीँ। तेहि तइँ रात साँवँ उपराहीँ ॥
सो तिल देखि कपोल पर गगन रहा धुव गाडि।
खनहिँ उठइ खन बूडइ डोलइ नहिँ तिल छाडि ॥ १११ ॥

स्रवन सीप दुइ दीप सँवारे। कुंडल कनक रचे उँजिआरे ॥
मनि-कुंडल चमकहिँ अति लोने। जनु कउँधा लउकहिँ दुहुँ कोने ॥ 90
दुहुँ दिसि चाँद सुरुज चमकाहीँ। नखतन्ह भरे निरखि नहिँ जाहीँ ॥
तेहि पर खूँट दीप दुइ बारे। दुइ धुव दुहूँ खूँट बइसारे ॥
पहिरे खुंभी सिंघल-दीपी। जानउँ भरी कचपची सीपी ॥
खन खन जोहि चीर सिर गहा। काँपत बीजु दुहूँ दिसि रहा ॥
डरपहिँ देओ-लोक सिंघला। परइ न टूटि बीजु एहि कला ॥ 95
करहिँ नखत सब सेवा स्रवन दीन्ह अस दो-उ।
चाँद सुरुज अस गहने अउरु जगत का कोउ ॥ ११२ ॥

बरनउँ गीउ कूँज कइ रीसी। कंचन तार लागु जनु सीसी ॥
कूँदइ फेरि जानु गिउ काढी। हरइ पुछारि ठगी जनु ठाढी ॥
जनु हिअ काढि परेवा ठाढा। तेहि तइँ अधिक भाउ गिउ बाढा ॥
चाक चढाइ साँच जनु कीन्हा। बाग तुरंग जानु गहि लीन्हा ॥ 100
गिउ मजूर तम-चूर जो हारे। उहइ पुकारहिँ साँझ सकारे ॥
पुनि तेहि ठाउँ परी तिरि रेखा। घूँट जो पीक लीक सब देखा ॥
धनि ओहि गीउ दीन्ह बिधि भाऊ। दहुँ का सउँ लेइ करइ मेराऊ ॥
कंठ सिरी-मुकुताओली (माला) सोहइ अभरन गीउ।
को होइ हार कंठ (ओहि) लागइ को तपु साधा जीउ ॥ ११३ ॥

कनक-डंड दुइ भुजा कलाई। जानउँ फेरि कुँदेरइ भाई ॥ 105

कदलि-खंभ कइ जानउँ जोरी। अउ रातीं ओहि कवँल-हथोरी॥
जानउँ रकत हथोरी बूडी। रवि परभात तात वेइ जूडी॥
हिश्रा काढ़ि जनु लीन्हेसि हाथा। रुहिर भरी अँगुरी तेहि साथा॥
अउ पहिरे नग-जरी अँगूठी। जग बिनु जीउ जीउ ओहि मूठी॥
110 बाँहू कंगन टाड सलोनी। डोलत बाँह भाउ गति लोनी॥
जानउँ गति बेडिन देखराई। बाँह डोलाइ जीउ लेइ जाई॥
भुज उपमा पउ-नारि न (पूजइ) खीन भई तेहि चित्त।
ठाउँहि ठाउँ बेध भइ (हिरदइ) ऊभि साँस लेइ नित्त॥ ११४॥
हिश्रा थार कुच कंचन लाडू। कनिक कचउरि उठइ कइ चाडू॥
कुंदन बेल साजि जनु कूँदे। अंम्रित भरे रतन दुइ मूँदे॥
115 बेधे भवँर कंट केतकी। चाहहिं बेध कीन्ह कंचकी॥
जोबन बान लेहिं नहिं बागा। चाहहिं हुलसि हिअइ महँ लागा॥
अगिन-बान दुइ जानउँ साधे। जग बेधहिं जउँ होहिं न बाँधे॥
उवँग जँभीर होइ रखवारी। छुइ को सकइ राजा कइ बारी॥
दारिउँ दाख फरे अन-चाखे। अस नारँग दहुँ का कहँ राखे॥
राजा बहुत मुए तपि लाइ लाइ भुइँ माँथ।
120 काहू छुअइ न पाअउ गए मरोरत हाथ॥ ११५॥
पेट पतर जनु चंदन लावा। कुंकुँह केसर बरन सोहावा॥
खीर अहार न कर सु-कुआँरा। पान फूल लेइ रहइ अधारा॥
सावँ-भुअँगिनि रोवाँवली। नाभी निकसि कवँल कहँ चली॥
आइ दुहूँ नारँग बिच भई। देखि मजूर ठमकि रहि गई॥
125 जनउँ चढ़ी भवँरन्ह कइ पाँती। चंदन-खाँभ बास कइ माँती॥
कइ कालिंदरि बिरह सताई। चलि पयाग अरइल बिच आई॥
नाभी कुंडर बानारसी। सउँह को होइ मीचु तेहि बसी॥
सिर करवत तन करसी (लेइ लेइ) बहुत सीझ तेइ आस।
बहुत धूँम घुँटि मुए देखे उतर न देइ निरास॥ ११६॥

बइरिनि पीठि लीन्ह वेइ पाछे। जनु फिरि चली अपछरा काछे॥
मलयागिरि कइ पीठि सँवारे। वेनी नाग चढा जनु कारे॥ 130
लहरइ देत पीठि जनु चढा। चीर ओढाया केँचुलि मढा॥
दहुँ का कहँ अस वेनी कीन्ही। चंदन वास भुअंगइ लीन्ही॥
किरिसुन करा चढा ओहि माँथे। तव सो छूट अव छूट न नाथे॥
कारे कवँल गहे मुख देखा। ससि पाछे जनु राहु विसेखा॥
को देखइ पावइ वह नागू। सो देखइ माँथहि मनि भागू॥ 135

पंनग पंकज मुख गहे खंजन तहाँ वईठ।
छात सिँघासन राज धन ता कहँ होइ जो डीठ॥ ११७॥

लंक पुहुमि अस आहि न काहू। केहरि कहउँ न ओहि सरि ता-हू॥
वसा लंक वरनइ जग झीनी। तेहि तइँ अधिक लंक वह खीनी॥
परिहँसि पिअर भए तेहि वसा। लिए डंक लोगहि कहँ डसा॥
मानउँ नलिनि खंड दुइ भए। दुहुँ विच लंक तार रहि गए॥ 140
हिअ सो मोड चलइ वह तागा। पइग देत कित सहि सक लागा॥
छुदर-घंट मोहहिँ नर राजा। इँदर-अखाड आइ जनु वाजा॥
मानउँ वीन गहे कामिँनी। गाओहिँ सवइ राग रागिनी॥

सिंघ न जीतइ लंक सरि हारि लीन्ह वन वास।
तेहि रिस रकत पिअइ मनुस खाइ मारि कइ माँस॥ ११८॥

नाभी कुँडर सो मलय-समीरू। समुद भवँर जस भवँइ गँभीरू॥ 145
वहुतइ भवँर ववँडर भए। पहुँचि न सके सरग कहँ गए॥
चंदन माँझ कुरंगिनि खोजू। दहुँ को पाउ को राजा भोजू॥
को ओहि लागि हेवँचल सीझा। का कहँ लिखी अइस को रीझा॥
तीवइ कवँल-सु-गंध सरीरू। समुद लहरि सोहइ तन-चीरू॥
झूलहिँ रतन पाट के झोँपा। साजि मयन दहुँ का पहँ कोपा॥ 150
अवहिँ सो अहइ कवँल कइ करी। न जनउँ कवनु भवँर कहँ धरी॥

बेधि रहा जग बासना परमल मेद सु-गंध।
तेहि अरघानि भवँर सब लुबुधे तजहिं न बंध ॥ ११९ ॥
बरनउँ नितँब लंक कइ सोभा। अउ गज-गवँन देखि सब लोभा ॥
जुरे जंघ सोभा अति पाए। केला खाँभ फेरि जनु लाए ॥
155 कँवल-चरन अति-रात बिसेखी। रहइ पाट पर पुहुमि न देखी ॥
देवँता हाथ हाथ पगु लेहीं। जहँ पगु धरइ सीस तहँ देहीं ॥
माँथइ भाग को दहुँ अस पावा। कवँल-चरन लेइ सीस चढावा ॥
[ ]रा चाँद सुरुज उँजिआरा। पाइल बीच करहिं झनकारा ॥
अनवट बिछिआ नखत तराईं। पहुँचि सकइ को पाइन ताईं ॥
बरनि सिँगार न जानेउँ नखसिख जइस अभोग।
तस जग किछू न पाएउँ उपम देउँ ओहि जोग ॥ १२० ॥

इति नखसिख खंड ॥ १० ॥

अथ पेम खंड ॥ ११ ॥

सुनत-हि राजा गा मुरुछाई। जानउँ लहरि सुरुज कइ आई ॥
पेम-घाओ दुख जान न कोई। जेहि लागइ जानइ पइ सोई ॥
परा सो पेम-समुंद अपारा। लहरहिँ लहर होइ बिसँभारा ॥
बिरह भवँर होइ भाउँरि देई। खन खन जीउ हिलोरा लेई ॥
खनहिँ निसाँस बूडि जिउ जाई। खनहिँ उठइ निसँसइ बउराई ॥ 5
खनहिँ पीत खन होइ मुख सेता। खनहिँ चेत खन होइ अचेता ॥
कठिन मरन तहँ पेम-बेवसथा। ना जिउ जाइ न दसउँ-अवसथा ॥

जनउँ लोहारइ लीन्ह जिउ हरइ तरासइ ताहि।
एतना बोल न आओ मुख करइ तराहि तराहि ॥ १२१ ॥

जहँ लगि कुटुँब लोग अउ नेगी। राजा राइ आए सब बेगी ॥
जावँत गुनी गारुरी आए। ओझा बइद सयान बोलाए ॥ 10
चरचहिँ चेसटा परखहिँ नारी। निअर नाहिँ ओखद तेहि बारी ॥
हइ राजहि लखिमन कइ करा। सकति-बान मोहइ हिए परा ॥
तहँ सो राम हनिवँत बडि दूरी। को लेइ आउ सजीअनि मूरी ॥
बिनउ करहिँ जेते गढ-पती। का जिउ कीन्ह कउनि मति मती ॥
कहउ सो पीर काहि बिनु खाँगा। समुद सुमेरु आउ तुम्ह माँगा ॥ 15

धावन तहाँ पठावहू देहु लाख दस रोक।
हइ सो बेल जेहि बारी आनहु सबहिँ बरोक ॥ १२२ ॥

जो भा चेत उठा बइरागा। बाउर जनउँ सोइ अस जागा॥
आवत जग बालक जस रोआ। उठा रोइ हा ग्यान सौं खोआ॥
हउँ तो अहा अमर-पुर जहवाँ। इहाँ मरन-पुर आएउँ कहवाँ॥
20 केइ उपकार मरन कर कीन्हा। सकति हँकारि जीउ हरि लीन्हा॥
सोअत अहा जहाँ सुख साखा। कस न तहाँ सोअत बिधि राखा॥
अब जिउ तहाँ इहाँ तन सूना। कब लगि रहइ परान बिहूना॥
जो जिउ घटिहि काल के हाथा। घटन नींक पइ जीअन साथा॥

अहुठ हाथ तन सरवर हिआ कवँल तेहि माँह।
नयनहिँ जानउँ नीअरे कर पहुँचत अउगाह॥ १२३॥

25 सबन्ह कहा मन समुझहु राजा। काल सेंति कइ जूझ न छाजा॥
ता सउँ जूझ जात जो जीता। जात न किसुन तजी गोपीता॥
अउ न नेहु काहू सउँ कीजिअ। नाउँ मीठ खाए जिउ दीजिअ॥
पहिलइ सुख नेहहि जब जोरा। पुनि होइ कठिन निबाहत ओरा॥
अहुठ हाथ तन जइस सुमेरू। पहुँचि न जाइ परा तस फेरू॥
30 गगन दिसिट सो जाइ पहूँचा। पेम अदिसिट गगन तइँ ऊँचा॥
धुव तइँ ऊँच पेम-धुव ऊआ। सिर देइ पाउँ देइ सो छूआ॥

तुम्ह राजा अउ सुखिआ करहु राज सुख भोग।
एहि रे पंथ सो पहुँचइ सहइ जो दुख बीओग॥ १२४॥

सुआइ कहा सुनु मो सउँ राजा। करब पिरीति कठिन हइ काजा॥
तुम्ह अब-हीँ जेइअ घर पोई। कवँल न बइठ बइठ तहँ कोई॥
35 जानहिँ भवँर जो तेहि पँथ लूटे। जीउ दीन्ह अउ दिएउ न छूटे॥
कठिन आहि सिंघल कर राजू। पाइअ नाहिँ राज के साजू॥
ओहि पँथ जाइ जो होइ उदासी। जोगी जती तपा सनिआसी॥
जोग जोरि वह पाइत भोगू। तजि सो भोग कोइ करत न जोगू॥
तुम्ह राजा चाहहु सुख पावा। जोगी भोगिहि कित बनि आवा॥

साधहि सिद्धि न पाइअ जउ लहि साध न तप्प ।
सो पइ जानइ बापुरा सीस जो करइ कलप्प ॥ १२५ ॥ 40

का भा जोग कहानी कथे । निकसु न घीउ बाजु दधि मथे ॥
जउ लहि आप हेराइ न कोई । तउ लहि हेरत पाउ न सोई ॥
पेम पहार कठिन विधि गढा । सो पइ चढइ सीस सउँ चढा ॥
पंथ सूरि कर उठा अँकूरू । चोर चढइ कइ चढ मनसूरू ॥
तुइँ राजा का पहिरसि कंथा । तोर-इ घरहि माँझ दस पंथा ॥ 45
काम करोध तिसिना मद माया । पाँच-उ चोर न छाडहिँ काया ॥
नउ सेँधइ जेहि घर मँझिआरा । घर मूसहिँ निसि कइ उँजिआरा ॥
अजहूँ जाग अजाना होत आउ निसि भोर ।
पुनि किछु हाथ न लागिहइ मूसि जाहिँ जब चोर ॥ १२६ ॥

सुनि सो बात राजा मन जागा । पलक न मार टकटका लागा ॥
नयनहिँ ढरहिँ मोति अउ मूँगा । जस गुड खाइ रहा होइ गूँगा ॥ 50
हिअ कइ जोति दीप वह सूझा । यह जो दीप अँधेरा बूझा ॥
उलटि दिसिटि माया सउँ रूठी । पलटि न फिरइ जानि कइ झूठी ॥
जउ पइ नाहीँ असथिर दसा । जग उजार का कीजिअ बसा ॥
गुरू बिरह-चिनगी पइ मेला । जो सुलगाइ लेइ सो चेला ॥
अब कइ पनिग भिरिँग कइ करा । भवँर होउँ जेहि कारन जरा ॥ 55
फूल फूल फिरि पूँछउँ जो पहुँचउँ वह केत ।
तन नेउछाउरि कइ मिलउँ जउँ मधुकर जिउ देत ॥ १२७ ॥

इति पेम खंड ॥ ११ ॥

अथ जोगी खंड ॥ १२ ॥

तजा राज राजा भा जोगी। अउ किँगरी कर गहेउ बिओगी ॥
तन बिसँभर मन बाउर लटा। उरुझा पेम परी सिर जटा ॥
चंद-बदन अउ चंदन देहा। भसम चढ़ाइ कीन्ह तन खेहा ॥
मेखल सीँगी चकर धँधारी। जोगोटा रुदराछ अधारी ॥
5 कंथा पहिरि डंड कर गहा। सिद्ध होइ कहँ गोरख कहा ॥
मुँदरा स्रवन कंठ जप-माला। कर उदपान काँध बघ-छाला ॥
पावँरि पाँय लीन्ह सिर छाता। खप्पर लीन्ह भेस कइ राता ॥
चला भुगुति माँगइ कहँ साजि कया तप जोग।
सिद्ध होउँ पदुमावति (पाए) हिरदइ जेहि क बिओग ॥ १२८ ॥

गनक कहहिँ गनि गवँन न आजू। दिन लेइ चलहु होइ सिध काजू ॥
10 पेम-पंथ दिन घडी न देखा। तब देखइ जब होइ सरेखा ॥
जेहि तन पेम कहाँ तेहि माँसू। कया न रकत न नयनन्ह आँसू ॥
पंडित भूल न जानइ चालू। जीउ लेत दिन पूँछ न कालू ॥
सती कि बउरी पूँछइ पाँडे। अउ घर पइठि न सइँतइ भाँडे ॥
मरइ जो चलइ गंग-गति लेई। तेहि दिन कहाँ घडी को देई ॥
15 मइँ घर-बार कहाँ कर पावा। घर काया पुनि अंत परावा ॥
हउँ रे पखेरू पंखी जेहि बन मोर निबाहु।
खेलि चला तेहि बन कहँ तुम्ह आपन घर जाहु ॥ १२६ ॥

चहुँ दिस आनि साँटिया फेरी। भइ कटकाई राजा केरी॥
जावँत अहहिँ सकल उरगाना। साँबर लेहु दूर हइ जाना॥
सिंघल-दीप जाइ सब चाहा। मोल न पाउब जहाँ बेसाहा॥
सब निबहइ तहँ आपुन साँटी। साँटी बिनु सो रह मुख माटी॥ 20
राजा चला साजि कइ जोगू। साजउ बेगि चलउ सब लोगू॥
गरब जौ चढेहु तुरइ कइ पीठी। अब भुइँ चलहु सरग सउँ डीठी॥
मंतर लेहु होहु सँग-लागू। गुदर जाइ सब होहिहिँ आगू॥
　　का निचिंत रे मानुसइ अपनी चिंता आछ।
　　लेहु सजुग होइ अगुमन पुनि पछिताउ न पाछ॥ १३०॥
बिनवँइ रतन-सेन कइ माया। माथइ छात पाट निति पाया॥ 25
बेलसहु नउ लख लच्छि पिआरी। राज छाडि जनि होहु भिखारी॥
निति चंदन लागइ जेहि देहा। सो तन देखि भरत अब खेहा॥
सब दिन रहेहु करत तुम्ह भोगू। सो कइसइ साधब तप जोगू॥
कइसइ धूप सहब बिनु छाँहा। कइसइ नीँद परिहि भुइँ माँहा॥
कइसइ ओढब काँथरि कंथा। कइसइ पाउँ चलब तुम्ह पंथा॥ 30
कइसइ सहब खनहि खन भूखा। कइसइ खाब कुरुकुटा रूखा॥
　　राज पाट दर परिगह तुम-हीँ सउँ उँजिआर।
　　बइठि भोग रस मानहु कइ न चलहु अँधिआर॥ १३१॥
मोहिँ यह लोभ सुनाउ न माया। का कर सुख का कर यह काया॥
जौ निआन तन होइहि छारा। माटी पोखि मरइ को भारा॥
का भूलउँ एहि चंदन चोवा। बइरी जहाँ अंग के रोवाँ॥ 35
हाथ पाउँ सरवन अउ आँखी। ए सब भरहिँ आपु पुनि साखी॥
सूत सूत तन बोलहिँ दोखू। कहु कइसइ होइहि गति मोखू॥
जउ भल होत राज अउ भोगू। गोपिचंद नहिँ साधत जोगू॥
उहउ सिसिटि जउ देख परेवा। तजा राज कजरी-बन सेवा॥

देखि अंत अस होइहइ गुरू दीन्ह उपदेस ।
40 सिंघल-दीप जाब मइँ माता मोर अदेस ॥ १३२ ॥

रोअहिँ नाग-मती रनिवासू । केइ तुम्ह कंत दीन्ह बन-बासू ॥
अब को हमहिँ करिहि भोगिनी । हम-हूँ साथ होब जोगिनी ॥
कइ हम लावहु अपनइ साथा । कइ अब मारि चलहु सइँ हाथा ॥
तुम्ह अस बिछुरइ पीउ पिरीता । जहवाँ राम तहाँ सँग सीता ॥
45 जब लहि जिउ सँग छाड न काया । करिहउँ सेव पखरिहउँ पाया ॥
भलेहि पदुमिनी रूप अनूपा । हम तइँ कोइ न आगरि रूपा ॥
भवँइ भलहिँ पुरुखन्ह कइ डीठी । जिन्ह जाना तिन्ह दीन्ह न पीठी ॥

देहिँ असीस सबइ मिलि तुम्ह माँथइ निति छात ।
राज करहु गढ चितउर राखहु पिअ अहिवात ॥ १३३ ॥

तुम्ह तिरिआ मति हीन तुम्हारी । मूरुख सो जो मतइ घर नारी ॥
50 राघउ जो सीता सँग लाई । राओंन हरी कउन सिधि पाई ॥
यह संसार सुपन जस मेरा । अंत न आपन को कँहि केरा ॥
राजा भरथरि सुनि न अजानी । जेहि के घर सोरह सइ रानी ॥
कुचन्ह लिए तरवा सोहराई । भा जोगी कोउ संग न लाई ॥
जोगिहि कहा भोग सउँ काजू । चहइ न मेहरी चहइ न राजू ॥
55 जूड कुरुकुटा पइ भखु चहा । जोगिहि तात भात सउँ कहा ॥

कहा न मानइ राजा तजी सबाईं भीर ।
चला छाडि सब रोअत फिरि कइ देइ न धीर ॥ १३४ ॥

रोअइ मता न बहुरइ बारा । रतन चला जग भा अँधियारा ॥
बार मोर रज बाउर-रत्ता । सो लेइ चला सुआ परबत्ता ॥
रोअहिँ रानी तजहिँ पराना । फोरहिँ बलइँ करहिँ खरिहाना ॥
60 [illegible] । अब हम का कहँ करब सिँगारू ॥
जा [illegible] । चला का कर यह जीऊ ॥

मरइ चहहिँ पइ मरइ न पावहिँ । उठइ आगि सब लोग बुझावहिँ ॥
घरी एक सुठि भएउ अँदोरा । पुनि पाछइ बीता होइ रोरा ॥
टूट मनइ नउ मोती फूट मनइ दस काँच ।
लीन्ह समेटि सब अभरन होइ गा दुख कर नाँच ॥ १२५ ॥
निकसा राजा सिंगी पूरी । छाडि नगर मेला होइ दूरी ॥ 65
राए रंक सब भए बिओगी । सोरह सहस कुअँर भए जोगी ॥
माया मोह हरी सइँ हाथा । देखेन्हि बूझि निआन न साथा ॥
छाडेन्हि लोग कुटुँब सब कोऊ । भए निनार दुख सुख तजि दोऊ ॥
सवँरइ राजा सोई अकेला । जेहि रे पंथ खेलइ होइ चेला ॥
नगर नगर अउ गाउँहि गावाँ । चला छाडि सब ठाउँहि ठावाँ ॥ 70
का कर घर का कर मढ-माया । ता कर सब जा कर जिउ काया ॥
चला कटक जोगिन्ह कर कइ गेरुआ सब भेसु ।
कोस बीस चारि-हुँ दिसि जानउँ फूला टेँसु ॥ १२६ ॥
आगइ सगुन सगुनिअइ ताका । दहिउ माँछ रूपइ कर टाका ॥
भरे कलस तरुनी चलि आई । दहिउ लेहु ग्वालिनि गोहराई ॥
मालिनि आइ मउर लेइ गाँथइ । खंजन बइठु नाग कै माँथइ ॥ 75
दहिनइ मिरिग आइ गा धाई । प्रतीहार बोला खर बाईँ ॥
बिरिख सवँरिआ दाहिन बोला । बाईँ दिसि गीदर ताँ डोला ॥
बाएँ अकासी धोबइनि आई । लोवा दरस आइ देखराई ॥
बाएँ कुररी दहिनइ कूचा । पहुँचइ भुगुति जइस मन रूचा ॥
जा कहँ सगुन होहिँ अस अउ गवँनइ जेहि आस ।
असट-उ महासिद्धि तेहि जस कबि कहा बिआस ॥ १२७ ॥ 80
भएउ पयान चला पुनि राजा । सिंगि-नाद जोगिन्ह कर बाजा ॥
कहहिँ आजु किछु थोर पयाना । काल्हि पयान दूरि हइ जाना ॥
ओहि मेलान जउ पहुँचइ कोई । तब हम कहब पुरुख भल सोई ॥

हहिँ आगइ परबत कइ पाटी। बिखम पहार अगम सुठि घाटी ॥
८५ बिच बिच नदी खोह अउ नारा। ठाउँहि ठाउँ उठहिँ बटपारा ॥
हनुवँत केर सुनब पुनि हाँका। दहुँ को पार होइ को थाका ॥
अस मन जानि सँभारहु आगू। अगुआ केर होहु पछ-लागू ॥
करहिँ पयान भोर उठि पंथ कोस दस जाहिँ।
पंथी पंथा जे चलहिँ ते का रहहिँ ओनाहिँ ॥ १३८ ॥
करहु दिसिटि थिर होहु बटाऊ। आगू देखु धरहु भुइँ पाऊ ॥
९० जो रे उबट होइ परहिँ भुलाने। गए मारे पँथ चलहिँ न जाने ॥
पायन्ह पहिरि लेहु सब पवँरी। काँट चुभइ न गडइ अँकरवरी ॥
परेउ आइ अब बन-खँड माहाँ। डंडाकरन बीझ-बन जाहाँ ॥
सघन ढाँख-बन चहुँ दिसि फूला। बहु दुख मिलिहि उहाँ कर भूला ॥
झाँखर जहाँ सो छाडहु पंथा। हिलगि मकोइ न फारहु कंथा ॥
९५ दहिनइ बिदर चँदेरी बाएँ। दहुँ केहि होब बाट दुहुँ ठाएँ ॥
एक बाट गइ सिंघल दोसर लंक समीप।
हहिँ आगइ पँथ दूअऊ दहुँ गवँनब केहि दीप ॥ १३९ ॥
तत-खन बोला सुआ सरेखा। अगुआ सोई पंथ जेइ देखा ॥
सो का उडइ न जेहि तन पाँखू। लेइ सो पलासहि बोडइ साखू ॥
जस अंधा अंधइ कर संगी। पंथ न पाउ होइ सह-संगी ॥
१०० सुनु मति काज चहसि जउ साजा। बीजा-नगर बिजइ-गिरि राजा ॥
पूँछहु जहाँ गोँड अउ कोला। तजु बाएँ अँधिआर खटोला ॥
दक्खिन दहिनइ रहहिँ तिलंगा। उत्तर माँझहि करहकटंगा ॥
माँझ रतनपुर सीह-दुआरा। झारखंड देइ बाउँ पहारा ॥
आगइ बाउँ उडइसा बाएँ देहु सो बाट।
दहिनावरत देइ कइ उतरु समुद के घाट ॥ १४० ॥

इति जोगी खंड ॥ १२ ॥

अथ राजा-गजपति-संवाद खंड ॥ १३ ॥

होत पयान जाइ दिन केरा । मिरगारन महँ होत बसेरा ॥
कुस-साँथरि भइ सेज सुपेती । करवट आइ बनी भुइँ सेती ॥
कया मइल तस पुहुमि मलीजइ । चालि दस कोस ओस तन भीजइ ॥
ठावँ ठावँ सब सोअहिँ चेला । राजा जागइ आपु अकेला ॥
जेहि के हिअइ पेम-रँग जामा । का तेहि भूख नीँद बिसरामा ॥ 5
बन अँधिआर रइनि अँधिआरी । भादउ बिरह भएउ अति भारी ॥
किँगरी हाथ गहे बइरागी । पाँच तंत धुनि यह एक लागी ॥
नयन लागु तेहि मारग पदुमावति जेहि दीप ।
जइस सेवातिहि सेवइ बन चातक जल सीप ॥ १४१ ॥

मासेक लाग चलत तेहि बाटा । उतरे जाइ समुद के घाटा ॥
रतन-सेन भा जोगी जती । सुनि भेँटइ आवा गज-पती ॥ 10
जोगी आपु कटक सब चेला । कवन दीप कहँ चाहहिँ खेला ॥
भलेहिँ आए अब माया कीजिअ । पहुनाई कहँ आएसु दीजिअ ॥
सुनहु गज-पती उतरु हमारा । हम तुम्ह एक-इ भाउ निनारा ॥
नेवतहु तेहि जेहि महँ यह भाऊ । जो निरभउ तेहि लाउ नसाऊ ॥
इह-इ बहुत जउ बोहित पावउँ । तुम्ह तइँ सिंघल-दीप सिधावउँ ॥ 15
जहाँ मोहिँ निजु जाना कटक होउँ लेइ पार ।
जउ रे जिअउँ तब लेइ फिरउँ मरउँ त ओहि के बार ॥ १४२ ॥

गज-पति कहा सीस पर माँगा। प्रतनी बोलि न होइहि खाँगा॥
ए सब देउँ आनि नउ-गढे। फूल सोई जो महेसहि चढे॥
पइ गोसाइँ सउँ एक बिनाती। मारग कठिन जाब केहि भाँती॥
20 सात समुदर असूझ अपारा। मारहिँ मगर मच्छ घरिआरा॥
उठइ लहरि नहिँ जाइ सँभारी। भागहिँ कोइ निबहइ बइपारी॥
तुम्ह सुखिआ अपनइ घर राजा। प्रत जोखीउँ सहहु केहि काजा॥
सिंघल-दीप जाइ सो कोई। हाथ लिए आपन जिउ होई॥
खार खीर दधि जल-उदधि सुर किलकिला अकूत।
को चढि नाँघइ समुद ए (सात-उ) हइ का कर अस बूत॥ १४३॥
25 गज-पति यह मन-सकती सीऊ। पइ जेहि पेम कहाँ तेहि जीऊ॥
जो पहिलइ सिर देइ पगु धरई। मूए केरि मीचु का करई॥
सुख सँकलपि दुख साँवरि लीन्हा। तउ पयान सिंघल कहँ कीन्हा॥
भवँर जान पइ कवँल पिरीती। जेहि महँ बिथा पेम कइ बीती॥
अउ जेइ समुद पेम कर देखा। तेइ प्रहि समुद बूँद परि-लेखा॥
30 सात समुद सत कीन्ह सँभारू। जउ धरती का गरुअ पहारू॥
जेइ पइ जिउ बाँधा सत बेरा। बरु जिउ जाइ फिरइ नहिँ फेरा॥
रंग नाथ हउँ जा कर हाथ ओही के नाथ।
गहे नाथ सो खाँचई फेरत फिरइ न माथ॥ १४४॥
पेम-समुदर अइस अउगाहा। जहाँ न वार न पार न थाहा॥
जउ वह समुद गाह प्रहि परे। जउ अउगाह हंस हिअ तरे॥
35 हउँ पदुमावति कर भिख-मंगा। दिसिटि न आउ समुद अउ गंगा॥
जेहि कारन गिउ काँथरि-कंथा। जहाँ सो मिलइ जाउँ तेहि पंथा॥
अब प्रहि समुद परेउँ होइ मरा। पेम मोर पानी कइ करा॥
मर होइ बहा कतहुँ लेइ जाऊ। ओहि के पंथ कोउ धरि खाऊ॥
अस मन जानि समुद महँ परऊँ। जउ कोइ खाइ बेगि निसतरऊँ॥

सरग सीस धर धरती हिआ सो पेम-समुंद।
नयन कउडिआ होइ रहे लेइ लेइ उठहिँ सो बुंद ॥ १४५ ॥ 40

कठिन विओग जोग दुख-दाहू। जरत मरत होइ ओर निवाहू ॥
डर लजा तहँ दुअ-उ गवाँनी। देखइ किछू न आगि न पानी ॥
आगि देखि ओहि आगइ धावा। पानि देखि तेहि सउँह धसावा ॥
जस बाउर न बुझाए बूझा। जउनहि भाँति जाइ का सूझा ॥
मगर मच्छ डर हिअइ न लेखा। आपुहि चहइ पारभा देखा ॥ 45
अउ न खाहिँ ओहि सिंघ सेँ दूरा। काठ-हु चाहि अधिक सो झूरा ॥
काया माया संग न आथी। जेहि जिउ सउँपा सोई साथी ॥
जो किछु दरब अहा सँग दान दीन्ह संसार।
का जानी केहि सत सती दइउ उतारइ पार ॥ १४६ ॥

धनि जीअन अउ ता कर हीआ। ऊँच जगत महँ जा कर दीआ ॥
दिआ सो सब जप तप उपराहीँ। दिआ बराबर जग किछु नाहीँ ॥ 50
एक दिआ तइँ दस-गुन लाहा। दिआ देखि सब जग मुख चाहा ॥
दिआ करइ आगइ उँजिआरा। जहाँ न दिआ तहाँ अँधिआरा ॥
दिआ मँदिर निसि करइ अँजोरा। दिआ नाहिँ घर मूसहिँ चोरा ॥
हातिम करन दिआ जो सीखा। दिआ रहा धरमिन्ह महँ लीखा ॥
दिआ सो काज दुहूँ जग आवा। इहाँ जो दिआ ओही जग पावा ॥ 55
निरमर पंथ कीन्ह तिन्ह जिन्ह रे दिआ किछु हाथ।
किछु न कोइ लेइ जाइहि दिआ जाइ पइ साथ ॥ १४७ ॥

सत न डोल देखा गज-पती। राजा दत्त सत्त दुहुँ सती ॥
आपुन नाहिँ कया पइ कंथा। जीउ दीन्ह अगुमन तेहि पंथा ॥
निहचइ चला भरम डर खोई। साहस जहाँ सिद्ध तहँ होई ॥
निहचइ चला छाडि कइ राजू। बोहित दीन्ह दीन्ह सब साजू ॥ 60
चढा बेगि अउ बोहित पेले। धनि वेइ पुरुख पेम-पँथ खेले ॥

पेम-पंथ जउ पहुँचइ पारा। बहुरि न आइ मिलइ तेहि छारा॥
तिन्ह पावा ऊतिम कबिलासू। जहाँ न मीचु सदा सुख बासू॥
एहि जीअन कइ आस का जस सपना तिल आधु।
मुहमद जिअत-हि जे मुए तिन्ह पुरुखन्ह कहँ साधु॥ १४८॥

इति राजा-गजपति-संवाद खंड॥ १३॥

अथ बोहित खंड ॥ १४ ॥

जस रथ रेंगि चलइ गज ठाटी । बोहित चले समुद गे पाटी ॥
धावहिँ बोहित मन उपराहीँ । सहस कोस एक पल महँ जाहीँ ॥
समुद अपार सरग जनु लागा । सरग न घालि गनइ बइरागा ॥
ततखन चाल्ह एक देखरावा । जनु धवला-गिरि परवत आवा ॥
उठी हिलोर जो चाल्ह नराजी । लहरि अकास लागि भुइँ बाजी ॥ 5
राजा सेँति कुअँर सब कहहीँ । अस अस मच्छ समुद महँ अहहीँ ॥
तेहि रे पंथ हम चाहहिँ गवँना । होहु सँजूत बहुरि नहिँ अवना ॥

गुरु हमार तुम्ह राजा हम चेला तुम्ह नाथ ।
जहाँ पाउँ गुरु राखइ चेला राखइ माँथ ॥ १४६ ॥

केवट हँसे सो सुनत गवेँजा । समुद न जानु कुआँ कर मेँजा ॥
यह तउ चाल्ह न लागइ कोहू । का कहिहहु जब देखिहहु रोहू ॥ 10
अब-हीँ तइँ तुम्ह देखे नाहीँ । जेहि मुख अइसे सहस समाहीँ ॥
राज-पंखि तेहि पर मेँडराहीँ । सहस कोस जेहि कइ परिछाहीँ ॥
जेइ वेइ मच्छ ठोर गहि लेहीँ । सावक-मुख चारा लेइ देहीँ ॥
गरजइ गगन पंखि जउ बोलहिँ । डोलहिँ समुद डयन जउ डोलहिँ ॥
तहाँ न चाँद न सुरुज असूझा । चढइ सो जो अस अगुमन बूझा ॥ 15

दस महँ एक जाइ कोइ करम धरम सत नेम ।
बोहित पार होइहि जउ तउ कूसल अउ खेम ॥ १५० ॥

राजइ कहा कीन्ह सो पेमा । जेहि रे कहाँ कर कूसल खेमा ॥
तुम्ह खेवहु जउ खेवइ पारहु । जइसइ आपु तरहु मोहि तारहु ॥
मोँहि कुसल कर सोच न ओता । कुसल होत जउ जनम न होता ॥
२० धरती सरग जाँत पट दोऊ । जो तेहि बिच जिउ बाँच न कोऊ ॥
हउँ अब कुसल एक पइ माँगउँ । पेम-पंथ सत बाँधि न खाँगउँ ॥
जउ सत हिअ तउ नयनहि दीआ । समुद न डरइ पइठि मरजीआ ॥
तहँ लगि हेरउँ समुद ढिंढोरी । जहँ लगि रतन पदारथ जोरी ॥
सपत पतार खोजि जस काढेउ बेद गरंथ ।
सात सरग चढ़ि धावउँ पदुमावति जेहि पंथ ॥ १५१ ॥

इति बोहित खंड ॥ १४ ॥

अथ सात-समुद्र खंड ॥ १५ ॥

सायर तरइ हिअइ सत पूरा । जउ जिउ सत कायर पुनि सूरा ॥
तेहि सब बोहित पूर चलाए । जेहि सत पवन पंख जनु लाए ॥
सत साथी सत गुरु सहिवारू । सतइ खेइ लेइ लावइ पारू ॥
सतइ ताकु सब आगू पाछू । जहँ जहँ मगर मच्छ अउ काछू ॥
उठइ लहरि जनु ठाढ पहारा । चढइ सरग अउ परइ पतारा ॥ 5
डोलहिँ बोहित लहरइँ खाहीँ । खन तरकाहिँ खन होहिँ उपराहीँ ॥
राजइ सो सत हिरदइ बाँधा । जेहि सत टेकि करइ गिरि काँधा ॥

खार समुद सो नाँघा आग्र समुद जहँ खीर ।
मिले समुद वेइ सात-उ बेहर बेहर नीर ॥ १५२ ॥

खीर-समुद का बरनउँ नीरू । सेत सरूप पिअत जस खीरू ॥
उलथहिँ मानिक मोती हीरा । दरब देखि मन होइ न थीरा । 10
मनुआ चाह दरब अउ भोगू । पंथ भुलाइ बिनासइ जोगू ॥
जोगी मनहिँ उह-इ रिस मारइ । दरब हाथ कइ समुद पबारइ ॥
दरब लेइ सो असथिर राजा । जो जोगी तेहि के केहि काजा ॥
पंथिहि पंथ दरब रिपु होई । ठग बटपार चोर सँग सोई ॥
पंथी सो जो दरब सउँ रूसे । दरब समेटि बहुत अस मूसे ॥ 15

खीर-समुद सब नाँघा आग्र समुद दधि माँह ।
जो हहिँ नेह क बाउर ना तेहि धूप न छाँह ॥ १५३ ॥

ये समुदर देखत तस डहा। पेम क लुबुध दगध इमि सहा॥
. जौं डाढा धनि वह जीऊ। दधि जमाइ मँथि काढइ घीऊ॥
दधि एक बूँद जाम सब खीरू। काँजी बूँद बिनासइ नीरू॥
20 साँस डीढ़ मन-मँथनी गाढी। हिअइ चोट बिनु फूट न साढी॥
जेहि जिउ पेम चँदन तेहि आगी। पेम बिहून फिरइ डरि भागी॥
पेम क आगि जरइ जउ कोई। ता कर दुख न अँबिरथा होई॥
जो जानइ सत आपुहि जारा। निसत हिअइ सत करइ न पारा॥
दधि समुंद पुनि पार भे पेमहि कहाँ सँभार।
भावइ पानी सिर परइ भावइ परहिं अँगार॥ १५४॥
25 आए उदधि समुदर अपारा। धरती सरग जरइ तेहि झारा॥
आगि जौं उपनी उह-इ समुंदा। लंका जरी उह-इ एक बुंदा॥
बिरह जौं उपना उह-ई काढा। खन न बुझाइ जगत तस बाढा॥
जिन्ह सौं बिरह तेहि आगि न डीठी। सउँह जरइ फिरि देइ न पीठी॥
जग महँ कठिन खरग कइ धारा। तेहि तइँ अधिक बिरह कइ झारा॥
30 अगम पंथ जउ अइस न होई। साधि किए पावइ सब कोई॥
तेहि रे समुद महँ राजा परा। चहइ जरा पइ रोवँ न जरा॥
तलफइ तेल कराह जिमि इमि तलफइ सब नीर।
यह जौं मलय-गिरि पेम का बेधा समुद समीर॥ १५५॥
सुरा समुद महँ राजा आवा। महुआ मद-छाता देखरावा॥
जो तेहि पिअइ सौं भावँरि लेई। सीस फिरइ पँथ पइगु न देई॥
35 पेम-सुरा जेहि के जिअ माहाँ। कित बइठइ महुआ की छाहाँ॥
गुरु के पास दाख रस रसा। बइरी बबुर मारि मन कसा॥
बिरहइ दगधि कीन्ह तन भाठी। हाड जराइ दीन्ह जस काठी॥
नयन नीर सउँ पोती किआ। तस मद चुआ बरा जउँ दिआ॥
बिरह सुरागनि भूँजइ माँसू। गिरि गिरि परहिं रकत कइ आँसू॥

मुहमद मद जो परेम का गए दीप तहँ राखि।
सीस न देइ पतंग होइ तउ लहि जाइ न चाखि ॥ १५६ ॥ 40

पुनि किलकिला समुद महँ आए। गा धीरज देखत डरु खाए ॥
भा किलकिल अस उठइ हलोरा। जनु अकास टूटइ चहुँ ओरा ॥
उडइ लहरि परबत कइ नाईँ। होइ फिरइ जोजन लख ताईँ ॥
धरती लेत सरग लहि बाढा। सकल समुद जानउँ भा ठाढा ॥
नीर होइ तर ऊपर सोई। महा-अरंभ समुद जस होई ॥ 45
फिरत समुद जोजन लख ताका। जइसइ फिरइ कोम्हार क चाका ॥
भा परलउ निअराना जउ-हीँ। मरइ सो ता कहँ परलउ तउ-हीँ ॥
गइ अउसान सबहिँ कइ देखि समुद कइ बाढि।
निअर होत जनु लीलइ रहा नयन अस काढि ॥ १५७ ॥

हीरा-मनि राजा सउँ बोला। इह-ई समुद आहि सत-डोला ॥
सिंघल-दीप जो नाहिँ निबाहू। इह-इ ठावँ साँकर सब काहू ॥ 50
इह-इ किलकिला समुद गँभीरू। जेहि गुन होइ सो पावइ तीरू ॥
इह-इ समुदर-पंथ मँझ-धारा। खाँडइ कइ असि धार निरारा ॥
तीस सहसर कोस कइ पाटा। तस साँकर चलि सकइ न चाँटा ॥
खाँडइ चाहि पइनि पइनाई। बार चाहि पातरि पतराई ॥
इह-इ ठावँ कहँ गुरु सँग लीजिअ। गुरु सँग होइ पार तउ कीजिअ ॥ 55
मरन जिअन एही पँथ एही आस निरास।
परा सो गएउ पतारहि तरा सो गा कबिलास ॥ १५८ ॥

राजइ दीन्ह कटक कहँ बीरा। सु-पुरुख होहु करहु मन धीरा ॥
ठाकुर जेहि क सूर भा कोई। कटक सूर पुनि आपु-हि होई ॥
जउ लहि सती न जिउ सत बाँधा। तउ लहि देइ कहार न काँधा ॥
पेम-समुद महँ बाँधा बेरा। एइ सब समुद बूँद जेहि केरा ॥ 60
ना हउँ सरग क चाहउँ राजू। ना मोहिँ नरक सितेँ किछु काजू ॥

चाहउँ ओहि कर दरसन पावा । जेइ मोहि आनि पेम-पँथ लावा ॥
काठहि काह गाढ़ का ढीला । बूड न समुद मगर नहिं लीला ॥
गाहि समुदर धसि लीन्हेसि भा पाछइ सब कोइ ।
कोइ काहू न सँभारई आपुनि आपुनि होइ ॥ १५६ ॥

65 कोइ बोहित जस पवन उडाहीं । कोई चमकि बीजु घर जाहीं ॥
कोई जस भल धाव तुरंगारू । कोई अइस बइल गरिआरू ॥
कोई हरुअ जानु रथ हाँका । कोई गरुअ भार होइ थाका ॥
कोई रेंगहिं जानउँ चाँटी । कोई टूटि होहिं सरि माटी ॥
कोई खाहिं पवन कर झोला । कोई करहिं पात घर डोला ॥
70 कोई परहिं भवँर जल माँहा । फिरत रहहिं कोइ देइ न बाँहा ॥
राजा कर भा अगुमन खेवा । खेवक आगइ सुआ परेवा ॥
कोइ दिन मिला सबेरई कोइ आवा पछ-राति ।
जा कर जो हुत साजु जस सो उतरा तेहि भाँति ॥ १६० ॥

सतएँ समुद मानसर आए । सत जो कीन्ह सहस सिधि पाए ॥
देखि मानसर रूप सोहावा । हिअ हुलास पुरइनि होइ छावा ॥
75 गा अँधिआर रहनि मसि छूटी । भा भिनुसार किरिन रवि फूटी ॥
असतु असतु साथी सब बोले । अंध जो अहे नयन विधि खोले ॥
कवँल बिगसि तहँ बिहँसी देही । भवँर दसन होइ होइ रस लेही ॥
हँसहिं हंस अउ करहिं किरीरा । चुनहिं रतन मुकुताहलि हीरा ॥
जो अस साधि आव तप जोगू । पूजइ आस मान रस भोगू ॥
भवँर जो मनसा मानसर लीन्ह कवँल रस आइ ।
80 घुन जो हिआउ न कइ सका झूर काठ तस खाइ ॥ १६१ ॥

इति सात-समुदर खंड ॥ १५ ॥

अथ सिंघल-दीप-भाउ खंड ॥ १६ ॥

पूँछा राजइ कहु गुरु सुआ। न जनउँ आजु कहा दहु उआ ॥
पवन बास सीतल लेइ आवा। काया दहत चँदन जनु लावा ॥
कब-हुँ न अइस जुडान सरीरू। परा अगिनि महँ मलय-समीरू ॥
निकसत आउ किरिन रबि रेखा। तिमिर गए निरमर जग देखा ॥
उठइ मेघ अस जानउँ आगइ। चमकइ बीजु गगन पर लागइ ॥ 5
तेहि ऊपर जनु ससि परगासा। अउ सो चाँद कचपची गरासा ॥
अउरु नखत चहुँ दिसि उँजिआरी। ठावँहिँ ठावँ दीप अस बारी ॥
अउरु दखिन दिसि निअर-हि कंचन मेरु देखाउ।
जनु बसंत रितु आवइ तस बसंत जग आउ ॥ १६२ ॥

तूँ राजा जस बिकरम आदी। तूँ हरिचंद बइनु सत-बादी ॥
गोपिचंद तुहँ जीता जोगा। अउ भरथरी न पूज बिओगा ॥ 10
गोरख सिद्धि दीन्ह तोहि हाथू। तारी गुरू मछंदर-नाथू ॥
जीता पेम तेँ पुहुमि अकासू। दिसिटि परा सिंघल कबिलासू ॥
बेइ जो मेघ गढ लाग अकासा। बिजुरी कनइ कोट चहुँ पासा ॥
तेहि पर ससि जो कचपचि भरा। राज-मँदिर सोनइ नग जरा ॥
अउर-उ नखत कहेसि चहुँ पासा। सब रानिन्ह कइ आहि अबासा ॥ 15
गगन सरोवर ससि कवँल कुमुद तराइँ पास।
तूँ रबि ऊआ भवँर होइ पवन मिला लेइ बास ॥ १६३ ॥

सो गढ़ देखु गगन तइँ ऊँचा । नयन देखि कर नाहिँ पहूँचा ॥
बिजुरी चक्र फिरहिँ चहुँ फेरे । अउ जमकात फिरहिँ जम केरे ॥
धाइ जो बाजा कइ मन साधा । मारा चक्र भएउ दुइ आधा ॥
२० चाँद सुरुज अउ नखत तराईँ । तेहि डर अँतरिख फिरहिँ सबाईँ ॥
पवन जाइ तहँ पहुँचा चहा । मारा तइस टूटि भुइँ रहा ॥
अगिनि उठी जरि बुझी निआना । धुआँ उठा उठि बीच बिलाना ॥
पानि उठा तहँ जाइ न छूआ । बहुरा रोइ आइ भुइँ चूआ ॥
रावन चहा सउँह कइ (हरा) उतरि गए दस माथ ।
संकर धरा ललाट भुइँ अउरु को जोगी-नाथ ॥ १६४ ॥
२५ तहाँ देखु पदुमावति रामा । भवँर न जाइ न पंखी नामा ॥
अब सिधि एक देउँ तोहि जोगू । पहिलइ दरस होइ तउ भोगू ॥
कंचन मेरु देखावसि जहाँ । महादेव कर मंडप तहाँ ॥
ओहि क खंड जस परबत मेरू । मेरु-हि लागि होइ अति फेरू ॥
माघ मास पाछिल पख लागे । सिरी पंचमी होइहि आगे ॥
३० उघरिहि महादेव कर बारू । पूजइ जाइ सकल संसारू ॥
पदुमावति पुनि पूजइ आवा । होइहि ओहि मिसु दिसिटि मेरावा ॥
तुम्ह गवँनहु ओहि मंडप हउँ पदुमावति पास ।
पूजइ आइ बसंत जउ तउ पूजिहि मन आस ॥ १६५ ॥
राजइ कहा दरस जउ पावउँ । परबत काह गगन कहँ धावउँ ॥
जेहि परबत पर दरसन लहना । सिर सउँ चढउँ पाउँ का कहना ॥
३५ मो-हूँ भाउ ऊँच सउँ ठाऊँ । ऊँचइ लेउँ पिरीतम नाऊँ ॥
पुरुखहि चाहिय ऊँच हियाऊ । दिन दिन ऊँचइ राखइ पाऊ ॥
सदा ऊँच पइ सेइअ बारू । ऊँचइ सउँ कीजिअ बेवहारू ॥
ऊँचइ चढइ ऊँच खँड सूझा । ऊँचइ पास ऊँच मति बूझा ॥
ऊँचइ संग सँगति निति कीजिअ । ऊँचइ लाइ जीउ पुनि दीजिअ ॥

दिन दिन ऊँच होइ सो जेहि ऊँचइ पर चाउ ।
ऊँच चढ़त जउ खसि परइ ऊँच न छाँडिअ काउ ॥ १६६ ॥ 40

हीरा-मनि देइ बचा कहानी । चलेउ जहाँ पदुमावति रानी ॥
राजा चलेउ सवँरि सो लता । परबत कहँ जो चलेउ परबता ॥
का परबत चढि देखइ राजा । ऊँच मँडप सोनइ सब साजा ॥
अँमित फल सब लागु अपूरी । अउ तहँ लागु सजीअनि मूरी ॥
चउ-मुख मंडप चहूँ केवारा । बइठे देवता चहूँ दुआरा ॥ 45
भीतर मँडप चारि खँभ लागे । जिन्ह वेइ छुअइ पाप तिन्ह भागे ॥
संख घंट घन बाजहिँ सोई । अउ बहु होम जाप तहँ होई ॥
महादेव कर मंडप जगत जातरा आउ ।
जस हीँछा मन जेहि कइ सो तइसइ फल पाउ ॥ १६७ ॥

इति सिंघल-दीप-भाउ खंड ॥ १६ ॥

अथ मंडप-गवँन खंड ॥ १७ ॥

राजा बाउर बिरह बिओगी। चेला सहस तीस सँग जोगी ॥
पदुमावति के दरसन आसा। दँडवत कीन्ह मँडप चहुँ पासा ॥
पुरुब बार होइ कइ सिर नावा। नावत सीस देव पहँ आवा ॥
नमो नमो नारायन देवा। का मोहिँ जोग सकउँ कइ सेवा ॥
5 तुइँ दयाल सब के उपराहीँ। सेवा केरि आस तोहि नाहीँ ॥
ना मोहिँ गुन न जीभ रस-बाता। तुइँ दयाल गुन निरगुन दाता ॥
पुरवहु मोरि दरस कइ आसा। हउँ मारग जोअउँ हरि साँसा ॥

तेहि बिधि बिनय न जानउँ जेहि बिधि असतुति तोरि।
करु सु-दिसिटि अउ किरिपा हीँछा पूजइ मोरि ॥ १६८ ॥

कइ असतुति जउ बहुत मनावा। सबद अकूत मँडप महँ आवा ॥
10 मानुस पेम भएउ बइकुंठी। नाहिँ त काह छार एक मूठी ॥
पेमहि माँह बिरह अउ रसा। मयन के घर मधु अंम्रित बसा ॥
निसत धाइ जउ मरउ तो काहा। सत जउ करइ बइठि होइ लाहा ॥
एक बार जउ मन देइ सेवा। सेवहि फल परसन होइ देवा ॥
सुनि कइ सबद मँडप झनकारा। बइठहु आइ पुरुब के बारा ॥
15 पिंड चढाइ छार जेत आँटी। माटी होहु अंत जो माटी ॥

माटी मोल न किछु लहइ अउ माटी सब मोल।
दिसिटि जो माटी सउँ करइ माटी होइ अमोल ॥ १६६ ॥

बइठि सिंघ-छाला होइ तपा। पदुमावति पदुमावति जपा॥
दिसिटि समाधि ओही सउँ लागी। जेहि दरसन कारन बइरागी॥
किँगरि गहे बजावइ झूरी। भोर साँझ सिंगी निति पूरी॥
कंथा जरइ आगि जनु लाई। बिरह धँधोर जरत न बुझाई॥ 20
नयन रात निसि मारग जागे। चक्रित चकोर जानु ससि लागे॥
कुंडल गहे सीस भुइँ लावा। पावँरि होउँ जहाँ ओहि पावा॥
जटा छोरि कइ बार बोहारउँ। जेहि पँथ आउ सीस तहँ बारउँ॥
चारि-हु चकर फिरइ मन (खोजत) डँड न रहइ थिर मार।
होइ कइ भसम पवन सँग (धावउँ) जहाँ परान अधार॥ १७०॥

इति मंडप-गवँन खंड॥ १७॥

अथ पदुमावति-बिओग खंड ॥ १८ ॥

पदुमावति तेहि जोग सँजोगा। परी पेम बस गहे बिओगा ॥
नींद न परइ रइनि जौं आवा। सेज केवाँछ जानु कोउ लावा ॥
दहइ चाँद अउ चंदन चीरू। दगध करइ तन बिरह गँभीरू ॥
कलप-समान-रइनि तेहि बाढी। तिल तिल जो जुग जुग पर-गाढी ॥
5 गहे बीन मकु रइनि बिहाई। ससि-बाहन तब रहइ ओनाई ॥
पुनि धनि सिंघ उरेहइ लागइ। अइसी बिथा रइनि सब जागइ ॥
कहाँ हौं भवँर कवँल-रस लेवा। आइ परहु होइ घिरिनि परेवा ॥
सो धनि बिरह पतँग भइ जरा चहइ तेहि दीप।
कंत न आउ भिरिंग होइ को चंदन तन लीप ॥ १७१ ॥
परी बिरह-बन जानहुँ घेरी। अगम असूझ जहाँ लगि हेरी ॥
10 चतुर दिसा चितवइ जनु भूली। सो बन कवन जौं मालति फूली ॥
कवँल भवँर उहई बन पावइ। को मिलाइ तन-तपनि बुझावइ ॥
अंग अनल अस कवँल सरीरा। हिअ भा पिअर पेम कइ पीरा ॥
चहइ दरस रबि कीन्ह बिगासू। भवँर दिसिटि महँ कवँल अकासू ॥
पूँछइ धाइ बारि कहु बाता। तुइँ जस कवँल-कली रँग राता ॥
15 केसर बरन हिआ भा तोरा। मानहुँ मनहिं भएउ किछु भोरा ॥
पवन न पावइ संचरइ भवँर न तहाँ बईठ।
भूलि कुरंगिनि कस भएउ मनहुँ सिंघ तुइँ डीठ ॥ १७२ ॥

धाइ सिंघ बरु खातेउ मारी। कइ तसि रहति आहि जस बारी॥
जोबन सुनेउँ कि नवल बसंतू। तेहि बन परेउ हसति मइमंतू॥
अब जोबन बारी को राखा। कुंजल बिरह बिधाँसइ साखा॥
मइँ जानेउँ जोबन रस-भोगू। जोबन कठिन सँताप बिओगू॥ 20
जोबन गरुअ अपेल पहारू। सहि न जाइ जोबन कर भारू॥
जोबन अस मइमंत न कोई। नवँइ हसति जउ आँकुस होई॥
जोबन भर भादउ जस गंगा। लहरइ देइ समाइ न अंगा॥
परिउँ अथाह धाइ हउँ जोबन उदधि गँभीर।
तेहि चितवउँ चारि-हु दिसि को गहि लावइ तीर॥ १७३॥

पदुमावति तूँ समुद सयानी। तोहि सरि समुद न पूजइ रानी॥ 25
नदी समाहिँ समुद महँ आई। समुद डोलि कहु कहाँ समाई॥
अब-हीँ कवँल-करी हिअ तोरा। अइहइ भवँर जो तो कहँ जोरा॥
जोबन-तुरी हाथ गहि लीजिअ। जहाँ जाइ तहँ जान न दीजिअ॥
जोबन जोर मात गज अहई। गहहु ग्यान आँकुस जिमि रहई॥
अबहिँ बारि तुइँ पेम न खेला। का जानसि कस होइ दुहेला॥ 30
गगन दिसिटि करु नाइ तराहीँ। सुरुज देखु कर आवइ नाहीँ॥
जब लगि पीउ मिलइ तोही साधु पेम कइ पीर।
जइस सीप सेवाती कहँ तपइ समुद मँझ नीर॥ १७४॥

दहइ धाइ जोबन अउ जीऊ। होई परइ अगिनि महँ घीऊ॥
करवत सहउँ होत दुइ आधा। सहि न जाइ जोबन कइ दाधा॥
बिरहा सुभर समुद असँभारा। भवँर मेलि जिउ लहरहिँ मारा॥ 35
बिरह नाग होइ सिर चढि डसा। अउ होइ अगिनि चाँद महँ बसा॥
जोबन पंखी बिरह बिआधू। केहर भएउ कुरंगिनि खाधू॥
कनक-पानि कित जोबन कीन्हा। अउटन कठिन बिरह ओहि दीन्हा॥
जोबन जलहि बिरह मसि छूआ। फूलहिँ भवँर फराहिँ भा सूआ॥

जोबन चाँद उआ जस बिरह भएउ सँग राहु।
40 घटतहि घटत छीन भइ कहै न पारउँ काहु॥ १७५॥

नयन जौ चाक फिरहिं चहुँ ओरा। चरचइ धाइ समाइ न कोरा॥
कहेसि पेम जउ उपना बारी। बाँधहु सत मन डोल न मारी॥
जेहि जिउ महँ सत होइ पहारू। परइ पहार न बाँकइ बारू॥
सती जौ जरइ पेम पिअ लागी। जउ सत हिअ तउ सीतल आगी॥
45 जोबन चाँद जौ चउदस-करा। बिरह क चिनगि चाँद पुनि जरा॥
पवन-बंध सो जोगी जती। काम-बंध सो कामिनि सती॥
आउ बसंत फूल फुलवारी। देऔं-बार सब जइहहिं बारी॥
तुम्ह पुनि जाहु बसंत लेइ पूजि मनावहु देउ।
जीउ पाइ जग जनम कइ पीउ पाइ कइ सेउ॥ १७६॥

जब लगि अवधि चाह सो आई। दिन जुग बर बिरहिनि कहँ जाई॥
50 नींद भूख अह-निसि गइ दोऊ। हिअइँ मारि जस कलपइ कोऊ॥
रोआँ रोआँ जनु लागहिं चाँटे। सूत सूत बेधहिं जनु काँटे॥
दगधि कराह जरइ जस घीऊ। बेगि न आउ मलइ-गिरि पीऊ॥
कवन देऔं कहँ जाइ परासउँ। जेहि सुमेरु हिअ लाइ गरासउँ॥
गुपुत जौ फल साँसहिं परगटे। अब होइ सुभर दहहिं पुनि घटे॥
55 भए सँजोग जो रे अस मरना। भोगी भए भोग का करना॥
जोबन चंचल ढीठ हइ करइ निकाजइ काज।
धनि कुलवंति जौ कुल धरइ कइ जोबन मन लाज॥ १७७॥

इति पदुमावति-बिओग खंड॥ १८॥

अथ पदुमावति-सुआ-भेंट खंड ॥ १९ ॥

तेहि बिओग हीरा-मनि आवा। पदुमावति जानहुँ जिउ पावा ॥
कंठ लाइ सूआ सो रोई। अधिक मोह जउ मिलइ बिछोई ॥
बुझा उठा दुख हिअइँ गँभीरू। नयनहिँ आइ चुआ होइ नीरू ॥
रही रोइ जउँ पदुमिनि रानी। हँसि पूँछहिँ सब सखी सयानी ॥
मिले रहस चाहिअ भा दूना। कित रोइअ जउ मिला बिछूना ॥ 5
तेहि क उतर पदुमावति कहा। बिछुरन दुख जो हिअइँ भरि रहा ॥
मिलत हिअइँ आएउ सुख भरा। वह दुख नयन नीर होइ ढरा ॥

बिछुरंता जब भेँटइ सो जानइ जेहि नेह।
सुक्ख सुहेला उग्गवइ दुक्ख झरइ जिमि मेह ॥ १७८ ॥

पुनि रानी हँसि कूसर पूँछा। कित गवँनेहु पीँजर कइ छूँछा ॥
रानी तुम्ह जुग जुग सुख पाटू। छाज न पंखिहि पीँजर ठाटू ॥ 10
जउँ भा पंख कहाँ थिरु रहना। चाहइ उडा पाँख जउँ डहना ॥
पीँजर महँ जो परेवा घेरा। आइ मँजारि कीन्ह तहँ फेरा ॥
दिवस-क आइ हाथ पइ मेला। तेहि डर बनोबास कहँ खेला ॥
तहाँ बिआध आइ नर साधा। छूट न पाउ मीचु कर बाँधा ॥
वेइ धरि बेँचा बाम्हन हाथा। जंबू-दीप गएउँ तेहि साथा ॥ 15

तहाँ चितर चितउर-गढ चितर-सेन कर राज।
टीका दीन्ह पुतर कहँ आपु लीन्ह सिउ-साज ॥ १७९ ॥

बइठ जौ राज पिता के ठाऊँ। राजा रतन-सेन ओहि नाऊ॥
का बरनउँ धनि देस दिआरा। जहँ अस नग उपना उँजिआरा॥
धनि माता अउ पिता बखाना। जेहि के बंस अंस अस आना॥
२० लखन बतीस-उ कुल निरमरा। बरनि न जाइ रूप अउ करा॥
वेइ हउँ लीन्ह अहा अस भागू। चाहइ सोनइ मिला सोहागू॥
सो नग देखि हीँछा भइ मोरी। हइ यह रतन पदारथ जोरी॥
हइ ससि जोग इहइ पइ भानू। तहँ तोहार मइँ कीन्ह बखानू॥
कहाँ रतन रतना-गिरी कंचन कहाँ सुमेरु।
दइउ जो जोरी दुहुं लिखी मिली सो कउन-हुँ फेरु॥ १८० ॥

सुनि कइ बिरह-चिनगि ओहि परी। रतन पाउ जउ कंचन-करी॥
कठिन पेम बिरहा दुख भारी। राज छाडि भा जोगि भिखारी॥
मालति लागि भवँर जस होई। होइ बाउर निसरा बुधि खोई॥
कहेसि पतंग होइ धनि लेऊँ। सिंघल-दीप जाइ जिउ देऊँ॥
पुनि ओहि कोउ न छाडि अकेला। सोरह सहस कुअँर भए चेला॥
३० अउरु गनइ को संग सहाई। महादेओ-मढ मेला जाई॥
सूरुज पुरुस दरस कइ ताईँ। चितवइ चाँद चकोर कि नाईँ॥
तुम्ह बारी रस जोग जेहि कवँलहि जस अरधानि।
तस सूरुज परगास कइ भवँर मिलाएउँ आनि॥ १८१ ॥

हीरा-मनि जो कही यह बाता। सुनि कइ रतन पदारथ राता॥
जस सूरुज देखइ होइ ओपा। तस भा बिरह काम-दल कोपा॥
३५ पइ सुनि जोगी केर बखानू। पदुमावति मन भा अभिमानू॥
कंचन जउ कसिअइ कइ ताता। तब जानहु दहुँ पीत कि राता॥
कंचन-करी न काँचुहिँ लोभा। जउ नग होए पावइ तब सोभा॥
नग कर मरम सो जरिआ जाना। जुरइ जो अस नग हीर बखाना॥
को अस हाथ सिंघ-मुख घालइ। को यह बात पिता सउँ चालइ॥

सरग इँदर डरि काँपइ बासुकि डरइ पतार।
कहँ अस बर पिरिथुमीँ मोहिँ जोग संसार॥ १८२॥ 40

तूँ रानी ससि कंचन-करा। वह नग रतन सूर निरमरा॥
बिरह बजागि बीच का कोई। आगि जो छुअइ जाइ जरि सोई॥
आगि बुझाइ धोइ जल काढइ। वह न बुझाइ आगि अति बाढइ॥
बिरह कि आगि सूर नहिँ टीका। रातिहिँ दिवस फिरइ अउ धीका॥
खनहिँ सरग खन जाइ पतारा। थिर न रहइ तेहि आगि अपारा॥ 45
धनि सो जीउ दगध इमि सहा। अकसर जरइ न दोसर कहा॥
सुलगि सुलगि भीतर होइ सावाँ। परगट होइ न कहा दुख नावाँ॥
कहा कहउँ हउँ ओहि सउँ जेहि दुख कीन्ह न मेट।
तेहि दिन आगि करउँ एहि (बाहर) होए जेहि दिन सो भेँट॥ १८३॥

सुनि कइ धनि जारी अस काया। तन भउ साँच हिअइँ भउ माया॥
देखउँ जाइ जरइ जस भानू। कंचन जरइ अधिक होइ बानू॥ 50
अब जउ मरइ सो पेम बिओगी। हतिआ मोहिँ जेहि कारन जोगी॥
हीरा-मनि जो कही तुम्ह बाता। रहिहउँ रतन-पदारथ राता॥
जउ वह जोग सँभारइ छाला। देइहउँ भुगुति देहउँ जय-माला॥
आउ बसंत कुसल सउँ पावउँ। पूजा मिस मंडप कहँ आवउँ॥
गुरु के बइन फूल मइँ गाँथे। देखउँ नयन चढावउँ माँथे॥ 55
कवँल-भवँर तुम्ह बरना मइँ पुनि माना सोइ।
चाँद सूर कहँ चाहिअ जउ रे सूर वह होइ॥ १८४॥

हीरा-मनि जो कही यह बाता। पाएउ पान भएउ मुख राता॥
चला सुआ तब रानी कहा। भा जो पराउ सो कइसइ रहा॥
जो निति चलइ सँवारइ पाँखा। आजु जो रहा कालिह को राखा॥
न जनउँ आजु कहाँ दहुँ ऊआ। आएउ मिलइ चलेहु मिलि सूआ॥ 60
मिलि कइ बिछुर मरन कइ आना। कित आएउ जउ चलेहु निदाना॥

अनु रानी हउँ रहँतेउँ राँधा। कइसइ रहउँ बचा कर बाँधा॥
ता करि दिसिटि अइस तुम्ह सेवा। जइस कूँज मन सहज परेवा॥
बसइ मीन जल धरती अंबा बसइ अकास।
जउ पिरीति पइ दोउ महँ अंत होहिँ एक पास॥ १८५॥

65 आवा सुआ बइठ जहँ जोगी। मारग नयन बिओग बिओगी॥
आइ परेवइँ कहा सँदेसू। गोरख मिला मिला उपदेसू॥
तुम्ह कहँ गुरू मया बहु कीन्हा। कीन्ह अदेस आदि कहँ दीन्हा॥
सबद एक होइ कहा अकेला। गुरु जस भिंग पनिग जस चेला॥
भिंगी ओहि पंखी पइ लेई। एकहि बार गहइ जिउ देई॥
70 ता कहँ गुरू करइ असि माया। नउ अउतार देइ नइ काया॥
होइ अमर अस मर कइ जीआ। भवँर कवँल मिलि कइ मधु पीआ॥
आवइ रितु बसंत जब तब मधुकर तब बासु।
जोगी जोग जौ इमि करइ सिद्धि समापत तासु॥ १८६॥

इति पदुमावति-सुआ-भेँट खंड॥ १६॥

अथ बसंत खंड ॥ २० ॥

दइअ दइअ कइ सो रितु गवाँई । सिरी-पंचमी पूजी आई ॥
भएउ हुलास नउल रितु माहाँ । खन न सोहाइ धूप अउ छाहाँ ॥
पदुमावति सब सखी हँकारी । जावँत सिँघल-दीप कइ बारी ॥
आजु बसंत नउल रितु-राजा । पंचमि होइ जगत सब साजा ॥
नउल सिँगार बनाफर कीन्हा । सीस परासहि सेँदुर दीन्हा ॥ 5
बिगसि फूल फूले बहु बासा । भवँर आइ लुबुधे चहुँ पासा ॥
पिअर पात दुख झरे निपाते । सुख पल्लउ उपने होइ राते ॥
अवधि आइ सो पूजी जो इच्छा मन कीन्ह ।
चलहु देउ-मढ गोहने चहउँ सो पूजा दीन्ह ॥ १८७ ॥

फिरी आन रितु-बाजन बाजे । अउ सिँगार बारिन्ह सब साजे ॥
कवँल-करी पदुमावति रानी । होइ मालति जानहुँ बिगसानी ॥ 10
तारा-मँडर पहिरि भल चोला । अउ पहिरइ ससि नखत अमोला ॥
सखी कुमोद सहस दस संगा । सबइ सुगंध चढाए अंगा ॥
सब राजा रायन्ह कइ बारी । बरन बरन पहिरहिँ सब सारी ॥
सबइ सरूप पदुमिनी जाती । पान फूल सेँदुर सब राती ॥
करहिँ कुरेल सुरंग रँगीली । अउ चोआ चंदन सब गीली ॥ 15
चहुँ दिसि रही सु-बासना फुलवारी अस फूल ।
वेइ बसंत सउँ भूलीँ गा बसंत ओहिँ भूल ॥ १८८ ॥

भइ आहाँ पदुमावति चली। छत्तिस कुरि मइँ गोहन भली ॥
भइ गउरी सँग पहिरि पटोरा। बाँमनि ठाउँ सहस अँग मोरा ॥
अगरवारि गज-गवँन करेई। बइसिनि पाउँ हंस-गति देई ॥
20 चंदेलिनि ठमकहिँ पगु ढारा। चलिँ चउहानि होइ झनकारा ॥
चलीँ सोनारि सोहाग सोहाती। अउ कलवारि पेम-मधु माती ॥
बानिनि देइ सेँदुर भल माँगा। कइथिनि चलीँ समाहिँ न आँगा ॥
पटइनि पहिरि सुरँग तन चोला। अउ बरइनि मुख खात तमोला ॥
चलीँ पउन सब गोहने फूल डार लेइ हाथ।
बीसुनाथ कइ पूजा पदुमावति के साथ ॥ १८६ ॥

25 ठठेरिनि चलिँ बहु टाठर कीन्हे। चलीँ अहीरिनि काजर दीन्हे ॥
गूजरि चलिँ गोरस कइ माती। तंबोलिनि चलिँ रँग बहु राती ॥
चलीँ लोहारिनि पइलइँ नयना। भाँटिनि चलीँ मधुर मुख बयना ॥
गंधिनि चलीँ सुगंध लगाए। छीपिनि छीपइँ चीर रँगाए ॥
रँगरेजिनि तन राती सारी। चलीँ चोख सउँ नाउनि बारी ॥
30 मालिनि चलीँ फूल लेइ गाँथे। तेलिनि चलीँ फुलाएल बाँधे ॥
कइ सिँगार बहु बेसवा चलीँ। जहँ लगि मूँदी बिकसीँ कलीँ ॥
नटिनि डोमिनि ढोलिनी सहनाइनि भेरिकारि।
निरतत तंत बिनोद सउँ बिहँसत खेलत नारि ॥ १६० ॥

कवँल सहाय चलीँ फुलवारी। फर फूलन्ह कइ इच्छा-बारी ॥
आपु आपु महँ करहिँ जोहारू। यह बसंत सब कहँ तेवहारू ॥
35 चहइ मनोरा झूमक होई। फर अउ फूल लिएउ सब कोई ॥
फागु खेलि पुनि दाहब होरी। सेँतब खेह उड़ाउब झोरी ॥
आजु साजि पुनि दिवस न दूजा। खेल बसंत लेहु कइ पूजा ॥
भा आएसु पदुमावति केरा। बहुरि न आइ करब हम फेरा ॥
तस हम कहँ होइहि रखवारी। पुनि हम कहाँ कहाँ यह बारी ॥

पुनि रे चलब घर आपुन पूजि बिसेसर देउ ।
जेहि का होहइ खेलना आजु खेल हँसि लेउ ॥ १६१ ॥ 40

काहू गही आँब कइ डारा । काहू बिरह चाँप अति झारा ॥
को नारँग कोइ झार चिरउँजी । कोइ कटहरि बडहर कोइ नउँजी ॥
कोइ दारिउँ कोइ दाख सो खीरी । कोइ सदाफर तुरुँज जँभीरी ॥
कोइ जइफर कोइ लउँग सुपारी । कोइ कमरख कोइ गुआ छोहारी ॥
कोइ बिजउर कोइ नरिअर जूरी । कोइ इविँली कोइ महुअ खजूरी ॥ 45
कोई हरिफा-रेउरि कसउँदा । कोइ अउँरा कोइ राइ-करउँदा ॥
काहु गही केरा कइ घउरी । काहू हाथ परी निँउ-कउरी ॥
काहू पाई निअरइँ काहू कहँ गइ दूर ।
काहू खेल भएउ बिख काहू अंब्रित-मूर ॥ १६२ ॥

पुनि बीनहिँ सब फूल सहेली । जो जेहि आस पास सब बेली ॥
कोइ केवरा कोइ चाँप नेवारी । कोइ केतकि मालति फुलवारी ॥ 50
कोइ सतिबरग कूँद अउ करना । कोइ चँबेँइलि नगेसरि बरना ॥
कोइ सो गुलाल सुदरसन कूजा । कोई सोनिजरद भल पूजा ॥
कोइ सो मउलसिरि पुहुप बकउरी । कोइ रूप-माँजरि अउ गउरी ॥
कोइ सिंगार-हार तेहि पाँहा । कोइ सेवती कदम कि छाँहा ॥
कोइ चंदन फूलहिँ जनु फूलीँ । कोइ अजान बीरउ तर भूलीँ ॥ 55
(कोइ) फूल पाउ कोइ पाती जेहि क हाथ जो आँट ।
(कोइ सो) हार चीर उरझाना जहाँ छुअइ तहँ काँट ॥ १६३ ॥

फर फूलन्ह सब डार ओढाईँ । झूँड बाँधि कइ पंचम गाईँ ॥
बाजहिँ ढोल दुंदु अउ भेरी । माँदर तूर झाँझ चहुँ फेरी ॥
सिंग संख डफ बाजन बाजे । बंसकार महुअरि सुर साजे ॥
अउरु कहिअ जित बाजन भले । भाँति भाँति सब बाजत चले ॥ 60
रथहिँ चढीँ सब रूप सोहाईँ । लेइ बसंत मढ-मँडफ सिधाईँ ॥

नउल बसंत नउल बेइ बारी। सेँदुर बूका होइ धमारी॥
खनहिँ चलहिँ खन चाँचर होई। नाँच कोड भूला सब कोई॥
सेँदुर-खेह उठा तस गगन भएउ सब राति।
राति सकल महि धरती राति बिरिख बन पाति॥ १९४॥

65 एहि बिधि खेलत सिंघल-रानी। महादेओ मढ जाइ तुलानी॥
सकल देओता देखइ लागे। दिसिटि पाप सब तिन्ह के भागे॥
एहि कबिलास सुनी अपछरी। कहाँ तइँ आईं परमेसरी॥
कोई कहइ पदुमिनी आईं। कोइ कहइ ससि नखत तराईं॥
कोइ कह फूल कोंई फुलवारी। भूले सबइ देखि सब बारी॥
70 एक सरूप अउ सेँदुर सारी। जानहुँ दिआ सकल महि बारी॥
मुरछि परइ जावँत जे जोहइ। जानहुँ मिरिग दिआरहिँ मोहइ॥
कोई परा भवँर होइ बास लीन्ह जनु चाँद।
कोइ पतँग भा दीपक होइ अध-जर तन काँप॥ १९५॥

पदुमावति गइ देओ-दुआरू। भीतर मँडफ कीन्ह पइसारू॥
देओहि साँसउ भा जिउ केरा। भागउँ केंहि दिसि मंडफ घेरा॥
एक जोहार कीन्ह अउ दूजा। तिसरइ आइ चढाई पूजा॥
फर फूलन्ह सब मँडफ भरावा। चंदन अगर देओ अन्हवावा॥
भरि सेँदुर आगइ भइ खरी। परसि देओ पुनि पाएन्ह परी॥
अउरु सहेली सबइ बिआहीं। मो कहँ देओ कतहुँ बर नाहीं॥
हउँ निरगुन जेइ कीन्ह न सेवा। गुन निरगुन दाता तुम्ह देवा॥
बर सँजोग मोहिँ मिरवहु कलस जात हउँ मानि।
८० जेहि दिन हीँछा पूजइ बेगि चढावउँ आनि॥ १९६॥

हीँछि हीँछि बिनवा जस जानी। पुनि कर जोरि ठाढि भइ रानी॥
उतर को देइ देओ मरि गएउ। सबद अकूत मँडफ महँ भएउ॥
काटि पवारा जइस परेवा। मरि भा ईस अउरु को देवा॥

भए बिनु जिउ सब नाउत ओझा। बिख भइ पूरि काल भा गोझा॥
जो देखइ जनु बिसहर डँसा। देखि चरित पदुमावति हँसा॥ 85
भल हम आइ मनावा देवा। गा जनु सोइ को मानइ सेवा॥
को हीँछा पुरवइ दुख धोआ। जेहि मनि आए सोई तन सोआ॥
जेहि धरि सखीँ उठावहिँ सीस बिकल नहिँ डोल।
धर जिउ कोइ न जानइ मुख रे बकत कुबोल॥ १९७॥
ततखन एक सखी बिहँसानी। कउतुक एक न देखहु रानी॥
पुरुब द्वार मढ जोगी छाए। न जनउँ कउन देस तइँ आए॥ 90
जनु उन्ह जोग तंत अब खेला। सिद्ध होइ निसरे सब चेला॥
उन्ह महँ एक गुरू जो कहावा। जनु गुड देइ काहू बउरावा॥
कुअँर बतीस-उ लखन सो राता। दसएँ लखन कहइ एक बाता॥
जानहुँ आहि गोपिचँद जोगी। कइ सो आहि भरथरी बिओगी॥
वह जो पिँगला कजरी-आरन। यह सो सिँघला दहुँ केहि कारन॥ 95
यह मूरति यह मुदरा हम न देख अउधूत।
जानहुँ होहिँ न जोगी कोइ राजा कर पूत॥ १९८॥
सुनि सो बात रानी रथ चढी। कहँ अस जोगि जो देखउँ मढी॥
लेइ सँग सखीँ कीन्ह तहँ फेरा। जोगिन्ह आइ आछरिन्ह घेरा॥
नयन कचूर पेम-मद भरे। भइ सो दिसिटि जोगी सउँ ढरे॥
जोगिहि दिसिटि दिसिटि सउँ लीन्हा। नयन रूप नयनहिँ जिउ दीन्हा॥ 100
जो मद चहत परा तेहि पालइँ। सुधि न रही ओहि एक पिआलइँ॥
परा माँति गोरख कर चेला। जिउ तन छाडि सरग कहँ खेला॥
किँगरी गहे जो हुत बइरागी। मरतिहिँ कर उहइ धुनि लागी॥
जेहि धंधा जा कर मन लागइ सपनेहुँ सूझ सो धंध।
तेहि कारन तपसी तप साधहिँ करहिँ पेम मन बंध॥ १९९॥
पदुमावति जस सुना बखानू। सहसहुँ करा देखेसि तस भानू॥ 105

मेलेसि चंदन मकु खन जागा। अधिकउ सीत सीर तन लागा ॥
तब चंदन आखर हिअ लिखे। भीख लेइ तुइँ जोग न सिखे ॥
बार आइँ तब गा तूँ सोई। कइसइ भुगुति परापति होई ॥
अब जउँ सूर अहउ ससि राता। आएहु चढि सो गगन पुनि साता ॥
110 लिखि कइ बात सखिन्ह सउँ कही। इहइ ठाउँ हउँ बारति अही ॥
परगट होउँ तउ होइ अस भंगू। जगत दिआ कर होइ पतंगू ॥

जा सउँ हउँ चखु हेरउँ सोइ ठाउँ जिउ देइ।
एहि दुख कतहुँ न निसरउँ को हतिआ असि लेइ ॥ २०० ॥

कीन्ह पयान सबन्ह रथ हाँका। परबत छाडि सिंघल-गढ ताका ॥
भए बलि सबइ देओता बली। हतिआरिनि हतिआ लेइ चली ॥
115 को अस हितू मुए गह बाहीं। जउँ पइ जिउ आपुन तन नाहीं ॥
जउ लहि जिउ आपुन सब कोई। बिनु जिएँ सबइ निरापुन होई ॥
भाइ बंधु अउ मीत पियारा। बिनु जिएँ घरी न राखइ पारा ॥
बिनु जिएँ पीँड छार करि कूरा। छार मिलावइ सो हित पूरा ॥
तेहि जिएँ बिनु अब मर भा राजा। को उठि बइठि गरब सउँ गाजा ॥

परी कया भुइँ रोअइ कहाँ रे जिउ बलि भीउ।
को उठाइ बइसारइ बाजु पिरीतम जीउ ॥ २०१ ॥

पदुमावति सो मँदिर पईठी। हँसत सिंघासन जाइ बईठी ॥
निसि सूती सुनि कथा बिहारी। भा बिहान अउ सखी हँकारी ॥
देओ पूजि जस आएउँ काली। सपन एक निसि देखेउँ आली ॥
जनु ससि उदउ पुरुब दिसि लीन्हा। अउ रबि उदउ पछिउँ दिसि कीन्हा ॥
125 पुनि चलि सूर चाँद पहिं आवा। चाँद सुरुज दुहुँ भएउ मेरावा ॥
दिन अउ राति जानु भए एका। राम आइ रावँन-गढ छेंका ॥
तस किछु कहा न जाए निखेधा। अरजुन-बान राहु गा बेधा ॥

जनहुँ लंक सब लूसी हनू बिधाँसी बारि ।
जागि उठेउँ अस देखत सखि कहु सपन बिचारि ॥ २०२ ॥

सखी सो बोली सपन बिचारी । जो गइहु काल्हि देश्रो कर बारी ॥
पूजि मनाइहु बहुत बिनाती । परसन आइ भएउ तुम्ह राती ॥ 130
सूरुज पुरुप चाँद तुम्ह रानी । अस बर दइउ मेरावइ आनी ॥
पछिउँ खंड कर राजा कोई । सो आइहि बर तुम्ह कहँ होई ॥
किछु पुनि जूझ लागि तुम्ह रामा । राश्रोन सउँ होइहि सँगरामा ॥
चाँद सुरुज सउँ होइ बिआहू । बारि बिधंसब बेधब राहू ॥
जस ऊखा कहँ अनिरुध मिला । मेटि न जाइ लिखा परबिला ॥ 135

सुख सोहाग हइ तुम्ह कहँ पान फूल रस भोगु ।
आजु काल्हि भा चाहिअ अस सपने क सँजोगु ॥ २०३ ॥

इति बसंत खंड ॥ २० ॥

अथ राजा-रतनसेन-सती खंड ॥ २१ ॥

कइ बसंत पदुमावति गई। राजहि तब बसंत सुधि भई ॥
जो जागा न बसंत न बारी। नहिँ सो खेल न खेलन-हारी ॥
ना उन्ह कइ वह रूप सोहाई। गइ हेराइ पुनि दिस्टि न आई ॥
फूल झरे सूखी फुलवारी। दिस्टि परी उकठी सब बारी ॥
5 केइँ यह बसत बसंत उजारा। गा सो चाँद अथवा लेइ तारा ॥
अब तेहि बिनु जग भा अँध-कूपा। वह सुख छाँह जरउँ हउँ धूपा ॥
बिरह दवाँ को जरत सिरावा। को पीतम सउँ करइ मेरावा ॥
हिअइ देख जो चंदन खेवरा मिलि कइ लिखा बिछोउ।
हाथ मीँजि सिर धुनि सो रोअइ जो निचिंत अस सोउ ॥ २०४ ॥
जस बिछोउ जल मीन दुहेला। जल हुति काढि अगिनि महँ मेला ॥
10 चंदन आँक दाग होइ परे। बुझहिँ न ते आखर परजरे ॥
जनु सर आगि होइ होइ लागे। सब बन दागि सिंघ बन दागे ॥
जरहिँ मिरिग बन-खँड तेहि ज्वाला। अउ ते जरहिँ बइठ तेहि छाला ॥
कित वे आँक लिखे जिन्ह सोआ। मकु आँकन्ह तेहि करत बिछोआ ॥
जइस दुखँत कहँ साकुँतला। माधउनलहि कामकंदला ॥
15 भएउ बिअंग नल जइस दमावति। नयनाँ मूँदि छपी पदुमावति ॥
आइ बसंता छपि रहा होइ फूलन्ह के भेस।
केहि बिधि पावउँ भवँर होइ कउनु सो गुरु उपदेस ॥ २०५ ॥

रोअइ रतन माल जनु चूरा। जहँ होए ठाढ होइ तहँ कूरा॥
कहाँ बसंत सो कोकिल बइना। कहाँ कुसुम अलि बेधी नइना॥
कहाँ सो मूरति परी जो डीठी। काढि लीन्ह जिउ हिअइ पईठी॥
कहाँ सो दरस परस जेहि लाहा। जउँ सो बसंत करीलहि काहा॥ 20
पात बिछोउ रूख जो फूला। सो महुआ रोअइ अस भूला॥
टपकहिँ महुअ आँसु तस परहीँ। होइ महुआ बसंत जउँ झरहीँ॥
मोर बसंत सो पदुमिनि बारी। जेहि बिनु भएउ बसंत उजारी॥

पावा नउल बसंत पुनि बहु आरति बहु चोपु।
अइस न जाना अंत होइ पात झरहिँ होइ कोपु॥ २०६॥

अरे मलेछ बिसुआसी देवा। कित मइँ आइ कीन्ह तोरि सेवा॥ 25
आपुनि नाउ चढइ जो देई। सो तउ पार उतारइ खेई॥
सुफल लागि पगु टेकेउँ तोरा। सुआ क सेवँरि तूँ भा मोरा॥
पाहन चढि जो चहइ भा पारा। सो अइसइ बूडइ मँझ धारा॥
पाहन सेवा कहा पसीजा। जरम न पलुहइ जउँ निति भीँजा॥
बाउर सोइ जो पाहन पूजा। सकति क भार लेइ सिर दूजा॥ 30
काहे न पूजिअ सोइ निरासा। मुए जिअत मन जा करि आसा॥

सिंघ तरेँदा जेइँ गहा पार भए तेहि साथ।
ते पइ बूडे बारि ही भेँड पूँछि जिन्ह हाथ॥ २०७॥

देओ कहा सुनु बउरे राजा। देओहि अगुमन मारा गाजा॥
जो पहिलइँ अपुनइ सिर परई। सो का काहु क धरहरि करई॥
पदुमावति राजा कइ बारी। आइ सखिन्ह सउँ मँडफ उघारी॥ 35
जइसइ चाँद गोहन सब तारा। परेउँ भुलाइ देखि उँजिआरा॥
चमकइ दसन बीजु कइ नाईँ। नयन-चकर जमकात भवाँईँ॥
हउँ तेहि दीप पतँग होइ परा। जिउ जम काढि सरग लेइ धरा॥
बहुरि न जानउँ दहुँ का भई। दहुँ कबिलास कि कहँ अपसई॥

अब हउँ मरउँ निसासी हिअइ न आवइ साँस ।
40 रोगिआ की को चालइ बइदहि जहाँ उपास ॥ २०८ ॥
अनु हउँ दोस देउँ का काहू । संगी कया मया नहिँ ताहू ॥
हतेउ पिआरा मीत बिछोई । साथ न लागि आपु गा सोई ॥
का मइँ कीन्ह जो काया पोखी । दूखन मोहिँ आपु निरदोखी ॥
फागु बसंत खेलि गइ गोरी । मो तनु लाइ आगि देइ होरी ॥
45 अब अस काहि छार सिर मेलउँ । छारइ होउँ फागु तस खेलउँ ॥
कित तप कीन्ह छाडि कइ राजू । आहर गअउ न भा सिध काजू ॥
पाअउँ नहिँ होइ जोगी जती । अब सर चढउँ जरउँ जस सती ॥
आइ पिरीतम फिरि गया मिला न आइ बसंत ।
अब तन होरी घालि कइ जारि करउँ भसमंत ॥ २०९ ॥
ककनू पंखि जइस सर साजा । तस सर साजि जरइ चह राजा ॥
50 सकल देओता आइ तुलाने । दहुँ कस होअ देओ-असथाने ॥
बिरह अगिनि बजरागि अबूझा । जरइ सूर न बुझाए बूझा ॥
तेहि के जरत जो उठइ बजागी । तीनउँ लोक जरिहिँ तेहि लागी ॥
अब-हि कि घडी चिनगि पइ छूटिहि । जरिहि पहाड पहन सब फूटिहि ॥
देओता सबइ भसम होइ जाहीँ । छार समेटइ पाउब नाहीँ ॥
धरती सरग होइ सब ताता । हइ होई अहि राख बिधाता ॥
मुहमद चिनगि परेम कइ सुनि महि गगन डेराइ ।
धनि बिरहिन अउ धनि हिआ जहँ अस अगिनि समाइ ॥ २१० ॥
हनुवँत बीर लंक जेइँ जारी । परबत उहइ अहा रखवारी ॥
बइठ तहाँ होइ लंका ताका । छठएँ मास देइ उठि हाँका ॥
तेहि कइ आगि उहउ पुनि जरा । लंका छाडि पलंका परा ॥
60 जाइ तहाँ वेइँ कहा सँदेसू । पारबती अउ जहाँ महेसू ॥
जोगी आहि बिओगी कोई । तुम्हरेँइ मँडफ आगि तेइ बोई ॥

जरे लँगूर सु-राते ऊहाँ। निकसि जो भाग भएउँ कर-मूहा ॥
तेहि बजरागि जरइ हउँ लागा। बजर-अंग जरतहि उठि भागा ॥
राओन-लंका हउँ डही तेइँ मोहिँ डाढन आइ।
धन-द पहार होत हइ रावट को राखइ गहि पाइ ॥ २११ ॥

इति राजा-रतन-सेन-सती खंड ॥ २१ ॥

अथ पारवती-महेस खंड ॥ २२ ॥

ततखन पहुँचे आइ महेसू। बाहन बइल कुसटि करि भेसू।
कौंथरि कया हडावरि बाँधे। मूँड माल अउ हतिआ काँधे॥
सेस-नाग जो कंठइ माला। तनु बिभूति हसती कर छाला॥
पहुँची रुद्र-कवँल कइ गटा। ससि माँथइ अउ सुरसरि जटा॥
5 चवँर घंट अउ डवँरू हाथा। गउरी पारवती धनि साथा॥
अउ हनुवंत बीर सँग आवा। धरे भेस जनु बंदर-छावा॥
अउतहि कहेन्हि न लावहु आगी। ता करि सपत जरहु जेहि लागी॥

कइ तप करइ न पारहु कइ रे नसाएहु जोगु।
जिअत जीउ कस काढ़हु कहहु सो मोहि बिओगु॥ २१२॥

कहेसि को मोहि बातहि बिरमावा। हतिआ केरि न डर तोहि आवा॥
10 जरइ देहु दुख जरउँ अपारा। निसितर परउँ जाइ एक बारा॥
जइस भरथरी लाग पिंगला। मो कहँ पदुमावती सिंघला॥
मइँ पुनि तजा राज अउ भोगू। सुनि सो नाउँ लीन्ह तप जोगू॥
एहि मढ़ सेएउँ आइ निरासा। गइ सो पूजि मन पूजि न आसा॥
तेइँ यह जिउ डाढ़े पर दाधा। आधा निकसि रहा घट आधा॥
15 जो अध-जर सो बिलंब न लावा। करत बिलंब बहुत दुख पावा॥

एतना बोलि कहत मुख उठी बिरह कइ आगि।
जउँ महेस न बुझावत सकल जगत हुत लागि॥ २१३॥

पारबती मन उपना चाऊ। देखउँ कुअँर केर सत-भाऊ॥
दहुँ यह बीच कि पेमहि पूजा। तन मन एक कि मारग दूजा॥
भइ सु-रूप जानहुँ अपछरा। बिहँसि कुअँर कर आँचर धरा॥
सुनहु कुअँर मो सउँ एक बाता। जस रँग मोहिँ न अउरहिँ राता॥ 20
अउ बिधि रूप दीन्ह हइ तो का। उठा सो सबद जाइ सिउ-लोका॥
तब हउँ तो कहँ इँदर पठाई। गइ पदुमिनि तुइँ आछरि पाई॥
अब तजु जरन मरन तप जोगू। मो सउँ मानु जरम भरि भोगू॥
हउँ आछरि कबिलास कइ जेहि सरि पूज न कोइ।
मोहिँ तजि सवँरि जो ओहि मरसि कउनु लाभ तोहि होइ॥ २१४॥
भलेहि रंग आछरि तोहि राता। मोहिँ दोसरइ सउँ भाओ न बाता॥ 25
मोहिँ ओहि सवँरि मुअइ अस लाहा। नइन जो देखसि पूँछसि काहा॥
अबहिँ ताहि जिउ देइ न पावा। तोहि असि आछरि ठाढि मनावा॥
जउँ जिउ दइहउँ ओहि कइ आसा। न जनउँ काह होइहि कबिलासा॥
हउँ कबिलास काह लेइ करउँ। सो कबिलास लागि जेहि मरउँ॥
ओहि के बार जीउ नहिँ बारउँ। सिर उतारि नेओछाओरि डारउँ॥ 30
ता कर चाह कहइ जो आई। दुअउ जगत तेहि देउँ बडाई॥
ओहि न मोरि किछु आसा हउँ ओहि आस करेउँ।
तेहि निरास पीतम कहँ जिउ न देउँ का देउँ॥ २१५॥
गउरइ हँसि महेस सउँ कहा। निहचइ एहु बिरहानल दहा॥
निहचइ यह ओहि कारन तपा। परिमल पेम न आछइ छपा॥
निहचइ पेम पीर एहु जागा। कसइँ कसउटी कंचन लागा॥ 35
बदन पिअर जल डभकहिँ नइना। परगट दुअउ पेम के बइना॥
यह एहि जरम लागि ओहि सीझा। चहइ न अउरहि उहई रीझा॥
महादेओ देओन्ह के पिता। तुम्हरे सरन राम रन जिता॥
एहू कहँ तस मया करेहू। पुरवहु आस कि हतिआ लेहू॥

हतिआ दुइ जौ चढ़ाएहु काँधइ अजहुँ न गएँ अपराधु ।
40 तेसरि एहु लेहु माथइँ जउँ रे लेइ कइ साधु ॥ २१६ ॥

सुनि कइ महादेओ कइ भाखा । सिद्ध पुरुख राजइ मन लाखा ॥
सिद्धहि अंग न बइठइ माखी । सिद्ध पलक नहिँ लावहिँ आँखी ॥
सिद्धहि संग होइ नहिँ छाया । सिद्ध होइ नहिँ भूख न माया ॥
जउँ जग सिद्धि गोसाईँ कीन्ही । परगट गुपुत रहइ को चीन्ही ॥
45 बइल चढ़ा कुसिटी कर भेख । गिरिजा-पति सत आहि महेख ॥
चीन्हइ सोइ रहइ तेहि खोजा । जस बिकरम अउ राजा भोजा ॥
कइ जिउ तंत मंत सउँ हेरा । गएउ हेराय जौ वह भा मेरा ॥
बिनु गुरु पंथ न पाइअ भूलइ सोइ जो भेट ।
जोगी सिद्ध होइ तब जब गोरख सउँ भेँट ॥ २१७ ॥

ततखन रतनसेन गहबरा । छाँडि डफार पाउँ लेइ परा ॥
50 मातइ पितइ जरम कित पाला । जउँ अस फाँद पेम गिअ घाला ॥
धरती सरग मिले हुत दोऊ । कित निनार कइ दीन्ह बिछोऊ ॥
पदिक पदारथ कर हुत खोआ । टूटहिँ रतन रतन तस रोआ ॥
गगन मेघ जस बरसहिँ भली । पुहुमी पूरि सलिल होइ चली ॥
साएर उपटि सिखर गे पाटी । जरइ पानि पाहन हिअ फाटी ॥
55 पउन पानि होइ होइ सब गरहीँ । पेम फाँद केहू जनि परहीँ ॥
तस रोअइ जौ जरइ जिउ गरइ रकत अउ माँसु ।
रोअँ रोअँ सब रोअहिँ सोत सोत भरि आँसु ॥ २१८ ॥

रोअत बूडि उठा संसारू । महादेओ तब भएउ मयारू ॥
कहेसि न रोउ बहुत तइँ रोआ । अब ईसुर भा दारिद-खोआ ॥
जो दुख सहइ होइ सुख ओ का । दुख बिनु सुख न जाइ सिउ-लोका ॥
60 अब तूँ सिद्ध भया सुधि पाई । दरपन कया छूटि गइ काई ॥
कहउँ बात अब हो उपदेसी । लागि पंथ भूले परदेसी ॥

जउँ लहि चोर सेँधि नहिँ देई। राजा केर न मूसइ पेई॥
चढइ त जाइ बार वह खूँदी। परइ त सेँधि सीस सउँ मूँदी॥
कहउँ सो तोहि सिंघल-गढ हइ खँड सात चढाउ।
फिरइ न कोई जिअत जिउ सरग पंथ देइ पाउ॥ २१९॥
गढ तस बाँक जइस तोरि काया। परखि देखु वह ओहि कइ छाया॥ 65
पाइअ नाहिँ जूझि हठ कीन्हे। जेइँ पावा तेइँ आपुहिँ चीन्हे॥
नउ पउरी तेहि गढ मँझिआरा। अउ तहँ फिरहिँ पाँच कोटवारा॥
दसउँ दुआर गुपुत एक नाँकी। अगम चढाउ बाट सुठि बाँकी॥
भेदी कोइ जाइ ओहि घाँटी। जउँ लहि भेद चढइ होइ चाँटी॥
गढ तर एक कुंड अउगाहा। तेहि महँ पंथ कहउँ तोहि पाँहा॥ 70
चोर पइठि जस सेँधि सँवारी। जुआ पइँत जिउ लाउ जुआरी॥
जस मरजिआ समुँद धसइ हाथ आउ तब सीपु।
ढूँढि लेहु वह सरग दुआरी अउ चढु सिंघल-दीपु॥ २२०॥
दसउँ दुआर तारु का लेखा। उलटि दिसिटि जो लाउ सो देखा॥
जाइ सो जाइ साँस मन बंदी। जस धँसि लीन्ह कान्ह कालंदी॥
तूँ मन नाथ मारु कइ साँसा। जउँ पइ मरहु आपु करु नासा॥ 75
परगट लोकचार कहु बाता। गुपुत लाउ मन जा सउँ राता॥
हउँ हउँ कहत मेँटि सब खोई। जउँ तूँ नाहिँ आहि सब सोई॥
जिअतहिँ जो रे मरइ एक बारा। पुनि को मीचु को मारइ पारा॥
आपुहि गुरु सो आपुहि चेला। आपुहि सब अउ आपु अकेला॥
आपुहि मीचु जिअन पुनि आपुहि तन मन सोइ।
—पुहि आपु करइ जो चाहइ कहाँ क दोसर कोइ॥ २२१॥ 80

इति पारबती-महेस खंड॥ २२॥

अथ राजा-गढ़-छेँका खंड ॥ २३ ॥

सिद्धि-गोटिका राजइ पावा । अउ भइ सिद्धि गनेस मनावा ॥
जब संकर सिधि दीन्ह कौ टेका । परी हूल जोगिन्ह गढ़ छेँका ॥
सबइ पदुमिनी देखहिँ चढ़ी । सिंघल घेरि कीन्ह उठि मढ़ी ॥
जस खर-फरा चोर मति कीन्ही । तेहि विधि सेँधि चाह गढ़ दीन्ही ॥
5 गुपुत जौ चोर रहइ सो साँचा । परगट होइ जीउ नहिँ बाँचा ॥
पउरि पउरि गढ़ लाग केवारा । अउ राजा सउँ भई पुकारा ॥
जोगी आइ छेँकि गढ़ मेले । न जनउँ कउनु देस कहँ खेले ॥
भएउ रजाएसु देखहु कौ अस भिखारी ढीठ ।
जाइ बरजि तिन्ह आवहु जन दुइ जाहिँ बसीठ ॥ २२२ ॥
उतरि बसिठ दुइ आइ जौहारे । कइ तुम्ह जोगी कइ बनिजारे ॥
10 भएउ रजाएसु आगइ खेलहु । गढ़ तर छाँडि अनत होइ मेलहु ॥
अस लागेहु केहि के सिखि दीन्हे । आएहु मरइ हाथ जिउ लीन्हे ॥
इहाँ इँदर अस राजा तपा । जउँ-हि रिसाइ सूर डरि छपा ॥
हहु बनिजार तौ बनिज बेसाहहु । भरि बइपार लेहु जौ चाहहु ॥
जोगी हहु तौ जुगुति सउँ माँगहु । भुगुति लेहु लेइ मारग लागहु ॥
15 इहाँ देओता अस गए हारी । तुम्ह पतंग को आहि भिखारी ॥
तुम्ह जोगी बइरागी कहत न मानहु कोहु ।
लेहु माँगि किछु भिच्छा खेलि अनत कहँ होहु ॥ २२३ ॥

जोगिहि कोहु न चाहिअ तब न मोहिँ रिस लागि ।
40 पेम-पंथ जेहि पानि हइ कहा करइ तेहि आगि ॥ २२६ ॥
बसिठहि जाइ कही असि बाता । राजा सुनत कोहु भा राता ॥
ठाउँहिँ ठाउँ कुअँर सब माखे । केइँ अब लगि जोगी जिउ राखे ॥
अब-हूँ बेगि करहु संजोऊ । तस मारहु हतिआ किन होऊ ॥
मँतिरिन्ह कहा रहहु मन बूझे । पति न होइ जोगिहिँ सउँ जूझे ॥
45 वेइँ मारहिँ तो काह भिखारी । लाज होइ जउँ मानिअ हारी ॥
ना भल मुअइ न मारइ मोखू । दुहूँ बात तुम्ह लागिहि दोखू ॥
रहइ देहु जउँ गढ तर मेली । जोगी कित आछहिँ बिनु खेली ॥
रहइ देहु जो गढ तर जनि चालहु यह बात ।
तिन्हहिँ जो पाहन भख करहिँ अस केहि के मुख दाँत ॥ २२७ ॥
गए जो बसिठ पुनि बहुरि न आए । राजइ कहा बहुत दिन लाए ॥
50 न जनउँ सरग बात दहुँ काहा । काहु न आइ कही फिरि चाहा ॥
पाँख न कया पउन नहिँ पाया । केहि बिधि मिलउँ होउँ केहि छाया ॥
सँवँरि रकत नइनहिँ भरि चूआ । रोइ हँकारेसि माँझी सूआ ॥
परहिँ जो आँसु रकत कइ टूटी । अबहुँ सो राती बीर-बहूटी ॥
उहइ रकत लिखि दीन्ही पाती । सुअइ जो लीन्ह चोँच भइ राती ॥
55 बाँधा कंठ पडा जरि काँठा । बिरह क जरा जाइ कहँ नाठा ॥
मसि नइना लिखनी बरुनि रोइ रोइ लिखा अकरथ ।
आखर दहहिँ न कोइ गहइ (सो) दीन्ह परेवा हत्थ ॥ २२८ ॥
अउ मुख सउँ बच कहेसु परेवा । पहिलइ मोरि बहुत कइ सेवा ॥
पुनि सँवराइ कहेसु अस दूजे । जो बलि दीन्ह देओतन्ह पूजे ॥
सो अबहूँ तुम्हइ बलि लागा । कब लगि कया सुन मड जागा ॥
60 भलेहि ईस तुम्ह-हूँ बलि दीन्हा । जहँ तुम्ह भाउ तहाँ बलि कीन्हा ॥
जउँ तुम्ह मया कीन्ह पगु धारा । दिसिटि देखाइ बान-बिख मारा ॥

जो अस जा कर आसा-मुखी। दुख महँ अइस न मारइ दुखी॥
नइन भिखारि न मानहिँ सीखा। अगुमन दउरि लीन्ह पइ भीखा॥
नइनहिँ नइन जो बेधि गइ नहिँ निकसहिँ वेइ बान।
हिअइ जो आखर तुम्ह लिखे ते सुठि घटहिँ परान॥२२९॥
तेइ बिख-बान लिखउँ कहँ ताईं। रकत जो चुआ भीँज दुनिआईं॥ 66
जानु सो गारइ रकत पसेऊ। सुखी न जान दुखी कर भेऊ॥
जेहि न पीर तेहि का करि चीता। प्रीतम निठुर होइ अस नीता॥
का सउँ कहउँ बिरह कइ भाखा। जा सउँ कहउँ होइ जरि राखा॥
बिरह आगि तन जर बर जरइ। नइन नीर सायर सब भरइ॥
पाती लिखी सवँरि तुम्ह नावाँ। रकत लिखे आखर भए स्यावाँ॥ 70
आखर जरहिँ न कोई छूआ। तब दुख देखि चला लेइ सूआ॥
अब सुठि मरउँ छूँछि गइ पाती पेम पिआरे हाथ।
भेँटि होति दुख रोइ सुनावत जीउ जात जउँ साथ॥२३०॥
कंचन तार बाँधि गिअँ पाती। लेइ गा सुआ जहाँ धनि राती॥
जइसइ कवँल सुरुज कइ आसा। नीर कंठ लहि मरइ पिआसा॥
बिसरा भोगु सेज सुख बासू। जहाँ भवँर सब तहाँ हुलासू॥ 75
तब लगि धीर सुना नहिँ पीऊ। सुनतहि घरी रहइ नहिँ जीऊ॥
तब लगि सुख हिए पेम न जामा। जहाँ पेम गा सुख बिसरामा॥
अगर चँदन सुठि दहइ सरीरू। अउ भा अगिनि कया कर चीरू॥
कथा कहानी सुनि सुठि जरा। जानहुँ घिउ बइसंदर परा॥
बिरह न आपु सँभारइ मइल चीर सिर रूख।
पिउ पिउ करत रात दिन पपिहा भइ मुख सूख॥२३१॥ 80
ततखन हीरामनि गा आई। मरत पिआस छाँह जनु पाई॥
भल तुम्ह सुआ कीन्ह हइ फेरा। गाढ न जानेउँ प्रीतम केरा॥
बाटहि जानहुँ बिखम पहारा। हिरदइ मिला न होइ निनारा॥

मरम पानि कर जान पिआसा। जो जल महँ ता कहँ का आसा॥
85 का रानी यह पूँछहु बाता। जनि कोइ होइ पेम कर राता॥
तुम्हरे दरसन लागि बिओगी। अहा सो महादेओ मठ जोगी॥
तुम्ह बसंत लेइ तहाँ सिधाई। देओ पूजि पुनि ओ पहँ आई॥
दिसिटि बान तस मारेहु घाइ रहा तेहि ठाउँ।
दोसरि बार न बोला लेइ पदुमावति नाउँ॥ २३२॥
रोअँहि रोअँ बान बेइ फूटे। सोतहि सोत रुहिर मुख छूटे॥
90 नइनन्ह चली रकत कइ धारा। कंथा भीँजि भएउ रतनारा॥
सुरुज बूडि उठा परभाता। अउ मँजीठ टेँसू बन राता॥
भएउ बसंत रात बनफती। अउ राते सब जोगी जती॥
पुहुमि जो भीँज भई सब गेरू। अउ तहँ अहा सो रात परेरू॥
राती सती अगिनि सब काया। गगन मेघ राते तेहि छाया॥
95 ईँगुर भा पहार तस भीँजा। पइ तुम्हार नहिँ रोअँ पसीजा॥
तहाँ चकोर कोकिला तिन्ह हिअ मया पईठि।
नइन रकत भरि आए तुम्ह फिरि कीन्ह न दीठि॥ २३३॥
अइस बसंत तुम्हहँ पइ खेलहु। रकत पराए सेँदुर मेलहु॥
तुम्ह तउ खेलि मँदिर कहँ आईँ। ओहि क मरम पइ जानु गोसाईँ॥
कहेसि मरइ को बारहिँ बारा। एकहि बार होउँ जरि छारा॥
100 सर रचि चहा आगि जो लाई। महादेओ गउरइ सुधि पाई॥
आइ बुझाइ दीन्ह पँथ तहवाँ। मरन खेल कर आगम जहवाँ॥
उलटा पंथ पेम कइ बारा। चढइ सरग सो परइ पतारा॥
अब धँसि लीन्ह चहइ तेहि आसा। पावइ आस कि मरइ निरासा॥
पाती लिखि जो पठाई लिखा सबइ दुख रोइ।
दहुँ जिउ रहइ कि निसरइ काह रजाएसु होइ॥ २३४॥
105 कहि कइ सुमइ छोडि दइ पाती। जानहुँ दीप छुअत तस ताती॥

गिअहिँ जौ बाँधे कंचन तागे। राते स्यावँ कंठ जरि लागे॥
अगिनि साँस सँग निसरी ताती। तरुअर जरहिँ तहाँ को पाती॥
रोइ रोइ सुअइ कही सब बाता। रकत क आँसुहिँ भा मुख राता॥
देखु कंठ जरि लागु सो गेरा। सो कस जरइ बिरह अस घेरा॥
जरि जरि हाड भए सब चूना। तहाँ माँस को रकत बिहूना॥ 110
वेइ तोहि लागि कया असि जारी। तपत मीन जल रहइ न पारी॥

तेहि कारन वह जोगी भसम कीन्ह तन दाहि।
तूँ अस निठुर निछोही बात न पूँछी ताहि॥ २३५॥

कहेसि सुआ मो सउँ सुनु बाता। चहउँ तो आजु मिलउँ जस राता॥
पइ सो मरमु न जानइ भोरा। जानइ प्रीति जो मरि कइ जोरा॥
हउँ जानति हउँ अब-हूँ काँचा। ना जेहि प्रीति रंग थिरु राँचा॥ 115
ना जेहि होइ भवँर कर रंगू। ना जेहि दीपक होइ पतंगू॥
ना जेहि करा भिंगि कइ होई। ना जेहि अबहि जिअइ मरि सोई॥
ना जेहि पेम अउटि एक भएउ। ना जेहि हिअइ माँह डर गएऊ॥
ना जेहि भएउ मलइ गिरि बासा। ना जेहि रबि होइ चढेउ अकासा॥

तेहि का कहिअ रहन खन जो हइ पीतम लागि।
जहाँ सुनइ तहँ लेइ धँसि कहा पानि का आगि॥ २३६॥ 120

पुनि धनि कनक पानि मसि माँगी। उतर लिखत भीँजी तनु आँगी॥
तेहि कंचन कहँ चहिअ सोहागा। जउँ निरमल नग होइ सो लागा॥
हउँ जो गइउँ मढ मंडप भोरी। तहवाँ तुइँ न गाँठि गहि जोरी॥
गा बिसँभारि देखि कइ नइना। सखिन्ह लाज का बोलउँ बइना॥
खेलहि मिसु मइँ चंदन घाला। मकु जागसि तो देउँ जइ-माला॥ 125
तबहुँ न जागा गा तूँ सोई। जागइँ भेँटि न सोअइँ होई॥
अब तउ ससि होइ चढेउँ अकासा। जो जिउ देइ सो आवइ पासा॥

तब लगि सुगुति न लेइ सका रावँन सिअ एक साथ।
कउन भरोसइँ अब कहउँ जीउ पराए हाथ॥ २३७॥

अब जउँ सूर गगन चढ़ि आवइ। राहु होइ तउ ससि कहँ पावइ॥
130 बहुतइँ अइस जीउ पर खेला। तूँ जोगी केहि माँह अकेला॥
बिकरम धँसा पेम कइ बारा। चंपावति कहँ गएउ पतारा॥
सुदइ-बच्छ मगधावति लागी। कँकन पूरि होइ गा बइरागी॥
राज-कुअँर कंचन-पुर गएऊ। मिरगावति कहँ जोगी भएऊ॥
साध कुअँर गंधावति जोगू। मधु मालति कहँ कीन्ह बिओगू॥
135 पेमावति कहँ सर सुर साधा। उखा लागि अनिरुध बर बाँधा॥
हउँ रानी पदुमावती सात सरग पर बास।
हाथ चढउँ हउँ ताहि के प्रथम करइ अपुनास॥ २३८॥

हउँ पुनि अहउँ अइसि तोहि राती। आधी भेंटि पिरीतम पाती॥
तोहि जउँ प्रीति निबाहइ आँटा। भवँर न देखु केत महँ काँटा॥
होहु पतंग अधर गहि दीआ। लेहु समुँद धँसि होइ मरजीआ॥
140 राति रंग जिमि दीपक बाती। नइन लाउ होइ सीप सेवाती॥
चातक होइ पुकारु पिआसा। पीउ न पानि सेवाति क आसा॥
सारस होहु बिछुरि जस जोरी। रइनि होहु जल चकइ चकोरी॥
होहु चकोर दिसिटि ससि पाहाँ। अउ रबि होहु कवँल ओहि माहाँ॥
हम-हुँ अइसि हउँ तो सउँ सकसि त प्रीति निबाहु।
राहु बेधि अरजुन होइ जिति दुरपदी बिआहु॥ २३९॥

145 राजा इहाँ तइस तप झूरा। भा जरि बिरह छार कर कूरा॥
भउन लगाए गएउ बिमोही। भा बिनु जिउ जिउ दीन्हेसि ओही॥
गहि पिंगला सुखुमना नारी। सुन्न समाधि लागि गइ तारी॥
बूँद-हि समुँद होइ जस मेरा। गा हेराइ तस मिलइ न हेरा॥
रंग-हि पानि मिला जस होई। आपुहि खोइ रहा होइ सोई॥

सुअइ आइ देखा भा नासू। नइन रकत भरि आएउ आँसू॥ 150
सदा पिरीतम गाढ़ करेई। वह न भूल भूला जिउ देई॥
मूरि सजीओनि आनि कइ अउ मुख मेला नीर।
गरुर पाँख जस झारइ अँविरित बरसा कीर॥ २४०॥
सुआ अहा जेहि आस सो पावा। बहुरी साँस पेट जिउ आवा॥
देखेसि जागि सुअइ सिर नावा। पाति दीन्ह मुख बचन सुनावा॥
गुरू सबद दुइ सरवन मेला। गुरू बोलाउ बेगि चलु चेला॥ 155
तोहि अलि कीन्ह आपु भा केवा। हउँ पठवा कइ बीच परेवा॥
पउन साँस तो सउँ मन लाई। जोवइ मारग दिसिटि बिछाई॥
जस तुम्ह कया कीन्ह अगि-डाहू। सो सब गुरु कहँ भएउ अगाहू॥
तब उडंत-छाला लिखि दीन्हा। बेगि आउ चाहउँ सिधि कीन्हा॥
आवहु स्यावँ सुलक्खने जीउ बसइ तुम्ह नाउँ।
नइनहिं भीतर पंथ इइ हिरदहि भीतर ठाउँ॥ २४१॥ 160
सुनि कइ असि पदुमावति मया। भा बसंत उपनी नइ कया॥
सुआ क बोलि पउन होइ लागा। उठा सोइ हनुवँत होइ जागा॥
चाँद मिलन कइ दीन्हेसि आसा। सहसहु कराँ सूर परगासा॥
पतरि लीन्ह लेइ सीस चढ़ावा। दिसिटि चकोर चाँद जनु पावा॥
आस पिआसा जो जेहि केरा। जउँ झिझिकार ओही सो हेरा॥ 165
अब यह कउन पानि मइँ पीआ। भा तन पाँख पनग मरि जीआ॥
उठा फूलि हिरदइ न समाना। कंथा टूक टूक बिहराना॥
जहाँ पिरीतम वेइ बसहिं यह जिउ बलि तेहि बाट।
जउँ सो बोलावइ पाउँ सउँ हउँ तहँ चलउँ ललाट॥ २४२॥
जो पँथ मिला [illegible] सो मुंद उहइ धँसि लेई॥
जहँ वह कुंड [illegible] जहँ पाओ न थाहा॥ 170
बाउर [illegible] सूझ न आगू॥

लीन्हेसि धँसि सुश्राँस मन मारा। गुरू मौछंदर-नाथ सँमारा॥
चेला परइ न छाँडइ पाछू। चेला मच्छ गुरू जस काछू॥
जनु धँसि लीन्ह समुँद मरजीश्रा। उघरइ नइन बरइ जनु दीश्रा॥
175 खोजि लीन्ह सो सरग दुश्रारा। बजर जौ मूँदे जाश्र उघारा॥
बाँक चढाउ सरग गढ चढत गश्रउ होइ भोर।
भइ पुकार गढ ऊपर चढे सेँधि देइ चोर॥ २४३॥
राजइ सुना जोगि गढ चढे। पूँछी पास पँडित जो पढे॥
जोगी गढ जौ सेँधि देइ श्रावहिँ। कहहु सो सबद सिद्धि जिन्ह पावहिँ॥
कहहिँ बेद पढ पंडित बेदी। जोगि भवँर जस मालति-भेदी॥
180 जइसइ चोर सेँधि सिर मेलहिँ। तसि श्रइ दोउ जीउ पर खेलहिँ॥
पंथ न चलहिँ बेद जस लिखे। चढे सरग सूरी चढि सिखे॥
चोरहि होइ सूरी पर मोखू। देइ जौ सूरी तेहि नहिँ दोखू॥
चोर पुकारि बेधि घर मूँसा। खोलहिँ राज-भँडार-मँजूसा॥
जइस भँडारहि मूँसहिँ चढहिँ रइनि देइ सेँधि।
तइस चहिश्र पुनि उन्ह कहँ मारहु सूरी बेधि॥ २४४॥

इति राजा-गढ-छेँका खंड॥ २३॥

अथ मंत्री खंड ॥ २४ ॥

राँधि जो मंत्री बोलइ सोई । अइस जो चोर सिद्ध पइ कोई ॥
सिद्ध निसंक रइनि पइ भवँहीँ । ताकहिँ जहाँ तहाँ उपसवहीँ ॥
सिद्ध निडर पइ अइसइ जीआ । खरग देखि कइ नावँहिँ गीआ ॥
सिद्ध जाहिँ पइ जिउ बधि जहाँ । अउरहि मरन पंख अस कहाँ ॥
चढहिँ जो कोपि गगन उपराहीँ । थोरइ साज मरहिँ सो नाहीँ ॥ 5
जंबुक कहँ जउँ चढिअहि राजा । सिंघ साजि कइ चढिअ त छाजा ॥
सिद्ध अमर काया जस पारा । छरहिँ मरहिँ पइ जाहिँ न मारा ॥
छरहिँ काज किरिसुन कर साजा राजा धरहिँ रिसाइ ।
सिद्ध गिद्ध जेहिँ दिसिटि गगन पर बिनु छर किछु न बसाइ ॥ २४५ ॥

आवहु करी गुदर मिस साजू । चढहु बजाइ जहाँ लगि राजू ॥
होहु सँजोइल कुअँर जो भोगी । सब दर छेँकि धरहु अब जोगी ॥ 10
चउबिस लाख छतर-पति साजे । छपन कोटि दर बाजन बाजे ॥
बाइस सहस सिंघली चाले । गिरिह पहार पुहुमि सब हाले ॥
जगत बराबर देइ सब चाँपा । डरा इँदर बासुकि हिअ काँपा ॥
पदुम कोटि रथ साजे आवहिँ । गिरि होइ खेह गगन कहँ धावहिँ ॥
जनु भुइँ-चाल चलत तहँ परा । कुरमहि पीठि टूटि हिअ डरा ॥ 15
छतरहिँ सरग छाइ गा सूरज गअउ अलोपि ।
दिनहिँ राति असि देखी चढा इँदर होइ कोपि ॥ २४६ ॥

देखि कटक अउ मइमत हाथी। बोले रतन-सेन के साथी॥
होत आउ दर बहुत असूझा। अस जानत हहिँ होइहइ जूझा॥
राजा तूँ जोगी होइ खेला। इहइ दिवस कहँ हम भए चेला॥
२० जहाँ गाढ ठाकुर कहँ होई। संग न छाडइ सेवक सोई॥
जो हम मरन दिवस मन ताका। आज आइ सो पूजी साका॥
बरु जिउ जाउ जाए जनि बोला। राजा सत्त सुमेरु न डोला॥
गुरू केर जउँ आएसु पावहिँ। सउँह होइ हम चकर चलावहिँ॥
आजु करहिँ रन भारथ सत्त बचा दइ राखि।
सत्त करइ सब कउतुक सत्त भरइ पुनि साखि॥ २४७॥
२५ गुरू कहा चेला सिध होहू। पेम बार होइ करी न कोहू॥
जा कहँ सीस नाइ कइ दीजिअ। रंग न होय ऊभ जउँ कीजिअ॥
जेहि जिएँ पेम पानि भा सोई। जेहि रँग मिलइ तेही रँग होई॥
जउँ पइ जाइ पेम सउँ जूझा। कित तपि मरहिँ सिद्ध जेइँ बूझा॥
यह सत बहुत जौ जूझि न करिअइ। खरग देखि पानी होइ ढरिअइ॥
३० पानिहि काह खरग कइ धारा। लउटि पानि सोई जो मारा॥
पानी सेँति आगि का करई। जाइ बुझाइ पानि जउँ परई॥
सीस दीन्ह मइँ अगुमन पेम पाए सिर मेलि।
अब सौं पिरीति निबाहउँ चलउँ सिद्ध होइ खेलि॥ २४८॥
राजहि छेँकि धरे सब जोगी। दुख ऊपर दुख सहइ बिओगी॥
ना जिउ धडरू धरत हइ कोई। न जनउँ मरन जिअन कस होई॥
३५ नाग-फाँस उन्ह मेली गीआ। हरख न बिसमउ एकउ जीआ॥
जेइँ जिउ दीन्ह सौं लेउ निरासा। बिसरइ नहिँ जउँ लहि तन साँसा॥
कर किँगरी तेइ तंत बजावा। नेह गीत बैरागी गावा॥
भलेहिँ आनि गिअ मेली फाँसी। हिअइँ न सोच रोस रिस नासी॥
मइँ गिअ-फाँद ओही दिन मेला। जेहि दिन पेम-पंथ होइ खेला॥

परगट गुपुत सकल महि पूरि रहा सब ठाउँ।
जहँ देखउँ ओहि देखउँ दोसर नहिँ कहँ जाउँ ॥ २४६ ॥ 40

जब लगि गुरु मइँ अहा न चीन्हा। कोटि अँतर पट हुत बिच दीन्हा ॥
जउँ चीन्हा तउ अउरु न कोई। तन मन जिउ जोबन सब सोई ॥
हउँ हउँ कहत धोख अँतराहीँ। जो भा सिद्ध कहाँ परछाहीँ ॥
मारइ गुरू कि गुरू जिआवा। अउरु को मार मरइ सब आवा ॥
सूरी मेलि हसति गुरु पूरू। हउँ नहिँ जानउँ जानइ गूरू ॥ 45
गुरू हसति पर चढा सो पेखा। जगत जो नास्ति नास्ति सब देखा ॥
अंध मीन जस जल महँ धावा। जल जीअन पुनि दिसिटि न आवा ॥
गुरू मोर मोरइ सिर देइ तुरंगहि ठाठ।
भीतर कराहि डोलावई बाहर नाँचइ काठ ॥ २५० ॥

सो पदुमावति गुरु हउँ चेला। जोगतंत जेहि कारन खेला ॥
तजि ओहि बार न जानउँ दूजा। जेहि दिन मिलइ जातरा पूजा ॥ 50
जीउ काढि भुइँ धरउँ ललाटू। ओहि कहँ देउँ हिआ महँ पाटू ॥
को मोहिँ लेइ सो छुआवइ पाया। नउ अउतार देइ नइ काया ॥
जीउ चाहि सो अधिक पिआरी। माँगइ जीउ देउँ बलिहारी ॥
माँगइ सीस देउँ सइँ गीआ। अधिक नवउँ जउँ मारइ जीआ ॥
अपने जिउ कर लोभ न मोही। पेम-बार होइ माँगउँ ओही ॥ 55
दरसन ओहिक दिआ जस हउँ रे भिखारि पतंग।
जउँ करवत सिर सारइ मरत न मोरउँ अंग ॥ २५१ ॥

पदुमावति कवँला ससि जोती। हँसइ फूल रोअइ तब मोती ॥
बरजा पितइ हँसी अरु रोजू। लाए दूत होइ निति खोजू ॥
जउ हिँ सुरुज कहँ लागेउ राहू। तउ हिँ कवँल मन भएउ अगाहू ॥
बिरह अगस्ती बिसमउ भएऊ। सरवर हरख सूखि सब गएऊ ॥ 60
परगट ढारि सकइ नहिँ आँसू। घटि घटि माँसु गुपुत होइ नासू ॥

जस दिन माँझ रइनि होइ आई। बिगसत कवँल गएउ कुम्हिलाई॥
राता बदन गएउ होइ सेता। भवँर भवँति रहि गई अचेता॥
चितहिँ जो चितर कीन्ह धनि रोवँ रोवँ अंग समेटि।
सहस साल दुख आहि भरि मुरुछि परी गइ मेटि॥ २५२॥

65 पदुमावति सँग सखी सयानी। गनि कइ नखत पीर ससि जानी॥
जानहिँ मरम कवँल कर कोई। देखि बिथा बिरहिनि कइ रोई॥
बिरहा कठिन काल कइ कला। बिरह न सहइ काल पर भला॥
काल काढि जिउ लेइ सिधारा। बिरह काल मारे पर मारा॥
बिरह आगि पर मेलइ आगी। बिरह घाउ पर घाउ बजागी॥
70 बिरह बान पर बान बिसारा। बिरह रोग पर रोग सँचारा॥
बिरह साल पर साल नवेला। बिरह काल पर काल दुहेला॥
तन राओन होइ गढ चढा बिरह भएउ हनुवंत।
जारे ऊपर जारई तजइ न कइ भसमंत॥ २५३॥

कोइ कुमोद कर परसहिँ पाया। कोइ मलयागिरि छिडकहिँ काया॥
कोइ मुख सीतल नीर चुआवहिँ। कोइ अंचल सउँ पउन डोलावहिँ॥
75 कोइ मुख अँबिरित आनि निचोआ। जनु बिख दीन्ह अधिक धनि सोआ॥
जोवहिँ साँस खनहिँ खन सखी। कब जिउ फिरइ पउन अउ पँखी॥
बिरह काल होइ हिअइँ पईठा। जीउ काढि लेइ हाथ पईठा॥
खन एक मूँठि बाँध खन खोला। खनहिँ जीभ मुख जाइ न बोला॥
खनहिँ बजर के बानन्ह मारा। कँपि कँपि नारि मरइ बिकरारा॥
कइसेहु बिरह न छाडइ भा ससि गहन गिरास।
80 नखत चहूँ दिसि रोअहिँ अँधिअर धरति अकास॥ २५४॥

घरी चारि इमि गहन गिरासी। पुनि बिधि जाति हिअइँ परगासी॥
निसँसि ऊभि भरि लीन्हेसि साँसा। भइ अधार जीअन कइ आसा॥
बिनवँहिँ सखी छूटि ससि राहू। तुम्हरी जोति जोति सब काहू॥

तूँ ससि-बदन जगत उँजिआरी। केइ हरि लीन्ह कीन्ह अँधिआरी ॥
तूँ गजगाविँनि गरब गहीली। अब कस अस छाडइ सत ढीली ॥ 85
तइँ हरि लंक हराई केहरि। अब कस हारि करसि हइ हे हरि ॥
तूँ कोकिल-बइनी जग मोहा। को ब्याधा होइ गहइ बिछोहा ॥
कवँल करी तूँ पदुमिनि गइ निसि भएउ बिहान।
अबहुँ न संपुट खोलेसि जो रे उठा जग भान ॥ २५५ ॥

भान नाउँ सुनि कवँल बिगासा। फिरि कइ भवँर लीन्ह मधु बासा ॥
सरद चाँद मुख जीभ उघेली। खंजन नइन उठे कइ केली ॥ 90
बिरह न बोल आउ मुख ताईं। मरि मरि बोलि जीउ बरिआई ॥
दवइ बिरह दारुन हिअ काँपा। खोलि न जाइ बिरह दुख झाँपा ॥
उदधि समुँद जस तरँग देखावा। चखु घूमहिँ मुख बात न आवा ॥
यह सुठि लहरि लहरि पर धावा। भवँर परा जिउ थाह न पावा ॥
सखी आनि बिख देहु त मरऊँ। जिउ नहिँ पेट ताहि डर डरऊँ ॥ 95
खनहिँ उठइ खन बूडइ अस हिअ कवँल सँकेत।
हीरामनिहि बोलावहू सखी गहन जिउ लेत ॥ २५६ ॥

पुरइनि धाइ सुनत खन धाईँ। हीरामनिहि बेगि लेइ आईँ ॥
जनहुँ बइद ओखद लेइ आवा। रोगिआ रोग मरत जिउ पावा ॥
सुनत असीस नइन धनि खोली। बिरह बइन कोइल जिमि बोली ॥
कवँलहि बिरह बिथा जसि बाढी। केसरि बरन पिअरि हिअ गाढी ॥ 100
कित कवँलहि भा पेम अँकूरू। जउँ पइ गहन लीन्ह दिन सूरू ॥
पुरइनि छाँह कवँल कइ करी। सकल बिभास आस तुम्ह हरी ॥
पुरुख गँभीर न बोलहिँ काहू। जउँ बोलहिँ तउ अउरु निबाहू ॥
एतना बोल कहत मुख पुनि होइ गई अचेत।
पुनि कइ चेत सँभारी उहइ बकत मुख लेत ॥ २५७ ॥

अउरु दगध का कहउँ अपारा। सुनइ सो जरइ कठिन असि झारा ॥ 105

होइ हनिवंत यइठ इइ कोई। लंका डाहि लागु तनु सोई॥
लंका बुझी आगि जउँ लागी। यह न बुझइ तस उपज बजागी॥
जनहुँ अगिनि के उठहिँ पहारा। वेइ सब लागहिँ अंग अँगारा॥
कँपि कँपि माँसु सुराग पुरोआ। रकत कि आँसु माँसु सब रोआ॥
110 खन एक मारि माँसु अस भूँजा। खनहिँ जिआइ सिंघ अस गूँजा॥
यह रे दगध हुति उतिम मरीजिअ। दगध न सहिअ जीउ बरु दीजिअ॥
जहँ लगि चंदन मलइ-गिरि अउ साग्रर सब नीर।
सब मिलि आइ बुझावहिँ बुझइ न आगि सरीर॥ २५८॥

हीरामनि जो देखी नारी। प्रीति वेलि उपनी हिअ बारी॥
कहेसि कस न तुम्ह होहु दुहेली। अरुझी पेम प्रीति कइ बेली॥
115 प्रीति-बेलि जनि अरुझइ कोई। अरुझा मुअइ न छूटइ सोई॥
प्रीति-बेलि अइसइ तनु डाढा। पलुहत सुख बाढत दुख बाढा॥
प्रीति-बेलि कइ अमर सो बोई। दिन दिन बढइ खीन नहिँ होई॥
प्रीति-बेलि सँग बिरह अपारा। सरग पतार जरइ तेहि झारा॥
प्रीति अकेलि बेलि चढि छावा। दोसर बेलि न सरिवरि पावा॥
प्रीति-बेलि उरझाइ जब तब सो छाँह सुख साख।
120 मिलइ पिरीतम आइ कइ दाख बेलि रस चाख॥ २५६॥

पदुमावति उठि टेकइ पाया। तुम्ह हुति हो प्रीतम कइ छाया॥
कहत लाज अउ रहइ न जीऊ। एक दिसि आगि दोसरि दिसि सीऊ॥
तुम्ह सों मोर खेवक गुरु देऊ। उतरउँ पार तेही निधि खेऊ॥
सूर उदइ-गिरि चढत भुलाना। गहने गहा कवँल कुम्हिलाना॥
125 ओहट होइ मरउँ तेहि झूरी। यह सुठि मरन जो निअरहि दूरी॥
घट महँ निकट निकट मा मेरू। मिलेहु न मिलइ परा तस फेरू॥
दामवती नल हंस मिलावा। तब हीरामनि नाउँ कहावा॥

मूरि सजीवनि दूरि इमि साली सकती बानु।
आन मुकुत अब होत हइ बेगि देखावहु आनु॥ २६०॥
हीरामनि भुइँ धरा लिलाटू। तुम्ह रानी जुग जुग सुख पाटू॥
जेहि के हाथ जरी अउ मूरी। सो जोगी नाहीँ अब दूरी॥ 130
पिता तुम्हार राज कर भोगी। पूजइ बिपर मरावइ जोगी॥
पवँरि पंथ कोतवार बईठा। पेम क लुबुध सुरंग पईठा॥
चढत रइनि गढ होइ गा भोरू। आवत बार धरा कइ चोरू॥
अब लेइ देन गए ओहि सूरी। तेहि सोँ अगाह बिथा तुम्ह पूरी॥
अब तुम्ह जीउ कया वह जोगी। कया क रोग जान पइ रोगी॥ 135
रूप तुम्हार जीउ लेइ आपन पिंड कमावा फेरि।
आपु हेराइ रहा तेहि खंडहि काल न पावइ हेरि॥ २६१॥
हीरामनि जो बात यह कही। सुरुज के गहन चाँद पुनि गही॥
सुरुज के दुख जो ससि भइ दुखी। सो कित दुख मानइ करमुखी॥
अब जउँ जोगि मरइ मोहिँ नेहा। मोहिँ ओहि साथ धरति गगनेहा॥
रहइ तो करउँ जरम भरि सेवा। चलइ तो यह जिउ साथ परेवा॥ 140
कउनु सो करनी कहु गुरु सोई। पर-काया परवेस जो होई॥
पलटि सो पंथ कउनु विधि खेला। चेला गुरू गुरू होइ चेला॥
कउनु खंड अस रहा लुकाई। आवइ काल हेरि फिरि जाई॥
चेला सिद्धि सो पावई गुरु सउँ करइ उछेद।
गुरू करइ जउँ किरिपा कहइ सो चेलहि भेद॥ २६२॥
अनु रानी तुम्ह गुरु वह चेला। मोहिँ पूँछेहु कइ सिद्ध नवेला॥ 145
तुम्ह चेला कहँ परसन भईँ। दरसन देइ मँडफ चलि गईँ॥
रूप तुम्हार सो चेलइ डीठा। चित समाइ होइ चितर पईठा॥
जीउ काढि तुम्ह लेइ उपसई। वह भा कया जीउ तुम्ह भई॥
कया जो लागु धूप अउ सीऊ। कया न जानु जानु पइ जीऊ॥

150 भोग तुम्हार मिला वह जाई । ओहि कइ बिथा सो तुम्ह कहँ आई ॥
तुम्ह ओहि घट वह तुम्ह घट माँहा । काल कहाँ पावइ ओहि छाँहा ॥
अस वह जोगि अमर भा पर-काया परबेसु ।
आवइ काल तुम्हहिँ तिन्ह (देखे) फिरि कइ करइ अदेसु ॥ २६३ ॥
सुनि जोगी कइ अम्मर करनी । नेउरी बिरह-बिथा कइ मरनी ॥
कवँल-करी होइ बिगसा जीऊ । जनु रबि देखि छूटि गा सीऊ ॥
155 जो अस सिद्ध को मारइ पारा । नीँऊ रस तईं जो होय छारा ॥
कहउ जाइ अब मोर सँदेसू । तजहु जोग अब होहु नरेसू ॥
जनि जानहु हउँ तुम्ह सउँ दूरी । नइनहिँ माँझ गडी वह सूरी ॥
तुम्ह परसेत घटइ घट केरा । मोहिँ जिउ घटत न लागइ बेरा ॥
तुम्ह कहँ राज-पाट महँ साजा । अब तुम्ह मोर दुअउ जग राजा ॥
जउँ रे जिअहिँ मिलि कैलि करहिँ मरहिँ तौ एकइ दोउ ।
160 तुम्ह पिअ जिउ जनि होउ किछु मोहिँ जिउ होउ सो होउ ॥ २६४ ॥

इति मंत्री खंड ॥ २४ ॥

अथ सूरी खंड ॥ २५ ॥

बाँधि तपा आनेउ जहँ सूरी । जुरी आइ सब सिंघल पूरी ॥
पहिलइँ गुरू देइ कहँ आना । देखि रूप सब कोउ पछिताना ॥
लोग कहहिं यह होअइ न जोगी । राजकुअँर कोउ अहइ विओगी ॥
काहू लागि भएउ हइ तपा । हिअइँ सो माल करइ मुख जपा ॥
जस मारइ कहँ बाजा तूरू । सूरी देखि हँसा मन सूरू ॥ 5
चमके दसन भएउ उँजिआरा । जो जहँ तहाँ बीजु अस मारा ॥
जोगी केर करहु पइ खोजू । मकु न होअइ यह राजा भोजू ॥
सब पूँछहिं कहु जोगी जाति जरम अउ नाओं ।
जहाँ ठाओं रोअइ कर हँसा सो कहु केहि भाओं ॥ २६५ ॥

का पूँछहु अब जाति हमारी । हम जोगी अउ तपा भिखारी ॥
जोगिहि कवन जाति हो राजा । गारिहि कोह न मारहि लाजा ॥ 10
निलज भिखारि लाज जिन्ह खोई । तिन्ह के खोज परउ जनि कोई ॥
जा कर जीउ मरइ पर बसा । सूरी देखि सो कस नहिं हँसा ॥
आजु नेह सउँ होइ निबेरा । आजु पुहुमि तजि गगन बसेरा ॥
आजु कया-पिंजर बँध टूटा । आजु परान-परेवा छूटा ॥
आजु नेह सउँ होइ निरारा । आजु पेम सँग चला पिआरा ॥ 15
आजु अवधि सरि पूजी कइ जो चलउँ मुख रात ।
बेगि होहु मोहिं मारहु का चालहु बहु बात ॥ २६६ ॥

कहहिँ सवँरु जेहि चाहसि सवँरा । हम तोहि करहिँ केति कर भवँरा ॥
कहेसि ओही सवँरउँ हरि फेरा । मुअहुँ जिअत आहउँ जेहि केरा ॥
जहाँ सुनउँ पदुमावति रामा । यह जिउ नेवछावरि तेहि नामा ॥
20 रकत क बूँद कया जत अहहीँ । पदुमावति पदुमावति कहहीँ ॥
रहहिँ त बूँद बूँद महँ ठाऊँ । परहिँ त सोई लेइ लेइ नाऊँ ॥
रोवँ रोवँ तनु ता सउँ ओधा । सूतहि सूत बेधि जिउ सोधा ॥
हाडहि हाड सबद सो होई । नस नस माँह उठइ धुनि सोई ॥
राइ बिरह गा ता कर गूद माँसु कइ खान ।
हउँ होइ साँच रहा अब यह होइ रूप समान ॥ २६७ ॥
25 जोगिहिँ जउहिँ गाढ अस परा । महादेओ कर आसन टरा ॥
अउ हँसि पारबती सउँ कहा । जानहुँ सूर गहन अस गहा ॥
आजु चढइ गढ ऊपर तपा । राजइँ गहा सूर तब छपा ॥
जग देखइ कउतुक कइ आजू । कीन्ह तपा मारइ कहँ साजू ॥
पारबती सुनि पाँयन्ह परी । चलहु महेस देखहिँ एक घरी ॥
30 भेस भाट भाटिन कर कीन्हा । अउ हनुवंत बीर सँग लीन्हा ॥
आइ गुपुत होइ देखन लागे । दहुँ मूरति कस सती सभागे ॥
कटक असूझ देखि कइ (आपनि) राजा गरब करेइ ।
दइउ क दसा न देखिअइ दहुँ का कहँ जइ देइ ॥ २६८ ॥
अस बोलइँ रहा होइ तपा । पदुमावति पदुमावति जपा ॥
मन समाधि अस ता सउँ लागी । जेहि दरसन कारन बइरागी ॥
35 रहा समाइ रूप ओहि नाऊँ । अउरु न सूझ बार जहँ जाऊँ ॥
अउ महेस कहँ करउँ अदेसू । जेहि एहि पंथ दीन्ह उपदेसू ॥
पारबती सुनि सत्त सराहा । अउ फिरि मुख महेश कर चाहा ॥
हइँ महेस पइ मई महेसी । कित सिर नावँहिँ यह परदेसी ॥
मरतेहुँ लीन्ह तुम्हारइ नाऊँ । तुम्ह चुप कीन्ह सुनहु एहि ठाऊँ ॥

मारत हइँ परदेसी राखि लेहु एहि बेरि ।
कोइ काहु कर नाहीँ जो होइ जाइ निबेरि ॥ २६९ ॥ 40

लेइ सँदेस सुअटा गा तहाँ । सूरी देन गए लेइ जहाँ ॥
देखि रतन हीरामनि रोआ । रतन ग्यान ठगि लोगन्ह खोआ ॥
देखि रोदन हीरामनि केरा । रोअहिँ सब राजा मुख हेरा ॥
माँगहिँ सब बिधिना पहुँ रोई । करु उपकार छोडावइ कोई ॥
कहि सँदेस सब बिनति सुनाई । बिकल बहुत किछु कहा न जाई ॥ 45
काढि पुरान बइसि लेइ हाथा । मरइ तौ मरउँ जिअउँ तेहि साथा ॥
सुनि सँदेस राजा तब हँसा । प्रान प्रान घट घट महँ बसा ॥

हीरामनि अउ भाट दसउँधी भए जिउ पर एक ठाउँ ।
चलहु जाइ कह बतकही जहाँ बइठु हहिँ राउ ॥ २७० ॥

राजा रहा दीठि कइ अउँधी । रहि न सका तब भाट दसउँधी ॥
कहेसि मेलि कइ हाथ कटारी । पुरुस न आछहिँ बइठि पिटारी ॥ 50
कान्ह कोपि कइ मारा कंसू । गूँग कि फूँक न बाजइ बंसू ॥
गँधरब-सेन जहाँ रिस बाढा । जाइ भाट आगइँ भा ठाढा ॥
ठाढ देखि सब राजा राऊ । बाएँ हाथ दीन्ह बर-भाऊ ॥
गँधरब-सेन तुं राजा महा । हउँ महेस मूरति अस कहा ॥
जोगी पानि आगि तूँ राजा । आगिहि पानि जूझ नहिँ छाजा ॥ 55

आगि बुझाई पानि सउँ तूँ राजा मन बूझ ।
तोरइ बार खपर हइ (लीन्हे) भिखिआ देहि न जूझ ॥ २७१ ॥

भइ अगिआँ को भाट अभाऊ । बाएँ हाथ दीन्ह बरभाऊ ॥
को जोगी अस नगरी मोरी । जो देइ सेँधि चढइ गढ चोरी ॥
इँदर डरइ निति नावइ माथा । किरिसुन डरइ कालि जेइँ नाथा ॥
बरँभा डरइ चतुर-मुख जासू । अउ पातार डरइ बलि बासू ॥ 60
मेघ डरहिँ बिजुरी जिन्ह डीठी । कुरुम डरइ धरती जेहि पीठी ॥

धरति डरइ मंदर अरु मेरू । चंद सुरुज अउ गगन कुबेरू ॥
चहउँ तौ सब भंजउँ गहि केसा । अउ को कीट पतंग नरेसा ॥
बोला भाट नरेस सुनु गरब न छाजा जीउँ ।
कुंभकरन कइ खोपडी बूडत बाँचा भीउँ ॥ २७२ ॥
65 राश्रौन गरब बिरोधा रामू । उहई गरब भएउ सँगरामू ॥
तेहि राश्रौन श्रस को बरिबंडा । जेहि दस सीस बीस बहु-दंडा ॥
सुरुज जेहि कइ तपइ रसोई । बइसुंदर निति धोती धोई ॥
सूक सउँटिआ ससि मसिश्रारा । पउनु करइ निति बार बोहारा ॥
मीचु लाइ कइ पाटी बाँधी । रहा न ओ सउँ दोसरि काँधी ॥
70 जो अस बजर टरइ नहिँ टारा । सोउ मुआ दुइ तपसिन्ह मारा ॥
नाती पूत कोटि दस अहा । रोअनिहार न एकउ रहा ॥
ओछ जानि कइ काहुही जनि कोइ गरब करेइ ।
ओछे पारइँ दइउ हइ जीत-पतर जो देइ ॥ २७३ ॥
अउरु जो भाट उहाँ हुत आगे । बिनइ उठा राजा रिस लागे ॥
भाट आहि ईसुर कइ कला । राजा सब राखहिँ अरगला ॥
75 भाट मीँचु जो आपनि दीसा । ता सउँ कउनु करइ रिस रीसा ॥
भएउ रजाएसु गँधरब-सेनी । काह मीँचु कइ चढा निसेनी ॥
काहे अनचानी अस धरई । करइ बिटंड भटंत न करई ॥
जाति करा कित अउगुन लावसि । बाएँ हाथ राज बरमावसि ॥
भाट नाउँ का मारउँ जीवा । अबहूँ बोल नाइ कइ गीवा ॥
तूँ रे भाट यह जोगी तोहि एहि कहाँ क संग ।
80 कहाँ छरइ अस पावा कहा भएउ चित भंग ॥ २७४ ॥
जो सत पूँछसि गँधरब-राजा । सत पइ कहउँ परइ किन गाजा ॥
भाटहि कहा मीँचु सन डरना । हाथ कटार पेट हनि मरना ॥
जंबुदीप जो चितउर देसू । चितर-सेन बड तहाँ नरेसू ॥

रतन-सेन यह ता कर बेटा। कुल चहुआन जाइ नहिँ मेटा॥
खाँडे अचल सुमेरु पहारू। टरइ न जउँ लागइ संसारू॥ 85
दान सुमेरु देत नहिँ खाँगा। जो ओहि माँग न अउरहि माँगा॥
दाहिन हाथ उठाएउँ ताही। अउरु को अस बरभावउँ जाही॥
नाउँ महापातर मोहिँ तेहि क भिखारी ढीठ।
जउँ खरि बात कहत रिस (लागइ) खरिअइ कहहिँ बसीठ॥ २७५॥
ततखन सुनि महेस मन लाजा। भाट कला होइ बिनवा राजा॥
गँधरब-सेन तुँ राजा महा। हउँ महेस मूरति सुनु कहा॥ 90
पइ जो बात होइ भलि आगइँ। कहा चाहि का भा रिस लागइँ॥
राज-कुअँर यह होइ न जोगी। सुनि पदुमावति भएउ बिओगी॥
जंबूदीप राज-घर बेटा। जो हइ लिखा सो जाए न मेटा॥
तोरइ सुअइँ जाइ एहि आना। अउ जा कर बरोक तुइँ माना॥
पुनि यह बात सुनी सिउ लोका। करहु बिआह धरम बड तो का॥ 95
खपर लिए उहई पइ माँगइ मुएहु न छाडइ बारु।
बूझि देखु जो कनक कचउरी देहु भीख नहिँ मारु॥ २७६॥
भाट भेस ईसुर जस भाखा। हनुवँत बीर रहइ नहिँ राखा॥
लीन्ह चूरि ततखन वइ सूरी। धरि मुख मेलेसि जानहुँ मूरी॥
महादेओ रन घंट बजावा। सुनि कइ सबद बरम्ह चलि आवा॥
चढे अतर लेइ बिसुन मुरारी। इँदर-लोक सब लाग गोहारी॥ 100
फन-पति फन पतार सउँ काढा। असटउ कुली नाग भा ठाढा॥
तेइँतिस कोटि देओता साजा। अउ छाँनवइ मेघु-दल गाजा॥
छपन कोटि बइसुंदर बरा। सवा लाख परबत फरहरा॥
नवइ नाथ चलि आवहीँ अउ चउरासी सिद्ध।
अहुटि बजर जर धरती गगन गरुर अउ गिद्ध॥ २७७॥

105 जोगी धरि मेले सब पाछइँ। अउरु माल आए रन काछइँ॥
मंत्रिन्ह कहा सुनहु हो राजा। देखहु अब जोगिन्ह के काजा॥
हम जो कहा बड ता कर जूझू। होत आउ दर बहुत सबूझू॥
खन एक महँ झरहट होइ बीता। दर महँ झरहिँ रहइ सो जीता॥
कइ धीरज राजा तब कोपा। अंगद आइ पाँओ रन रोपा॥
110 हसति पाँच जो अगुमन धाए। ते अंगद धरि सूँड फिराए॥
दीन्ह अडारि सरग कहँ गए। लउटि न बहुरे तहँ के भए॥
देखत रहे अचंभउ जोगी हसति बहुरि नहि आए।
जोगिन्ह कर अस जूझब पुहुमि न लागहिँ पाँए॥ २७८॥
कहहिँ बात जोगिहिँ हम पाई। खन एक महँ चाहत हहिँ धाई॥
जउँ लहि धावहिँ अस का खेलहु। हसतिन्ह केर जूह सब पेलहु॥
115 जस गज पेलि होइ रन आगइँ। तस बगमेल करहु सँग लागइँ॥
हसति कि जूह जउहिँ अगुसारी। हनुवँत तउहिँ लँगूर पसारी॥
जउहिँ सो सइन जीति रन आई। सबहि लपेटि लँगूर चलाई॥
बहुतक टूटि भए नउ खंडा। बहुतक जाइ परे ब्रहमंडा॥
बहुतक फिरा करहिँ अँतरीखा। अहे जो लाख भए ते लीखा॥
बहुतक परे समुँद महँ परत न पावा खोज।
120 जहाँ गरब तहँ बेरा जहाँ हँसी तहँ रोज॥ २७९॥
फिरि आगइँ का देखइ राजा। ईसुर केर घंट रन बाजा॥
सुना संख सो निसुन जउँ पूरा। आगइँ हनुवँत केर लँगूरा॥
लीन्हइँ फिरहिँ सरग ब्रहमंडा। सरग पतार लोक म्रितमंडा॥
बलि बासुकि अउ इँदर नरिंदू। गरह नखत सूरज अउ चंदू॥
125 जावँत दानउ राकस पुरी। अहुठउ बजर आइ रन जुरी॥
जिन्ह कर गरब करत हुत राजा। सो सब फिरि बइरी होइ साजा॥
जहवाँ महादेओ रन खरा। नारी धालि आइ पाँ परा॥

केहि कारन रिस कीजिअ हउँ सेवक अउ चेर।
जेहि चाहिअ तेहि दीजिअ बारि गोसाईं केर॥ २८० ॥

तउ महेस उठि कीन्ह बसीठी। पहिलइँ कड़इ अंत होए मीठी॥
तूँ गँधरब राजा जग पूजा। गुन चउदह सिख देइ को दूजा॥ 130
हीरामनि जो तुम्हार परेवा। गा चितउर गढ कीन्हेसि सेवा॥
तेहि बोलाइ पूछहु ओहि देसू। अउ पूछहु जोगिन्ह कर भेसू॥
हमरे कहत रहइ नहिं मानू। वह बोलइ सोई परवाँनू॥
जहाँ बारि तहँ आउ बरोका। करहु बिआह धरम बड तो का॥
जो पहिले मन मान न काँधी। परखि रतन गाँठी तब बाँधी॥ 135

रतन छपाए ना छपइ पारख होए सो परीख।
घालि कसउटी दीजिअइ कनक कचउरी भीख॥ २८१ ॥

हीरामनि जो राजइ सुना। रोस बुझान हिअइ महँ गुना॥
अगिआँ भई बोलावहु सोई। पंडित हुतइँ दोख नहिं होई॥
भइ अगिआँ जन सहसक धाए। हीरामनिहि बेगि लेइ आए॥
खोला आगइँ आनि मँजूसा। मिला निकसि बहु दिन कर रूसा॥ 140
असतुति करत मिला बहु भाँती। राजइ सुना हिअइ भइ साँती॥
जानहुँ जरत अगिनि जल परा। होइ फुलवारि रहसि हिअ भरा॥
राजइँ मिलि पूछी हँसि बाता। कस तन पीत भएउ मुख राता॥

चतुर बेद तुम्ह पंडित पढे सासतर बेद।
कहाँ चढे जोगिन्ह का आनि कीन्ह गढ भेद॥ २८२ ॥

हीरामनि रसना रस खोला। देइ असीस अउ असतुति बोला॥ 145
इँदर राज-राजेसुर महा। सउँहीं रिस किछु जाए न कहा॥
पइ जेहि बात होए भलि आगइँ। सेवक निडर कहइ रिस लागइँ॥
सुआ सुफल अबिँरित पइ खोजा। होए न बिकरम राजा भोजा॥
हउँ सेवक तुम्ह आदि गोसाईं। सेवा करउँ जिअउँ जब ताईं॥

150 जेइँ जिउ दीन्ह देखावा देसू। सो पइ जिअ महँ बसइ नरेसू॥
जो मन सवँरइ एकइ तूँही। सोई पंखि जगत रत-मूही॥
नइन बइन सरवन बुधी सबइ तोर परसाद।
सेवा मोर इहइ निति बोलउँ आसिरबाद॥ २८३॥
जउ पंखी रसना रस रसा। तेहि क जीभ अंब्रित पइ बसा॥
तेहि सेवक के करमहिँ दोसू। सेवा करत करइ पति रोसू॥
155 अउ जेहि दोस न दोसहि लागा। सो डरि तहाँ जीउ लेइ भागा॥
जउँ पंखी कहवाँ थिर रहना। ताकइ जहाँ जाअ जो डहना॥
सपत दीप फिरि देखेउँ राजा। जंबू-दीप जाइ पुनि बाजा॥
तहँ चितउर गढ देखेउँ ऊँचा। ऊँच राज सरि तोहि पहूँचा॥
रतन-सेन यहु तहाँ नरेसू। आएउँ लेइ जोगी कर भेसू॥
सुआ सुफल पइ आना हइ ता तें मुख रात।
160 कया पीत सो तेहि डर सवँरउँ बिकरम बात॥ २८४॥
पहिलइँ भएउ भाट सत-भाखी। पुनि बोला हीरामनि साखी॥
राजहि भा निसचइ मन माना। बाँधा रतन छोरि कइ आना॥
कुल पूछा चउहान कुलीना। रतन न बाँधइँ होइ मलीना॥
हीरा दसन पान रँग पाके। बिहँसत सबहिँ बीजु बर ताके॥
165 मुँदरा स्रवन नइन सउँ चाँपे। राज-बइन उघरे सब झाँपे॥
आना काटर एक तुखारू। कहा सौं फेरइ भा असवारू॥
फेरा तुरइ छतीसउ सूरी। सबहिँ सराहा सिंघल-पूरी॥
कुअँर बतीसउ लक्खना सहस करा जस भानु।
कहा कसउटी कसिअइ कंचन बारह बानु॥ २८५॥
देखि सुरुज घर कवँल सँजोगू। असतु असतु बोला सब लोगू॥
170 मिला सौं बंस अंस उँजिआरा। भा बरोक अउ तिलक सँवारा॥
अनिरुध कहँ जो लिखी जइमारा। को मेटइ बानासुर हारा॥

आजु बरी अनिरुध कहँ ऊखा। देओ अनंद दइति सिर दूखा॥
सरग सूर भुइँ सरवर केवा। वन-खँड भवँर भएउ रसलेवा॥
पछिउँ क बार पुरुब कइ बारी। लिखी जौ जोरी होइ न निनारी॥
मानुस साज लाख पइ साजा। साजा विधि सोई पइ बाजा॥ 175

गए जौ वाजन वाजत जेहि मारन रन माँह।
फिरि बाजे ते बाजे मंगलचार उनाँह॥ २८६॥

इति सूरी खंड॥ २५॥

पद्मावति

शब्दसूची

पदुमावति

शब्दसूची

अ.

अँकरवरी–कर्करी–कंकरी १२. ६१.

अँकूरू–अङ्कुर–अँकुआ ६. ३७; ११. ४४: २८. १०१.

अँग–अङ्ग–अंग २०. १८; २२. ४२: २८. १०८.

अँगवई–अङ्गीकरोति–अंगीकार करती है–सहती है २. १६८.

अँगार–अङ्गार–अँगारा १५. २४.

अँगारा–अङ्गार–२८. १०८.

अँगूठी–अङ्गुलीयक–अंगुलिअ १. १०२; १०. १०६.

अँगुरी–अङ्गुली १०. १०८.

अँगूरा–अंगूर ५. ३५.

अँगूरू–अंगूर ८. १६.

अँजीरी–अंजीर २. ७४.

अँजोर–आज्वल–उज्ज्वल १. १३६.

अँजोरा–आज्वल्य–आजल्ल–उजेला १३. ५३.

अँजोरी–उज्ज्वल ६. ५.

अँतरिख–अन्तरिक्ष–अंतरिक्ख १. १०८; १६. २०.

अँतर–अन्तर २८. ४१.

अँतरहीं–अन्तरे हि–भीतर २४. ४३.

अँतरीखा–अन्तरिक्ष २५. ११६.

अँदेस–अँदेसा, संशय ८. ३६.

अँदोरा–आन्दोलन–अंदोलण–कोलाहल (अ–आ; P. 80) १२. ६३.

अँधकूपा–अन्धकूप २१. ६.

अँधिअर–अंधकार–अन्धयार–अँधिआर–अँधेरा २४. ८०.

अँधिआर–अन्धकार–अँधेरा १२. ३२, १०१.

९४, १०२, १०४, १२४, १२८, १३२, १४५, १५५, १७०.

अउगाह–अवगाध–ओगाध, ओगाढ अवगाह, अगाध, १. १४३; अति कठिन, दुर्गम ११. २४; १३. ३४.

अउगाहा–अवगाढ–अवगाह–ओगाढ–अथाह २. ४९; कठिन १३. ३३; अगाध २२. ७०; २३. १७०.

अउगाहि–अवगाह्य–डूब कर १. ८.

अउगुन–अवगुण १. ८८; ५. ५६; ८. २२, ४८, ६७; २५. ७८.

अउटन–आवर्त्तन–ओटना (तु० अवट्टा–आवर्त्ता) १८. ३८.

अउटि–आवर्त्य–औटा कर २३. ११८.

अउतरा–अवतार हुआ–उतरा ६. ४.

अउतरी–अवतार हुआ–उतरी ३. ९.

अउतहि–आते ही २२. ७.

अउतार–अवतार १९. ७०; २४. ५२.

अउतारा–अवतार दिया १. १६२; ७. ५८; अवतार ३. २३.

अउतारी–अवतार दिया २. ३; ३. १, २८; ९. ११.

अउतारू–अवतार १. ४.

अउधानू–अवधान–गर्भाधान–गर्भस्थिति ३. ६.

अउधारा–अवधारण किया–आरंभ किया ७. ५०;

अउँधी–अधः–अधं २५. ४९.

अउधूत–अवधूत–अवधूव–विरक्त २. ४८; २० ९६.

अउपन वारी–ओपने वाली–सोने के वर्ण को दिखाने वाली (ओप्पा–शाण पर घिसना) ८. ४.

अउर–अपर–अवर–और ९. ४०.

अउरहि–अपरं हि–और को २२. ३७.

अउँरा–आमलक–औंरा २०. ४६.

अउरहिँ–अपरासु–औरों में २२. २०.

अउरहि–अपरं हि–दूसरे को ८. ५७; अपरस्य–दूसरे को, २४. ४; अपर-स्मात्–और से २५. ८६.

अउरू–अपर–अवर–और १. ४०, ५५, ६५, ९६; २. ३०, ४२, ८५, ७९, १४६; ५. ३०; ७. ४३; ९. ६; १०. २, ५१, ९६; १६. ७, ८, १५, २४; १९. ३०; २०. ६०, ७८, ८३; २३. ३४; २४. ४२, ४४, १०३, १०५; २५. ३५, ७३, ८७, १०५.

अउसान–अवसान–स्थिरता १५. ४८.

अकत्थ–अकथ्य २३. ५६.

अकसर–एकसर–अकेला १९. ४६.

अकाज–अकृत्य–अकज्ज, (अकय)–अमङ्गल ८. ४८.

अकास–आकाश–आकास (गा) २. २१: ३. ४८; १४. ५; १५. ४२; १९. ५५; २४. ८०.

अकासा–आकाश १. १६६; २. १८,

अँधिआरकटोला-अन्धकटोला-अन्धकों का स्थान। अन्धक-यदुवंशियों का उपभेद १३. ६, १५. ७५

अँधिआरा-अन्धकार १. ८४, १०. ४, १२. ५७, १३. ५२

अँधिआरी-अन्धकारिणी-अँधेरी ८. १४, ३६, १३. ६, २४. ८४,

अँधेर-अन्धकार-अँधेरा १. १३६

अँधेरा-अन्धकार ११. ५१

अँवराउँ-आम्रराज-अमराइ २. १८, २४

अँविरथा-आवृथा-आविहा-आश्चर्य-बेफायदा १५. २७

अँविरित-अमृत (P 137, 295) २३. १५२, २४. ७५, २५. १४८

अइ-अये (संबोधन) ४. ११, ५. ६

अइस-ईदृश-ऐसा १ ४८ ६२, ६४, ७८, ७६, १३६, १४२ २ १६ ५ ६ ६. ४६, १०. १४८ १३ ३३ १५. ३०, १६. ३, १६ ५४, २१. २४, २३. २६, ६२, ६७ १३० २४. ३

अइसइ-ईदृशोहि-ऐसे ही ४ ५५ ८. ५२, ६. ३२, २१ २८ २४ ११६

अइसि-ऐसी २३. १३७, १४४

अइसी-ईदृशी-ऐसी १८. ६

अइसे-ऐसे १४. ११

अइहइ-आयाइ-आवेगा १८. २७

अउ-अपर-अवर-और १. ७, १० १२ १४, २२, २५, २६, ३४, ३८, ४१ ४८, ५४, ६६, ७६, ८०, ८२, ६४, ६८, ६६, १०३, १४६, १५१, १५२, १६८, १७०, १७४, २. ३, ११, १२, १५, २५, ३५, ३७, ४१, ४२, ५४, ५६, ७४, ७८, ८३, ८४, ८७, ८८, ६२, ६५, १०२, १३६, १५०, १५४, १६३, १६४, १८७, १६१, १६५, ३. ८, २६, ३०, ३५, ४. २१, ३६, ४७, ५. ३७, ६ ३, ७. ८, २४, ३७, ४६, ८. ५, १२, ६४, ६. ४, ८, १५, २३, २७, ३०, १०. १६, २४, ६५, ७६, १०६, १०६, १५३, ११. ६ २७, ३२, ३५, ५०, १२. १, ३, १३, ३६, ३८, ६०, ७०, ८०, ८५, १०१, १३. २६, ३५, ४६, ४६, ६१, १४. १६, १५. ४, ५, ११, ७८, १६ ६, १०, १८, २०, ४४, ४७, १७ ८, १६, १८. ३, ३३ ३६ १६. १६, २०, ४४, २०. २, ६, ११, १५, २१, २३, ३५, ५१, ५३, ५८, ७०, ७५, ११७, १२२, १२४, १२६ २१. १२, ५६, ६०, २२. २, ४, ५, ६, १२, २१, ४६, ५६ ६७, ७२, ७६, २३. १, ६, २६, ५७, ७८, ६१, ६२, ६३, १४३, १५२, २४. १७, ७६, १२२, १३०, १४६, २५. ८, ६, २६, ३०, ३६, ३७, ४८ ६०, ६२, ६३,

अँधिआरकटोला-अन्धकटोला-अन्धकों का स्थान। अन्धक-यदुवंशियों का उपभेद १३. ६, १५. ७५

अँधिआरा-अन्धकार १. ८४, १०. ४, १२. ५७, १३. ५२

अँधिआरी-अन्धकारिणी-अँधेरी ८. १४, ३६, १३. ६, २४. ८४,

अँधेर-अन्धकार-अँधेरा १. १३६

अँधेरा-अन्धकार ११. ५१

अँबराउँ-आम्रराज-अमराइ २. १८, २४.

अँबिरथा-आवृथा-आविहा-साध्यर्थ-बेफायदा १५. २२

अँबिरित-अमृत (P 137, 295) २३. १५२, २४. ७५, २५. १४८

अइ-अये (संबोधन) ४. ११, ५. ६

अइस-ईदृश-ऐसा १. ४८, ६२, ६४, ७८, ७६, १३६, १४२, २. १६, ५. ६, ६. ४६, १०. १४८, १३. ३३, १५. ३०, १६. ३, १६. ५४, २१. २४, २३. २६, ६२, ६७, १३०, २४. ३

अइसइ-ईदृशोहि-ऐसे ही ४. ५५, ८. ५२, ६. ३२, २१. ७८ २४. ११६

अइसि-ऐसी २३. १३७, १४४

अइसी-ईदृशी-ऐसी १८. ६

अइसे-ऐसे १४. ११

अइहइ-यायाइ-यायेगा १८. २७,

अउ-अपर-अवर-और १. ७, १०, १४, २२, २५, २६, ३४, ३८ ४८, ५४, ६६, ७६, ८०, ८२, ६४, ६८, ६६, १०३, १४६, १५१, १५२, १६८, १७०, १७४, २. ३, ११, १२, १५, २५, ३५, ३७, ४१, ४२, ५४, ५६, ७४, ७८, ८३, ८४, ८७, ८८, ६२, ६५, १०२, १३६, १५०, १५४, १६३, १६४, १८७, १६१, १६५, ३. ८, २६, ३०, ३५, ४. २१, ३६, ४७, ५. ३७, ६. ३, ७. ८, २४, ३७, ४६, ८. ५, १२, ६४, ६. ४, ८, १५, २३, २७, ३०, १०. १६, २४, ६५, ७६, १०६, १०६, १५३, ११. ६, २७, ३२, ३५, ५०, १२. १, ३, १३, ३६, ३८, ६०, ७०, ८०, ८५, १०१, १३. २६, ३५, ४६, ४६, ६१, १४. १६, १५. ४, ५, ११, ७८; १६. ६, १०, १८, २०, ४४, ४७, १७. ८, १६, १८. ३, ३३ ३६; १६. १६, २०, ४४, २०. २, ६, ११, १५, २१, २३, ३५, ५१, ५३, ५८, ७०, ७५ ११७, १२२, १२४, १२६, २१. १२, ५६, ६०, २२. २, ४, ५ ६ १२, ३१, ४६, ५६, ६७, ७२, ७६, २३. १, ६, ३६, ५७, ७८, ६१, ६२, ६३, ६ १२?,

अपारा–अपार १. ६, ७३, ७७, १६५; ११. ३; १३. २०; १५. २५; १६. ४५; २२. १०; २४. १०५, ११८.

अपारू–अपार (√पृ) १. १७२.

अपुनइ–अपने २१. ३४.

अपुनास–अप्प (आत्मन् P. 277, 401)–अपना नाश २३. १३६.

अपूरब–अपूर्व–अपुव्व (P. 132) २. ११३.

अपूरि–आपूरि–भरपूर २. ३२, ७१.

अपूरी–भरपूर २. १८२; १६. ४४.

अपेल–जो न पेला (हटाया, पेलृ गतौ, प्र+ईर्) जा सके १८. २१.

अब १. ५४; ३. ६६; ४. ३६; ५. १५, १७, ४८, ५६; ७. २६, ३१; ६. ३६, ५३; १०. ८६, १३३; ११. २२, ३४, ५५; १२. २२, २७, ४२, ४३, ६०, ६२; १३. १२, ३७; १४. २१; १६. २६; १८. १६, ५४; १६. ५१; २०. ६१, १०६, ११६; २१. ६, ४०, ४५, ४७, ४८; २२. २३, ५८, ६०, ६१; २३. २१, ४२, ७२, १०३, १२७, १२८, १२६, १६६; २४. १०, ३२, ८५, ८६, १२८, १३०, १३४, १३५, १३६, १५६, १५६; २५. ६, २४, १०६.

अबरण–अवर्ण–वर्ण रहित अथवा अवर्ण्य–अवरण–वर्णन से परे १. ४६.

अबहि–अभी २१. ५३; २३. ११७.

अबहिँ–अभी ३. ८०; १०. ६, १५१; १८. ३०; २२. २७; २३. २८.

अबहीँ–अभी ६. २२; १४. ११; १८. २७.

अबहुँ–अब भी २३. ५३; २४. ८८.

अबहूँ–अब भी १. ७८; २३. ४३, ५६, ११५; २५. ७६.

अबा–अबूबक्र सिदीक १. १०.

अंबा–आम्र–(अंबिर P. 137); आम्म–आँब १६. ५५.

अंब्रित–अमृत ७. ७०; ८. ४२; १०. ६२, ७३, ८२, ११४; १६. ४४; १७. ११; २. ३१, ५०, ५६, ७३, ८०, १४६, १५२.

अंब्रितमूर–अमृतमूल २०. ४८.

अबासा–आवास–निवासस्थान २. ६०; १६. १५.

अभरन–आभरण १०. १०४; १२. ६४.

अभाऊ–अभागू–अभागिन्–अभाइ–अभागा २५. ५७.

अभिमानू अभिमान १६. ३५.

अभोग–आभोग–पूर्ण–पवित्र १०.१६०.

अमर १. १२०; २. १४६, १५२; ८. ७६; १६. ७१; २४. ७, ११७, १५२.

अमरपुर–मुक्तिस्थान ११. १६.

अमावस–(अमावास) अमावास्या–अमावस्सा–अमावस (लोप के लिये

अपारा–अपार १. ६, ७३, ७७, १६५; ११. ३; १३. २०; १५. २५; १६. ४५; २२. १०; २४. १०५, ११८.

अपारू–अपार (√पृ) १. १७२.

अपुनइ–अपने २१. ३४.

अपुनास–अप्प (आत्मन् P. 277, 401)–अपना नाश २३. १३६.

अपूरब–अपूर्व–अपुव्व (P. 132) २. ११३.

अपूरि–आपूरि–भरपूर २. ३२, ७१.

अपूरी–भरपूर २. १८२; १६. ४४.

अपेल–जो न पेला (हटाया, पेलृ गतौ, अ+ईर्) जा सके १८. २१.

अब १. ५४; ३. ६६; ४. ३६; ५. १५, १७, ४८, ५६; ७. २६, ३१; ६. ३६, ५३; १०. ८६, १३३; ११. २२, ३४, ५५; १२. २२, २७, ४२, ४३, ६०, ६२; १३. १२, ३७; १४. २१; १६. २६; १८. १६, ५४; १६. ५१; २०. ६१, १०६, ११६; २१. ६, ४०, ४५, ४७, ४८; २२. २३, ५८, ६०, ६१; २३. २१, ४२, ७२, १०३, १२७, १२८, १२६, १६६; २४. १०, ३२, ८५, ८६, १२८, १३०, १३४, १३५, १३६, १५६, १५६; २५. ६, २४, १०६.

अबरण–अवर्ण–वर्ण रहित अथवा अवर्ण्य–अवण्ण–वर्णन से परे १. ४६.

अबहि–अभी २१. ५३; २३. ११७.

अबहिँ–अभी ३. ८०; १०. ६, १५१; १८. ३०; २२. २७; २३. २८.

अबहीँ–अभी ६. २२; १४. ११; १८. २७.

अबहुँ–अब भी २३. ५३; २४. ८८.

अबहूँ–अब भी १. ७८; २३. ४३, ५६, ११५; २५. ७६.

अबा–अबूबक्र सिदीक १. १०.

अंबा–आम्र–(अंबिर P. 137); आम्म–आँब १६. ५५.

अंब्रित–अमृत ७. ७०; ८. ४२; १०. ६२, ७३, ८२, ११४; १६. ४४; १७. ११; २. ३१, ५०, ५६, ७३, ८०, १४६, १५२.

अंब्रितमूर–अमृतमूल २०. ४८.

अबासा–आवास–निवासस्थान २. ६०; १६. १५.

अभरन–आभरण १०. १०४; १२. ६४.

अभाऊ–अभागू–अभागिन्–अभाइ–अभागा २५. ५७.

अभिमानू अभिमान १६. ३५.

अभोग–आभोग–पूर्ण–पवित्र १०.१६०.

अमर १. १२०; २. १४६, १५२; ८. ७६; १६. ७१; २४. ७, ११७, १५२.

अमरपुर–मुक्तिस्थान ११. १६.

अमावस–(अमावास) अमावास्या–अमावस्सा–अमावस (लोप के लिये

तु० आघोष-अवपात P. 150) मावस (अलोप, P. 142) ३. १३.

अमी॑-अमृत-अमिय १. २७; १०. ६१, ६४.

अमी॑रस-अमृतरस-अमियरस ७. ४६; १०. ५६, ५७.

अमोल-अमूल्य-अमोल्ल (ल्य-ल्ल P 246, ऊ-उ P. 83, उ-ओ P. 127) २. ७२; ७. ४८, १७. १६.

अमोला-अमूल्य १. ६४, १८१; १०. ८१; २०. ११.

अम्मर-अमर २४. १४३.

अरइल-एक स्थान का नाम, जहाँ यमुना गंगा से अड़ गई है; (अड्ड अभियोगे; इल के लिये देखो P. 595) १०. १२६.

अरगला-अर्गला-अग्गला-अगाडी-अवरोधक २५. ७४.

अरघानि-आघ्राण (घ्रा+आ)-अग्घाण-सुगन्ध १०. १४३; १६. ३२.

अरघानी-अरघानि ४. २६, १०. ३;

अरजुन-पाण्डव अर्जुन-अज्जुण २३. १७४.

अरजुनवान-२०. १२७.

अरथ-अर्थ-अत्थ ७. ४८; १०, ७८, ७६.

अरथाए-अर्थ किये ३. १८.

अरंभ-आरंभ १. १८५.

अरु-और २३. ३२; २४. ५८, २५. ६२.

अरुझइ-उलझता है (रुध्+अव; धलोप के लिये तु० अड-अवट; एम्-एवम् P. 149) ६. ४५; २४. ११५.

अरुझा-अवरुद्ध हुआ-उलझ गया, उलझा हुआ ५. ३२; २४. ११५.

अरुझी-उलझ गई २४. ११४.

अरूप-रूपरहित १. ४६.

अरे-नीच संबोधन २१. २५.

अलउदीन-अलाउद्दीन १. १८७.

अलक-अलग-लट २. १०६.

अलकाँइ-अलकें-लटें १०. ७.

अलख-अलक्ष-अलक्ख (तु० तिक्ख-(तिग्ह) तीक्ष्ण; लक्खण-लक्षण P. 312) १. ४६.

अलहदाद-सैयद मुहम्मद के चेले १. १५५.

अलि-भ्रमर १. २२; १०. ३४; २१. १८; २३. १५६.

अली-प्राचीन मुसलिम योद्धा का नाम १. ६३.

अलोपि-आलोप-अलोप-अदृश्य २४. १६.

अवधि-अवहि-मिति-वसन्त ऋतु का समय १८. ४६; २०. ८; सीमा २५. १६.

अवना-आगमन-आवना-आना १४. ७.

अवसथा-अवस्था-अवत्था ११. ७. (दसउँ अवसथा-दशम अवस्था-

मरणावस्था, गर्भ, कौमार, पौगण्ड (पौगण्ड—बाल्य ५–१६ वर्ष), कैशोर, यौवन, बाल, तरुण, वृद्ध, वर्षीयान्, मरण)

अवँराउँ—अमरावती २. ४०.

अवँराऊँ—अमरावती २. ३०.

अस—ईदृश—अइस—ऐसा (P. 81, 245) १. ८, ६१, ६२, ८०, १२५, १२६, १३६; २. २४, १७६, १८४, १८६, २००; ३. ३, १६, ६५; ५. २३, ४०, ४१, ४४; ६. २, ७. ३८, ४८, ५६, ७२; ८. ११, १६, ३८, ४६, ६४; १०. ८, १०, २३, २६, ३३, ३८, ४०, ४४, ४७, ४८, ६१, ६४, ६६, ११६, १३२, १३७, १५७; ११. १७; १२. ४०, ४४, ८०, ८७; १३. २४, ३६; १४. ६; १५. १५, ४२, ४८, ७१; १६. ५, ७; १८. १२, २२, ५५; १६. १८, १६, २१, ३८, ३६, ४०, ४६, ७१; २०. १६, ६७, १११, ११५, १२८, १३१, १३६; २१. ८, २१, ४५, ५६; २२. २६, ५०; २३. ८, ११, १२, १५, २०, ४८, ५८, ६२, ६७, १०६, ११२; २४. ४, १८, ८५, ६६, ११०, १४३, १५२; २५. ६, २५, २६, ३३, ३४, ५४, ५८, ६६, ७०, ७७, ८०, ८७, ११२, ११४.

असटउ—अष्टापि—आठों १०. ८; १२. ८०; १५. १०१.

असत—अस्त ५. ११; असत्य ६. ८, ६.

असतु—अस्तु—एवमस्तु—ऐसा हो १५. ७६; २५. १६६.

असतुति—स्तुति १. १२८; १७. ८, ६; २५. १४१, १४५.

असथिर—स्थिर—थिर १. ४८; ११. ५३; अस्थिर—चंचल १५. १३.

असमेध—अश्वमेध—अस्समेह १. १३५.

असँभारा—(असम्भार्य)—असंभार—संभालने के अयोग्य १८. ३५.

असरफ—सैयद अशरफ १. १३७.

असरम—आश्रम—स्थान १०. ५६.

असवारू—अश्ववार—अस्सवार (P. 64, 279, 315) सवार (अलोप P. 142) २५. १६६.

असि—ईदृशी—अइसि—ऐसी २. २७, ५०, ६४, ८६, १७८; ३. २, २६, ३०, ३८; १५. ५२; १६. ७०; २०. ११२; २२. २७; २३. ४१, १११, १६१; २४. १६, १०५.

असिस—आशीः, आशीर्वाद ७. ६६.

असीस—आशीर्वाद १. १०४; ३. २५; ७. ५७; २४. ६६; २५. १४५.

असीसई—आशीर्वाद देती है १. १२०.

असीसा—आशीर्वाद १. १२३.

असीसि—(शास्+आ; तु० प्रशिष्)

अहेरइ—अहेर में—आखेट में (ख—ह P. 188; आ—अ 81; ट—ड 198; ड—र 241) ८. १.

अहेरी—अहेर करने वाला—व्याध २. १०८.

आ.

आँक—अंक—अक्षर (√अञ्च्, Lat. uncus; AS. ongel: Eng. angle) २१. १०, १३.

आँकन्ह—अंक का बहुवचन (वे अंक ही) २१. १३.

आँकुस—अङ्कुश—अंकुस २. १४; १८. २२, २६.

आँखि—अक्षि—अक्खि—अक्ख—आँख (ईक्ष्; Lat, oc-ulus; AS. eâge) ३. ५२.

आँखी—आँख १२. ३६; २२. ४२.

आँगा—अङ्ग (अङ्ग्) २०. २२.

आँगी—अङ्गिका—अँगिया—चोली २३. १२१.

आँचल—अञ्चल २२. १६.

आँट—(अट; अतिक्रमहिंसायाम्)—अँटता है—पड़ता है २०. ५६.

आँटा—अँटा—(पूरा) पड़ा १. १११; आँट—अँटइ—समेति (√अट गतौ) २३. १३८.

आँटी—अँटे—प्राप्त हो—पर्याप्त हो १७. १५.

आँध—अन्ध ७. ५३.

आँब—आम्र २. २५; २०. ४१.

आँबहि—आम के १. १६४.

आँसु—अश्रु—अस्सु १. १८४; ५. १२, १४, ४६; २१. २२; २२. ५६; २३. ५३; २४. १०६.

आँसुन्ह—आंसू ४. ५३.

आँसुहिँ—अश्रुभिः—आंसुओं से २३. १०८.

आँसू—अश्रु १२. ११; १५. ३६; २३. १५०; २४. ६१.

आइ—एत्य—आकर, आई, आ १. १७७, १६२; २. १६, २३, १४४; ३. ४२; ५. ६, २५, ४०; ७. २०, ४०, ४२: ८. ४, ५३; ६. ३५; १०. ५०, १२४, १४२; १२. ७५, ७६, ७८, ६२; १३. २, ६२; १५. ८०; १६. २२, ३२; १७. १४; १८. ७; १६. ३, १२, १३, १४, ६६; २०. ६, ८, ३८, ७५, ८६, ६८, १२६, १३०; २१. १६, २५, ३५, ४८, ५०, ६४; २२. १, १३; २३. ७, ६, ५०, १०१, १५०; २४. २१, ११२, १२०: २५. १, ३१, १०६, १२५, १२७.

आई—आई—आवइ (आयाति) का भूत काल में स्त्रीलिङ्ग में एकवचन २०. १०८.

आइउँ-मैं आई (भूत० उ० एक० स्त्री०) ४. ५१.

आइहि-आवेगा-आवइ (आयाति) का भविष्य, प्रथम पुरुष, एकवचन २०. १३२.

आईँ-आवइ (आयाति) का भूत स्त्री० बहुवचन २०. ६७, ६८; २३. ६८; २४. ६७.

आई-आवइ (आयाति) का भूत काल प्रथम पुरुष, एकवचन, स्त्रीलिङ्ग ३. ५; ४. १, २, २५, ५६; ८. ३१; ११. १; १२. ७४, ७८; २१. ३; २३. ८७; २४. ६२, १५०; २५. ११७; पुन्य-आकर १. १८८; २. १७; ३. ५०; १०. १२६; १८. २६; २०. १; २२. ३१; २३. ८१; आई ४. ५७, (आवे सुधा०) आया चाहती है १८. ४६.

आउ-आयाति-आवइ २. ३०; ३. ६०, ८०; ५. ५४; ७. ५३. ६. १८, २४, १३. ३५; १६. ४, ८, ४८; १८. ८, ४७, ५२; १६. ५८; २२. ७२; २३. २४, १५६; २४. १८, ६१; २५. १०७, आयान्, आया २५. ११४; आवँ ११. १५, ४८.

आउन-आयान-आवन-आवना-आना ४. १४.

आउबि-आ वेंगी ४. २३, २४.

आऊँ-(मैं आऊँ) ३. ५६.

आऊ-आयुष् २. १४२; ३. ६६; ५. २८.

आए-आवइ का भूत, बहु० पुं० १. ६१; २. ८, १२१; ३. १८, २४; ७. ४२, ४६; ११. ६, १०; १३. १२; १५. ८, १६, २५, ४१, ७३; २०. ८७, ६०; २३. ४६, ६६; २५. १०५, ११२, १३६.

आएउँ-मैं आया था, आया ७. १०, ११; ११. १६; २०. १२३; २३. १७, १५०; २५. १५६.

आएउ-आए हो (आवइ) का भूत० पुं० मध्यम पु० बहु० २. १४१; आया २. १८४; ८. ३३; १६. ७; आये हो १६. ६०, ६१.

आएसु-आदेश ३. ६१; ८. ३०, ४८, ६४; १३. १२; २०. ३८; २४. २३.

आएहु-आना २०. १०६; आये हो २३. ११.

आओ-आउ-आता है ११. ८.

आखउँ-आख्या-अक्खा-कहती हूं (आखा करती हूं-आखा एक प्रकार की चलनी सुधा०) ३. ७५.

आखर-अक्षर-अक्खर २०. १०७; २१. १०; २३. ५६, ६४, ७०, ७१.

आगइँ-अग्रे-आगे २५. ५२, ६१, ११५, १२१, १२२, १४०, १४७

आगइ-अग्रे-अग्रतः-अगाओ-आगे १.

आदिल–न्यायी १. ११४.
आदिहु–आदि से १. ४१.
आदी–आदि–प्रथम १६. ६.
आधा–अर्ध–अद्द (तु॰ वधनिके–वर्धनिकान्, P. 288. Lat. *ordo*, Germ. *Ort*) १६. १६; १८. ३४; २२. १४.
आधी–अर्ध–(अद्द–अड्ढ P. 291) २३. ११७.
आधु–अर्ध–अद्द १३. ६४.
आन–आज्ञा–आणत्ता (ज्ञ–एण P. 276), शपथ ८. ८; २०. ६.
आन–अन्य–अएण, अन्न २. १०३; ८. २२;
आनहु–आयेहि (P. 474) ले आओ ८. ४७; ११. १६.
आना–अन्य ३. ५७; ७. २६; ८. २२.
आना–आनीत हुआ–ले आया गया ७. ६६. आनइ–(आनयति का प्रथम पु॰लिङ् एक वचन) ११. १६, ५२, २५. २. आनयत्–ले आया, ले आये ६४, १६०, १६२, १६६.
आनि–आकर (P. 591) २. ५०; ५. ४, २४; १३. १८; १५. ६२; १६. ३२; २०. ८०; २३. १५२; २४. ३८, ७५, ६५; २५. १४०, १४४.
आनी–आनीय–आनकर–आकर ८. ६५; २०. १३१.
आनी–ले आया (आनिनाय) १. १८६; २. १६६;
आनु–आनय–आनो–ले आओ २४. १२८.
आने–ले आये १. ६०.
आनेउ–आनयत्–ले आये ५२. १.
आप–आत्मा–(अन् Lat. *anima*) स्वयम्; अप्प (तु॰ माहप्प–माहात्म्य P. 334; आत्मन्–अत्त, अप्प, विस्तृत निरूपण के लिये देखो P. 277, 401) ११. ४२.
आपन–अपना ४. ५०; ७. २४; ८. ५१; १२. १६, ५१; १३. २३; १४. ११६.
आपनि–अपनी २. ३८, ४०, ११८; ४. ४४; २५. ७५.
आपु–आत्मा–अप्प–आप (P. 277) १. ३७; २. १८४; ४. २७; ५. ३४; ७. ६२, ७०; ८. १२, ७३; १०. ३०; १२. ३६; १३. ४, ११; १४. १८; १६. १६; २०, ३४; २१. ४२, ४३; २२. ७५, ७६, ८०; २३. ८०, १५६; २४. १३६.
आपुन–अपनी १२. २०; १३. ५८.
आपुन–अपना २०. ४०, ११५, ११६; २३. ३६.
आपुनि–अपनी १५. ६४; २१. २६.
आपुहि–अपनी ही ८. ५७; १३. ४५; अपने आप को १५. २३; अपने आप ही ८५; २२. ७६, ८०; २३. १४५.

आभरण–आभूषण–जो पहरा जाय (भृ+आ; तु० Germ. *Tracht* वेष; *tragen* पहरना) अथवा √भृ–ध्यान आकृष्ट करना ८. ४०.

आयत–इस्लाम धर्म के मन्त्र १. ६२.

आरति–अर्त्ति–अत्ति–(√ऋ; तु० कित्ति–कीर्ति। किन्तु अट–आर्त। देखो P. 289) दुःख–आतुरी–आपद–पड़ना (मुसीबत में)। अर्थ के लिये तु० Eng. *accident* घटित होना (क्रिया का) २१. २४.

आरन–अरण्य–अरयण–वन (अरण, √ऋ) १. १३; २. ६.

आली–सखी (आ+लीयते) २०. १२२.

आव–आयातु; आवइ (आयाति) का लोट् में प्रथम पु० एक० १५. ७६.

आवइ–आई २. २१; आवेगा (वर्त० का भ० में प्रयोग) ६. ७; आती है १६. ८; १८. ३१; १६. ७२; २१. ४०; २३. ३४, ३६, १२७; आयात्–आवे (P. 462) २३. १२६; २४. १४३, १५२.

आवई–आयाति–आता है ३. ४८.

आवउँ–आयास्यामि–आऊँगी–वर्त० का भ० में प्रयोग १६. ५४.

आवत–आयाति–आता है ५. २७; आयन्–आते हुए ११. १८; २४. १३३.

आवतहि–आवने में–आने में (आते ही) १. ६६.

आवहि–आयाति–आता है ७. ३६.

आवहिँ–आयान्ति–आते हैं २. ६०, ६१, १७८; ३. ५२; १०. ४०; २३. १७८; २४. १४.

आवहीँ–आयान्ति–आते हैं २५. १०४.

आवहु–आयाहि–आओ (P. 464) ५. २६; २३. ८, १६०; २४. ६.

आवा–आयासीत्–आया–(आवइ) का भूत, प्रथम पु० एक०; ४. ६०; आवे अथवा आवेगा ५. १६, २६, आया ३१; ७. ६, १७, ३४, ४४; ८. १०; ६. ५२; ११. ३६; १३. १०, ५५; १४. ४; १५. ३३, ७२; १६. ३१; १७. ३, ६; १८. २; १६. १, ६५; २०. १२५; २२. ६, ६; २३. १५३; २४. ४४, ४७, ६३, ६८; २५. ६६.

आस–आशा (शस्+आ–शंस्+आ) १. ३६; ३. ४८; ७. १६, ५६, ५६; ६. ५६; १०. ६४, १२८; १२. ८०; १३. ६५; १५. ५६, ७६; १६. ३२; १७. ५; २०. ४६; २२. ३२, ३६; २३. २४, १०३, १५३, १५६; २४. १०२.

आसन–बैठना (√आस्; तु० Lat. *āsa*, *āra*) २. ४३, ४८; ७. ५०; २३. २४; २५. २५.

आसपास–अश्र–अगलबगल २. ३२.

आसा–आशा ५. ३६; ८. ५३; १०. ५३; १७. २, ७; २१. ३१; २२. १३; २८, ३२; २३. ८४, १०३, १४१, १६३; २४. ८२.

आसामुखी–दिशा (√अश् व्यासौ) या उम्मीद की ओर मुंह रखने वाला २३. ६२.

आसिरवाद–आशीर्वाद (आशिस्;शास्+आ; तु० अशिष्–आज्ञा) २५. १५२.

आहइँ–अस्मि–हूँ २५. १८.

आहक–हाहा–गन्धर्वविशेष २. ६६.

आहर–आहार–भोजन(हृ+आ) २१. ४६.

आहा–शाबाशी–वाहवाह १. ११५.

आहाँ–आह्वान–(√हू अथवा √ह्वा) बुलाने की बोली २०. २७.

आहि–अस्ति–अत्थि–अहि–है ४. १२०, ६. ३, २५; १०. ११७, १५. ४८; १६. १५; २०. ८४; २१. ६१; २२. ४५, ७७; २३. १५; २५. ७४. आसीत्–थी १८. १७,-आस्ते–है (सुधा०; अस्ति उपयुक्ततर है) १०. ११७.

आहि–आह २५. ६४.

इ.

इँदर–इन्द्र–(√इन्–इन्थ+र, अथवा √इन्द्–गिरना) १. १०६; २. ६; १४८; ३. ३२; ६. २६; १६. ४०; २२. ३३; २३. १२, २७; २४. १३, १६; २५. ५६, १२४, १४६.

इँदरअखाड–इन्द्राक्षवाट (च–क्ख P. 317-319, अक्खवाट–अक्खाट; तु० अंधार–अन्धकार; कंसाल–कांस्यताल P. 167; ट–ड P. 198.) १०. १४२.

इँदरलोक २. १२२; २५. १००.

इँदरसभा २. १७७.

इँदरासन २. ६४, १८३.

इँदरासनपुरी २. २८.

इच्छा–(√इष्; Old Germ. *eiscom*; Mod. Germ. *heische*; Lith. *jes-coti* इत्यादि) २०. ३३.

इच्छायारी–इच्छावाटिका–इष्ट फल पुष्प को देने वाली वाटिका २०. ३३.

इते–इयत्–इतने (इ से) ३. १२, १६.

इंदु–इन्दु–चन्दमा २. १५.

इमि–इम–एम–एवं–इस प्रकार (इदम्–इस सुधा०) १०. ४१; १५. १७, ३२; १६. ४६, ७२; २४. ८१, १२८.

इरावति–ऐरावत–इन्द्र का हाथी (ऐरावण की व्युत्पत्ति ऐरावत से नहीं, किन्तु इरावण से है P. 246) २. ११.

इर्यिली–अस्लिक–म० प्रा० अमलिआ–

इमली–अमली–अंबिली (तु० अम्ल–अम्बिल; आम्र–अंबिर; आताम्र–आअंबिर P. 137, 295; JB. 60, 127) २. ३२; २०. ४५.

इसकंदर–सिकन्दर १. १०१.

इहइ–यही १. ३८; ६. ३३; १३. १५; १५. ५०, ५१, ५२, ५५; अयमेव १६. २३; २०. ११०; इह हि २४. १६; इयमेव २५. १५२.

इहई–अयं हि–यही १५. ४६.

इहाँ–यहाँ; म० एथ, एथं; सि० इति; पं० इत्थे; ओ० एठा; सिं० एत; प्रा० एत्थ; सं० इह; वै० इत्था (-इ-स्था)। प्रा० एत्थ की व्युत्पत्ति अत्र *इत्र अथवा *एत्र से नहीं किन्तु इह (– इत्था) से है। तु० तत्थ–तह; जत्थ–जह; कत्थ–कह। इथि, इथी–अत्र। (देखो P. 107; Fausboll, धम्मपद P. 350, JB. 206) ४. ५७; ११. १६, २२; १३. ५५; २३. १२, १५, २१, १४५.

ई.

ईंगुर–हिङ्गुल २३. ६५.

ईंटि–इष्टिका–इट्टगा–इट्ट–ईंट (P. 304) २. १८७.

ईस–ईश (तु० Goth. *aigan*, Old Germ. *eigan*; Mod. Germ, *eigen*) २०. ८३; २३. ६०.

ईसुर–ईश्वर–इस्सर–ईसर (H. 150) २२. ५८; २५. ७४, ६७, १२१.

उ.

उँचाई–उच्च (उद्+च–उच्च–√अञ्च्) २. १२८.

उँजिअर–उज्ज्वल–उज्जल (ज्वल्+उत्; अँजिअर–आज्वल) १०. १०.

उँजिअरि–उज्ज्वल–उज्जल ८. ४६.

उँजिआर–उज्ज्वलकार ('ल' के लोप के लिये तुलना करो 'ओआ'–ओवा–अवपात; किसल–किसलय; (हे० १. २३६; P. 150) उज्ज्वल २. १५०; ३. ७, ११; १२. ३२.

उँजिआरा–उज्ज्वलकार १. ८४, १२२, १३७; २. ५; १०. १५८; १६. १८; २५. १७०; उजेला १. १६२; २. १६१; ६. २; १०. ५६; ११. ४७; १३. ५२; २१. ३६; २५. ६.

उँजिआरी–उज्ज्वल (स्त्री०) ५. ५०; ६. ३०; उजेला १६. ७; २४. ८४.

उँजिआरे–उज्ज्वल १. १४६; २. ६६; ६. १८; १०. ६६.

उअत–उदयन्–उदय होता हुआ (इ+उद्) ६. ३२.

उआ–उदय हुआ १. १६३; ३. १६; १६. १; १८. ४०.

उए–उदय हुए २. ६६; ५. १४, १०. १६.

उकठी–(√कृष्+उत्)–उखड़ा हुआ–(JB. 96) उत्कथ–उकढ–उकठ–सूखा हुआ (ढ–ठ, यथा जठर–जठर, वठर–वटर) उकठ गई–सूख गई २१. ४.

उखा–ऊषा–बाणासुर की कन्या (√उष्–वस्; तु॰ Lat. auro-ra, Lith ausz-ra, Old High Germ. Ostan), २३. १३५.

उगवइ–उद्गच्छति–उगता है–उद्गमन होता है (गम+उत् JB 98, 15, तु॰ Goth guam, Lat. venio gev-nio; Eng. come) १०. १२; १६. ८.

उघरइ–उद्घटते–उघरइ–उघरे २३. १७४.

उघरिहि–उघरेगा १६. ३०.

उघरी–खुली १. १५१.

उघरे–खुले–उद्घटित हुए २५. १६५.

उघारा–(णिजन्त) खोल दिये (खुल गये सुधा॰ धर्मगत) २३. १७५.

उघारी–उद्घाटयति–उघारइ का भूत २१. ३५.

उघेली–उघारी २५. ६०.

उघेला–उघारा–खोला ५. ५०

उछारा–उछालते हैं (शल्+उद्, संस्कृत में उपरिगमन के अर्थ में केवल एक बार प्रयुक्त; तु॰ उच्छलइ, उच्छलिय ऊसलइ, ऊसलिअ। उच्छलइ, उच्छलिय की व्युत्पत्ति स्थल+उद् से है P. 327) १. ११६.

उछेद–उच्छेद–सर्वनाश (छिद्+उद्; तु॰ Lat. scindo, Goth. skeida) २४. १४४.

उजार–उजड़–उजाड़–(उत्+जड–उन्मूलन) ११. ५३.

उजारा–उजाड़ दिया २१. ५.

उजारी–उजाड़ २१. २३.

उठ–उठता है (उद्+स्था–उत्था–उठ–सि॰ उथणु; का॰ थोय P. 309) २. १६८.

उठइ–उत्तिष्ठति–उठती है १०. ६१, ७२, ८८; ११. ५; १२. ६२; १३. २१; १५. ५, ४२; १६. ५; २३. ३८; २४. ६६; २५. २३; उत्तिष्ठेत्–उठे (सुधा॰) २१. ५२.

उठहिं–उठते हैं १०. ३५; १२. ८५; १३. ४०; २४. १०८.

उठा–६. २४; ११. १७, १८, ४४; १६. २२, २३; १६. ३; २०. ६४; २२. २१, ५७; २३. ६१, १६२, १६७; २४. ८८; २५. ७१.

उठाइ–उठा कर २०. १२०.

उठाएउँ–उत्थापयामास–उठाया २५. ८०.

उठावहिं–उठाती हैं २०. ८८.

उठि–उठकर २. ११२; १२. ८८; १६. २२; २०. ११६; २१. ५८, ६३; २३. ३; २४. १२१; २५. १२६.

उठी–उठइ का भूत एक वचन, स्त्रीलिङ्ग; १. १३८; ३. १४; ४. ३६, ५६; १४. ५; १६. २२; २२. १६.

उठे–उठइ का भूत एक० पुलिङ्ग ब० २. १८; ५. ५२; २४. ६०.

उठेउँ–उठी २०. १२८.

उडंतछाला–उड्डयंतचैल–उड़ने वाली छाल–जिसे ओढ़ने पर मनुष्य उड़ सकता है २३. १५६.

उडइ–उडे (डी+उत्–उड्डी–उड) १२. ६८; उड़ता है १२. ४३.

उडइसा–उड् देश–उत्कल देश–उड़ीसा (जहां उत्कल जातीय ब्राह्मण होते हैं) १२. १०४.

उडहिं–उड़ते हैं १. १३, १०६.

उडा–उडइ का भूत० एक० पु० (JB. 51, 111, 119, 230) ५. २; १६. ११.

उडाई–उड़ा देता है १. ४५.

उडाउब–उड़ावेंगी, उड़ावइ का भवि०, उत्तम, बहु० २०. ३६.

उडानफर–जिस फल के खाने से उड़ने की शक्ति आजाय ५. २०.

उडानू–उड्डयन–उड़ना ३. ६२.

उडाहीं–उडहिं–उडइ का बहु० १५. ६५.

उडि–उड़कर १. १०८; ५. १३, १६; उड़ (सकता है) ६. ४५.

उडिगा–उड़ गया ५. १०.

उडे–उडइ का भूत० बहु० पु० ५. ३०.

उचारि–उखाड़ कर (उच्चार्य; चर्+इ+उद्) २. १६६.

उतंग–उत्तुङ्ग–अति ऊँचे (उद्+तुङ्ग) १०. ११८.

उतंगू–उत्तुङ्ग–अति ऊँचा ६. २०.

उतर–उत्तर ३. ३१, ६५, ७३; ४. २१, ५२; ५. १०, ४६; ७. १५; ८. ३४, ३५, ५७; १०. १२८; १६. ६; २०. ८२; २३. १२१.

उतरउँ–उतरूं-अवतरामि (तृ+अव; अथवा तृ+उत् JB. 121, 143) २४. १२३.

उतरहिं–उतरते हैं २. ५२, ६७.

उतरा–अवतरति–उतरइ का भूत० एक० पु० १ ५. ७२.

उतराना–उत्तरण–ऊपर उठ आया ४. ६१.

उतराहीं–ऊपर आती हैं (उतराय आती हैं, सुधा०) २. ५४.

उतरि–(गये)–उतर गये १६. २४. उतर-कर–उत्तीर्य २३. ६.

उतरू–उतर–उतरइ (अवतरति) का लोट्, मध्यम० एक० १२. १०४.

उतरु–उत्तर १३. १३.

उतरे–उतरइ का भूत० बहु०पु० १३. ६.

उताइल–उत्ताप–शीघ्र–उतावला, तावल में (तप्+उत्) १. १४३.

उतारइ–उतारे १३. ४८; उतारता है २१. २६.

उतारि–अवतार्य–उतार कर २२. ३०.

उतिम–उत्तिम–उत्तम (उद्+तम–उद्यतम) २४. १११.

उत्तर–उत्तर दिशा १२. १०२.

उथलेहिं–उलटते हैं (स्थल+उद्) २.२४.

उदइगिरि–उदयगिरि २४. १२४.

उदउ–उदय (इ+उद्) २०. १२४.

उदधि–उद+धि–उदहि–समुद्र (उद्, गु० Lat. *unda*,–नरम; उदन् Eng. *water*; उद–*otter*) १५. २५; १८. २४; २४. ६३.

उदपान–उदक+पान–पात्र–कमण्डलु। श्रोझ, (उक्षण, उक्षेइ, उक्षण; च–श्रो P. 125) की व्युत्पत्ति आर्द्र से नहीं, किन्तु उद्, (उन्द्, उदन्, उदक) से है। तु० आर्द्र–अद्द–अड्ड (द–ड P. 294) अल्ल–(द्–ल् P. 218, 219, ल्–ल्ल् P. 244) आल्ला–Eng. wet (P. 111) १२. ६.

उदय–आगमन ३. ३०.

उदासी–उदासीन–विरक्त (आस्+उद्) ११. ३७.

उनइ–अवनत–ओनय–उनय–झुक रही है (नम+अव) २. ७७

उंदुर–उन्दुर–मूसा; म० उंदर, उन्दीर; गु०, उन्दर; हि० इन्दुर; सिं० अन्दुरू (JB 76, 143) तु० चकूदर १. ३०.

उनंत–उन्नत (नम्+उद्) ३. ४१; ४. ३६.

उनांह–उन्नाह–(उत्साह; उन्नद्–संनद्–संबन्ध, सुधा०) २५. १७६.

उन्ह–उन्होंने, (ओन्ह, उन्ह, उनें, उनि, H. 37, 2) १. १४१, १४४; २. १६६; १०. ४४; २०. ६१, ६२; २१. ३; २३. १८४; २४. ३५.

उपकार–(कृ+उप) ११. ३०; २५. ४४.

उपज–उपजी (उत्पद्यते–उप्पज्जइ–उपजइ; थ–ज P. 280; त्प–प्प P. 300; JB 52, 125, 230) २४. १०७.

उपजा–उत्पन्न हुआ १. १३६.

उपटि–उत्पत्य–उप्पड–(प्प–प यथा उडना में ड्–ड डी+उत्) २२. ५४.

उपदेस–उपदेश (दिश्+उप्) १२. ४०; २१. १६; २२. ६१.

उपदेसी–उपदेशीय–उपदेशयोग्य २२. ६१.

उपदेसु–उपदेश ११. ६६; २५. ३६.

उपना–उपनत हुआ–उत्पन्न हुआ, (यथा श्रोनइ–अवनम; अथवा पद्+उप; म० उपजे) ३. ८, २१, २२; १५. २७; १८. ४२; ११. १८; २२. १७.

उपनी–उपनत हुई १०. ४८; १५. ३६; २३. २५, १६१; २४. ११३.

उपने–उत्पन्न हुए २०. ७.

उपराजि-उत्पन्न करके (राज्+उप) १. ३२.

उपराजी-उत्पन्न की १. ८२.

उपराहीं-उपरि-ऊपर (उपरि H. 378) १. ३५, १४८; २. १७५; १०. ६, ६७, ८७; १३. ५०; १४. २; १५. ६; १७. ५; २४. ५.

उपम-उपमा (मा+उप) १०. १६०.

उपमा १०. ११२.

उपसईं-चली गईं-हट गईं-(सृ+अप; अ-उ, यथा पुलोएदि-प्रलोकयति P. 104, 123; H. 56) २४. १४८.

उपसवहीं-चले जाते हैं २४. २.

उपाई-उपाय-उवाव (इ+उप) १. ३७.

उपास-उपवास ऊआसो, ओआसो, उववासो (उप-उ-ओ P. 155) म० उपास; सिं० उवसु; २१. ४०.

उबट-उद्वाट-भ्रष्ट मार्ग २१. ६०.

उबारा-उद्धार (भृ+उद्; द्+भृ-व्भृ P. 270; भृ-वृ P. 213, 214) ३. ६८.

उभइ-उभय १. ४०, १७१.

उमर-मुहम्मदस्थानीय चार मित्रों में से एक का नाम १. ६१.

उम्मर-उमर १. ११५.

उरगाना-उडुकान-उडुक-जिसके सहारे तरा जाय-सामग्री १२. १८.

उरझ-उलझ कर (उरझि-रुध्+अव) १०. ८.

उरझाइ-अवरुद्धय-उरझइ, (स्वार्थ में णिच्) उलझता है २४. १२०.

उरझाना-उलझा २०. ५६.

उरुझा-अरुझा-उलझा १२. २.

उरेह-चित्र-मूर्ति (उद्देह-उल्लेख; लेख-लेह) २. ११८.

उरेहइ-लिखने लगी, (उल्लेखन, उद्देहण) १८. ६.

उरेहा-उल्लेख-रचना १. ३.

उरेही-लिखी २. १८८.

उलटा-उलुठ्य-विपरीत-(लुठि गतौ; तु० उलथा; JB. 50, 109) २३. १०२.

उलटि-ओलोट्ट-उलटकर १०. ३७; ११. ५२; २२. ७३;

उलथहिं-उथलते हैं; उलथइ-उथलइ-उत्थलइ (उद्+स्थल P. 327; JB. 89) १०. ३३; १५. १०.

उलथि-उलट कर-उथल कर १०. ३७.

उलु-उलूक-उलुग (ऊ-उ तु० वेरुलिय-वैदूर्य; विरुअ-विरूप; तुण्हिअ-तूष्णीक P. 80); ८. ३७.

उसमान-मुहम्मदस्थानीय चार मित्रों में से एक का नाम १. ६२.

उसांस-उच्छ्वास-उस्सास-ऊसास-घोड़े के लिये "हूं" ऐसा इशारा (तु० ऊससिर-उच्छ्वसिर; ऊससिर-उच्छ्वसित; सोसास-सोच्छ्वास, P. 327) ($\sqrt{}$श्वस् As. *hwess;* Eng.

wheeze) २. १७२.

उहइ–उहई–वह ही–वही १. ३३; २. १८६; १०. १०१; १५. १२, २६; २०. १०३; २१. ५७; २३. ५४, १६६; २४. १०४.

उहई–वह ही–वही १५. २७; १८. ११; २२. ३७; २५. ६५, ६६.

उहउ–वह भी १२. ३६; २१. ५६.

उहां–तत्र–तत्थ–उहां–वहां १२. ६३; २५. ७३.

ऊ.

ऊँच–उच्च–ऊँचा २. ६०, १२७, १८३; ७. ६; ११. ३१; १३. ४६; १६. ३५, ३६, ३७, ३८, ४०, ४३; २५. १५८.

ऊँचइ–उच्चैः–ऊँचे से १६. ३५, (ऊँचे पर) ३६, ३७. ३८, ३६, ४०.

ऊँचा–उच्च ११. ३०; १६. १७; २५. १५८.

ऊँची–उच्च २. ६०.

ऊआ–उदय हुआ ३. ५८; १०. ५०; ११. ३१; १६. १६; १६. ६०.

ऊई–उदय हुई ४. ३६.

ऊख–ईख–गन्ना (उष्णु, इक्षु–इक्षु P 321) १. २८.

ऊखा–उषा–वाणासुर की कन्या २०. १३५; २५. १७२.

ऊतिम–उत्तम (उद्+तम्; up-out) २. ८; ३. १६; १३. ६३.

ऊपर–उपरि (Lat. s-uper, Eng. over) १. १२४, १२७; २. ५६, १२२, १३५, १६२, १६६; ४. १६; १५. ४५; १६. ६; २३. १७६; २४. ३३, ७२; २५. २७.

ऊभि–ऊर्ध्व–उब्भ–ऊभ; यथा उब्भय-ऊर्ध्वक (तु० उद्वेग–उव्वेग–उव्वेव–उद्वेय P. 235; उद्विग्ग–उद्विग्न, यथा अग्गि अग्नि०। हे० २, ७६ के मत में अव्विएण–उद्विग्न। संभवतः इसकी व्युत्पत्ति उद्भूण्ण से है। तु० वैदिक भद्–बुद्–उद् P. 276। उब्बण–उल्वण ल्व–व्व, यथा किल्विष–किब्बिस; शुल्व–सुम्ब (P. 295, 300); ६. ४६; १०. ११२; २४. ८२.

ऊहां–वहां २१. ६२.

ए.

ए–यह–वे १२. ३६; १३. १८, २४.

एइ–एतत्–एअ–ये ५. ३७; १५. ६०; २३. १८०.

एक–एक [एकम्मि–एगम्मि, एके–एगे इत्यादि P. 435; एकल्ल–एक (हे० २. १६५) एकल–अकेला P. 595] १. १, १६, ४८, ८१, ६४, ६५, ११७, ११६, १३४, १४५, १६१, १६८; २. ७०, १४६, १४८, १६५, १६४; ३. २६, ३७, ४०, ४६; ४. १, १४, ४०, ४५, ४६, ५६; ५. २७; ७. १, २, ४४; ८. ११, ३२, ५५; १०. ७८, ८१, ८५; १२. ६३, ६६; १३. ७, १६, ५१; १४. २, ४, १६, २१; १५. १६, २६; १६. २६; १७. १०, १३; १६. ६४, ६८; २०. ७०, ७५, ८६, ६२, ६३, १०१, १२३; २२. १०, १८, २०, ६८, ७०, ७८; २३. ११८, १२८; २४. ७८, ११०, १२२; २५. २६, ४८, १०८, ११३, १६६.

एकइ–एक एव–एक ही १. १६३, १७६; २. ३५; १३. १३; २३. ३३; २४. १६०; २५. १५१.

एकउ–एकोऽपि–एक भी २. ४, ८; २४. ३५; २५. ७१.

एकहि–एक ही १६. ६६; २३. ६६.

एका–एक २०. १२६.

एत–इयत्–इतना १३. २२.

एतना–इयत्–एत्तअ–इतना ११. ८; २२. १६; २४. १०४.

एतनिक–एतावान्–इतना ८. ५१, ६७.

एतनी–इतनी १३. १७.

एहि–इस १. ५७, १७६; २. १०३; ४. ११, (इसी) ३२, ५१, ५२; ५. १४, २३, २८, २६, ३८; ७. १०, २८; ८. ८, ५८; ६. १०; १०. ६५; ११. ३२; १२. ३५; १३. २६, ३४, ३७, ६४; १६. ४८; २०. ६५, ६७, ११२; २१. ५५; २२. १३, ३७; २५. ३६, ३६, ४०, ८०, ६४.

एही–इसी १५. ५६.

एहु–अस्य, इसे २२. ३३, ३५, ४०.

एहू–अस्यापि, इस पर भी २२. ३६.

ओ.

ओ–उस २२. ५६; २३. ८७; २५. ६६.

ओखद–औषध–ओसढ (P. 223; ओष-धि–ओषत्+धि से) १. १५; ११. ११; २४. ६८.

ओछ–ओछा–छोटा; अवचय; अवच्छद (P. 154) २५. ७२.

ओछे–छोटे ५. ४६; २५. ७२.

ओझा–उपाध्याय–(उप+अधि+इ) उव-ज्झाय (ज्झ–ध्य; तु० मज्झ–मध्य;

विझ-विंध्य; संझा-संध्या-सांझ, P. 280) ११. १०; पुजारी २०. ८४.

ओठँघि-लगकर-उपस्थगित-ओट्ठगिय (तु० *थप्पइ, थएसु, थइस्सं, थइउं, थइय, ठत्थइय, समुत्थइउं, ओत्थइय समोत्थइय; मूर्धन्य के साथ ठइय। थाइऊण की व्युत्पत्ति √स्थक् धातु से। तु० पा० थकेति, म०, शौ०, मा० थक्कइ; जै० म० थाक्कसइ. P. 309, उप-उ-ओ; तु० उज्झाओ, ओज्झाओ, उवज्झाओ-उपाध्यायः; ऊआसो, ओआसो, उववासो-उपवास· P. 155) २. ६३.

ओढव-ओढ़िवेगा (ओढ्ढ़ण-ओढ़ना-अव+धा; ढ-ध; तु० ढंख, ढंक, ढिंकुण; आढ़इ-*आधाति-आदधाति; आढ़िय-*आधित-आहित; P. 223, अव-अउ-ओ, यथा ओयरण-अवतरण P 154) १२. ३०.

ओढ़ाई-ओढ़इ; तु० म० ओढण, ओढण, (ढाल); ओढणी, ओढणी (चादर); गु० ओढणो, ओढणुं; सि० ओढणु (-वस्त्र), ओढ़को (हि० ओड-आड-ओट), दे० ओड्ढ़णं-उत्तरीयम् (धा+अव; JB. √धद्, यथा धोद्रम् 89, 812) २०. ५७.

ओढ़ाया-ओढ़ाया हुआ १०. १११.

ओता-तावान्-इतना १४. १६.

ओती-तावती-उतनी १०. १७.

ओदर-उदर (अ+उद्) ३. ५.

ओधा-रुद्ध-नद्ध-बांधा (ओधा-√धा+अव-पीछे रखना, डालना) २५. २२.

ओनए-अवनत-ओणये-झुके (तु० ओणविय-*अवनमित-अवनत; P. 125, म० ओणवणें, ओनवणें, ओनविणें (-झुकाना); गु० नमवुं; सि० नवणु, नंवंणु; बं० नुयाइते; ओ० नुआंइबा; प्रा० ओणविय) ४. २७.

ओनाई-अवनम्य-ओणम्-झुककर १८.५

ओनाहिं-झुक जाते हैं १२. ८८.

ओनाहीं-झुकते हैं (टी० निम्नेक-नम्) ३. ३१; ७. ७; ६. ३१.

ओप-कान्ति; ओप्प-ओप-(अर्पय) शाण पर घिसना, चमकाना। तु० म० ओपणीं-अर्पय (JB. 3, 125' P. 104) तथा उप्पेइ-उप्पिअ-अर्पयन्ति (उ-ओ P. 125) ४. ६२.

ओपा-ओप-ताप-तेज-धूप (ओपा की व्युत्पत्ति आतप (आ+तप) से नहीं है) १६. ३४.

ओर-अन्त; अपर-अवर-अउर-ओर (तट, किनारा; P. 154) १३. ४१.

ओरा-ओर-पार-किनारा ७. ५; (अपर प्रान्त-अन्त में) ११. २८; २५. ४२; अपर या अवार-तरफ़ १८. ४१; २३. २३.

ओस–अवश्याय–ओस (यहां पसीने का विन्दु); ओस्सा, उस्सा, ओसा; अव-अउ–ओ P. 154 (यलोप के लिये तु० ओआअ, ओवा–अवपात P. 150; तु० म० ओल-उद्रिन्); १३. ३.

ओहट–अरघट्ट–ओघट्ट–ओहट; हरट–रहँट। तु० प्रवाद, म० पोवाड; भ्रमर म० भोंवयों इत्यादि (JB. 79); अथवा अपहस्त, (P. 564) जिसमें हाथ से काम न लिया जाय, पानी की मशीन। अप–अव, यथा आश्रव-आतप (P. 199.) अव–अउ–ओ, यथा ओआ–अवपात ओआस–*अपवास; ओसित्त–अवसिक्त; ओहसिअ–अपहसित इत्यादि (P. 155; Gray. 152); २४. १२५.

ओहिं–उनमें २०. १६.

ओहि–(वह, उसके, उसे, उस आदि.) १. १६, ३६, ४६, ५१, ५२, ६२, ६३, ८७, १२४, १२८, १५८, १५६, १६०, १७६; २. ४, १४७, १४६, १५२, १६७; ३. ७८; ६. ६; ७. ४, १३; ८. २०, ६३; ६. १६, ४६; १०. १, २०, २३, २६, ३१, ७१, ७७, ८४, १०३, १०६, १०६, १३३, १३७, १४८, १६०; ११. २७; १२. ८३; १३. १६, ३८, ४३, ४६; १६. २८, ३१, ३२; १८. ३८; १६. १७, २५, २६, ४८, ६६; २०. १०१; २२. २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३७, ६५, ६६; २३. २१, ६८, १४३; २४. ४०, ५० ५१, १३४, १३६, १५०, १५१; २५. ३५, ८६, १३२.

ओहिक–उसका २४. ५६.

ओही–वह ही १. ६८; ७. १८; १०. १, २६, २७, २८, २६, ३०, ४५, ४६; १३. ३२, ५५; २३. १४६, १६५; २४. ३६, ५५; २५. १८.

क.

कँपि–कांप कर २४. ७६, १०६.

क–का–(षष्ठी विभक्ति) १. ३३, ७२, ८६; २. १४, १५, ६६, १४७, १५४, १८१; ५. ४३; ७. ६; ६. १४, ५२; १२. ८; १५. १६, १७, २२; १८. ४५, ४६, ५८, ६१; १६. २८; १६. ६०; २०. ५६, १३६; २१. २७, ३०, ३४; २२. ७०; २३. २६, ५५, ६८, १०८, १४१, १६२; २४. १३२, १३५; २५. २०, ३२, ८०, ८८, १५३, १७४.

कइ–का, की (षष्ठी विभक्ति) १. ३६, ४५, ५५, ७७, ८२, ११५, १४३, १४६,

वाला मेघ १०. ६०.

कउ—कइ+उ—कई २. १२६.

कउडिआ—कपर्द, कपर्दिका—कवड्ड—कौड़ी; म० कवडा; गु०, ब० कोडी; सिं० कवडिय १३. ४०.

कउतुक—कौतुक—कोउग ४. ४२; २०. ६६; २४. २४; २५. २८.

कउन—कः पुनः—कवण—कउन—कौन; म० कोण; (नपुंसक० काय); गु० कोण; पं० कौण (JB. 54, 76, 204); १२. ५०; २०. ६०; २३. १२८, १६६.

कउनहुँ—केनापि—किसी ने १६. २४.

कउनि—कौन ११. १४.

कउनु—कः पुनः—कौन ४. २१, ५२, ५४, ६०; ५. ४६, ५५; ७. १५, २६; ८. ७, ३०; २१. १६; २२. २४, २३. ७; २४. १४१, १४२, १४३; २५. ७५.

ककनू—ककनुस, (पक्षि-विशेष) जिसे फारसी में आतशजन कहते हैं २१. ४६.

कंकन—कङ्कण—कड़ा कट; तु० Lat. *cinctus*—कञ्चित; *canc-er*—कृति JB. 82; २३. १३२.

कंगन—कङ्कण—कड़ा; म० कंकणी, कंगणी; सिं० कंगणु; बं०, ओ० कांकन, कांगन; का० काङ्कम, कङ्गुन (Gray. 506); १०. ११०.

कचउरि—कचौरी (कुच+उन्न, कुच के समान फूली हुई) १०. ११३.

कचउरी—कचौरी २५. ६६, १३६.

कचपचि—कचपची—कृत्तिका नक्षत्र १६. १४.

कचपची—कृत्तिका नक्षत्र, जिसमें छोटे छोटे चमकदार तारे हैं; १०. ६३; १६. ६.

कचूर—कर्चूर—कच्चूर; एक विषविशेष, जो हलदी में उत्पन्न होता है, और जिसका हलदी जैसा रंग होता है; २०. ६६.

कजरी आरन—कज्जलारण्य-कदलि-अरण्य २०. ६५.

कजरीवन—कज्जलीवन (-काला वन)—कदलीवन, जो हृषीकेश, देहरादून, बदरिकाश्रम और उसके उत्तरवर्ती हिमालय प्रान्त में है १२. ३६.

कंचकी—कञ्चुकी-कंचुअ-चोली २. ११०; ४. ३३.

कंचन—कंचण—सोना १. १३३, १६६, १६७; २. १२६, १४८; ३. ३६; ७. १७, ४४; ८. ५४; १०. ६७, ११३; १६. ८, २७; १६. २४, ३६, ५०; २२. ३५; २३. ७३, १०६, १२२; २५. १६८.

कंचनकरा—कञ्चनकला—सोने की कला (-सार) १६. ४१.

कंचनकरी—कञ्चनकलिका १६. २५, ३७.

कंचनपुर—कञ्चनपुर २३. १३३.

कंचनरेख—सुवर्णरेखा १०. ११.

कटक—कडग—दल—सेना—समूह २. ११; १२. ७२; १३. ११, १६; १५. ५७, ५८; २४. १७; २५. ३२.

कटहरि—कट्फल—कयटकिफल—कटहर—कटल २०. ४२.

कटाउ—(√कृत्—कर्त्—कट्ट) कटाव—काट काट कर अनेक फूल पत्तों की रचना २. ६६, १८६.

कटाछु—कटाच्छ—कडक्ख—कनखियां (कट+अक्षि—टेढी दृष्टि) २. १०६; १०. ८५.

कटार—कट्टार—काटने वाला अस्त्र, सिं० कटारो, दे० कट्टारी छुरिका २५. ८२.

कटारी—कटार २. ६२; २५. ५०.

कठिन—कठिण; म० कठीण, कठीण; गु० कठण; सिं० कठनु; ५. ३६; ७. ४; ६. ४१, ५०; ११. ७, २८, ३३, ३६, ४३; १३. १६, ४१; १५. २६; १८. २०, ३८; १६. २६; २४. ६७, १०५.

कठोर—कठोर—कठिन १०. ५२.

कडुइ—कडु—कडुई—कड़वी; म० कडू; गु० कडु; सिं० कटो; सिं० कुलु २५.११६.

कंट—कंटग—(√कटि गतौ "केचित्तु इदितं मत्वा नुमि कृते कण्टतीत्यादि वदन्ति" सि० कौ० भ्वा० ग० पृ० ४२६) सि० कंडी; पं० कंडा; सिं० कटुव; छि० कचो<कच; १०. ११५.

कंठ—गला; सि० कंठु; सिं० कट १. ६८; ७. ३०, ३१, ४५; ६. ४७; १०. १०४; १२. ६; १६. २; २३. ५५, ७४, १०६, १०६.

कंठइ—कण्ठे—गले में २२. ३.

कत—कुतः—अप० कहाम—क्यों १८. ३८.

कतहुँ—कहीं पर २. ११७, ११६; ८. १; १३. ३८; २०. ७८, ११२.

कतहूँ—कहीं पर २. ११५, ११६, ११८.

कदम—कदम्ब—कलंब—कदम २. ८३; ४. ७; २०. ५४.

कदलिखंभ—केले का खंभा—कयलि—कदलि (द—ड—ल P. 245) १०. १०६.

कथा—कहानी १. ८, १५६, १८५; २. ११६; ३. २; ७. ७१; २०. १२२; २३. ७६.

कथे—कथन से—कहने से ११. ४१.

कनइ—कण की; कणिका—यव की कनी। गु० म० कणी, काण (यव का दाना); गु० कण, कणी, कणुं; सिं० कणो, कणि; हि० कन १६. ११.

कनक—सुवर्ण २. ५५, ६८, १०६; ३. ४६; ६. १२, १६; १०. १६, २२, ८६; २३. १२१, २५. ६६, १३६.

कनककलस—सोने के कलसे २. ६१.

कनककदह—सुवर्णद्रह—सोने का दवहा १०. १०५.

कनकपानि-सोने का पानी (-जवानी की पाण) १८. ३८.

कनकसिला-सोने की शिला २. १३५.

कनहारा-कर्णधार-पतवार को पकड़ने वाला १. १४२.

कनिआ-कन्या ३. ६, १६; कन्याराशि ३. २०.

कनिक-कनक-सोना १०. ११३.

कंत-कांत-पति-(√कम्-√चन्; ह्रस्वत्व के लिये देखो P. 83) ८. १३, ३०, ४८, ६३, ६६; १२. ४१; १८. ८.

कंथा-कथरी (तु० Lat. *centon*; O. H. G. *hadara*; Germ. *hader*) ११. ४५; १२. ३०, ६४; १३. ५८; २३. ६०, १६७.

कंसासुर-कंस-कृष्ण का विरोधी असुर १०. २८.

कंसू-कंस २५. ५१.

कपूर-कर्पूर-कप्पुर; सिं० कपुर०; गु०, सि; पं, हि०, बं, ओ० कपूर; फा०—काफ़ूर २. ५०, १०२, ११४, १८२, १८७.

कपूरू-कर्पूर २. १४६.

कपोल-कवोल-गाल २. १०६; १०. ८३, ८८.

कपोला-कपोल १०. ८१.

कब-कदा ११. २२; २३. ५६; २४. ७६.

कबहुँ-कभी ३. ८०; ८. १७; १६. ३.

कवि-कवि-कइ [√कू-√स्कू; तु० पह० कई; फा० कई Lat. *cav-ere* (-साव-धान होना); Germ. *schauen*; As. *sceawian* (-देखना); Eng. show] १. १५६, १६१, १६६, १७७ १८५, १६०; ७. ४७; १२. ८०.

कवितन्ह-कवित्त-कवित्त बनाने वाले कवि १. १७६.

कविलास-कैलास-कइलास अथवा के-लास-(तु० वइर वैर; कइरव-कैरव; P. 61) शिवपुरी-इन्द्रपुरी २. १३, १७, ६०; १५. ५६; २०. ६७; २१. ३६; २२. २४, २६.

कविलासा-कैलास २. १४८; २२. २८.

कविलासू-कैलास पर्वत १. २; २. १८५, १६३; ३. ११; ६. २५; १३. ६३; १६. १२.

कमरख-फलविशेष २. ७८; २०. ४४.

कमावा-(कर्म-कम्म-काम; सि० कमु; सिं० कम;) कमाया २४. १३६.

कया-काया-काय-शरीर (√चिञ् चयने) १. ७२, १८४; ३. ७३; १२. ८, ११; १३. ३, ५८; २०. १२०; २१. ४१; २२. २, ६०; २३. ५१, ५६, ७८, १११, १५८, १६१; २४. १३५, १४८, १४६; २५. २०, १६०.

कयापिंजर-शरीर का पिंजर २५. १४.

कर-का (तु० कृत-केर, केरि अथवा केरा,

केरी; कर, करि; करा, करी; बं० जनेर्–जनका; महा० प्रा० रायकेरं–राजकृत इत्यादि H. Pp. 220-240) १. ८, ३८, ४०, ४७, ५२, ५३, ६५, ७१, ७२, ७३, ८८, १३८, १५३, १५५, १७६; २. ६, १०, ४०, ५६, ६०, ११५, १८४, १८५; ३. ५४; ४. १२; ५. ६, ८, ३१; ७. १, ३, १४; ८. ३१, ३६, ४८; ६. ८, २४; ११. २०, ३६, ४४; १२. १५, ३३, ६१, ६४, ७१, ७२, ७३, ८१, ६३, ६६, १३. २४, २६, ३२, ३५, ४६; १५. २२, ६२, ७१, ७२; १६. २७, ३०, ४८; १८. २१; १६. १४, १६, ३८, ६२; २०. ६६, १०२, १०४, १११, १२६, १३२; २२. ३, १६, ३१, ४५, ५२; २३. २७, ६२, ६६, ७८, ८४, ८५, १०१, ११६, १४५, १७१; २४. ८, ५५, ६६, १३१; २५. ८, १२, १७, २४, २५, ३०, ३७, ४०, ८४, ६४, १००, ११२, १२६, १३२, १४०, १५६. करहार (√कृ, कृ० Lat. cerus: Eng. creator, कृतु–करना) १. ५८; ३. ६१; ४. २३; ८. ३, ५८; १०. २७; ११. २४; १२. १, ५, ६; १६. १७; १८. ३१; २०. ८१; २४. ३७, ७३. कर–करता है प्रा०, का० कर; पद० कर्तन; फा० कर्दन; १०. १२२.

करइ–करोति–करता है (Lat. cer-us–विधाता; creare, creat; क्रतु, cracy इत्यादि) १. ४४, ४७, ५६, ५८, ७६, ८०, ११८; २. १६, ३६, १०४; ३. ७२; ४. १६, ४१; ८. ५५, ६७; ८. ७२; १०. १०३; ११. ८, ४०; १३. ५२, ५३; १५. ७, २३; १७. १२; १६; १८. ३, ५६; १६. ७०, ७२; २१. ७; २२. ८, ८०; २३. ३७, ४०, १३६; २४. २४, १४४, १५२; २५. ४, ६८, ७५, ७७, १५५.

करई–करोति–करता है १. ७४; ७. ३६; १३. २६; २१. ३४; २४. ३१; २५. ७७.

करउँ–करवाणि, कुर्याम्–करूँ ३. ३२; ७. ५०; करता हूं ७. ६४; करूंगा ११. ४८; करता हूं २१. ४८; करवाणि २२. ३६; कुर्याम् २४. १४०; करता हूं २५. ३६; करवाणि २५. १४६.

करत–कुर्वन्–करते हुए १. १६; ३. ७४; ५. ३३; ६. १४; ११. ३८; १२. २८; २२. १५; २३. ३७, ८०; २५. १४१, १५४; करते हैं २१. ११; करत हुत–करता था २५. १२६.

करता–कर्ता–रचयिता १. ४६, ७३.

करतार–कर्त्ता–ब्रह्मा ६. ५६.

करतारू–कर्त्ता–परब्रह्म १. १.

करन–कर्ण १. १३०; १३. ५४.

करना–करण–गारण–क्रिया १. ७३; पुष्प विशेष (कनेर) २. ८७; ४. ३; एक प्रकार का नींबू, जिसका पुष्प श्वेत होता है २०. ५१; करण–सुखसाधन–सामग्री ५. ४५; १८. ५५; आउबि करना–करने आवेंगी; करण–कर्तुम्; (यथा एच्छण–एप्टुम् P. 579) ४. २३.

करनी–करणी–(छि० कन, कुद, कोद–करना; कुड़ो–कर चुका है; री० कार–करण–क्रिया, कर्म १. १५६; कर्तव्यता, योग्यता २४. १४१, १५३.

करपल्लउ–करपल्लव–मृदु हाथ १. ६८.

करब–करेंगे (करअव्वम्–कर्त्तव्यम्) १. ८८; ८. ४०; १२. ६०; २०. ३८; करतब–कर्तव्य ११. ३३.

करबरहीं–कुलबुलाते हैं–इधर से उधर उड़ते हैं २. ३५.

करमुखी–कालमुखी–जिसका मुंह काला हो (सं काल; पा० काळ; उ० कळा; बं०, हि० काला; सि०, व्रज० कारो; गु० काळो; सिं० कळु) २४. १३८.

करमुहां–कालमुख–काले मुंह का १०. ८४.

करमूहां–काले मुंह वाला २१. ६२.

करवट–(कर्वट–पर्वतघाटी, उससे लाक्षणिक अर्थ करवट लेना) अथवा कटिवट्टी–कटिवृत्तिः–इधर उधर होना १३. २.

करवत–करपत्र–करपत्त–आरा (प–व P. 199; म० कर्वत; उ० करोत) १०. १३, १५, १२८; १८. ३४; २४. ५६.

करसि–करोपि–तू करता है २४. ८६.

करसी–(√कृप्–करिस्–कड्ड) कर्षित की–खिंचवाई १०. १२८.

करहकरटगा–कर्णाटक १२. १०२.

करहिं–करते हैं २. ३३, ११५, १६७; ३. ३५; ४. ३४; ८. ३२; १०. १६, ३४, ३६, ५३, ६६, १५८; ११. १४; १२. ५६, ८८; १५. ६६, ७८; २०. १५, ३४, १०४; २३. ४८; २४. २४, १६०; २५. १७, ११६.

करहि–कलायाः–कला को–कल को (म० कल; सि०, कल (अ); २४. ४८.

करहीं–करते हैं २. ३५; ५. ३४.

करहु – कुर्वन्तु – कुरुष्व – करो १. ५७, १०४; ८. ५८; ११. ३२. १२. ४८, ८६; १५. ५७; २३. ४३; २५. ७, ६५, ११५, १३४; कर डालते हो ८. ६७; करते हो ८. ७१.

करां–कलाएँ–किरणें २३. १६३.

करा–कला १. ८१, १२५, १४७, १६७; ३. १०, (तत्त्व) २२, (कान्ति) ६७;

तेज ५. १२; कला ६. १७, ३८; लीला वा अवतार १०. १३३; दशा ११. १२; दिया ११. ४५; अंश १३. १७; कान्ति १६. २०; किरण २०. १०५; विद्या २३. ११७; अंश २४. ७८; किरण २५. १६८.

कराइ–करइ–करती है १०. ३२.

कराह–कटाह–कड़ाह (ट–ड P. 198, ड–र P. 241, सं०, पा० कटाह; उ० करई, कहाइ, कढ़ेइ; बं कड़ाई; हि०, पं०, मि० कड़ाही; गु० कढ़ा, कढ़ई; सिं० कुलाव १५. ३२, १८. ५२

कराहीं–करते हैं (तीनों स्थानों पर 'केलि कराहीं') २. ५४, ६६; १०. ५५.

करि–की १. ३५, ३६; २. ८६, १२०; ६. ३०; ११. ६३; २१. ३१; २२. ७; २३. ६७; करके २. ३६, ३७, २०. ११८; २२. १; २३. ३५.

करिआ–कर्ण, जो नाव को खींचने के लिये नाव में लगी रहती है। छोटी नावों में कड़ी के स्थान में रस्सी होती है, जिसे 'गोन' कहते हैं। आजकल लोग इन्हीं को "करवारी" कहते हैं। १. १४१.

करिअइ–कीजिए २४. २१.

करिय–कर्ण (–कर्णा–कर्णधार)–पतवार पकड़ने वाला; अथवा करिया–कड़िया, कड़ी पकड़ने वाला–मल्लाह ३. ८०.

करिल–कंठिल्ल–कढिल्ल–करिल-कृष्ण वर्ण ४. ३५.

करिहइ–करिष्यति–करेगा ७. ७२.

करिहउँ–करिष्यामि–करूंगी १२. ४५.

करिहि–करिष्यति–करेगा १२. ४२.

करी–कली ३. ४१; ४. ३७; ६. १३; १०. १५१; २४. ८८, १०२; करिये २४. ६, ३५.

करील–करिल्ल–वृक्ष विशेष जो वृन्दावन में प्रसिद्ध है; वसन्त में सब वृक्ष हरे हो जाते हैं, किन्तु इस पर पत्ता नहीं आता; ८. ३६.

करीलहि–करील को २१. २०.

करु–कुरु; करो–कर, ७. ३३; १७. ८; १८. ३१; २२. ७५; २५. ४४.

करुइ–कटु–कड़वी १. २८.

करेइ–करोति–करइ–करता है ३. ६४; ४. ३२; १०. ६४; २५. १३, ७२.

करेई–करोति–करइ–करता है १. ४२; २०. १६; २३. १५१.

करेउँ–करोमि–करता हूँ २२. ३२.

करेतीं–कुर्वन्ति–करते हैं ४. ३१.

करेहु–करहु–कीजिये २२. ३६.

करोध–क्रोध (तु० Lith. *rus-tus*-(क्रुद्ध) *rus-tybe* (–क्रोध); Germ. *groll*

(–क्रोध) ११. ४६.
करोरिन्ह–कोटि–करोड़ों ७. ७.
कलंक–कालिमा–दोष १. १६२, १६७.
कलंकी–कलंक वाला १०. १६.
कलपइ–कल्पति-कलपता है–दुःखी होता है (√क्लृपु JB. 309) १८. ५०.
कलपतरु–कल्पवृक्ष-विधि वृक्ष (√क्लृप्; तु० Goth, *hilpen*; Eng. *help*); २. १४८.
कलपसमान–कल्प के तुल्य १८. ४.
कलप्प–कल्प–कल्पन–छेदन ११. ४०.
कलवारी–कलवार की स्त्री; (कलवार शराब बनाने और बेचने वाली जाति) २०. ३१.
कलस–कलश–घड़ा १२. ७४; २०. ८०.
कला–(चेटक–चटक मटक से टोना लगा देने वाली कला, जिससे मनुष्य विवश हो जाय) २. ११८; अंश १०. ६५; २४. ६७; २५. ७४, ८६.
कलाई–कोहनी से मिला हुआ निम्न भुज भाग; छिं० कालाज; (छिं० कल–सिर) १०. १०५.
कलि–कल–मधुर-प्रसादक-विश्राम (तु० वि+कल–विकल) ५. २५.
कलीं–कली का बहु० २०. ३१.
कवन–कः पुनः–कवण– कौन (छिं० की–कौन; री० कोक; कुक-ᵏकोकह; अवे० क; M, 398) १. ६१; १३. ११; १८. १०, ५३; २५. १०.
कवनउ–कोई २. १६३.
कवनु–कौन १०. १५१.
कवँल–कमल (तु० म० कोवँलो, गु० कुंळुं; सि० कोमलु–कोमल) १. १६२; २. ५३, १८१, १८४; ३. ३६, ४५; ४. ८, ३५, ३६, ५०, ६४; ५. १३; ८. २४; ६. १७, ३८; १०. ३४, ६४, १२३, १३४, १५१; ११. २४, ३४; १३. २८; १५. ७७, ८०; १६. १६; १८. ११, १२, १३; १६. ७१; २०. ३३; २३. ७४, १४३; २४. ५६, ६२, ६६, ८८, ८६, ६६, १०२, १२४; २५. १६६.
कवँलकरी–कमल की कली १८. २७; २०. १०; २४. १५४.
कवँलकली–कमल की कली १८. १४.
कवँलचरन–कमल जैसे पैर १०. १५५, १५७.
कवँलभवँर–कमल का भ्रमर १६. ५६.
कवँलरस–कमल का रस १८. ७.
कवँलसुगंधु–कमल सुगन्ध १०. १४६.
कवँलहथोरी–कमल हस्ततल–कमल जैसी हथेली १०. १०६.
कवँलहि–कमल से, कमल को, कमल में ६. २१; १६. ३२; २४. १००, १०१.
कवँला–कमल १. १६; ६. ३६; २४. ५७.
कस–कीदृश–कैसे ४. १६; कैसा ८. ६;

९. १, कैसे १६, कैसा २०, कैसी २२; (न–क्यों नहीं) ११. २१; क्यों १८. १६, कैसा ३०; कैसा २१. ५०; क्यों २२, ८; क्यों २३. १७, कैसा १०६; कैसा २४. ३४, क्यो ८५, क्यों ८६, क्यों ११४; क्यों २५. १२, कैसी ३१, क्यों १४३.

कसई–कषन्–कसने से २२. ३५;

कसउँदा–कषायद–कसैला २०. ४६.

कसउटी–कषवटी–कसौटी–सोना कसने का पत्थर ८. ४; १०. ११; २२. ३५; २५. १३६, १६८.

कसतुरी–कस्तूरी १. २५; १०. २.

कसतूरी–कस्तूरी २. १०२, १८२.

कसा–कसइ–कर्षति का भू० (अवे० कर्प–स्‌ड; प्रि० कापकन्–खींचना; काप–ष्; कापगू–खींचने वाला बैल) १५. ३६.

कसि–कसकर ८. ६

कसिअइ–कसिये १६. ३६; २५. १४८.

कसी–कषिता–कसी गई १०. ११.

कहँ–(कक्ष; कचे–कहँ, कहुँ, कहूँ, काहूँ इत्यादि H 375)–के लिये १. १६, के–के लिये ६४, ६७, ८६, १८६; ३. ६६, का–के लिये ६८; ४. ४२; को–के लिये ८. ५६; ९. ५; १०. २३, ६४, ११६, १३२, १३६, १५१; १२. ५, ८, ६०; को–(के लिये खेलना–याग्रा करना) १३. ११, १२; १५. ४७, ५५; १८. २७, ३२; १६. १३; का–के लिये २०. ३४, ४८, ७८, १३२; (मुझे–मेरे लिये) २२. ११, २२; २३. १३३, १३५; २४. १६; २५. २, ५, २८, की–के लिये १७१;–को १. ३४, ३८, ८३, १०२; २. १०३; ३. ३४; ५. ४४; ७. ३८, ६५; ८. २४, ६५; १०. २४, ३५, १३६, १४६; १२. ६१, ८०; १३. २७, ६४; १५. ५७; १६. ३३, ४२; १८. ४६, ५३; १६. १६, ५४, ५६, ६७; २०. १०२, १३५, १३६; २१. १४; २२. ३२; २३. ७, १६, ८४, ६८, १२२, १२६, १३४, १५८, १८४; को–के ऊपर २४. ६, १४, २०, २६, ५६; को (–मुझ में) १५०, १५६; २५. ३२, १११, १७२;–के ऊपर १. ७१; ७. ३३; ८. ७१; १६. ७०; २२. ३६; २४. १४६; को–के पास १. १४२;–के (घर में) ३. ३०;–के (–साथ) ७. ४०; की ८. २४;–के यहां १०. १२३;–के (–भाग्य में) १०. १४८;–में (?) १२. १६;–की २०. ३६;–के २३. १३१; का (–कहा मानता था) २५. ३६;–कहां १. १८२; २. १२८; १६. ४०; २०. ६७; २१. ३६; २३.

५५, ६५; २४. ४०;—कहीं २३. १६.

कह—कथयति—कहता है (तु० प्रा० कहइ, कहेइ; शौ० प्रा० कथेदि कहेदि; पा० कथेति; उ०, वं०, हि०, पं०, सि० कह—गु० केह—सिं० कियनवा) ८. २२, ३८, ३६; कहने से ६. २; १०. ५८, ७३, ८०; २०. ६६; कहें २५. ४८.

कहइ—कथयति—म० कहेइ, मा० कधेदि, शौ०—कधेदु—कथयतु (अय—ए; अव-ओ, यथा ठवेइ—स्थापयति P. 153) २. ११६; ३. ३२; ७. ६१; ८. ४४, ५१; ६. ५४; २०. ६८, ६३; २२. ३१; २३. २६; २४. १४४; २५. १४७.

कहई—कथयेत्—कहे ८. १७.

कहउँ—कथयामि—कहता हूँ (कहूँ) १. ११३; २. ६, १५, १२८; ३. ५०; ७. २६; १०. १७, ७३, १३७; १६. ४८; २२. ६१, ६४, ७०; २३. ६८, १२८; २४. १०५; २५. ८१.

कहउ—कथय—कहिये ११. १५; २४. १५६.

कहत—कथयन्—कहता हुआ ६. ६, २४; कहते ही २२. १६, ७७; कहे का—कथित का २३. १६; २४. ४३; कथयन्ती २४. १०४, १२२; कहने से २५. ८८, कथने—कहने में १३३.

कहना—कथन—कहण; पा० कथन; उ० कहिबा; वं० कहिते; हि० कहना; पं० कह्ना; सि० कहनु; गु० काहवुं; ५. ५६; १६. ३४.

कहनि—कथनिका—कहानी ७. ७१.

कहब—कहेंगे १२. ८३.

कहवाँ—कहाँ ११. १६; २५. १५६.

कहसि—कहता है ७. ३५. ८. ८.

कहहिँ—कथयन्ति—कहते हैं ४. १०; १२. ६. ८२; २३. १७६; २५. ३, १७, ८८, ११३.

कहहीँ—कहते हैं १४. ६; २५. २०.

कहहु—कथय—कहो ३. ६१; ६. ८; २२. ८; २३. १७८.

कहाँ—कुतः (JB. 204, 206) कत्थ—कहां म० काम; गु० काम; त्सि० क; अप० कहां; छि० कू; ट० कूइ (तु० जत्थ—यत्र; तत्थ—तत्र; सव्वत्थ—सर्वत्र; अत्थ—एत्थ—इत्था, (वैदिक) P. 293) ३. ६७, ६८; ४. २०; ५. १७; ८. ५५; १०. १७; १२. ११, १४, १५; १३. २५; १४. १७; १५. २४; १८. ७, २६; १६. ११, २४, ६०; २०. ३६, ६७, १२०; २१. १८, १६, २०; २२. ८०; २३. २०; २४. ४, ४३, १५१; २५. ८०, १४४.

कहा—(कथित—कहा गया है); १. ११४; बोला ३. ४६, ५४, ५६; ४. ४०, ५४, ५७; ५. ४१; कहा चाहता है—

कहना चाहता है ७. ६२, ७१; ८. १३, ५८; ६. १; ११. २५, ३३; १२. ५, ५५, (कथित) ५६, ८०; १३. १७; १४. १७; १६. ३३; १६. ६, (कहा है—कहता है) ४६, ४७, ५८, ६६, ६८; (कहा नहीं जाता) २०. १२७; २१. ३३, ६०; २२. ३३; २३. ४४, ४६; २४. २५; २५. २६, (कहा न जाई) ४५, ५४, ८२, (कहते हैं) ९०, (कहना चाहिये) ९१, १०६, १०७, १४६, १६६;—कैसे—क्या—कथम् ७. ६७; क हि—क्या १२. ५४, ५५; कैसी १६. १, किम् क्या १६. ४८; कैसे २१. २६; किम्—क्या २३. ४०, किम् १२०; कथम्—क्यों २५. ८०, किम् १६८.

कहानी—कथानक—कहानय—कहानी ११. ४१; १६. ४१; २३. ७६.

कहार—काहार—पानी अथवा पालकी ढोने वाली जाति १५. ५६.

कहावई—कहता है २. १४.

कहाया—कहावइ का भू० ८. १०; २०. ६२; २४. १२७.

कहि—कथयित्वा—कहकर १. १७६; २. १५६; २३. १०५; २५. ४५.

कहिअ—कहे जाते हैं २०. ६०; कथ्यते—कहिये २३. १२०.

कहिअउ—कहना (कथ्यते) २३. २२.

कहिहहु—कहोगे—कहइ—कथयति का भविष्य १४. १०.

कहीं—कहइ का भू० प्र० ब० स्त्री० (बातें कहीं) १२. ६१.

कही—कहइ—कथयति का भू० प्र० ए० स्त्री० १. १६६; कहे जाते हैं (कहे पाठ शुद्ध प्रतीत होता है) २. ४०; ६. ३४; १६. ३३, ५२, ५७; २०. ११०; २३. ४१, ५०, १०८; २४. १३७.

कहु—कथय—कह ७. २१, २४; ८. ६; ६. १, २२, २३, ३३; १२. ३७; १६. १; १८. १४, २६; २०. १३८; २२. ७६; २३. २६; २४. १४१; २५. ८.

कहे—कहे गये हैं, कहे जाते हैं १. ११०, (कहइ का भू० प्र० ब०) १८५; कहा था ६. १८; कथनेन—कहने से १८. ४०.

कहेन्हि—कहे—(कहइ का भू० प्र० ब० पु०; 'वचन कहे'; अथवा 'कहा' आदरार्थ बहुवचन) २२. ७.

कहेसि—कहने लगी ५. २, अकथयत् कहा—(कहइ का भू० पु०) ६; १६. १५; १८. ४२; १६. २८; २२. ६, ५८; २३. ६६, ११३; २४. ११७; २५. १८, ५०.

कहेसु—कथयिष्यसि—कहना २३. ५७, ५८.

काँच—काच—कच—कच—चूड़ियां १२. ६४.

काँचा—कचा—कच्च; (√कच् बन्धने)

२३. ११५.

काँचु–काँच (VWI. P. 400) १. १६७.

काँचुहिँ–काचे–काँच में १६. ३७.

काँचे–कचे २. १४१.

काँजी–खट्टा मठ्ठा १५. १६.

काँट–कण्टक–काँटा; सि० कंडी; पं० कंडा; सिं० कटुअ; √कण्ट्–√कृत्; देखो इट् किट् कटि गतौ; छि० कचो (–कच) कांटा; १२. ६१; २०. ५६.

काँटा–कण्टक १. १६१; २३. १३८.

काँटे–कण्टक; बहु० १८. ५१.

काँठा–कण्ठा–गले की धारी ७. ४५; ६. १४; २३. ५५.

काँथरि–कंथरी-गुदड़ी-(कंथा–फटा कपड़ा; तु० Lat. *centon*, O. H. G. *ha dra*; Germ. *hader*) १२. ३०; २२. २.

काँथरिकंथा–गुदड़ी (फटे कपड़ों का चोलना) १३. ३६.

काँदउ–कान्दूरा; काँदो अन्न; अथवा कांदउं–गान्दम (हि० गादम, गाद; जल)–कीचड़; तु० म० काँदल–कीच के पास पैदा होने वाला पौधा; (√काद् VWI. P. 341) १. १११.

काँध ७. ४७; १२. ६.

काँधइ–स्कन्धे–कन्धे पर २२. ४०.

काँधा–स्कन्ध–खंध–कन्धा (P. 306; H. 145) तु० खवा (Lat. *scapula*) गु० खभो; दे० "खवओ स्कन्धः"; √स्कन्द्–उठना; Lat. *scando*; *scandere*–चढ़ना; *descand-ere*–उतरना; *scala*-**scad-la*–सीढी; ३. ७६; १५. ७, ५६.

काँधी–स्कन्धी–कन्धा देने वाला–बराबरी करने वाला २५. ६६, १३५.

काँधे–स्कन्धे–कन्धे पर २. १६७; २२. २.

काँप–कंपते–काँपता है; म० काँपणें; गु०, हि० कँप, काँप; सि०, पं० कंब; का० कोम्प; सिं० कपवुं–कम्पन; (VWI. P. 346, 350) २०. ७२.

काँपइ–कंपेत–कांपे १. ६३; कंपते–काँपने लगती है २. १२३, १३१; १६. ४०.

काँपत–कंपते–कँप रही है १०. ६४.

काँपा–कांप गया १. १०६; २४. १३, ६२.

का–क्या २. १२१, १४०, १४२, १६६; ३. ७२, ७७; ५. ४८; ७. ८, ११, १३, १४, २६, ३१; ८. १४, १५, ३७, ३८, ४०, ७१; ६. ७, ८, २५, ५४; १०. १, १६, २३, ४१, ४१, ८१, ६६; ११. १४, ४१, ४५, ५३; १२. २४, ३५, ८८, ६८; १३. ५, २६, ३०, ४४, ४८, ६४; १४. १०; १५. ६, ६३; १६. ३४, ४३; १७. ४; १८. ३०, ५५; १६. १८, ४२; २१. ३४, ३६, ४१, ४३; २२. २१, ५६; २३. ८४, ८५, १२०, १२४;

२४. ३१, १०५; २५. ६, १६, ७६, ६१, ११४, १२१.

का–किस ४. ५०; ८. ५६; ६. ८; १०. २३, १०३, ११६, १३२, १४८, १५०, १२. ३३, ६०, ६१, ७१; १३. २४; २५. ३२; का षष्ठी वि० १५. ३२, ४०; को (जिसको खेलना हो) २०. ४०; थोका–उसको २२. ३२; तालु का, तालु के ऐसा २२. ७३; किसकी २३. ६७; किससे २३. ६८; तोका–तव २५. ६५; तवक–तुम्हे २५. १३४; क्यों २५. १४४.

काई–जो इकट्ठा हो जाय–मल–काई (√चिञ्; पा० ३. ३, ४१) २२. ६०.

काउ–कापि–कभी ६. ८; १६. ४०.

काऊ–कापि, अथवा कोऽपि ५. २८; कभी ८. २६; कभी ६. ६.

कागद्–कागज १. ७.

कागा–काक–काग–कौआ; म० काऊ, कावळा; गु० काऊ; सि० काँ, (काँउ), पं० काँ; का० काव; सिं० का; दे० "कायस्थो प्रियः काकश्च" जि० काघ्, री० स्काघ; २. ३६.

काछई–कक्षित–कसे (लंगोटा–जिसपर) कसे हुए, कच–(कक्ष–काँस, म० कास, लाँक, JB. 41, 103 अथवा कच्छु–काँछ, म० काँछ्णा; (√कश्, *kagh VWI, P. 337); अवे० कस; Lat. cingere; Lith. kinkau-कश्चा; Lat. cinc-tus-कक्षित; तु० कंकथ (कक्षि के अनेक रूपों के लिये देखो JB. 92, 104) २५. १०५.

काछु–कच्छ (कच्छप का भागविशेष)–कच्छप (तु० वै० कश्यप); हि० कछुआ; म० कासव अथवा काँसव; सि० कच्छमुम; पं० काछिम; उ० कछिम; सिं० कसुप, अथवा कस्व–कमठ VWI, P. 390 १५. ४; २३. १७३.

काछे–अलंकारादि से भूषित–(क्ष–च्छ–क्षुर-छुर; अक्षि, मक्षिका, क्षीर, सदृश, क्षेत्र, कुक्षि, इक्षु, क्षुधा, क्षुप. P. 317 318) १०. १२६.

काज–काम–कज्ज–हि० और म० काज; (र्य–य्य–ज्ज P. 284) सि० काजु, ५. ५६; ८. २८; १२. १००; १३. ५५; १८. ५६; २४. ८.

काजर–कज्जल (कद्+जल) हि० म० काजल; सि० कजलु; पं० कज्जा (JB. 47, VWI. 385) २०. ३५.

काजा–कार्य–काज ११. ३३; १३. २२; १५. ११; २५. १०६.

काजू–कार्य–काज (–मनोरथ) १२. ६, ५४; १५. ६१; २१. ४६.

काट–कर्तयत्–काटे; म० काट्यों; पं० कट्; (√कर्त्–P. 289; कट–काटना तु० Lat. curtus-छोटा; सिं०

कुर्त खण्डित; श्रा० फा० कर्त—टुकड़े काटना) २३. ३२.

काटर—कर्त्तकार—कट्टार—कटार [√कृत्—Qort-, Qerāt-; कृणत्ति; कट—*karta-; अन्य भाषाओं के साथ तुलना के लिये देखो VWI. p. 421] २५. १६६.

काटा—कर्त्तयेत्—काटे २३. ३३.

काटि—कर्त्तयित्वा—काट कर २०. ८३.

काटी—बिताई ५. २५.

काठ—काष्ठ—कट्ठ—काठ; म० काठी; पं० काठ; सिं० कट; सि० काठु; का० कूट; (*Qold tho VWI. p. 438) २. ११७; १५. ८०; २४. ४८.

काठहि—काष्ठ को १५. ६३.

काठहु—काष्ठादपि—काष्ठ से भी १३. ४६.

काठी—काष्ठ १५. ३७.

काढइ—कर्षति—काढता है—निकालता है; कृष्—कड्ढ (P. 52; तु० उखारै—*उकाढै, प्रा० उक्कड्ढइ—उत्कर्षति); तु० म० काढयें गु० काढवुं; सि० काढणु; पं० कड्ढणा; का० कढुन; बं० काढिते; उ० काढिबा; श्रा० कश्; पै० षल्; IG. Qors-कर्षति; अवे० कर्शइत्ति (देखो VWI. P. 422) छि० काश (श्रू; √अवे०; कश—खूड) काशगू खींचने वाला बैल; करने (—वाला, खींचने वाली; JM, इसकी व्युत्पत्ति *कनिश्ताकी—सं० कनिष्ठिका से मानते हैं; देखो p. 268) १५. १८; १६. ४३.

काढहु—निकालते हो २२. ८.

काढा—काढइ का भू० (तु० कढइ—कथति) १५. २७; २५. १०१.

काढि—निकाल कर ३. १८; १०. ६६, १०८; १५. ४८; २१. ६, १६, ३८; २४. ५१, ६८, ७७, १४८; २५. ४६.

काढी—निकाली ३. १०; ७. ३; १०. ६८.

काढे—निकाले २. ११२.

काढेउ—काढा—निकाला १४. २४.

कान—कर्ण—कण्ण; सि० कनु; पं० कन्न; का० कन; सिं० कण [√कृ; *Qer VWI. p. 412] ८. ४०.

कानन्ह—कानों में २. १०६.

कान्ह—कृष्ण—कन्ह; म० कान्हू, कान्होवा; सि० कानु; पं० कान्ह; सिं० किण्ण; का० क्रेहोन [ष्ण—ण्ह P. 312-313 ऋ—अ P. 57; *Quers—अन्धकार तु० कृष्ण; प्रा० फा० किर्सनन; Lett. Kirsna-नदीदेवता विशेष; तु० करट, कुरंग आदि VWI. p. 425] २२. ७४; २५. ५१.

काम—इच्छा—अनङ्ग √Qā—चाहना, तु० काति, कात, काम; Lat. *carus*-प्रेम; Goth. hors—गणिका; तु० √कन्, √चर्, (चारु); चन् (चनिष्ट, चनस्)

अवे, शुकन (VWI. P. 325) ४. ३४; ११. ४६.

कामकंदला–वेश्या का नाम २१. १४.

कामदल–काम की सेना ११. ३४.

कामर्वध–कामबन्धक १८. ४६.

कामिनि–कामिनी (√कमु; कन्या; √Ken–तु० कनीन, कना, कन्या; अवे० कइन्या, कइनी, कइनीन) १८. ४६.

कायर–*कायर–काहल–कातर, काअर (म०), कायर (अ० मा०), कादर (शौ०), कादल (मा०); तु० थर-थराता है–कांपता है [P. 207; *Qen – पिघलना; कन्द, कन्दुक, तथा कदर; कदु, कदम्ब, कादम्ब की व्युत्पत्ति *Qed से है; कजल तथा खदिक का इनके साथ संबन्ध नहीं है; VWI. P. 390, 285] १५. १.

काया–शरीर १. १५१, ८. १५; ६. ३६; ११. ४६; १२. १५, ३३, ४५, ७१; १३. ४७, १६. २, १६. ४६, ७०; २१. ४३; २२. ६५; २३. ६४; २४. ७, ५२, ७३.

कारन–कारण–सं०–करण [कण–अन्त (?)qel-; इन–था, देखो Persson, KZ. 33, 288] ११. ५५; १३. ३६; १६. ५१; २०. ६५, १०४; २२. ३४; २३. ११२; २४. ४६; २५. ३४, १२८.

कारे–कालक–कालय; काला; म० काळा; गु० काळो; उ० कळा; सिं० कळ, २. १६३; १०. ५, १३०, १३४.

काल–समय–मृत्यु; ग्रि० काल–समय, उड़ना, (√कल संख्याने गतौ च, तु० Lat. *celler*–तेज) ३. ६६, ८०; ५. ३७; १०. २६, ४०, ८६; ११. २३, २५; २०. ८४; २४. ६७, ६८, ७१, ७७, १३६, १४३, १५१, १५२.

कालंद्री–कालिन्दी–यमुना २२. ७४.

कालि – कालियनाग – कालिक – कालिग (यलीप P. 150) २५. ५६.

कालिंदरि–कालिन्दी (कलिन्द की कन्या; कालिन्द्री–कलन्दर के आधार पर) १०. १२६.

काली–कल्य–कल्ल–कल; म० काल; गु० काल; पं० उ० कालि (कालिह अज०) पं० कलह; का० कोलि; सिं० कल० (*कल–सुन्दर, पूर्ण; तु० कल्य, कल्याण, कल, कलित आदि। ग्रीक शब्दों के साथ तु० के लिये देखो VWI. P. 356) ४. ११; २०. १२३.

कालू–काल–[ग्रि० काल–प्राणियों का विनाशक] १२. १२.

काल्हि–कल्य–कल्ल–कल–(कल्हि) बीता हुआ दिन (किन्तु भाषा में इसका

अतीत और आगामी दोनों में प्रयोग होता है) १२. ८२; १६. ५६; २०. १२६, १३६.

काविँनि–कामिनी–कामिणी-वेश्या १०. १४३.

काह–क्या–४. १६; १५. ६३; १६. ३३; १७. १०; २२. २८, २६; २३. ४५, १०४; २४. ३०; २५. ७६.

काहा–क्या १. १२१; २. ४६; १७. १२; २१. २०; २२. २६; २३. ५०.

काहि–कहीं भी १. ८; किसी को ७. ७२; किसके ११. १५; २१. ४५.

काहु–किसी १. ३६, ५२, १११; २. ११६; १८. ४०; २०. ४७; २१. ३४; २३. ५०; २५. ४०.

काहुहि–किसी को (के लिये) १. ४६.

काहुही–किसी से भी १. ११२; किसी को २५. ७२.

काहू–किसी १. ५३, ७३, १२६; २. १०४; ४. ५६; ७. ३, ५६; ८. १२; १०. ६१, १२०, १३७; ११. २७; १५. ५०, ६४; २०. ४१, ४७, ४८, ६२; २१. ४१; २४. ८३, १०३; २५. ४.

काहे–क्यों ५. ४३; ७. ६; ६. ५२; २१. ३१; २५. ७७.

कि–कि २. १६४; ३. ६२, ७८; ७. २०; ८. ७; ६. २२; १२. १३; १८. १८; की (षष्ठी) ३. ६१; १६. ३१, ४४; २०. ५४; २१. ५३; २४. १०६; २५. ५१;–का २५. ११६;–अथवा किंवा १६. ३६; २१. ३६; २२. १८, ३६; २३. १०३, १०४; २४. ४४.

किआ–किया ३. २०; १०. १०; १५. ३८.

किआह–कियाह–जिस घोड़े का रंग पके ताड जैसा हो ("पक्वतालनिभो वाजी कियाहः परिकीर्तितः" जयादित्यकृत अश्ववैद्यक) २. १७०.

किए–किये हुए २. १६७; १५. ३०.

किंगरि – खिंगरि – खींगरी (P. 206); (किन्नकरी–किन्नकिन्न् करने वाली; एक प्रकार की चिकारी जो योगी लोग हाथ में रखते हैं) १२. १; १३. ७; २०. १०३; २४. ३७.

किछु–कुछ १. ५६, ६०, ६१, १७६; २. ११६, १५२; ५. २७, ५६; ७. ३, ५; ६. ४०; ११. ४८; १२. ८२; १३. ४८, ५०, ५६; १५. ६१; १७. १६; १८. १५; २०. १२७, १३३; २२. ३२; २३. १६, १७१; २४. ८, १६०; २५. ४५, १४६.

किछू–कुछ; १०. १६०; १३. ४२.

कित–कुत्र–कुत्त–कित–कहां, क्यों [तु० किह–किध, किधर (हिन्दी)–कथा P. 103 केधु–कथा; P. 104 के

अनुसार द्वित्व विधान] २. १०३; ३. ६३, ७६; ४. १३, १४, २०, २१, २२. २३, २४, ३६, ४६, ५१; ५. १६, ३२, ३५, ३६, ४०, ५०, ५१, ५६; ७. ३४, ३८; ६. ४८; १०. १४१; ११. ३६; १५. ३५; १६. ५, ६, ६१; २१. ११, ३५, ४६; २२. ५०, ५१; २३. २४, ४७; २४. २८, १०१, १३८; २५. ३८, ७८, ८१.

किनु—केन्यु (किध—किद्द) कथा (द्वित्व P. 194); गु० म० कुठेम; बं० कोया; सि० कथी (किथी—कत्थ; JB 76, 110); १. १७६.

किन—किसु न—क्यों न २३. ४३; २५. ८१.

किमि—कैसे ३. ७३.

किरन—किरण १०. १२.

किरिन—किरण; म० किराण; गु० किरना, कीर्णा; सि० किरिणि; पं० किरन, (√कृ १५. ७५; १६. ४.

किरिनि—किरण ३. १०, २१; ६. ३७.

किरिपा—कृपा; [म० कीवँ—कृपयाप्रार्थना; सि० कीह; JB.152; गु० कृपया, किवया; म० किवण] १७. ८; २४. १४४.

किरिसुन—कृष्ण [कसिया, (कृस्नमी), कमण, कण्ह, किण्ह P. 52, 133] १०. १३३; २४. ८; २५. ५६.

किरीरा—किरीडा—क्रीडा (स्वरभक्ति P. 133-135) किड्डा (P. 184), गु० खेड्डा—क्रीडा; (हि० खेल; पं० खेड; खिड्, खेल्) P. 122) १५. ७८.

किलकिल—किलकिला—जिस में किलकिल ऐसा शब्द प्रतीत हो १५. ४२.

किलकिला—जिसकी लहरों में किलकिल शब्द होता हो; (सातवां समुद, जिसका कवि ने रत्नसेन की यात्रा में वर्णन किया है) ६. २१; १३. २४; १५. ४१, ५१.

किसिमिसि—किसमिस २. ७६.

किसुन—कृष्ण १०. २७; ११. २६.

की—किम् (हि० की—कौन) ४. १६; ५. १६; ८. ४७;—की षष्ठी विभक्ति १५. ३५; २१. ४०.

कीचु—चिद्रिद—कीचड़, कीच, (√चीक् में वर्णव्यत्यय, यथा √बुड—बूड—डुम्म—डूब) चीक, चीकर २. १४६.

कीजइ—कीजिये ८. ६२.

कीजिअ—करिये—कीजिये ११. २७, ५३; १३. १२; १५. ५५; १६. ३७, ३६; २४. २६; २५. १२८.

कीजिए—कीजिये ५. ५६.

कीट—कीड़ा २५. ६३.

कीन्ह—किया १. १, ८, १६, ४०, ४७, ५३, ५६, ७८, ८६, ११५, १४६,

१६२, १६५, १७७, १८७; २. ५५; ३. ७१; ५. ४८; ६. ८; ७. ८, १२, ६६, ७०; ८. ११, ५६; ९. ७; १०. ११५; ११. १४; १२. ३; १३. ३०, ५६; १४. १७; १५. ३७, ७३; १७. २; १८. १३; १९. १२, २३, ४८, ६७; २०. ८, ७३, ७५, ७९, ९८, ११३; २१. २५, ४३, ४६; २३. ३, ६१, ८२, ९६, ११२, १३४, १५६, १५८; २४. ६४, ८४; २५. २८, ३६, १२९, १४४.

कीन्हा–किया १. ८७, १०१, १२९, १३५; ७. ३१; ८. ३, ६६; १०. ३०, १००; ११. २०; १३. २७; १८. ३८; १९. ६७; २०. ५, १२४; २३. ३९, ६०, १५९; २५. ३०.

कीन्ही–की १०. १३२; २२. ४४; २३. ४.

कीन्हे–किये (आदर किये; अब ऐसा प्रयोग नहीं होता) ५. ३; किये हुए २०. २५; करने से २२. ६६.

कीन्हेसि–किया १. २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १५, १७, ३२, ५६, ८१; ५. १८; २५. १३१.

कीर–तोता ३. ४५; १०. ५६; २३. १५२.

कीरति–कीर्ति-कित्ति-यश (√कॄ विक्षेपे) १. १३२; २. १५९.

कुअँर–कुमार (√क्मृ मरणे, कमु कान्तौ, अथवा √कुमार क्रीडायाम् से; आ–अ P. 81) तु० म० कुँवर; गु० कुँवर, कुँवेर; सि० कुम्यारो; पं० कुँवर; हि० कुअँर, कुँवर (कुँवारा-अविवाहित); सिं० कुमरुवा (JB 42, 152) २. १५७; १२. ६६; १४. ६; १९. २९; २०. ९३; २२. १७, १९, २०; २३. ४२, १३३, १३४; २४. १०; २५. १६८.

कुअँहिं–कुओं में; कूप (कु+अप, यथा द्वीप) कूअ–कुआ, कुआँ; म० कुवा; गु० कुवो; सि० खुहु; का० खुह; पं० खूह, खुह; बं० उ० कूआ (JB. 64, 92, 152) [*Qou-p- कूप, कूपिका; तु० प्रा० फा० कौफ; अवे० कओफ; आ० फा० कोह; VWI, p. 372] २. ८०.

कुआँ–कूआँ कूवाँ, कूवा (H. 67) (तु० Lat. cūpa-'vat' Eng. coop 'vat' इसी से cooper) १४. ९.

कुँकुँह–कुङ्कुम; म० कुंकूम; गु० ककुम, कंकु; सि० कुंगू; पं० कुंग्गू; का० कोंग; सिं० कोकुं; १०. १२१.

कुँकुँहि–कुङ्कुम २. ९८.

कुच—स्तन [सङ्कुचित मांसपिण्ड; तु० कुचति, कुञ्चते, कुञ्चिका, कोचयति, उत्कोच–उपदा आदि; *Qou-q-, VWI. p. 371] २. ११०; ३. ४६; ४. ३१; १०. ११३.

कुचन्ह—स्तन का बहुवचन १२. ४३.

कुँजल—कुञ्जर—हाथी १८. १६.

कुटिल—कुटिल—टेढे, [कुटि कौटिल्ये; आर्वटय की व्युत्पत्ति आकुंचन से नहीं किन्तु आकुपटय से है P. 232] १०. ५.

कुटुँब—कुटुम्ब—कुटम; पं० कुटम्ब अथवा कुडुम (तु० कुडुम); सिं० कुटिंसु; कुटंसु; ६. ४१; ११. ८; १२. ६८.

कुठाउँ—मर्मस्थान १०. २४.

कुँड—कुण्ड २. ४२, १४६; २३. १००.

कुँडर—कुण्ड १०. १२७, १४५.

कुँडल—कुण्डल; सिं० कुंडलु, कुनिरु; सिं० कोंडो; (कुडि रक्षणे) १०. ८६.

कुँद—(घवेंद्दलि) कुन्द चमेली ("कुंदे माध्यः सदापुष्पो मकरन्दो मनोहरः") २. ८२, ४. ३.

कुँदेरइ—कुँदेरे से (लकड़ी के रंगबिरंगे कुंदे, जिन से खराद कर लट्टू आदि सिलौने बनाये जाते हैं) १०. १०५.

कुँदन—सर्वोत्तम सुवर्ण १०. ११४.

कुपंथ—अनुचित मार्ग ८. ४५.

कुबानी—खोटी वनिआई-कुत्सित वाणिज्य म० वाणी (JB. 46, 48, 61) ७.१२.

कुबेरू—कुबेर-धन का देवता; [*Qubelros-कबेर, तु० काबेरक W. KZ. 41, 314] २५. ६२.

कुबोल—कुत्सित वाणी २०. ८८.

कुमाखी—खोटी भाषा वाला ८. २३.

कुंभकरन—कुम्भकर्ण [कुम्भ; अवे० खुंब; प्रा० फा० खुंब, खुम; Qum-bh-Qum-b-Qeu-b VWI. p. 375] २५. ६४.

कुमुद—कुसुम; म० कोयकमल, कुमुद-कमल; सिं० कुणी; हि० कोईं, कोंई, २. ६६; ४. ६३; १६. १६.

कुमोद—कुमुदिनी—कुमुदवती—कोईं ४. ८; २०. १२; २४. ७३.

कुम्हिलाई—कुम्लान—कुम्लाय; कु+म्ला—कुम्हला; [तु० अंबलु—आम्लाव; अम्ल—अंबिल; कम्र—कंवल; देखो "कंम्वलः कमनीयो भवति" निरु०; तंब, आयंब, आयंब—आताम्र; तंब-सिह—ताम्रशिख इत्यादि P. 137, 295] २४. ६२.

कुम्हिलाना—कुम्हिलाइ, का भू०. २४. १२४.

कुरआर—कुलगृह—कुलघर ५. ४२.

कुरकुटा—कुर्कुट-कण (तु० कुक्कर—कुक्कुर कुत्ता (तथा कर्कर—कर्कश; VWI. p. 354) १२. ३१, ४४.

कुरंग—कुलंग—लाखौरी—जिसका रंग लाल जैसा हो, इसे "लीला कुमैत" कहते हैं (Quers- 428; घोड़ा) २. १०१.

कुरंगि—कुरङ्गी—हरिणी ३. ४४.

कुरंगिनि—हरिणी १०. १४०;१८.१६;२४.

कुरमहि–कूर्मस्य–कछुएकी २४. १५.
कुररी–टिटिहरी–टिट्टिभ-कुरला १२. ७६.
कुरहिं–कुरकुराते हैं–कुरकुर करते हैं २. ३५.
कुरलहीं–क्रीडहिं–क्रीडा करते हैं २. ७०.
कुरि–कुलीय–कुल की-जाति की २०.१७.
कुरुम–कूर्म–कुम्म २. १२२, १३८; २५. ६१.
कुरेल–क्रीडा–किरीडा (P. 132-135); किरीला (P. 240), कुरीला (इ–उ P. 117), क्रुरेला (ई–ए P. 121) कुरेल; तु० म० कुलली; कुलोली–कल्लोल, केलि, खेल–क्रीडा २०. १५.
कुल–(√कृ) वंश; म० कूळ; गु० उ० कुळ; सि० कुलु; पं० कुल; ६. २; १८. ५६; १६. २०; २५. ८४, १६३.
कुलवंती–कुलवती-लज्जाशील–खानदानी १८. ५६.
कुली–कुल के २५. १०१.
कुलीना–कुलीन–प्रतिष्ठित २५. १६३.
कुँवरि–कुमारी २. २००.
कुसटि–कुष्ठी–कोढ वाला; [म० कोड; गु० कोहोड, कोड; सि० कोरिहो; ने० कोर; बं० कुढ; उ० कुढि JB. 80, 88, 92] २२. १.
कुसल–कुशल १४. १६, २१; १६. ५४.
कुसिटी–कुष्ठी–कोढि [P. 133; कोढ–*कोट्ठ–*कुट्ठ-कुष्ठ; कोढी-कोढ्ठि, कुढ्ठि; कोढिय–कुष्टिक P. 304] २२. ४५.
कुससाँथरी–कुशसंस्तरी [स्त-थ P. 307; तु० अवे० फ्रस्तरेत–प्रस्तृत] १३. २.
कुसुंभी–कुसुम्भ रंग का २. १६६.
कुसुम–कुसुम्भ–हि० म० कुसुंच; गु० कसुंभो; सि० खुहुंबो; पं० कुसुम्ब; कुसुम्भ; वि० कोसुम; १०. ६०; पुष्प २१. १८.
कुहुकहि–कुहकते हैं (मोर) २. ३६.
कुहूकुहू–कुहकुहाना (कुहूकुहू–कोयल का शब्द) २. ३७.
कूँज–कुञ्ज–झाड़ी–कोना १६. ६३; वन, अरण्यवन का हरिणविशेष; संभवतः कौञ्च १०. ६७.
कूँजी–कुञ्जिका, कूंजी; अथवा कुंजी; गु० कुंची; का० कुंकु; बं० कूजी; उ० कुंभी; सिं० केसि० १. १८०.
कूँद–कुन्द–("मुकुन्दः कुन्दकुन्दुरुः" अमरः) २०. ५१.
कूँदइ–कुंदा को (कुन्दा–काठ का सुडौल गोल टुकड़ा) १०. ६८.
कूँदे–कुंदन किये गये हैं १०. ११४.
कूआँ–कूप २. ४१.
कूईं–कोईं–कुमुदिनी ४. ३६.
कूचा–कूर्च–क्रौञ्च–कौंच–ताल के पक्षी, जो पंक्ति बांध कर उड़ते हैं (क्रौञ्च √कुन्च्, *Kr-, टेढा चलना, उड़ना; VWI, p. 414) [तु० कूँचा,

कूँचला–झाड़ू; म० कुँचा; गु० कुचो; इत्यादि] १२. ७६.

कूजा–एक पुष्प २. ८३; ४. ७; २०. ५२.

कूद–कुर्दन (कुर्द क्रीडायाम्)-कुद–कूदना; म० कुदणें, गु० कुदवुं; सि० कुडणु, पं० कुदणा; बं० कुदन; उ० कुदिबा; (JB, 44, 115, 123); ३. १७.

कूरा–कूट–कूड–ढेर (कूडा; ट–ड P. 198 ड–र P. 226) म० कूडा, कूड (–झूठ); गु० कुडुम; पं० कूड़ा; सिं० कुड; सि० कूड़; [JB. 92, 111 तथा 80, 161; कूट, *Qel, Bradke, Hirt, Uhlenbeck तथा Petersson आदि के मत के लिये देखो VWI, p. 433.] २०. ११८; २१. १७; २३. १४५.

कूरी–कुलीय–कुलके (संभवतः क्रूर–√क्रू+र–खूनी, [क्रू कच्चा; तु० Lat, *crū-dus*,–खूनी, *cruor*–खून, As *hrāw*–शव; Eng, *raw*; Germ. *roh*] १०. ८.

कूसर–कुशल–कुसल ४. ४७; १६. ६.

कूसल–कुशल १४. १६, १७, १६.

कै–षष्ठी विभक्ति १. ६२, १०४, १४४, १५०, १५६; २. ४२, ६५, १४०, १५७, १६५, १६८, १६६, १७६, १७७, १५५; ३. २७, ३१, ५२, ५६; ५. ४३; ७. ३४, ६०; ८. ३८, ५३, ६४; ६. १८, २३, ३२; १०. ३८, ४५, ८१, १५०; ११. २३, ३६; १२. ३५, ५२, ७५, १०४; १३. ५, ६, १६, ३२, ३८; १५. १३, ३५, ३६; १७. २, ५, ११, १४; १६. १७, १६, ५५; २०. २४, ६६; २१. १६, ५२; २२. ३०, ३६, ३८; २३. ११, ४८, १३६; २४. १७, ७६, १०८, १३०, २३७, १३८; २५. ११, १०६, १११, १५४.

केइँ–केन–किसने २१. ५; किन लोगों ने २३. ४२.

केर–कस्य–किसके ३. २६; केन–किसने १०. २६, ८२; ११. २०; १२. ४१; २४. ८४.

कैंचुलि–कञ्चुलिका–सांप की ओढनी [Knek-, कंचते (√कच बन्धने), कञ्चुक, काञ्ची (दाम), किन्तु कंकण तथा किङ्किणी की व्युत्पत्ति इस धातु से नहीं किन्तु *कन् (–गाना, बजाना टनटनाना) से हुई है; VWI, P. 400] १०. १३१.

कैत–कति–कितने (तु० अवे० चइति; Lat, *quot* देखो संस्कृत तति Lat. *tot*) २. १११; केतकी पुष्प ४. ३; निकेत [√चित, तु० Goth, *haidus*, (प्रकार) AS, *hād* (प्रकार);–*hood*-*head*, यथा *maidenhood*, *god*-

-*head*, Germ.-*heit*; मौलिक अर्थ "दृश्य"] अथवा पुष्प ११. ५६; केतक-केतकी पुष्प २३. १३८.

केतकि-केतकी पुष्प-केअई २०. ५०.

केतकी-*(s)qnit; केतकीपुष्प; म० केकत, गु० केतक; हि०, पं० केतकी १०. ११५.

केतन-कितने ५. २३.

केति-कति-कितने (संभवतः केतकी) २. ६६; केतकी पुष्प २५. १७.

केथा-काँथरी-गुदड़ी १२. ५.

केर-के, षष्ठीविभक्ति (छि० केर-काम; ट० कीर; अवे० कइर्यं) १. १६०; २.१०४; ७. ३४; १२. ८६, ८७; १६. ३५; २२. १७, ६२; २४. २३; २५. ७, ११४, १२१, १२२, १२८.

केरा-[का-कृत-कअअ, कय, कट-म० केला; गु० कर्यो, कीधो, कीतो; पं० कीता, कीना; हि० किया; सि० केर्दो; सिं० कळ से व्युत्पन्न, षष्ठी विभक्ति] ५. ४२; ७. ६; ८. ६; १२. ५१; १३. १; १५. ६०; २०. ३८, (केला-कदली) ४७, ७४; २३. ८२, १६५; २४. १५८; २५. १८, ४३.

केरि-की १. ४८, १०२; ७. ७; ८. ४४; ६. ३६; १३. २६; १७. ५; २२. ६.

केरी-की ६. ३; १२. १७.

केरे-के १६. १८.

केला-(कदल) कदली-कअली, कयली; म० केल; गु० केल; सि० केल्हो; बं० कला; (JB. 39, 62, 92, 145) २. ७७; ३. ७२; ५. ४२; १०. १५४.

केलि-(√क्रीड़्) कामक्रीडा, क्रीडा २. ५४, ६१, ६६; ३. ७२; ४. ३१, ४१; १०. ५५; २४. १६०.

केली-केलि ३. ३५; ४. १०, ३४; ५. ३३; २४. ६०.

केवट-मल्लाह-कैवर्त्त-केवट्ट [तु० चक्क-वट्टी-चक्रवर्ती; नट्टग-नर्तक; वट्टय-वर्तक; P. 289; (केवट-छिद्र-*Kaiu-rt-अथवा ked+vṛ-जल-चर; अथवा 'के वर्तते' इति देखो Pali Dict. VWI. p. 327) W. Ai. 1. 169.] १४. ६.

केवरा-केवड़ा २. ८२; २०. ५०.

केवा-कमल २. ७१; २३. १५६; २५. १७३.

केवांछ- केवाँच-कपिकच्छ (कपि-कइ P. 181 कइ-के P. 61; केवच्छ-केवाछ-केवांछ, यथा आँख, काँख) एक लताफल, जिसके छू जाने से देह में खुजली उत्पन्न हो जाती है १८. २.

केवार-कपाट [अ-इ P. 101, इ-ए P. 119 प-व P. 199; ट-ड P. 198;

ड-र P. 241] हि॰ किवाड़, कुवाड़; पं॰ कवाड़; बं॰ उ॰ कबाट; सिं॰ कवुळुव २. १३६.

केवारा–किवाड़ १६. ४५; २३. ६.

केस–केश (श, स); बाल; म॰ केस, कॅंस; सि॰ केसु; पं॰ केस, के १. ७५; २. ६३; ४. २५, ३६; १०. ३, ५, ८.

केसर–[किस–बाल; केशर-केश+र, श-स; देखो W. Ar I. 232, VWI. p 329; तु॰ Lat. *caesarses*–सिर के बाल Eng. hair]; पुष्प की पंखड़ी ४. ६; १०. १२१, १८. १५.

केसरि–केशर २४. १००.

केसा–केश १०. २; २५. ६१.

केहर–केशरी–केहरी (स–ह P 262); म॰ कॅंसर, केसरी; गु॰ केसरी; पं॰ केहर, केहरी १८. ३७.

केहरि–केसरी-केशरी ३. ४७; १०. १३७, २४. ८६;

केहि–किस–कस्य २. ६४; ७. २८; १०. ४६, ६२, ६४; १२. ५१, ६५, ६६; १३. १६, ३३, ४८; १५. १३; २०. ७४, ६६; २१. १६; २३. ११, ४८, ५१, ११०; २५. ८, १२८.

केहु–किसी को–कस्य–किसी के ७. ५६, ५६; २३. २४.

केहु–कोई (केऽपि) कोऽपि (किसी को भी उचित प्रतीत होता है) २२. ५५.

कोंपि–कोप करके–संकोप्य ४. ३६.

को–कः–कौन २. १४६; ३. ३२, ७६; ५. २४; ७. १६; ८. १३, ३६, ५८; ६. २०; १०. २, ४४, ५५, ६४, ७१, १०४, ११८, १२७, १३५, १४७, १४८, १५७, १५६; १२. १४, ३४, ४२, ५१, ८६; १३. २४; १६. २४; १८. ८, ११, १६, २४; १६. ३०, ३६, ५६; २०. ८२, ८३, ८६, ८७, ११२, ११५, ११६, १२०; २१. ७, ४०, ६४; २२. ६, ४४, ७८; २३. २, ८, १५, २७, ६६, १०७, (क्या) ११०; २४. ४४, ५२, ८७, १५५; २५. ५७, ५८, ६३, ६६, ८७, १३०, १७१.

कोइ–कोऽपि–कोई १. १६, २३, २४, ३५, ५१, ५२, ६२, ११६, १२४, १३६; २. १६, ४४, ४५, ४६, ४७, १५६, १७६; ३. १६, ४८, ५६; ४. ३, ४, ५, ६, ७, ५६; ७. ७, ५६, ६०; ८. ७२; १०. ३१; ११. ३८; १२. ४६; १३. २१, ३६, ५६; १५. ६४, ६५, ७०, ७२; २०. ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ६८, ६६, ७२, ८८, ६६; २२. २४, ६६, ८०; २३. ५६, ८५; २४. ७३, ७४, ७५; २५.

P 291, कोहु P. 125, कोड] २. ११६; २०. ६३.

कोने–कोण (कूण संकोचने) म० कोण; हि० कोना (कोहनी, बाजू का अग्र-भाग) १०. ८०.

कोपा–(√कुप्-कुप्प-कोप) कोप किया (P. 79, 84, JB 80) १०. १५०; १६. ३४, २५. १०६.

कोपि–कोप करके [Qenēp-(Quēp, Quep, Qūp) गु० कुप्यति Lat *cupio*, कोप आदि VWI p. 379, कुप्यति–कुप्पइ; सिं० को-क्रोध] २४. ५, १६; २५. ५१.

कोपु–कूर्पर–कुप्पर, कोप्पर-कुंपल, कोंपल (म० कोपर, कोंपर) २१. २४

कोम्हार–कुम्भकार–कुंभआर, कुंभार–कम्हार-पं० कुम्हियार; सिं० कुंभरु, गु० कुंभार; पं० कुमार; सिं० कुंबुकरु (कुम्भ-कूप, Germ *kump*, *kum me*) १५. ४६.

कोरा–क्रोड–कोड–कोर–गोद १८. ४१.

कोराहर–कोलाहल; म० कोल्हाल २. ३६.

कोला–भीलों की एक जाति, जो मध्यप्रदेश नागपुर की ओर पाई जाती है, १२. १०१.

कोंवँल–कोमल, म० कोंवला; गु० कोमळ, कुम्लुम; मि० कोमलु; पं० कूला; का० कुमोलु; (JB. 140, 145) १०. ५, ५२.

कोस–[Kaus–ध्येयकी ओर बढना; गु० कुश्नाति VWI. p. 332; कोसना–क्रोशति; अवे० खृ्रसहृति-चिल्लाना, श्रा० फा० खुरोस-मुर्गा भिन्न हैं] क्रोश, पं० कोह; का० क्रुह तथा कोस–कोप-संदूक १२. ७२, ८८; १३. ३; १४. २.

कोहु–क्रोध; पा० कोध अवे० खुद्दा कठोर [Goth *hūs*, E. *house* कुक्षि-कुचिछ्र से संबद्ध] ८. ६२; २५. १०.

कोहु–क्रोध २३. १६, ४०, ४१.

कोहू–क्रोध १४. १०; २४. २५.

क्रोड–कोटि–करोड़ (व्यञ्जनागम के लिये तु० पन्द्रह, पन्दरह, प्रा० पण्णरह-पञ्चदश; सराप *स्रापु-शाप H. 135) १. २३; २. ११.

ख.

खँड़–खण्ड (पा० कंड; Eng. *candy*) १. १००, १०८; २. ५२, १६१; भुवन ६. ४०; माग (का० खुड-टुकड़ा) १६. ३८; महल २२. ६८.

खँडयानी–झारी–जिससे पुष्पलता आदि सींचे जाते हैं २. ८०.

खँभ—खंभे १६. ४६.

खजूरि—खर्जूर—खज्जूर—खजूर; गु० खजुर; सिं० कदुरु [√खर्ज्—Kor-g] २.३२.

खजूरी—खर्जूरी—खज्जूरी—खजूर १. १२; २०. ४५.

खंजन—खञ्जन (√खजि) ४. ३१; १६. ३६, ५५, १३६; १२. ७५; २४. ६०.

खंड—भाग, दिशा, मंजिल; भूमिखण्ड १. ६७; २. १६, १३६, १८६; ३. २७, ३४; ६. ३१; १०. १४०; १६. २८; २०. १३२; २४. १४३.

खंडहि—खण्ड में २४. ३४.

खंडा—भुवन १. ५; भाग २. १२५; टुकड़े २५. ११८.

खंडित—खण्डित—रहित, दूर, विभक्त, अलग ८. २७.

खजहजा—मेवे के वृक्ष २. ३०, ७६.

खन—क्षण—खण, प्रा० खण, छण (उत्सव); हि० खन, छन, छिन; सि० सण; [ईक्षण, एक नजर का काल—in the twinkling of an eye; Germ. Augenblick—क्षण] ११. ६; १२. ३१; १५. ६, २७; १६. ४५; २०. २, ६३, १०६; २३. १२०; २४. ७६, ७८, ६६, ६७, ११०; २५. १०८, ११३.

खनखन—क्षणक्षण (JB. 104, 134) ६. ४३; १०. ६४; ११. ४.

खनहिं—क्षण में १. ८८; ११. ५, ६; १६. ४५; २०. ६३; २४. ७६, ७८, ७६, ६६, ११०.

खनहि—खन—क्षणक्षण १२. ३१.

खनि—खोद कर; हि० खनना; म० खणें; गु० खण; का० खन; सिं० कनिनवा [Khonā—खन् (अथवा √Skan) Lat. *can-ālis*; Eng. *canal*; खन्-खनति, खात, ख (आकाश, खुदा हुआ, छिद्र) आखु (मूपक) अवे०, प्रा० फा० कन VWI. p. 399; सं० कण, Qel-na भिन्न है] १. ३०.

खपर—कर्पर—खप्पर-भीख मांगने का पात्र २५. ५६, ६६.

खप्पर—कर्पर-खोपड़ी (क-ख, यथा, खंधरा-कंधरा—खसिय—कासित; खिंखिणी—किङ्किणी इत्यादि P. 206; तु० Lat. *parma*—ढाल) १२. ७; २३. १६.

खंभा—स्कम्भ—खंभ—खंभा [√स्कम्भ्; तु० विक्खंभ-विष्कम्भ, P. 302-306; स्कभ्, स्तभ्, यथा क्षुभ्, स्तुभ्; स्थाणु की व्युत्पत्ति √स्था से और खाणु—खण्णु की स्थाणु से P. 309] तु० म० खांब; गु० खाम; पं०, बं०, उ० खंभा (JB. 68, 95, 127) २. ६३.

खंभ १. १६, १४६, १५०; २. १६०.

खर—तृण—घास [तु० म० खर ... गु०

खर-उद्दण्ड; सि० खरो; हि० खर्रा, घोड़े पर खर्रा करना; दे० "खरडियं रूई च" (JB. 46, 95, 163); गदहा (अवे० खर (अ); पह०, आ० फा० ख़र; बा० खुर; शि० हर; सरि० घर, सर; श्रोस्से० ख़रग] १. १११; १२. ७६.

खरग–खड्ग [Qold-go, Lat. clades; Frankfurter तथा Rhys, KZ. 27, 222 ff; VWI p. 438] १. १०१, १७२; २. १५८; १०. २४, ४६; १५. २६; २४. ३, २६, ३०.

खरफरा–चर्पट–चरफरा–श्रातुर-जल्दबाज २३. ४.

खरभरहीं–खरभराते हैं ५. ३४.

खरा–खड़ा–(उत्थित) २५. १२७.

खरि–खर–कठोर से लक्षण में सत्य; खरी सची; का० खर-सत्य अवे० ख़रो–(पं० खोता-गदहा) २५. ८८.

खरी–खड़ी २०. ७७.

खरिश्रइ–खरी ही–सची ही २५. ८८.

खरिहाना–खलिहाना–खलस्थान–खलिहान, सस्य जहाँ अन्न को काट कर गाड़ते हैं (खल-गाहा जाने वाला अन्न; भन्नाय-तोड़ना जैसे "क्यों खलबलाय मचाया है") १२. ५६.

खसि–खस कर–गिर कर (का० खस–चढ़ना) १६. ४०.

खाँगउँ–भग्न होऊँ–खाङ्गइ–खञ्जति (√खजि गतिवैकल्ये) १४. ३१.

खाँगा–खङ्ग–खाङ्ग–शून्य–घाटा (किस वस्तु का घाटा है) ११. १५; (खाली न जायगी–त्रुटि न होगी) १३. १७, घाटा (नहीं आता, सुमेरु के समान दान देता है) २५. ८६.

खाँचइ–खींचई–खींचता है; कर्षति-खसइ (क–ख P. 206; स–श P. 327; श–ष) १३. ३२.

खांड–खण्ड–शकर २. २७, ८०.

खाँड़इ–खण्डे–(खड्गे) तलवार (चलाने) में, म०, गु०, पं०, हि० खाँडा; सि० खनो; का० खडक; सिं० कडुव; (ध्यान दो अनुनासिक्य पर; JB. 95,) १. ६६, १७१; खङ्ग की १०. १३; १५. ५२, ५४.

खाँभ–खंभे (√स्कम्भ्–स्तम्भ्) १०. १५४.

खाइ–खावे–खाय–खाइ–खादति; फा० खायीदन् २. १५१; खाकर ५. ३६; ७. १३; (खाता है) १०. १४४; ११. ५०; खावे १३. ३६; खाता है १५. ८०; खाइगा–खा गया २५. २४.

खाई–खादति–खाई: (P. 165), पा० खादति; नै० खइवों; का० ख्युन; उ० खाना; बं० खाइते; सि० खाइणु; गु० खावुँ; म० खायें; सिं० कनवा;

जि० छ; [Qhad-कतरना; खादन; आ० फा० ख़ायीदन (Hübschmann; ZDMG 38, 423); Arm. *xacanem*-काटना; VWI. p. 341, 393; Lit. *kandu* काटना] १. २७, ३७; २. १२४; ८. ५७; ६. ४६.

खाऊ–खाउ–खाइ, खावे (हि० म० खाऊ–खादक; निन्दा में) १३. ३८.

खाए–खाये–खाया ५. २०; खाने से ११. २७; (डर) गये १५. ४१.

खाटे–खट्टे २. ७६.

खात–खाते हुए (खादन्ती) २०. २३.

खातेउ–खा जाता तो–खाता तो १८.१७.

खाधू–खाद्य (द–ध P. 209) खज्ज–खाजा; म० खाद, खादिला–भुक्त; गु० खाध–भोजनसामग्री, खादा; सि० खाधो; दे० "खद्धं तथा खरिअं भुक्तम्" [JB. 88, 95, 169, 229; तु० हि० खादू अथवा खादड़ बैल–अधिक खाने वाला; निन्दा में] ५. ५२; ७. ३८; १८. ३७.

खान–खानि (√खन्) २५. २४.

खाना–खादन १. ३८; ५. ४२.

खार–क्षार; खार और छार; म० खार; सि० खारि; गु० छार; सि० छारु; [क्षार, क्षीर, दधि, जलोदधि, सुरा, किलकिला और अकूत इन सात समुद्रों में से एक; Ksā–दहन, तु० क्षायति, णिजन्त क्षापयति; क्षाम; Arm. *Samak*-शुष्क, देखो Hübshmann, Arm. Gr. I. 499] १. १४०; १३. २४; १५. ८.

खारा–क्षार १. १६५.

खाव–खाइयेगा १२. ३१.

खावा–खाया ३. ६५; ५. २६; खाता है ७. ३५.

खाहिँ–खाते हैं १३. ४६. १५. ६६.

खाहीँ–खाते हैं १५. ६.

खिखिंद–किष्किन्धा–किखिन्धा (ष्क–क्ख P. 302) (कुखण्ड ?) १. ६, १४८.

खिजिर–ख्वाज–नाम १. १५७.

खिताव–पदवी १. ६१.

खिरउरा–खैर के बड़े बड़े गोले (देखो खिरउरी) १०. ८२.

खिरउरी–खिरौरी–(मसालेदार खैर की गोली, जिससे पान में विशेष प्रकार का स्वाद आ जाता है, जैसे मूंग से मंगौरी उसी प्रकार खैर से खिरौरी; तु० खिरहिरी–एक पौधाविशेष) २. ११४.

खिरनी–क्षीरिणी–खीरिणी-खिरनी; जिसके फल में दूध हो २. २७.

खीन–क्षीण, प्रा० झीण, खीण, छीण; पा० खीन, खिन्न; आ० जीन (नाश); हि० झीन, छीन; सि० झीनो; जि० खिनो (क्ष–ख P. 318) का० खय–

जर लगाना ३. १२, ८. ६४; पतली १०. ४६, ११२; २४. ११७.

खीनी—क्षीण १०. ११८.

खीर—क्षीर—खीर; म० खीर; सि० खीरो; का० खिर, छिर; सिं० किर, किरि, JB. 95; (√घर); अवे० ख्शीर, पह०, आ० फा० शीर; शीरी० ओस्से० अख्शीर; ट० आखसिर; शि० शिरिन, ख० शीर, (Ksiro दूध) १. ११८, खीर नाम की नदी—जिस का पानी दूध सा हो) २. १४४; १०. १२२, खार नाम का समुद्र (देखो खार) १३. २४; २५. ८.

खीरसमुद—दूध का समुद्र १५. ६, १६.

खीरी—खिरनी २०. ४३.

खीरू—खीर—दूध १५. ६, ११.

खीदा—खी खी शब्द करता है २. ३६.

खुंभी—(√क्षुभ्-Ksoubh) खुंभिया-खांप-कर्णफूल; [तु० कुम्भ (कुब्ज) म० खुमा; गु० कुब्‍डुं; सि० खविड़ो पं० खब्बा; मि० खमु; पं०, बं० खब्ब; हिं० खोब्भा जो पैर में खुभ जाय, वैदिक क्षुप-झाड़ी JB. 85, 89] २. १०६; १०. ६३.

खुटक—खोटक (√खोद्—खोड—खोर्) ए—उ; ओ—उ, ट—ड, ट—र् खोड (JB 94, 95) ५. ४८.

खुटकि—खुटक—कर ३. ८०.

खूंदी—खूँदी जाय (√क्षुद्—*Ksend पैरों से कुचलना, खूँदना—मुक्कियों से तोना तु० खोदति, खोद, क्षुद्र) २२. ६३.

खूंट—(खोंटग—खोंटय) कान का एक खूंटीदार गहना, जिसे पूरब में बिरिया कहते हैं) १०. ६२.

खूरी—खुर विन्यास (√क्षुर,—क्षुर; खुड़-पद्धति) २५. १६७.

खेइ—(√खेट् सेवायाम्) खे कर १५. ३.

खेई—खे कर २१. २६.

खेऊ—खेवो २४. १२३.

खेत—क्षेत्र (रणक्षेत्र) प्रा० छेत्त; पा० खेत्त; वा खीती; [क्षि√ क्षयति-बैठना, अधिकार करना, तु० Lat *sedere* (बैठना) pos-sedere (स्वामी बनना) Germ, *sitzen* (बैठना), be sitzen अधिकार करना] १. १७२.

खेम—क्षेम—कुशल—[√क्षि घर, शान्ति, कुशल—*स्केम, तु० Goth. *haims* ग्राम; As. *hām*; Eng *home* तथा -ham स्थानों के नामों में] १४. ११.

खेल—[√खेल; √क्रीड; P. 79, 81; Gacobi, KZ. XXV. 29, JB. 80] म० खेल, खेलणम् गु० खेलो; सिं० केलि, किट (√क्रिड्); प्रा० कीडा, खेड्डा; अप० खेल्ल, खेल्लइ; JB. 81] खेलो—विहार करो ४. ८४;

खेलती है ५. १; खेल (लेओ) २०. ३७, ४०; क्रीडा २०. ४८; २१. २; खेल लीला २३. १०१.

खेलइ–खेलता है (खेलेगा) ४. ४६; खेल के लिये ४. ५१; खेलता है १२. ६६.

खेलउँ–खेलूं २१. ४५.

खेलत–खेलते हुए ४. ६, ४३; २०. ३२, ६५.

खेलनहारी–खेलने वाली (नवयौवना-स्त्री) २१. २.

खेलना–क्रीडा करना २०. ४०.

खेलब–खेलेगी ४. १४.

खेलहिं–खेलते हैं २. १५७; ४. ४७; २३. १८०.

खेलहि–खेल के २३. १२५.

खेलहु–खेलना हो ४. १२; खेलो–खेलना ४. ४५; २३. १०; खेलती हो २३. ६७; २५. ११४.

खेला–खेल किया था–अपने कृत्यों से छुका दिया था १. १५६; वीरता से निभाया ६. ५०; जाना चाहते हो–विहार करना चाहते हो १३. ११; १८. ३०; चला गया १६. १३; अभ्यास किया २०. ६१, १०२; जान पर खेल गये–उद्योग करके मर गये २३. १३०; खेल किया २४. १६; योगी का स्वाँग भरा २४. ३६, ४६; काम किया २४. १४२.

खेलार–खिलाड़ी २. १११.

खेलि–खेल–खेला–क्रीडा २. १५८; खेल (लो) ४. १२, ४३, ४५; खेलकर २४. ४६, ४७, ४६; खेलकर १२. १६; २०. ३६; २१. ४४; २३. १६, ६८; २४. ३२.

खेली–खेल २३. ४७.

खेले–१२. ६१; २३. ७.

खेवइ–(पारहु–खे सकते हो) १४. १८.

खेवक–खेने वाला–केवट (का० खेव–खेना; देखो केवट) १. १५२, १५३; १५. ७१; २४. १२३.

खेवरा–सेवराओं का अवान्तर भेद। ये लोग हाथ में खप्पर रखते हैं; मद्य को सब के सामने दूध बनाकर पी जाते हैं (जैसे गोरखनाथी); हथेली से गेहूं आदि निकालते हैं। [म० में खेवड़ा (क्षेप) भद्दे, अनाकृति, अनियमित को कहते हैं] २. ४८. खौरा हुआ–लगाया हुआ (खेवृ सेवने) २१. ८.

खेवहु–खेवो १४. १८.

खेवा–खेया हुआ १. १५३; खेव्य–खेवने के योग्य–जहाज १५. ७१.

खेह–मिट्टी–धूल ["खे आकाशे ईहा–इच्छा यस्य" सुधा०] १. ७६ ११०; २०. ३६; २३. ३८; २४. १४

खेहा–धूलि, पृथ्वी १. ३; १२. ३, २७.

खोँचा–खोँचने का बाँस [√कुञ्च, क्रुञ्च; Lat. *crux*; Ohg. *hrukki*] ५. १२, ४५.

खोअइ–खोवे (खोदति–खोयइ खोइ; दलोप P. 165 से) ८. ७२.

खोआ–खो गया, खो दिया ४. ५५; ११. १८; २२. ५२; २५. ४२.

खोइ–खोकर ७. ३२; २३. १४६.

खोई–खोकर १३. ५६; १६. २७, २२. ७७; खो दी २५. ११.

खोज–ढूँढ ८. ३१, ३३, ७१; खोज में २५. ११, १२०.

खोजहु–खोजो ५. १६.

खोजा–खोजइ का भू० २२. ४६; २५. १४८.

खोजि–खोजकर १४. २४; खोज (लिया) २३. १७५.

खोजू–खोज १०. १४७; २४. ५८; २५. ७.

खोपड़ी–खर्पर–खप्पर–खोपड़ी [म० खोपट–खोपटी (स्त्री)] २५. ६४.

खोपा–जूड़ा (केशों का) ९. २५.

खोलहिं–खोलते हैं; म० खुलणें; गु०, हि०, का०, खोल–; सि० खुल्ल–, खोलु; प० खुल्ह २३. १८३.

खोला–खोलइ का भू० २४. ७८; २५. १४०, १४५.

खोलि–खोला (नहीं जाता); तु० सं० खोल–बंबी, दीमकों का घर; Arm. Xoyl-*scorfula*; Russ, *šuljata*. (भयदकोष); *Qeu; VWI. p. 371.] २४. ६२.

खोली–खोलइ, भू० प्र० पु० स्त्री० १. १८०; २४. ६६.

खोले–खोलइ, भू० १५. ७६.

खोलेसि–खोलती है २४. ८८.

खोह–खन्दक (संभवतः √क्षुध् से; क्षोध–खोह, जो अन्दर लेने के लिये भूखी हो, खाली) २. १२३; १२. ८५.

ख्वाज–(खिजिर) नाम १. १४७.

ख्वाजे–मुसलमानों की जातिविशेष (खोजे) १. १५८.

ग.

गँठि–ग्रन्थि–गाँठ; तु० म० गांठणें–गांठना; सि० गंध–; पं० गंढ–; का० गंड्–; बं० गांत–; सिं० गट–, २. ११२, १२०.

गँठिछोरा–घाईं–गठरी मारने वाले २. १२०.

गँधरब–गन्धर्व–पा० गन्धब्ब २. ८३; ४. ८; २५. १३०.

गँधरबराज–गन्धर्वराज–गन्धर्वसेन राजा २५. ८१.

गज़—गय—हाथी २. १४; ३. ४७, १४. १; १८. २६; २५. ११५.

गज़गवँन—गजगमन—हाथी जैसी चाल १०. १५३; २०. १६.

गजगावि`नी—गजगामिनी २४. ८५.

गजपति—हाथियों का स्वामी, समुद्र तट का अधिपति कलिङ्ग देश का राजा २. १५३; १३. १७, २५.

गजपती—हाथी पर चढने वालों में श्रेष्ठ—कलिङ्ग का राजा (यहां हाथी अधिक थे, संप्रति भी इंजा नगर के राजा के साथ 'गजपति' उपाधि लगती है) २. १४; १३. १०, १३, ५७.

गजमो`ति—गजमुक्ता ७. ४३.

गज़र—गजल—गर्जर २. १४३.

गंजन—गञ्जन—मानध्वंस-अपमान ६.५१.

गडइ—गडे (गड़ती है) १२. ६१.

गडी—गड गई २४. १५७.

गढ—किला—(घट्, ग्रन्थ) १. ११२, १८६, १८८; २. ११, १२७, १२६, १५३, १४५, १५३; ६. १; ७. १; १२. ४८; १६. ११, १७; २२. ६४, ६५, ६७, ७०; २३. २, ४, ६, ७, १०, ३८, ४७, ४८, १७६, १७७, १७८; २४. ७२, १३३; २५. २७, ५८, १३१, १४४, १५८.

गढपति—जिनके अधिकार में गढ हों या हों २. १५३; १९. १४.

गढा—बनाया—[गढइ, *गढति—घटते (घडइ भी है० ४. ११२) यथा घेप्पइ, *घृप्यति—गृह्यते इत्यादि P. 212] १. १२७; १०. २६; ११. ४३.

गढि—गढ कर २. ५३, १३२, १३५.

गढी`—बनाईं` ८. १६.

गढी—बनाई ३. २६.

गढे—गढे (संयोग गढ़ा था) १. १७१; २. १३३.

गति—दशा [Lat. *(in) ventio*; Goth. *(ga) qumps*, अवे० गति, गइति] १. ७७; गत—गमन १०. ११०, १११; प्राप्ति १२. ३७.

गंध—गन्ध (√घ्रा) २. ५८.

गंधावति—गन्धावती-एक राजा की कन्या का नाम २३. १३४.

गंधिनि—गंधी की स्त्री २०. २८.

गंधी—गन्ध से भरा हुआ ६. ३६.

गन—(*ger) गण—नौकर चाकर ४. ८.

गनइ—गणयति—गिनता है, म० गणणें; गु० गणवुं; पं० गिणना; का० गाम्रर; सिं० गण् २. १३८; १४. ३; १६. ३०.

गणक—गणना—ज्योतिषी, जो किसी काम के लिये शुभ दिन बताते हैं १२.६.

गनि—गिन कर १२. ६; २४. ६५.

गने—गिने १०, ४५.

गनेस—गणेश—गणेस २३. १.

गंभीरा—गम्भीर—गभीर—गहरा १०. ६५.

गया–गत–गअ्रअ–गया; तु० म० गेला; गु० गओ; पं० गिआ; मै० गेल: बं० गेलो; का० गउव, गयोन; सिं० गिय २१. ४८.

गरइ–गलति–गलइ–गलता है २२. ५६.

गरजइ–गर्जनम्-गजण; तु० म० गाजणें; गर्जणें; गु० गाजवुं; पं० गजणा, गरजणा; का० गगराय; हि० गाज (–विद्युत्) १४. १४.

गरजहिँ–गर्जते हैं २. १६७.

गरंथ–ग्रन्थ [√ग्रन्थ–एकत्र करना, (साहित्यकी) रचना करना; अर्थ के लिये तु० Lat. *com-ponere*–एकत्र करना, रचना, *serere*–संबद्ध करना, *sermo*–व्याख्यान] तु० हि० गूँथना-म० (गूंदना आटा); गुंथणें, गुतणें; गु० गुंथवुं; सि० गुन्धणु; सिं०गोत-नवा तथा पं० गुत्थ; हिं० गूंथ–गूंद (–चोटी बांधना) १. ६६; ७. ४०.

गरव–गर्व–गव्व–अभिमान १. २०, ७६; ३. ३२; ५. ४१, ४७, ५४; ८. ३, १२, ५२, ५६, ६६; १२. २२; २०. ११६; २३. ३८; २४. ८५; २५. ३२, ६४, ६५, ७२, १२०, १२६.

गरवहि–गर्व से ६. ३१.

गरर–घोड़े की जाति–गर्रा, जिसके कुछ रोम सफेद हों और कुछ लाल २. १७१.

गरह–ग्रह–गह (√ग्रभ्) २५. १२४.

गरहीं–गलते हैं (√गल् तु० Germ. *quellen*–स्रोत; *quelle*–झरना) २२. ५५.

गरासउँ–ग्रसानि–ग्रसूँ १८. ५३.

गरासा–ग्रास–गास, गरासइ का भू० १. १०७; १०. २०; १६. ६.

गरिआरू–गलिया, चलते समय कन्धा डालने वाला बैल १५. ६६.

गरुअ–गुरुक–गुरुअ (छि० गिराव-भारी) १३. ३०; १५. ६७; १८. २१.

गरुर–गरुड–गरुल, विष्णु का वाहन २३. १५२; २५. १०४.

गरू–गुरु–भारी (तु० Lat. *gravis* **garu-i-s;* Goth. *kaurus*–भारी) १. १०३.

गरेरी–गले के ऐसी–घुमौआ [गल; अवे० गरह; पह० गरूक; आ० फा० गुलू; अफ० घाड़; कु० गुरु; Lat. *gula*; Ohg. *kēla*] २. ५२.

गलगल–बड़ा नींबू (*guer तु० छि० गर्ग–खाज) २. ७५.

गवँन–गमन–गमण–चाल २. ६०; ३. ४७; १२. ८.

गवँनइ–जाता है १२. ८०.

गवँनव–जायेंगी ४. १३; १२. ६६.

गवँनहु–गमन करो १६. ३२.

गवँनेहु–गये १६. ८.

गवँना–गमन करता है ७. ५६; जाना १४. ७.

गर्वाइ–गर्वा कर २. १०४; ४. ५१, ५५; ७. १०.

गवाँई–व्यतीत की, खोई ५. ४०; २०. १.

गवँना–गमन किया–खो गया ४. ४६.

गवँनी–चली जाती हैं–खो जाती हैं १३. ४२.

गवाँवा–नष्ट किया ४. ६०.

गवेंजा–बोल–बातचीत [व्युत्पत्ति अनिश्चित; संभवतः गरेंजा; गृ शब्दे से; गिर्–वाणी; तु० Lat. garris, बात; E. call; अथवा गलेंजा–गले में उत्पन्न होने वाली]–बातचीत, बतकही १४. ६.

गह–गहे–पकड़े; [छि० गीर–'पकड़' संज्ञावाचक] २०. ११५.

है ११. ६६; २३. ५६; २४. ८७,

गहन–ग्रहण–का० मोहन; [ग्रह्–ग्रभ्, तु० हि० गहना; म० घेयें, घेप्यों; (√ग्रभ्); सि० गिन्हणु; उ० घेन, सिं० गन्धवा; पं० गहा; प्रा० गेण्हइ, घेप्पइ, गेण्हाति–गृह्णाति JB 30, 31, 80, 99, 165, 231]; ग्रभ्, प्रा० पा० गर्भ; पह० ग्रस्फन; फा० गिरिफ्तार; छि० गुरि; पकड़ना; गुरीम–मैं पकड़ता हूँ ८. ४६; २४. ८०, ८१, ६६, १०१, १३७; २५. २६.

गहनहिं–ग्रहण में ५. १२.

गहने–गहना; (छि० धन–रुपयों का कब्जा) १०. १६; ग्रहणे–ग्रहण में २४. १२४.

गहबरा–घबरा गया (गह्वर–गब्बर–व्याकुल हो गया; तु० पा० गब्भर–गह्वर–गुहा) २२. ४६.

गहहु–पकड़ो–गृहाण १८. २६.

गहा–पकड़ा–गहइ [गृभ्णाति, गृह्णाति *gher- पकड़ना; तु० Lat. hortus, co-hors (गृह), Goth. gards (घर); Ohg. gart, E. yard; तथा garden; इसी धातु से व्युत्पन्न हैं गृह, पा० गह; गिहिन, गेह, घर, तथा हरति, और हस्त] १. १४१; ७. ७१; १०. २७, ६४; १२. ५; २१. १२; २४. १२४; २५. २६, २७.

गहि–पकड़ कर १. १४२, १६८; ४. ५०; १०. ३८, १००; १५. ६५; १८. २४; (पकड़) १८. २८; २१. ६४; २३. १३३, १३६, १४७; २५. ६३.

गही–पकड़ी ५. १२; ८. ४६; २०. ४१, ४७; २४. १३७.

गहीली–आग्रह करने वाली–ग्रहिल–ग्रहिला २४. ८५.

गहे–पकड़े १०. ११४, ११६, १४३;

ग्रहण किये हुए १३. ७, ३२; १८. १, ५;—था—लिये था २०. १०३.

गहेउ—ग्रहण की १२. १.

गाँठि—[वै० ग्रन्थि; *grem-एकत्र करना; तु० Lat. *gremium* सं० गण तथा ग्राम; R. P. Dict. के अनुसार ग्रन्थ की व्युत्पत्ति इसी से है, किन्तु इसके विरुद्ध देखो VWI.] गाँठ, (हे० ४. १२०; P. 333) पा० गण्ठि, गण्ठिका, गण्ड; पं गंड छि० गरे ७. ८; २३. १२३.

गाँठी—गांठ में २५. १३५.

गाँथइ—ग्रथ्नाति—गंठइ—गाँथती है १२. ७५.

गाँथे—गाँथइ का भू० १६. ५५; २०. ३०.

गाँधी—गन्धी, अतर बेचने वाला [गन्ध √घ्रा; घ्राण, पा० घान; संभवतः Lat. *fragro;* E. *fragrant* के साथ संबद्ध] २. ११४.

गया—[सं० गच्छति; *guem—का भविष्य में अभ्यस्त प्रयोग *guemsketi > **gascati* > सं० गच्छति; **guemis*- सं० गमति; Lat. *venio;* Goth. *qiman;* Ohg. *koman;* E. *come;* सं० गत; Lat. *ventus* इत्यादि] अगात्—गया २. १४४, १८६, १६१; ५. १७; ७. २७; ६. २६; ११. १; १२. ... १५. ४१, ५६, ७५; २०. १६, ८६, १०८, १२७; २१. ५, ४२; २३. ७३, ७७, ८१, १२४, १२६, १३२, १४८; २४. १६, १३३, १५४; २५. २४, ४१, १३१.

गाई—गायति—गावइ का भू० २०. ५७.

गाउँहि—ग्राम—गांव में; म० गाव; गु० गाम; सि० गांउ, गामु; पं० गिराम; का० गाम; ब० ग्रोम; सिं० गम (JB. 97, 137,) [*grem Slav. *gromada, gramada, gramoda,* (गृहसमूह) Lat, *grumalai* समूह; Ags. *cremmiam* (E. *cram*) किन्तु ग्रन्थ की व्युत्पत्ति इससे नहीं है] १२. ७०.

गाओहिं—गायन्ति—गाती हैं १०. १४३.

गाँग—गङ्गा १. १२०; १०. १४, १६.

गाजहिं—गर्जन्ति; [Lit. *girgzdeti*-to sqeak; Arm. *karkac*—कोलाहल इत्यादि] गर्जते हैं २. १३३.

गाजा—गाजे—गरजे २०. ११६; विद्युत २१. ४४; २५. १०२.

गाडा—गर्त—(*ger) गड्ड; उ० गडिबा; बं० गड़; हि० गढ़, गाढ़; मं० गड्डना; सि० गारणु; गु० गारवुं; म० गाडणें, (संभवतः सं० गाढ से व्युत्पन्न) ५. ४४.

गाडि—गाड़ी गई ३. १३; गाड़ कर १०. ८८

गाढ़-गाध-गहरा, कठिन ५. ११; १५. ६१; कष्ट २३. ८२, १५१; २४. २०; २५. २५

गाढ़ी-कठिन १५. २०; गहरी २४. १००

गाढ़े-संकट १. १४३; कठिन १०. ४७.

गाथा-गाहा-कथा [*gā (1) तु० गाति, गाथा; अवे० गाथा] १. १८६.

गारइ-गारता है [√गल् तु० Ohg. *quellen*-स्रोत निकलना; ध्यान दो गल, तथा जल की व्युत्पत्ति पर] म० गलयों; गु० गलवु, सि० गरणु, पं० गलणा; का० गलुन; सिं० गलनवा २३. ६६.

गारिहि-गालि (गईया) गहिका *गल्हिआ; (H. 142) गरिहइ (JB. P. 322) तु० म० गाल्यारा; पं० गाल; गाल्ह; मं० गारि; सि० गईणु (-सूचक); गाली (से) २५. १०.

गारुरी-सर्पविष उतारने वाले-गारुडिक गारुड-गारुल [गरुड-पा० गरुल; Lat. *volucer*-पक्षी; *volo*-उड़ना] ११. १०.

गाल-गल्ल-पं० गल्ह; सि० गलु; १०, ८६.

गावाँ-गाँव में १२. ७०.

गावा-गाया (हि० गाना, म० गायें; गु० गावुं, सि० गाइणु; पं० गाउणा; का० गेवुन; सं० गाउन) २४. २७.

गाह-[*gatha-, तु० गाह; गाहति; गाइ] गाध-थाह-नापा जाने योग्य १३. ३४.

गिऑ-ग्रीवा-गल [*gel *guel (BPD. *gel)-खाना, तु० Lat. *gula*; Ohg. *kela*-गला, Arm. *klanem*-ऐंठना; Russ. *glutus*- E. *gorge*.] २३. ७३.

गिअ-ग्रीवा-गीवा [*guer-हड़पना] २२. ५०; २४. ३८.

गिअफाँद-ग्रीवा का पाश-फन्दा २४. ३६.

गिअहिं-ग्रीवा में २३. १०६.

गिआन-ज्ञान ३. ६४; ८. २५.

गिआनू-ज्ञान-जाया-गियान-ग्यान १. ५७, १५४.

गिउ-ग्रीवा ५. ४८, ५१; ७. ३१, ५२; ६. ४७, ४८; १०. ६८, ६६, १०१; १३. ३६.

गिउअभरन-ग्रीवा के गहने १२. ६०.

गिएँ-ग्रीवा में १०. ७, ८.

गिद्ध-गृध्र [गृध्-पा० गिज्झ; Lat. *gradior*-चाहना Germ. *Gier*-लोभ *Geier*-गृध्र देखो VWI. P. 601.] प्रा० गिद्ध अथवा गिज्झ; हि० गीध; म० गीध, गीद, गिधाड़; गु० गीद; सि० गिज्झ; पं० गिद्द, गिज्झ; पश्चि० पं० गिरिज; का० ग्रेद; सिं० गिदु; २४. ८; २५. १०४.

गिरहिं-गिरते हैं ४. ५३.

गिरास-ग्रस-ग्रास (ग्रस्; पा० घसति; Lat. *gramen*, E. *grass*] २४. ८०.

गुना-विचारा १. ६०; २५. १२७.

गुनि-गुन कर-समझ विचार कर ४. २१; ६. ३; ७. ३२, ६१.

गुनी-गुणी १. ८०, ८२; २. ६५; ३. २७; ७. ६२; ११. १०.

गुपुत-गुप्त-गुप्त-छिपा हुआ १. ३६, ५०; १८. ५४; २२. ५४, ६८, ७६; २३. ५; २४. ४०, ६१; २५. ३१.

गुर-गुड़ १. १६१.

गुरीरा-गुरेरा-देखादेखी-संयोग ३. २१.

गुरु-आचार्य; का० गोर १. १५३, १५७, १६०; ७. ७०; १४. ८; १५. ३, ३६, ५५; १६. १; १९. ५५, ६८; २१. १६; २२. ४८, ७६; २३. १५८; २४. ४१, ४५, ४६, १२३, १४१, १४४, १४५.

गुरू-गुरु; पा० गरु; [Lat. *gravis*, तथा *brutus*, Goth. *kaurus*] १. १५५; ११. ५४; १२. ४०; १६. ११; १६. ६७, ७०; २०. ८३; २३. ३६, १५५, १७२, १७३; २४. २३, २५, ४४, ४५, ४६, ४८, १४२, १४४; २५. २.

गुलाल-गुलाली रंग का, गुलाब २. ८३; ४. ४; २०. ५२.

गूँग-गूँगा-गूँ गूँ करने वाला; वि गुङ्-गूंगा ७. ५३; २५. ५१.

गूँगा ७. ६६; ११. ५०.

गूँजा-गूँजइ का मू० २४. ११०.

गूजरि-गुर्जरी-गूजर की स्त्री २०. २६.

गूद-गुह्य [$\sqrt{}$गुह, सु० गूहति, गुहति, गुह्य; अवे० गुर्स्, गुप्र-रहस्य; (गुध्-गुम्फ) का० गुजि-बीज; [तु० *Ghough *Ghūgh-Lit. *güzti*-रक्षा करता है] २५. २४.

गे-गये १४. १; २२. ५४.

गेरा-गिरा दिया (गृ-गेर यथा गृह-गेह; ऋध्-एध) २३. १०६.

गेरुआ-गेरु के रंग का-गैरिक-गैरिग्र १२. ७२.

गेरू-गैरिक; गैरिग्र, गेरुय; बं० गेरी; का० गरुद २३. ६३.

गोँड-एक जंगली जाति-कहारों का अवान्तर भेद-गोयड १२. १०१.

गोझा-गुह्य-गुज्झ-गुंजिया, एक प्रकार की मिठाई; [तु० हि० म० गुज (गुप्त); गु० गूज; सि० गुज्झो; पं० गुज्झ; का० गूजि; हि० गोज्झा-जेब] २०. ८४.

गोटा-गोट-गोला [*Gou-l-मु० गुल; गुली, गुलिका, गोली, VWI. p. 555; *Gol-से नहीं] २३. २६.

गोटी-गोट, गुटिका (गोलक); खेलने के लिये काठ या पत्थर के छोटे छोटे सुन्दर टुकड़े; म० गोटा, गोटी; हि० गटी ८. १८.

गोपिचंद–गोपीचन्द राजा १२. ३८; १६. १०; २०. ६४.

गोपीता–गोपित–गोपित्त–सुरक्षित–(देवी) १०. ३१; गोपपत्नी ११. २६.

गोरख–गोरखनाथ गुरु १२. ५; १६. ११; १६. ६६; २०. १०२; २२. ४८.

गोरस–गोदुग्ध–दूध २०. २६.

गोरिहि–गोरी के साथ [गउरिहि पाठ देखो] ४. ४४.

गोरी–गौरवर्ण की–सुन्दर युवती ४. ४४; २१. ४४.

गोरु–गोरूप; गाय बैल आदि पालित जीव; तु० म० गुरूं; पं० गोरू (JB. 66, 97, 172) १. ११७.

गोसाईं–गोस्वामिक–इन्द्रियों का स्वामी म० गोसावी १. ५२, ७२, ८०, १४६, १६०, १७४; ५. ६; १३. १६; २२. ४४; २३. ६८; २५. १२८, १४६.

गोहन–(व्युत्पत्ति अनिश्चित) सुधा० के मत में गोहन–गोवन–गोपन–रक्षा, अर्थात् 'साथ साथ'; संभवतः गोहन–गोधन–(एक त्यौहार का नाम जिसमें "गोधन" पूजा जाता है) पूजन, अर्थात् पूजा करने के लिये "साथ साथ जाना" (ध्यान रहे गव्यूति, गोत्र, गोप, गोति इत्यादि शब्दों में "गो" शब्द विशेषतः पशुत्वबोधक नहीं रहता); गोहन; गोस्थान अर्थात् "गांव के पास की जगह" अथवा गोहने–छिपे छिपे–"साथ साथ" २०. १७; २१. ३६.

गोहने–(देखो गोहन) २०. ८, २४.

गोहराई–पुकारती है; [गोहरा–गोवृष–साँड; कामार्त गौ वृष को पुकारती है इसलिये "गोहराने" का लाक्षणिक अर्थ "पुकारना" है। गोहरा की व्युत्पत्ति के लिये देखो गोवृष, अथवा "गो+हृ" जो गौओं को हरता अर्थात् अपनी ओर खींचता हो "साँड"। हिन्दी में "गोहर" ग्राम के समीपवर्ती मार्ग को कहते हैं (गावो हियन्ते यस्मिन् मार्गे इति); अतः "गोहराई" का अर्थ "गोहर में कूदती चलीं" भी संभव है। अथवा गोहर, गोहिर–एडी; गोहराई–चलीं (दे० MW. p. 369) गोहर की तु० गोष्पद के साथ] १२. ७४.

गोहारी–चल पड़ीं (गोहर में हो लीं; "गोहर–गोपन" सुधा०) २५. १००.

ग्याता–[√ज्ञा, ज्ञातृ; अवे० भ्नातर; Lat. *nōtor*] ज्ञाता–जाणि २. ६५.

ग्यान–ज्ञान; प्रा० जाण, णाण; पै० प्रा० ञाण; पा० जान; उ०, बं० ज्ञान; हि०, पं० ग्यान; सि० जाणु; म० जाण ११. १८; १८. २६; २५. ४२.

ग्यानी–ज्ञाना–ज्ञानि १. १७०.

ग्वालिनि–गोपालिनी-गोवालिणी-ग्वालन १२. ७४.

घ.

घउरी–फलों का अप्स-गुच्छा; गह्वर–गब्भर (P. 332) घब्बर (P. 209) घवुरी–घउरी–फलों का घना गुच्छा (तु० घेवर–एक प्रकार की मिठाई) २. ७७; २०. ४७.

घट–घटता है (√भ्रन्य्; तु०पा० गन्यति) १. ३३, घड–शरीर (भभारतीय इस अर्थ में BPD.) १. ७३; ३. ५; ८. ४७; ६. ३५; २२. १४; २४. १२६, १५१, १५८; २५. ४७.

घटइ २. १४३; घटे–कम ही २४. १५८.

घटत–घटते हुए (घटतहि घटत) ३. १३; १८. ४०; २४. १५८.

घटतहि–घटते ही ३. १३; १८. ४०.

घटन–घटना–कम होना ११. २३.

घटहिं–घटते हैं १. १३१; २३. ६४.

घटा–कम हुआ १. ४०, ७८; ८. १२.

घटि–घट कर २४. ६१.

घटिहि–घटेगा–क्षीण होगा ११. २१.

घटी– क्षीण हुई ३. १२.

घटे–क्षीण हुए १८. ५४.

घडी–घटी–समय १२. १०, १४; २०. ११७; २१. ५३.

घंट–घंटा; म० घांट; (घडी); गु० घंट; सि० घंडु; का० गुंढ १६. ४७; २२. ४; २५. ८६, १२१.

घन–घन–ढेर–झुण्ड; ढि घण्ड–बड़ा, बहुत; २. १८, घना (घन्–हन् तु० गहन; पीटा हुआ, कठोर, दृढ, बहुत) २. २४; बादल २. ३२; १०. ११; काँसी का बाजा [ततं वीणादिकं वाद्यमानद्धं मुरजादिकम्। वंशादिकं तु सुषिरं कांस्यतालादिकं घनम्॥ चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्यनाम-कम्॥ अ० को० नाट्यवर्ग] १६. ४७.

घनइ–घन ही–कठिन ही २१. ६४.

घनबेइली–घनबेलि–पुष्पविशेष २. ८२.

घनि–घनी [तु० घन, √हन्–घन्; *Guhen–मारना; Lat. of-fendo; Obg. gundea–लोहार का घन, हंडा] २. ३३.

घनी–अधिक १. २३.

घर–गृह–(*Gherdh, गृह–गृध WAI. 250); घर–सि० घर; का० गुहर, गुर; सि० गुर; जि० मेर, ग्येख १. १४४, १४५, १४६; २. ८१, ८६, १५४; ३. २८, ३०, ६६; ४. ५२; ७. ८, ११, १५; ६. २३, २७; ११. १४,

४७; १२. १३, १५, १६, ४६, ५२, ७१; १३. २२, ५३; १७. ११; २०. ४०; २३. १८३.

घरबार—गृहद्वार—गिहबार (द्वार—दार, बार) १२. १५.

घरबारा—घरबार २. १००.

घरहि—घरही ११. ४५.

घरिश्रार—घण्टा बजाने वाला २. १३६.

घरिश्रारा—राजा का घण्टा; इसकी श्राकृति घरिश्रार (—जलयन्त्र) जैसी होती थी (घड़ियाल-ग्राह) १३. २०.

घरिश्रारी—घटिकार—घडिश्रार—घण्टा बजाने वाला २. १३८.

घरी—घटि; छि० गरी, समय; १. १६७; घरी—घटी—घड़ी जैसा गोल यन्त्र (घड़ियां सुधा०) २. ८०, घटी-जल-घटी, दस पल तांबे की ६ श्रंगुल ऊँची श्रौर १२ श्रंगुल विस्तृत गोलार्ध के श्राकार की ऐसी बनती थी, जिसमें ६० पल पानी भरे। इसके नीचे तीन माला श्रौर एक मासे के तिहाई सोने से बने चार श्रंगुल लंबे तार से छेद किया जाता था। उसी छेद से जल-पूर्ण पात्र में घटी को छोड़ देने से साठ पल-एक नाड़ी में वह भर जाता था। २. १३८, प्रति घड़ी १३६, घटीयंत्र १४२, १४४; समय ३. ६, १६; १२. ६३; २३. ७६; २४. ८१.

घाँटी—कठिन मार्ग (घट्ट—घाट) २२. ६६.

घाइ—घाय—घाव—घात [√घन्—हन्] २३. ८८.

घाउ—घात—घाव २४. ६६.

घाट—घट्ट (किनारे पर) १. १४१; २. ५१; १२. १०४.

घाटा—घट्ट—घाट—सि०घाटु; का० गाठ १. ११७; १३. ६.

घाटि—घट गया १. १२८; ३. १०.

घाटी—घाँटी—कठिन मार्ग १२. ८४.

घामू—घर्म—घम्म—घाम; [√घृ क्षरणदीप्त्योः; Lat. *formus;* Ohg. *wa-rm,-*guher* "घृ" घर्म, घृणोति] बं० घामिते; अवे० गरेम (ग्र); ट०, श्रोस्से० कर्म; सरि० ग्रुर्म, गुर्म, २. २२.

घाया—घात—घाय—घाव; म० घाश्रो; गु० घा, घाव; सि० (घन्—हन्) घाउ; बं० घा १. १८२.

घालइ—डाले; (घृ प्रस्रवणे; घल्लइ) म० घालणें; गु० घाल—; पं० घल्ल—; १६. ३६.

घाला—नाश को प्राप्त हुआ ८. ५८; डाला २२. ५०; २३. १२५.

घालि—डाल कर—अवधार्य (√घृ क्षरणदीप्त्योः) ३. ७५; ७. २६; १४. ३; घाल कर—नाश कर—गला कर (डाल कर) २१. ४८; २५. १२७, १३६.

च.

पा० चतुत्थ; प्रा० चउत्थ, चौत्थ (H. 79.) म०; चौथा; गु० चोथुं; सि० चोथो; पं०, हिं० चौथा (चौत्था, चौत्थे—चतुर्थ दिन); बं० चौठा; उ० चौथ (विस्तार से देखो VWI. p. 512) १. ६३.

चउदसकरा—चतुर्दश कला—चतुर्दशीका (चन्द्र) १८. ४५.

चउदसि—चतुर्दशी-चउद्दसीतिथि १. १२२.

चउबिस—चतुर्विंशति; चउवीस, चउव्वीस, चउव्विह; हि० चौबीस; म० चोवीस, चव्वीस; च्यौवीस; गु० चौवीस; सि० चोवीह; पं० चौबी; का० चोवुह; बं० चबीस २४. ११.

चउमुख—चतुर्मुख—चउम्मुह—चउमुह—चार मुख का १६. ४५.

चउदह—चौदह—चतुर्दश चउद्दस, चौद्दस, चौद्दह; (स—ह P. 262) अप० चौद्दह; हि० चौदह (ग्रामीण चौधा); म० चौदा, चवदा, चौदस, चावदस; गु०, बं०, उ० चौद; सि० चौडहं; पं० चौदाम; का० चोदाह; सिं० तुदुस इत्यादि ६. ४०.

चउदहउ—चौदहों १. ५.

चउपाई—चतुष्पदी—चउप्पई-चौपाई छन्द (P. 329) १. १८६.

चउपारिन्ह—चौपार—चौपाल—चतुष्पाल २. ६३.

चउपारी—चौपाल—बैठक २. १५७.

चउरासी—चतुरशीति-चौरासी २५.१०४.

चउहान—चहुआन—चतुस्थान—अग्नि से उत्पन्न हुए चार क्षत्रिय वंशों में से एक वंश २५. १६३.

चउहानि—चौहान की स्त्री २०. २०.

चक—चक्र—चक्क—चाक—चक्राकार शस्त्र; सि० चकु, [तु० चक्र; अवे० चखर—, (अ); का० चोरा, चीर] १०. २४.

चकइ—चकई—चक्रवाकी—चक्रवाक पक्षी की मादा २३. १४२.

चकई—चक्रवाकी २. ६६; ४. ४०.

चकर—चक्र (कृ—*क्वृ—गोल घूमना; अभ्यस्त प्रयोग; तु० AS. *hweohl*, *hweol*; Eng. *wheel*) १२. ४; १६. १८, १६; २४. २३.

चकवा—चक्रवाक—पा० चक्कवाक; [तु० कृकवाकु; √कृ—का अभ्यस्त रूप चक्काअ—चक्कआअ—चक्रवाक P. 82] २. ६६.

चक्कवइ—चक्रवर्ती—चक्कवट्टि २. १६.

चकोर—[*Kol, *Kor] पक्षिविशेष—चन्द्रमा को चाहने वाला ४. २६; १६. ३१; २३. ६६, १४३, १६४.

चकोरी—चकोर की स्त्री २३. १४२.

चखु—चक्षु—[संभवतः √ईस् का अभ्यस्त रूप; अक्षि, आंख; क्षण, एक पल; अथवा √चित् का अतिशय में प्रयोग

तु० Lat. inquam तु० quok, अवे० आकसत्–देखा; आ० फा० आगाह निगाह इत्यादि] *Quek-s-देखना; तु० चक्ष्, चक्षुष्, आ० फा० चश्मन्–आंख; चक्खु–आंख २. ६२; ६. २१; २०. ११२; २४. ८३.

चंचल–चञ्चल; [√चल्-चर का अभ्यस्त प्रयोग *चर्चर; 'र' के स्थान में न के साथ, यथा चंचूर्यते, चंचुरीति; तु० Lat. *quer–quer–us*–उवरकंपन; चञ्चल–Quen-q (e) l-o] १८. ५६.

चढ–(संभवतः धुर्द–धुड्‌ P. 213); अ० चढयों; सिं० सड; प्रा० चडइ (JB 253) ११. ४४.

चढइ–चढ़ता है १. ८३, ११२; (चढे) २. १, २५, १३६; ११. ४३, ४४; १४. १५; १५. ५; १६. ३८; चढइ देई–चढ़ने देता है २१. २६; चढे (संभावना) २२. ६१, ६६; २३. १०२; चढने में २५. २७; चढे २५. ५८.

चढउँ–चढूं १६. ३४; २१. ४५; २३. ११६.

चढत–चढ़ने (चढ़ने में) १६. ४०; (उच्चलत् सु०) चढ़ती है २३. १०६; २४. १२४, १३३.

चढहिं–चढ़ते हैं २. ५२, ६७, ८८; ४. १७; २३. १८४; २४. ५.

चढहु–चढो २४. ६.

चढा–चढइ का भूत प्र० पु० ए० पुं० १. १२७; ७. (–जाता) २७; १०. ६, २६, १३०, १३१, १३३; (चढे) ११. ४३; १३. ६१; २२. ४५; २४. १६, ४६, ७२; २५. ७६.

चढाइ–चढाकर १०. १००; १२. ३; १७. १५.

चढाइ–चढावइ २०. ७५.

चढाउ–चढ़ाव (उच्चालन सु०) २२. ६४, ६८; २३. १७६.

चढाए–चढाये २०. १२.

चढाएहु–चढावे (उच्चालयेत् सु०) २२.४०.

चढावउँ–चढाऊँ ११. ५६; २०. ८०.

चढावा–चढ़ावे १०. १५७; चढाया २३. १६४.

चढि–चढकर १३. २४; १४. २४; १६. ४३; १८. ३६; २०. १०६; २१. २८; २३. १२६, १८१; २४. ११६.

चढिअ–चढिये (उच्चलेत् सु०) २४. ६.

चढिअहि–चढिये २४. ६.

चढी–चढ़ गई २०. ६१.

चढी–चढइ, भू० प्र० पु० ए० स्त्री० १०. ११५; २०. ६७; २३. ३.

चढु–चढ–चढो २२. ७२.

चढे–चढा (चढना) चाहते हैं, चढइ का भूत २. १३३, १४१; १०. ६; १३. १८; २३. १७६, १७७, १८१; २५. १००, १४४.

चढेउँ–चढी हूँ २३. १२७.

चढेउ–चढा २३. ११६.

चढेहु–चढे थे १२. २२.

चतुर–चउ–चार (ऋक्, यजुः, साम, अथर्व) १०. ७७; १८. १०; २५. १४४.

चतुरदसा–चौदह–चतुर्दश १. १७४.

चतुरवेद–चतुर्वेद–चारों वेद ७. ६४.

चतुरमुख–चतुर्मुख २५. ६०.

चंद–[चन्द्र (*s) quend – प्रकाशन; तु० चन्दन,–sandlewood, Lat. *candeo, candidus, incend*; Cymr. *cann*–श्वेत; E. *candid, candle, incense, cinder*] प्रा० चंद; पा० चन्द; का० चदर; पं० चंद; सि० चंडु, चंडु; सिं० संद, हंद; हि० चांद, चंद ४. २६, ६१; २५. ६२.

चंदन–चन्दन–चांदण १. १७५; २. ८१, ८२, ८३, १०२, १६०; ३. ८; १०. १२१, १३२, १४७; १२. ३, २७, ३५; १८. ३, ८; २०. १५, ५५, ७६, १०६, १०७; २१. ८, १०; २३. १२५; २४. ११२.

चंदनखँभ–चंदणखंभ १०. १२५.

चंद-बदन–चाँद जैसा मुख १२. ३.

चंदू–चन्द्रमा २५. १२४.

चंदेलिनि–चंदेले की स्त्री (चंदेली में बसे हुए क्षत्रिय) २०. २०.

चबाहीं – चर्वयन्ति; म० चावणें; गु० चाव–; सि०, पं० चब्ब–; हि०, बं० चाव–; का० चोप, (त्सि० चर्म–दांत सं० जम्भ) [*Queru – चर्वति] २. १७४.

चमकइ–चमत्+कृ–चमक्क–चमकता है [H. 353] १०. ७२; १६. ५; २१. ३७.

चमकहिं–चमकते हैं २. ६३, ६७; १०. ८०.

चमकाहीं–चमकते हैं १०. ८१.

चमकि–चमक १०. ६६, ७१; चमक करके १५. ६५.

चमके–चमकइ का भूत २५. ६.

चंपा–म० चांपा; गु० चापुं; सि० चंबो; पं० चंबा; का० चंब; त्सि० सपु (JB. 66, 71, 125) २. ८२; ४. ३.

चंपावति–चम्पावती (रानी का नाम) २. १६६; ३. १; २३. १३१.

चरचइ–चर्च – चच्च – उपाय करती है– १८. ४१.

चरचहिं–उपचार करते हैं (चेहरे की रंगत से पता लगाते हैं) ११. ११.

चरत–चरते हुए–चरने में (*Quel–तु० चरित्र, चूर्ति, तुविकूर्मि, W. I. 24 चर्–चरीदन) ५. ४८.

चरपट–चर्पट-चपाट (-पर्पट-√पृ-देखना, Germ. *ar-far-an*–देखना; जो दूसरों की जेब ताकता हो) अथवा

चरकटा—चलता चलता गाँठ कतरने वाला २. १२०.

चरन—(√चर *Qual)—चरण-पैर १.६७.

चरा—सुगा—खाया ५. ४८.

चरित—चरित्र—तमाशा २०. ८५.

चल—(√चर के साथ संबद्ध; चलति; प्रा० चल्लइ; पा० चलति; उ०, बं० चाल; हि० चल; मार० चल, पं० चल्ल; सि० चल, म० चालणें ५.२६.

चलइ—चलति—चलता है १. १०६, ११६, १५३; २. १०४, १२६; (चले-चला) ८. १८; १०. १४१, १२. १४; १४. १; १६. ५६; २४. १४०.

चलउँ—चलूं ३. ७१; ५. २; २३. ११८; २४. ३३; २५. १६.

चलत—चलते—चलन् १. ११२, ११३; ५. २८; ७. २, १२; १३. ६; २४. १५.

चलन—चलनम्—चलना ७. १६.

चलना—चलनम् २३. ३६.

चलय—चलोगे १२. ३०; २०. ८०.

चलहि*—चलते हैं २. १११; १२. ८८, ६०; २०. ६३; २३. १८१.

चलहु—चलो १२. ६, २२, ३२, ४३; २०. ८; २५. ३६, ४८.

चला—चलइ का मू० १. १७६; ५. २७, ३१; ७. १, २, ११; १२. ८, १६, २१, ५६, ५७, ५८, ६१, ७०, ७२, ८१; १३. ५६, ६०; १६. ५८; २३. ७१; २५. १८.

चलाई—चलावइ का मू० २५. ११७.

चलाए—चलावइ का भू० व० पुं० १५.२.

चलि*—चलो* २०. २०, २५, २६.

चलि—चलकर—चलिया २. १६१; ४. २; ८. ४७; १०. १२६; १२. ७४; १३. ३; (चल सकती) १५. ५३; २०. १२५; (चली) २४. १४६; २५. ६६, १०४.

चली*—चलइ का मू० व० स्त्री० २०. २१, २३, २४, २५, २७, २८, २६, ३०, ३१, ३३.

चली—चलइ का मू० ए० स्त्री० ४. १, ८, ५१; ७. ४२; १०. १२३, १२६; २०. १७, ११४; २२. ५३; २३. २८, ६०.

चलावइ—चलाता है ७. २८.

चलावहि*—चलावें—चालयेत २४. ३३.

चलाही*—चलते हैं १. ६६.

चलु—चल २३. १५५.

चले—चलइ का मू०, पु०, व० १४. १; २०. ६०.

चलेउँ—चला (मैं) ७. १०, १३.

चलेउ—चला १६. ४१, ४२.

चलेहु—चल पड़े हो (—चलना ही था तो) १६. ६०; चले १६. ६१.

चवँर—चामर—चँवर २२. ५.

चवँद्लि–चमेली २०. ५१.

चह–चप्–चस्–चह–चाहता है–चहइ ८. २४; १०. १६; २१. ४६; २३. ३६.

चहइ–चाहता है १. ४२, ४८, ८०; ३. ६८; ८. २६; १२. ५४; १३. ४५; १५. ३१; १८. ८, १३; २०. ३५; २१. २८; २२. ३७; २३. १०३.

चहउँ–चाहता हूं ७. २७; ६. २१, २४; २०. ८; २३. ११३; २५. ६३.

चहत–चाहता था २०. १०१.

चहसि–चाहता है (तू) १२. १००.

चहहिं–चहइ का वर्त० बहु० १०. ७, ३४; १२. ६२; १८. ५४.

चहहीँ–चहहिं–चाहते हैं १. १३.

चहुआन–चाहुआण–चौहान २५. ८४.

चहा–चाहा १. २१, ५६; ४. ५७, ६३; ८. १३; १२. ५५; १६. २१, २४; २३. १००.

चहिअ–चहिय–चाहिये २३. १२२,१८४.

चहुँ–चारों २. ४३, ५२, ८१, १२३; ३. १५, ४२; ५. १५; ६. ५; १०. ६; १२. १७, ६३; १५. ४२; १६. ७, १३, १५, १८; १७. २; १८. ४१; २०. ६, १६, ५८.

चहूँ–चारों १. ८६; २. १६, ५६; ३. २७; ५. १७; ६. ३१; १६. ४५; २४. ८०.

चाँचर–चर्चरी–गाने वालों की टोली; होली में जगह जगह पर ठहर ठहर कर दो दो के गोल में गाये जाने वाले गान को चाँचर कहते हैं २. ६३.

चाँटहि–चीँटे को–चाटक १. ४४.११३.

चाँटा–चीँटा १. ३४, १६१; १५. ५३.

चाँटी–चीँटी १. ३०; १५. ६८; २२. ६६.

चाँटे–चीँटे १८. ५१.

चाँद–चंद–चन्द्रमा [*Qand, *Squand-चमकना; चन्द्र; Lat. *candeo-ere*; Arm. *sand*, *sant*-प्रकाश] १. १२८, १४४, १६२; २. १५०, १६१; ३. १६, ५८; ४. २८, ३८, ४०; ५. १२; ६. ५; ७. ७१; ८. १२, ४६, ६४; ६. ३२, ३६; १०. १६, ६१, ६६, १५८; १४. १५; १६. ६, २०; १८. ३, ३६, ४०, ४५; १६. ३१, ५६; २०. ७२, १२५, १३१, १३४; २१. ५, ३६; २३. १६३, १६४; २४. ६०, १३७.

चाँदहि–चाँद को १०. २०.

चाँप–चंपक–("चम्पको हेमपुष्पकः" अमरकोष वनौषधि० ४११) २०. ४१, ५०.

चाँप–[√चप; Qep–कांपना; तु० चपल; चाप] चांपता हुआ; तु० ब० चापिते, छापिते; सि० चापणु, छापणु; म० चापटणें; छापटणें; (ग्रे के मत में उ० टिपिबा हि० टीपना, तोपना आदि

मी छुप् से हैं 175) ५. २६.

चाँपा–चँपाया-दबाया १. १०६; २४.१३.

चाँपा–चाँपित–दबाये हुए २५. १६५.

चाउ–चाव–इच्छा १. १६८; ६. २४; १६. ४०.

चाऊ–चाव–चाह–इच्छा २२. १७.

चाक–चक्र; प्रा०, पा० चक्क; आ० चाक; उ० चक्र (अ); बं० चाका; पू० हि० चाक; पं० चक्ल; सि० चकु; गु०, म० चाक, सिं० सक, हक; अवे० चख्र; आ० फा० चर्ख; चहह, का० चोर; चीर इत्यादि [*Quel का अभ्यस्त रूप; Quel-गोल घूमना; Ags. hveohl, hveol-wheel; अनभ्यस्त रूप चरति; Lat. colo, incolo, Obulg. kolo-wheel, Oisl. hvel तु० कण्ठ; *quent>*quelt, मौलिक अर्थ ग्रीवा; Lat. collus-घूमने वाला] २. १४१; १०. १००; १८. ४१.

चाका–चाक १५. ४६.

चाख–चाखे (√चष, चक्स; म० चाखयाँ; चाटयें; गु०, सि०, बं०, हि० चाख, पं० चक्ख; का० चह(–साँड); गु०, हि० चाठ, सि० चट; पं० चट; सि० चा; (प्रा० चक्खइ, चहुइ; JB. 47, 109) २४. १२०.

चाखा–चाखइ का मू० २. ३१; ६. ४१.

चाखि–चाखा १५. ४०.

चाखे–चाखइ का भूत० बहु० १०. ६१.

चाटा–चाटता है [√चप्–चट्–चाटना; तु० चाहु; चारु *Qe-*Qā जैसे काम, Lat. carus] २३. २७.

चाड़ू–चण्ड–भयंकर–वेग-बल [चडु-रुद्र, पिप; चाड–मायावी] १०. ११३.

चातक–[*Qē-qā यथा काम] चायग चायय–स्वाती नक्षत्र का प्रेमी पक्षी १०. ७४, ७५; १३. ८; २३. १४१.

चारा–चरण–चलना (भक्षा के लिये) भोजन; तु० री चेख–घास चरना [तु० अवे० चारा (Quel–) आ० फा० चार–साधन VWI. p. 508] ५. ७, ३६, ३६, ५४; १४. १३.

चारि–चत्वारः–चत्वारः–चार; अवे० चथ्वार; यह० चहार; पाह्ल० चिहार; आ० फा० चहार; वाख्सी चतुर; शिघ्नी चवोर; सरि० चतुर; सं० सफोर; अफ० चलोर; कु० चवाह; कु० (सिहना) चवार; १. ५५, ८६, १६६; २. १३६; १६. ४६; २४. ८१.

चारिउ–चारों १. ६४, ६७, १७४, १७६.

चारिहुँ–चारों में १२. ७२.

चांरिहु–चारों (दिशा) १८. २४.

चारी–चार चत्वार; पा० चतुर [*Quetuor, *quetur; Lat. quattuor; Goth. fidiwor; Ohg fior; Ags. feower; E. four; चतुर क्रियाविशे-

पण *quotrus-Lat. *quater* तथा *quadru*] ४. ११.

चाल–चलन–गति २. १७०.

चालइ–चलाता है ३. ५१; चलावे १६. ३६; २१. ४०.

चालहु–चलाओ २३. ४८; चलाते हो २५. १६.

चालि–चाल २. १६८.

चालू–चाल–चालन–मुहूर्त्त १२. १२.

चाले–चले २४. १२.

चाल्ह–चालः–चेल्हवा–एक प्रकार का सफेद मत्स्य; (तु० गाली–गाल्ही; कोलू–कोल्हू; दीना–दीन्ह; चील–चील्ह H. 142, 144, 161) १४. ४, ५, १०.

चाह–चाहे २. १७६; (चाह न पाउवि–इच्छा तक न मिलेगी–नाम तक न ले सकेंगी) ४. १६; चाहते हैं ७. ३१; १०. ३७; १५. ११; चाहती हैं १८. ४६. इच्छा २२. ३१; चाहते हैं २३. ४.

चाहइ–चाहता है १. ५६; ३. १, २; ५. ५४; १६. ११. २१; २२. ८०.

चाहउँ–चाहता हूं १५. ६१, ६२; २३. १५६.

चाहत–चाहहिं–चाहते हैं २५. ११३.

चाहसि–चाहता है २५. १७.

चाहहिँ–चाहते हैं २. १३३; १०. ११५, ११६; १३. ११; १४. ७.

चाहहु–चाहते हो ११. ३६; २३. १३.

चाहा–चाहते हैं १. १२१; ७. ६२; १२. १६; १३. ५१; इच्छा २३. ५०; चाहइ का भू० २५. ३७.

चाहि–चाह कर १. ५६; चाह कर–इच्छा से ६. ४७; २३. ३५; २४. ५३; २५. ६१. चाहि-चहि–से भी (que) १. १२२, १२५; २. १०, १२७, १६५; १३. ४६; १५. ५४.

चाहिअ–चाहिये ७. ४८; १६. ३६; १६. ५, ५६;२०. १३६; २३. ४०; २५. १२८.

चित–चित्त (चित्–चिन्त, चि; तु० केतु VWI. 508) ३. ५६; ७. ७१; ८. ६३; ६. ३४; २४. १४७; २५. ८०.

चितउर–चित्तौड़ १. १८६; ६. १. ७; ७. १, ४०, ४१; १२. ४८; १६. १६; २५. ८३, १३१, १५८.

चितर–चित्र–[(*S) qait–चमकना; सं० चित्र; केतु, अवे० चिथ्रो; Lat. *caelum;* Ags. *hador;* Ohg. *heitar;* तु० चित्त, चेतस्, चिन्ता आदि] चित्त (-चित्रण) २. ५५, ६६, १८६; ६. १; ६. ३४; २४. ६४, १४७; विचित्र १६. १६.

चितरसेन–चित्रसेन राजा ६. १; ७. ४१; १६. १६; २५. ८३.

चितवइ–चेतयति–देखती है १८. १०; १६. ३१.

चितवउं–देखती हूं १८. २४.

चितहि॑–चित्त में २४. ६४.

चित्त–विचार [मूलरूपेण चिन्तति का निष्ठान्त, तु॰ युत्त–युक्त; मुत्त, मुक्त] १. ४७.

चित्तु–चित्त [Quoit–तु॰ चिकेत, चिकित्वान् चिति, चिन्ता इत्यादि VWI, p 509] १. १७६.

चिनगि–चिनगारी–[चित्कण सुधा॰] १८. ४५; २१. ५३, ५६

चिंत–चिन्ता [√चित (°S) quit, तु॰ चित्त, चक्षु, चिकेत, चिकित्सति आदि, चित् और चिन्त दो रूप, यथा सिच्, सेक; मुञ्च, मोक] ५. ४६.

चिंता–सोच १. २२; २. १५६, १२. २४

चिरउंजी–चिरौंजी २. ७८; २०. ४२.

चिरिहार–चिड़ीमार–बहेलिया–[पा॰ चिरीड सं॰ चिरि, तु॰ कीर] ५. ३६.

चिरिहारू–चिड़ीमार ७. ३३.

चिललाई–चिल्लाता है १. ४६.

चिसती–चिश्ती १. १४४.

चीता–चिता–चिन्ता [तु॰ गु॰ चितवुं–(चिन्तन); चिन्तवुं; म॰ चिन्तवें, सि॰ चीतणु; हि॰ चिन्तना] २३. ६७.

चीन्ह–चीन्हते हैं–पहचानते हैं १. ५०.

चीन्हइ–चीन्हता है २२. ४६.

चीन्हहु–चीन्हो–पहचानो १. ५७.

चीन्हा–पहचाना १. ८३; ७. ३१, ६५; ६. ४७; १०. ३०; २३. ३६; २४. ४१, ४२.

चीन्ही–चीन्हई का स्त्री॰ २२. ४४.

चीन्हे–चीन्हने से–परिचय से २२. ६६.

चीर–कपड़ा [चीर–वृक्ष की छाल; तु॰ चीवर] २. १०६; १०. ६४, १३१; २०. २८, ५६; २३. ८०.

चीरू–चीर १८. ३; २३. ७८.

चुअ–चूता है; च्यवते; प्रा॰ चवइ; पा॰ चवति; उ॰ चुइबा; बं॰ चुआन; हि॰ चूना; पं॰ चोणा; सि॰ चुइणु; म॰ चावणें [च्यु √Qi-eu–च्यवते; प्रा॰ फा॰ उशियवं–कूच करना; सं॰ च्यौत्न–प्रयत्न; प्रयास; अवे॰ स्यओथ्न–कृति; सं॰ च्युति; Arm, *ču*, तु॰ Lat, *cieo*, *cio*, *sollicitus*, Goth, *haitan* Ohg, *heizan*] २. २६.

चुअइ–चूता है ८. ३६.

चुआ–चुअइ का भूत, पुं॰, ए॰ १५. ३८; १६. ३; २३. ६५.

चुआवहि॑–चुआती हैं २४. ७४.

चुई–चुआ का स्त्री॰ ५. १५.

चुए–चुअइ का भूत॰ पुं॰ बहु॰ ५. १४.

चुगहि॑–चुगते हैं–चुक्क में लेते हैं, बीनते हैं ["चुक्रो मुष्टिः" तु॰ चुटकी, चुक की व्युत्पत्ति √चुक व्यथने से]

२. ५४.

चुनहिँ—चुनते हैं; चिनोति; म० चिरणें; गु० चिरणवुं (–तह लगाना); सि० चुणणु; पं० चिणना; हि० चुनना, चिनना (मकान बनाना) त्सि० चिनव (–हिलाना) १५. ७८.

चुनि—चुनकर–छाँटकर २. १६६.

चुप—मौन २५. ३६.

चुभइ—चुभता है (संभवतः √छुभ्–छुभ से P. 66) तु० चुड्ड (–छुभ्–छुभ्–छुब्ध) चूढ़ा–भङ्गी (हिन्दी) १२. ६१.

चुहि—चुही–फूल के रस को चूसने वाली चिड़िया–फुलसुंघी २. ३४.

चूआ—चुआ ८. ४२; १६. २३; २३. ५२.

चूना—चूर्ण [√चर्व का निष्ठान्त; *Sqor–काटना, तोड़ना; तु० Lat. *cars*, सं० कृणाति; तु० Lat. *kirwis*–तलवार, *scrupus*–तेज पत्थर, *scrupulus*, *scortum*; ध्यान दो सं० "छुरण", पा० "कुछ" आदि पर] चुरण–चून (कली चूना); म० चुना; गु० चुनो, चूनो; पं०, हि० चूना; का० चून; सिं० हुणु २३.११०.

चूर—चूर्ण–चूरा १. ११२.

चूरइ—चूर्ण करता है–चूर्णयति ५. ३८.

चूरहिँ—चूर चूर करते हैं १२. ६०.

चूरा—चूर २. १२६; (चर्व चूर्ण–चुरण P. 987) चूर्ण किया ५. ३५; छड़े, पांव के गहने १०. १५८; चूर हुआ हुआ २१. १७.

चूरि—चूर्ण करके ५. ३३; २५. ६८.

चूरू—चूर्ण १०. १५; (मोती का चूर्ण) २. १४६.

चेटक—चेड–चटक मटक से टोना लगा देना–अथवा दूत २. ११२, ११८.

चेत—चेतन, पा० चेतनक; चेतो, चेतना (√चित्) ११. ६, १७; २४. १०४.

चेना—चीन देश का कर्पूर १. २५.

चेर—चेरा–चेला–चेटः, चेटकः–टहलुआ–दास १. १६०; २५. १२८.

चेरी—लौन्डी–(चेटिका) ८. ७१; ६. ३.

चेलई—चेलाने २४. १४७.

चेलहि—चेला को २४. १४४.

चेला—शिष्य–दास; चेटः; म० चेला; गु० चेलो; सि० चेलु; पं० चेला; हि० चेला, चेरा; का० चेल (श्र); दे० "चिल्लः तथा चेडो बालः" (JB. 148 सं चेले–वस्त्रभिन्न है) १. १४०, १५६, १६०; ७. ७०; ६. ५३; ११. ५४; १२. ६६; १३. ४, ११; १४. ८; १७. १; १६. २६, ६८; २०. ६१, १०२; २२. ७६; २३. १५५; १७२; २४. १६, २५, ४६, १४२, १४४, १४५, १४६.

चेसटा—चेष्टा–चिट्ठा (चेहरा सुधा०) ११. ११.

चौँच-चञ्चु-चँचु-चूंच, चोंच; म० चोंच, चूंच, टोंच; गु० चांच, टोच; सि० चुंजि; पं० चुंज, का० चोंट; बं०, सि० चोंट; सिं० होट २३. ५४.

चोश्रा-च्युत-चुश्र-चुश्राने पर जिस से सुगन्ध निकले २. १६०; २०. १५.

चोख-चोच-चोक्ख-(श्रच्छा); गु० चोक्खुं; पं० चोक्खा; हि० चोखा, चोक्खा २०. २६.

चोट-घाव १५. २०.

चोपु-[√चुप्, √कुप् के संबद्ध पाली-चोपन-गमन] वेग-इच्छा २१. २४.

चोर-चौर; हि; म; गु, पं०, बं०, सि० चोर; का० चूर; सिं० होरा २. १२०, ११. ४४, ४६, ४८; १५. १४, २२. ६२, ७१, २३. ४, ५, १७६, १८०, १८३; २४. १.

चोरहि-चोर का २३. १८२.

चोरा-चोर (बहुवचन) १३. ५३.

चोरी-चोरी से, चोरी के लिये २५. ५८.

चोरू-चोर २४. १११.

चोला-[तु० सं० चोड] चोल-निचोल-चोलिया २०. २३.

चोवा-चोश्रा-च्युत १२. ३५.

छ.

छठएँ-छठवें-षष्ठे-छट्ठे (छट-षट् P. 211.) छटि-षष्ठी-छट्ठी गु० छट्ठी; २१. ५८; ३. १७.

छतर-छत्र-छत्त (√छ-√छि, गु० चत्रप, Satrap) २. १८४.

छतरपति-छत्रपति-छत्तपइ २. ११; २४. ११.

छतरहिं-छत्रों से-छाताओं से २४. १६.

छतरि-छत्री-छत्ती १. ४३.

छतिसउ ६. २७.

छत्तिस-छत्तीसों २०. १६.

छतीसउ-छत्तीसों २५. १६७.

छंद-छन्द [*Skandh-कूद] रचना-रङ्ग-रङ्ग के रूप धरना ६. ४३.

छपइ-छिपता है (छप्-छद्) ६. ३२; २४. १३६.

छपन-छप्पन २४. ११; २५. १०३.

छप्पन-छप्पन २. ११.

छपहिं-छिपते ८. ३२.

छपा-छिपा १. १२४, १८३; २२. ३४; २३. १२; २५. २७.

छपाइश्र-छिपाइये ७. २१.

छपाए-छिपाये से-(छिपाने से-पर भी) ८. ३२; २५. ११६.

छपाना-छिपता हुआ ५. ५५.

छपावउँ-छिपाती हूँ ८. २४.

छपावा—छिपाया ३. ६०.
छपि—छिप २. १६१; ४. २८; ६. ३२; १०. १८, ३२, ७५; २१. १६.
छपीँ—छिप गईँ १०. ३१.
छपी—छिप गई २१. १५.
छर—चर—खर—नाश २४. ८.
छरइ—खरइ—नाश के लिये २५. ८०.
छरहट—चरहट्ट—खरहट्ट (तु० छेवट्ट) मरने की बाजार २५. १०८.
छरहटा—नकल करने वाले—; चार (-भस्म) लपेटने वाले २. ११७.
छरहिं—छरते हैं; √चर्, चरन्ति (पृथक् हो जाते हैं—भाग जाते हैं, सुधा०; 'जो दलको छोड़ जायंगे वह जीते बच जायंगे' यह अर्थ उचित प्रतीत होता है) २४. ७, ८; २५. १०८.
छवउ—षप् (Indoiranian *Ksaps); प्रा०, पा० छ; हि० छ, छे, छह; का० पह, पिह (प्—ह P. 263); उ० छअ, छोह; बं० छय; वि० छ (अ); हि० छह, छे; पं० छि, छे; सि० छह; गु० छ (अ); म० सहा; सिं० ह, हय (अ), स, सय (अ); जि० पो(व); पडपि—छहों २. २४.
छवो—छओं २. १६०.
छाँड—छर्द—छड्ड—छांड—छोड़ता है [P. 291] ६. ७; १०. ५६.
छाँडइ—छोड़ता है—(छोड़ कर) ८. १८; २३. १७३.
छाँडि—छोड़कर ५. १४, २६; ६. ४०; २२. ४६; २३. १०.
छाँडिअ—छोड़िये १६. ४०.
छाँडहु—छोड़ो ८. ६८.
छाँनवइ—षण्णवति—छनवइ २५. १०२.
छाँह—छाया २. १६, २१, २३; १५. १६; २१. ६; २३. ८१; २४. १०२, १२०.
छाँहा—छाया—छाहा (छाईं—जले फूंस के पतंगे—*चाति—चायति—भाइ, भि-अइ, भीण—चीण P. 326) १. ७; २. २०; ४. २०, २७; (प्रतिबिम्ब) ६. १३; १२. २६; १५. ३५; २०. २, ५४; २४. १५१.
छाइ—छादित—छाइअ—छा २४. १६.
छाई—छादित हुई २. १६.
छाए—छादित किये हैं २०. १०.
छाज—सज्ज—छज्ज—सजता है १. ८, ६८; १६. १०.
छाजा—शोभित है १. ४१; अच्छा नहीं होता ८. १२; सोहता है ६. ४१; १०. १; ११. २५; २४. ६; २५. ५५, ६४.
छाड—छर्दयति, तथा क्षुणत्ति (—उद्वमन) तु० अवस्कर-शौच तथा करीप (गोबर), *Sqer—पृथक् करना; [तु० Lat. ex(s)cerns; mus(s)cerda; Ang.

Sax, *scearn*—थूकना, फेंकना, छोड़ना] प्रा॰ छड्डइ, छड्डइ; पा॰ छड्डेति; हि॰ छाँड़ना, छाड़ना, छोड़ना; पं॰ छड्डणा; गु॰ छांडवुं; सि॰ छंडणु; म॰ साँडणें; बं॰ छाड़िते; का॰ छुडुन (डर, चर); सिं॰ हेलनवा; आ॰ चार १२. ४५.

छाड़इ—छोड़ता है २४. २०, ८०, ८५; २५. ६६.

छाड़हिं—छोड़ते हैं ११. ४६.

छाड़हु—छोड़ दो १२. ६४.

छाड़ि—छोड़ कर १०. ८८; १२. २६, ५६, ६५, ७०; १३. ६०; १६. २६, ३०; २०. १०२, ११३; २१. ४६, ५६.

छाड़ेन्हि—छाड़इ का भूत १२. ६८.

छात—छत्र—छत्र २. १८०; १०. ११६; १२. २५, ४८.

छाता—छतरी [छद्+त्र] १२. ७.

छाते—छत्र २. ५३.

छानइ—छाणइ—छानता है १. ११८.

छाया—[प्रकाश और छाँह; *Skai से; तु॰ *(S)qait, केतु में; सं॰ श्याव; Goth. *skeinan*; Ohg. *skinan*, E. *sky*, *shine*; "प्रकाश और छाँह" इस अर्थमिश्रण के लिये तु॰ काल-कृष्ण, काला, 'नीलाकाश' तुषारीय, बादल। काल की वास्तविक अर्थपरिधि प्रकाशविरोधी अन्धकार, तथा उसके साथ संबन्ध रखने वाले, रात्रि, नवीन चन्द्र, मृत्यु आदि हैं। काल की दो व्युत्पत्ति संभव हैं; (१. अ) काल—कृष्ण *Qal (जिस के साथ संबद्ध है *Qel, जिससे बनते हैं कलंक, कलुष, कल्माष; Lat. *calidus*—दाग; *caligo*—तुषार); (आ) प्राभातिक तुषार, प्रभात से पहला अन्धकार, प्रभात, प्रातःकाल; (इ) सामान्य समय। इस प्रकार हम ने देखा कि एक काल में *Qal तथा *Qel दोनों का आदिकाल से संमिश्रण सा है। जिस प्रकार काल में अन्धकार तथा कृष्ण वस्तु में प्रतीत होनेवाली कान्ति का समाहार है इसी प्रकार छाया के अर्थ में छाँह और प्रकाश दोनों का समाहार है। सं छाया—छाँह; दूसरी ओर Ags. *heofon*; E. *heaven*; Ohg. *skinan*; E, *to shine* तथा *sky*. (तु॰ श्याम—काला किन्तु श्याव—भूरा) २. काल की दूसरी व्युत्पत्ति के लिये तु॰ सं॰ काल—संशार (—चितकबरा), Lat. *caerulus* (—नीलकृष्ण), *caelum* (—नील)] प्रा॰ छाही, छाया (—सौन्दर्य) पा॰ छाया; उ॰ छाही; हि॰ छाँह, छाँ, छाँओ, छाँव; बि॰ छाँह; पं॰ छाँ; सि॰ छाँव; गु॰ छाँय १. १८२; ६.

३६; २२. ४३, ६५; २३. ५१, ६४; २४. १२१.

छार–[तु० क्षायति–जलना; क्षार–जलन; Lat. cerenus–शुष्क, प्रकट] क्षार–खार–(भस्म)–मट्टी (क्ष–ख, छ P. 326) १. २४; १७. १०, १५; २०. ११८; २१. ४५, ५४; २३. १४५.

छारइ–भस्म ही २१. ४५.

छारहि–मट्टी हो १. २४.

छारा–छार–मट्टी–भस्म १२. ३४; १३. ६२; २३. ३७, ६६; २४. १५५.

छारी–छार–राख २१. ४.

छाला–छल्लि "छल्ली त्वक्" (दे० १२०, ८) [तु० वैदिक छवि √छो काटना; छाल–खाल; संभवतः √क्षल से, अर्थात् जो काटकर धोई जाय; क्षाल–खाल तथा छाल; देखो JB. 104, 149; √तु० छाल–छागल, गलोप P. 165, 231 के अनुसार] १६. ५३; २१. १२; २२. ३.

छावा–छाद्–छाव्–छाय–छादन (दलोप P. 165 के अनुसार) छाता है १. ४३; १५. ७४; २४. ११६.

छिटकि–छिटककर १०. ७०.

छिडकहिँ–छिड़कती हैं २४. ७३.

छिहुरि–छहर छहर कर-छटक कर ५. १५.

छीन–क्षीण–खीन–छीण १८. ४०.

छीपइँ–शिल्पते–छिप्पइ–छीपती हैं २०. २८.

छीपिनि–शिल्पिनी–सिंप्पिनी–छीँपन–(म० शिंपी, सिं० सिपि) छिंपी की स्त्री २०. २८.

छुअइ–छुपति–छुपइ; पा० छुपति; उ०, बं० छुं; प्रा० हि० छुह; ख० बो० छू; गु० छू, छो; पं० छुह; म० शिवरो १. ११६; ४. ३२; १०. १२०; (छुए) १६. ४६; १६. ४२; २०. ५६.

छुवत–छूते २३. १०५.

छुआवइ–छुआवे २४. ५२.

छुइ–छू १०. ११८.

छुदरघंट–क्षुद्रघण्टिका–छुद्दघंटिआ–घुंघरूदार करधनी–(क्षुद्र; प्रा० खुड्ड; पा० खुद्द; बं० खुडा; सिं० कुड, कुडु) [प्रा० छुद्द-छयूत–क्षुब्ध नदी] १०. १४२.

छूँछा–तुच्छ–चुच्छ–छुछ–छूँछ–छूँछा (दन्त्य-तालव्य, तु० चच्छइ त्यक्षति; तच्छइ–तक्षति, चिट्ठइ–तिष्ठति; विज्जझर–विद्याधर; चिच्चा, चेच्चा–त्यक्त्वा P. 216; H 175 [अथवा शून्य–खाली; (दुच्छून); √शू–√श्वि–फूलना, फूला–खाली; Lat. cavus–खाली; caelum, cav-i-lum–आकाशमण्डल; तुच्छ, तु० Lat. tesqua–त्यक्त स्थान] ५. १०; ७. २०; १६. ६; २३. २२.

छूँछि–खाली २३. ७२.

छूँछे—खाली ७. १५.

छुआ—छुप्-छुव; छुया (छूता है) ११. ३१; १६. २३; १८. ३६; २३. ७१.

छुट—छुद्-छुट-छुटकारा ३. ७६; ७. २; छूटा हुआ १०. १३३; १६. १४.

छुटइ—छुटने—√छुट छेदने; तु० हि० छुटना; पं० छुट्टणा; सिं० छुटगु; गु० छुटवुं; म० सुटणें ५. १६; ६. ११५.

छूटा—छूटता है ६. ४२, २५. १४.

छूटि—छूट २२. ६०; छूटा २४. ८३, १५४.

छूटिहिँ—छूटेंगे २३. २८, २६.

छूटिहि—छूटेगी २१. ५३.

छूटी—छूट गई १५. ७५.

छूटे—छुटइ का भू० ११. ३५; २३. ८६.

छेँका—घेर लिया हुआ० [तु० पा० छेक—चतुर, चतुरता करना, दूसरे को दबाना] १. १८८, २०. १२६, २३. २.

छेँकि—छेँक कर—शङ्कित करके—रोक कर २३. ७; २४. १०, ३३.

छेकिहि—छेकेगा—रोकेगा ७. १४.

छोटी—(तु० प्रि कोट—छोटा; फा० कोतह) ८. ३८.

छोडि—छोड़ दी २३. १०५.

छोडायइ—छुड़ावे २५. ४४.

छोडि—छोड़कर ४. २५; १०. ४; २५. १६२.

छोहारा—चौद्दहर—छुहारा २. ७८.

छोहारी—छोहारा २०. ४४.

ज.

जँभीर—जँबीरिय, जम्बीर—एक प्रकार का नींबू १०. ११८.

जँभीरा—जम्बीर ३. ४६.

जँभीरी—जम्बीर २. ७४. २०. ४३.

जइ—जय—जीत २५. ३२.

जइफर—जातीफल—जायफल २०, ४४.

जइमाला—जयमाला २३. १२५; २५. १७१.

जइस—यादृश—जैसे (तु० तइस—तादृश; कइस—कीदृश P. 81; ह—इ P. 235) १. १२४; ३. २४; ५. ३८; ८. ४१, ४६; १०. १६०; ११. २६; १२. ७६; १३. ८; १५. ६६; २०. ८३; २१. १४; १५, ४६; २२. ११, ६५; २३. १८४.

जइसइ—जैसे १४. १८; १५. ४६; २१. ३६; २३. ७४, १८०.

जइसे—जैसे २. १४५.

जउँ—यदि० जइ, गु०, सि०, पं० जे; हि० जो १. ७४, ८४, १२३, १३४; २. २२; ३. ५६, ७०, ७३; ४. ४३, ४८, ५५; ५. ३६, ४६; ७. १४, ३८, ५६, ६६; ८. ८, १७, ४०, ६८; ६. ३७, ४२, ५६; १०. ११७; ११. ५६; १५. ३८; १६. ४, ११; २०. १०६; ११५; २१. २०, २२, २६; २२. १६, २८, ४०, ४४, ५०,

६२, ६६, ७५, ७७; २३. १७, २२, २४, २८, ३३, ३६, ४५, ४७, ६१, ७२, १२२, १२६, १३८, १६५, १६८; २४. ६, २३, २६, २८, ३१, ४२, ५४, ५६, १०१, १०३, १०७, १३६, १४४, १६०; २५. ८५, ८८, ११४, १२२, १५६.

जउँन—यमुना—जउणा, जउणए, जमना, जमुना १. १२०.

जउँहि—यदि, सचमुच (जउँ यावत्; प्रा० जाम, जाउं, जामहिं; तावत्; ताम, ताउं, तामहि; पा० याव, ताव) २३. १२; जैसे ही, ज्यों ही २५. २५, ११६, ११७.

जउ—यव—जव—जौँ २३. २५.

जउ—यदा (यदि—जइ)—जव २. १२२, १४७; ४. १२; ५. २, ४, १८; ७. ६३; ६. १६; ११. ४०, ४२; १२. ३६; १४. १४; १७. ६; १५. ५६; १६. २, ५; २०. ११६; २४. ५६; २५. १५३; यदि ११. ५३; १२. ३८, ८३, १००; १३. १५, १६, ३०, ३४, ३६, ६२; १५. १, २२, ३०; १६. ३२, ३३, ४०; १७. १२, १३; १८. ४२; १६. ६०.

जउनहि—जौन—जो; य+एव+नु+हि सु० १३. ४४.

जउहीँ—ज्योँ ही, जैसे ही १५. ४७.

जग—जगत्; गम् का अभ्यास; जग्रं; अप० जगु; हिं०, म०, गु० जग; सिं० जगु; पं० जग्ग; सिं० दिय १. ६७, ७०, ८३, ८७, ८६, ६१, ६५, १०२, १०४, १०६, १२३, १२४, १२७, १२६, १३३, १३६, १४६, १६२, १६३, १७६; २. १५, १६; ३. १५, २०, ४२, ४५, ४८; ४. २७; ७. ७०; ८. ५; ६. ६, ५०; १०. १७, ३०, ३७, ६४, ८६, १०७, १०६, १३८, १५२, १६०; ११. १८, ५३; १२. ५७; १३. ५०, ५१, ५५; १५. २६; १६. ४, ८; १८. ४८; २१. ६; २२. ४४; २४. ८७, ८८, १५६; २५. २८, १३०.

जगत—जगत् (√गम् का अभ्यस्त प्रयोग)—संसार १. ३४, ४०, ७५, ८३, ८७, ८८, १०४, १२१, १४४, १४७; २. १४०; ७. ३२; ८. ८, ११; ६. १६; १०. ५६, ६३, ६६; १३. ४६; १५. २७; १६. ४८; २०. ४, १११; २२. १६, ३१; २४. १३, ४६, ८४; २५. १५१.

जगमगाहिँ—जगमगाते हैँ २. १५३.

जगमारन—जगत् को मारने वाला १०. २४.

जगसूर—जगच्छूर संसार मेँ वीर १. १२१.

जग्ग—जग्य, यज्ञ, जग्ग, शौ० प्रा० जंज; पा० यञ्ञ; उ० वं० जाग (अ); प्रा०

छूँछे—खाली ७. १५.
छुआ—छुप्—छुव; छुआ (छूता है) ११. ३१; १६. २३; १८. ३६; २३. ७१.
छूट—छुट्—छुट—छुटकारा ३. ७६; ७. २; छूटा हुआ १०. १३३; १६. १४.
छूटइ—छुटने—√छुट छेदने; तु० हिं० छुटना; पं० छुट्टणा; सिं० छुटणु; गु० छुटवुं; म० सुटणे ५. १६; ४. ११५.
छूटा—छूटता है ६. ४२; २५. १४.
छूटि—छूट २२. ६०; छूटा २४. ८३, १५४.
छूटिहिँ—छूटेंगे २३. २८, २६.
छूटिहि—छूटेगी २१. ५३.
छूटी—छूट गई १५. ७५.
छूटे—छुटइ का मू० ११. ३५; २३. ८६.
छेँका—घेर लिया सुधा० [तु० पा० छेक—चतुर, चतुरता करना, दूसरे को दबाना] १. १८८; २०. १२६; २३. २.
छेँकि—छेँक कर—शक्ति करके—रोक कर २३. ७; २४. १०, ३३.
छेकिहि—छेकेगा—रोकेगा ७. १४.
छोटी—(तु० प्रि कोट—छोटा; फा० कोतह) ८. ३८.
छोडि—छोड़ दी २३. १०५.
छोडायइ—छुड़ावे २५. ४४.
छोडि—छोड़कर ४. २५; १०. ४; २५. १६२.
छोहारा—चौहरा—छुहारा २. ७८.
छोहारी—छोहारा २०. ४४.

ज.

जँमीर—जँबीरिय, जम्बीर—एक प्रकार का नीँबू १०. ११८.
जँमीरा—जम्बीर ३. ४६.
जँमीरी—जम्बीर २. ७४. २०. ४३.
जइ—जय—जीत २५. ३२.
जइफर—जातीफल—जायफल २०. ४४.
जइमाला—जयमाला २३. १२५; २५. १७१.
जइस—याहश—जैसे (तु० तइस—ताहश; कइस—कीदृश P. 81; ह—इ P. 245) १. १२४; ३. २४; ५. ३८; ८. ४१, ४६; १०. १६०; ११. २६; १२. ७६; १३. ८; १५. ६६; २०. ८३; २१. १४; १५, ४६; २२. ११, ६५; २३. १८४.
जइसइ—जैसे १४. १८, १५. ४६; २१. ३६; २३. ७४, १८०,
जइसे—जैसे २. १४५.
जउँ—यदि० जइ; गु०, सिं०, पं० जे; हिं० जो १. ७४, ८४, १२३, १३४; २. २२; ३. ५६, ७०, ७३; ४. ४३, ४८, ५५; ५. ३६, ४६; ७. १४, ३८, ५६, ६६; ८. ८, १७, ४०, ६८; ६. ३७, ४२, ५६; १०. ११७; ११. ५६; १५. ३८; १६. ४, ११; २०. १०६; ११५; २१. ३०, ३३, ३६; २२. १६, ३८, ४०, ४४, ५०,

हि॰ जजन, जज्ञ; जग, जग्य; हि॰ जाग, जग; पं॰ जग्ग; सि॰ जगु; म॰ जाग; अवे॰ यस्न; पह॰ यस्न; फा॰ इश्न १. १३५.

जंगम–घूमते फिरते संन्यासी, ये प्रायः वीर भद्र (दक्ष के यज्ञ का विध्वंसक) की उपासना करते हैं २. ४५.

जंघ–जङ्घा; हि॰ जाँघ; पं॰ जँग, जाँघ; गु॰, सि॰, पं॰ जंघ; नै॰ जाङ॰; स्नि॰ चंग (टाङ्ग); सिं॰ दंग (पिंडली) १०. १४५.

जजमाना–यजमान (√यज्–यक्ष; पह॰ यस्तन्) ७. २६.

जजु–यजुर्वेद (अवे॰ यसुश्-महान्)१०.७७.

जटा–(*Ger-ta; जटाजूट; जूट–चूड VWI, p. 593) जट, जटा–बँधे बाल; म॰ जट; गु॰, हि॰ जटा; पं॰ जट;गु॰, पं॰, हि॰, बं॰, जड; सि॰ जोइड–(मूल) १२. २; २२. ४.

जत–यावत्–जत्ति–जितनी २५. २०.

जती–यती–संयमी (√यम्; प्रायः जैनों में होते हैं) २. ४५; ३. ४८; ११. ३०; १३. १०; १८. ४६; २१. ४७; २३. ६२.

जन–जण–मनुष्य (*Gene; तु॰ Lat. *genus*, Eng. *kin* (=जाति); अवे॰ ज्न; जइनि (स्त्री); इत्यादि; का॰ ज्न, जन, ज्ञिन, यन; मरि॰ झिन, घिन; ७. ४६; २३. ८; २५. ११६.

जनउँ–(√ज्ञा) जानता हूँ ४. ६०; १०. १५१; १६. ६०; २०. ६०; २२. २८; २३. ७, ४०; २४. ३४; जानौं मानौं २. ६४; ७. ६८; १०. १२५; ११. ८, १७; १६. १.

जननी–उत्पादि (स्त्री); जनित्री; पा॰ जनेत्ती; Lat *genitrix*; माता ६. २.

जनम–जन्म–जम्म; (तु॰ वै॰ जनिमन्) १. ८६; २. १४६; ३. १६, १८, १६; ४. १६, २३; ७. १३; ६. ५५; १४. १६; १८. ४८.

जनमपतरी–जन्मपत्री ३. २५.

जनमहु–जन्म भर १. १३४.

जनमा–उत्पन्न किया (तु॰ Lat. *genui* (उत्पन्न किया); As *cennan* (उत्पन्न करना); As. *cynn*, Eng. *kin* (वंश) As. *cyn-ing*; Eng. *king* (राजा) ६. २.

जनहुँ–जानों–जाने २०. १२८; २४. ६८, १०८.

जना–उत्पन्न किया [सं॰ जनति सकर्मक, जायते अकर्मक; *Gene और *Gne उत्पन्न करना; तु॰ Lat. (g) *nātus*; *gigno*, *natura*, *natir*, Goth. *kno-ths* तथा *kunths*; Cymr. *geni*; Ags. *cennan*; Ohg. *kind*] १.५२.

जनि–न आतु–नहीं, मत; [आतु–जानातु

(जानो); Lat. *credo*; मन्ये; Fausboll के मत में जातु–जायतु–होवे; प्राय: निषेध में 'न जातु'–जातु न= जा+न–जनि] ८. ४८; ६. ४६; १२. २६; २३. ४८, ८५; २४. २२, ११५, १५७, १६०; २५. ११; २२. ५५.

जनु–जानो २. १३, १७, ६२, ८८, ६०, ६६, १२१, १२६, १३३, १६२, १६४, १७६, १७७, १६०; ३. ३६, ४४, ४६; ४. २, २७; ५. ८, ११, १२, ३१; ६. ३५, ३८; १०. ११, १२, १३, २२, २५, ३६, ६५, ६६, ८०, ८४, ६०, ६७, ६८, ६६, १००, १०८, ११४, १२१, १२६, १३०, १३१, १३४, १४२, १५४; १४. ३, ४; १५. ३, ५, ४२, ४८; १६. २, ६, ८; १८. १०, ५१; २०. ५५, ७२, ८५, ८६, ६१, ६२, १२४; २१. ११, १७; २२. ६; २३. ८१, १६४, १७४; २४. १५, ७५, १५४.

जनेऊ–यज्ञोपवीत–जयणोवईय, पं० जंजू; सि० जणयो; गु० जनोई; म० जानवें, जानू, जानहवी, जानहवें ७. ४७.

जप–जाप–जाव १३. ५०.

जपमाला–जप करने की माला १२. ६.

जपा–जप करने वाले (जप द्वारा देवता को मनाने या वश में करने की इच्छा वाले) २. ४३; जप २५. ४; जप किया २५. ३३.

जब–यदा १. १२०, १५६; ३. ६०; ४. १८; ५. २०, ४८; ७. २५; ८. ५०; ११. २८, ४८; १२. १०; १४. १०; १८. ३२, ४६; १६. ८, ७२; २२. ४८; २३. २; २४. ४१, १२०; २५. १४६.

जबहिँ–जब ही २. १३६; ५. ४३; १०. ३८.

जबहि–जब ही १. ११३; २. १७.

जम–यम–यमराज १६. १८; २१. ३८.

जमकात–यमकाख–जुड़वाँ (–दोहरे) ग्रख; अथवा यमकात–यमकर्त्तरी–यम की कैंची [तु० सं० कर्त्तरी अथवा कर्त्तरिका; मरा० कातर अथवा कात्री; गु० क़ातर; सि० कतर; पं० कट्टर, कती, कैंत; छि० क(इ)ती; फा० कइची (हि० कैंची) हि० कतरनी; उ० कतुरा; सिं० कतुर; दे० कट्टारी (JB. 47, 114); तु० री ग्रार्तकई (चाकू); परतो चाइकइ; प्रा० फा० कार्दे (√कृत) तथा री० काली (चाकू); परतो चाड़ √*कर्त्यो–फ़ा० क़ार्द] १६. १८; २१. ३७.

जमाइ–जमा कर १५. १८.

जमुआरा–यमालय ३. २३.

जंबुदीप–जम्बूद्वीप–भारत (देखो जातक १. २६३) २५. ८३.

जंबुक–(√जम्भ्) जम्बुक–सियार २४. ६

जंबूदीप—जंबूद्वीप २. ६; ३. २३; १६. १५; २५. ६३, १५७.

जयमाला—√जि, सकर्मक जीतता है; अकर्मक—जीता जाता है, बूढ़ा होता है; तु० जीरति, जरा *Gera—पीसना, जीतना; जब अकर्मक तब 'जीर्ण होना' तु० Lat. *granum*, Goth. *kaurn*, E, *corn*—नाज] १६. ५७.

जर—जड़ २३. ६६; ज्वलति २५. १०४.

जरइ—ज्वलति; अप० प्रा० जलइ (P. 297) पा० जलति; [तु० हि० उ० झलकना; सि० झलकणु; गु० झलकवु; म० झलकणें इत्यादि] १५. २२, २५, २८; १८. ४४, ५२; १६. ४६, ५०; २१. ४६, ५१, ६३; २२. १०, ५४, ५६; २३. ६६, १०६; २४. १०५, ११८

जरउँ—जलता हूँ [√ज्वल—√ज्वर्—गर्म होना; पा० जलति; Obg. *col-coal*, Colt, *gual*] २१. ६, ४७; २२. १०.

जरत—ज्वलति—जलता है १३. ४१; २१. ७, ५२; २५. १४२.

जरतहि—जलते ही २१. ६३.

जरत—जलना २२. २३.

जरम—जन्म ८. ६४; २१. २६; २२. २३, ३७, ५०; २४. १४०; २५. ८.

जरहिं—जलते हैं २१. १२; २३. ७१, १०७.

जरहु—जलते हो २२. ७.

जरा—जला ६. ५; १०. ८३; ११. ५५; १५. ३१; १६. १४; १८. ८, ४५; २१. ५६; २३. ५५, ७६.

जराइ—जला दिया १५. ३७.

जराउ—जटित—जड़ाऊ २. १०६.

जरि—जल कर १६. २२; (—जाइ=जल जाय) १६. ४२; २३. ५५, ६८, ६६, १०६, १०६, ११०, १४५.

जरि—जड़ १. १२.

जरिआ—जटक—जड़िया १६. ३८.

जरिहि—जलेगा २१. ५३

जरिहिं—जलेंगे २१. ५२.

जरी—जल गई १५. २६.

जरी—जड़ी २४. १३०.

जरे—जले २१. ६२.

जरे—जटित—जड़े २. १२६, १६०.

जल—[संभवतः गल—बुन्द के साथ संबद्ध] पानी १. ३, १२०; २. ४६, १४४; ४. ४०; ८. १०; ६. ३६; १३. ८; १५. ७०; १६. ४३, ६४; २१. ६; २२. ३६; २३. ८४, १११, १४२; २४. ४७; २५. १४२.

जल-उदधि—जल का समुद्र १३. २४.

जलहि—जल को १८. ३६.

जलभेदी—जल के भेदी २. ७१.

जवुँना—जमुना—यमुना १०. १२, १४.

जस—जैसा १. ५७, ६७, ११३, १६६, १६३, १६८, १८६, १६१; २. २५,

२६, ३१, ७२, १४८, १६४, १६६, १८४,१६२; (जैसा जैसा=ज्यों ज्यों) ३. ६, ७, ५३, ५६; ४. २४, ३६, ६३; ६. ५, ६; ८. ३६; ६. १, २३, ३२, ५६; १०. १६, १४५; ११. १८, ५०; १२. ५१, ८०, ६६; १३. ४४, ६४; १४. १, २४; १५. ६, ३७, ४५, ६५, ६६, ७२; १६. ६, २८, ४८; १८. १४, १७, २३, ४०, ५०, ५२; १६. २७, ३२, ३४, ५०, ६८; २०. ८१, १०५; (जैसे ही) २०. १२३, १३५; २१. ६, ४७; २२. २०, ४६, ५३, ७१, ७२, ७४; २३. ४, २२, ११३, १४२, १४८, १४६, १५२, १५८, १७३, १७६, १८१; २४. ७, ४७, ५६, ६२, ६३; (जैसे ही=ज्यों ही) २५. ५, ६७, ११५, १६८.

जस—यशस्—जस—चमकीले १०. ४५; जसि=जैसी ३. २; २४. १००.

जहँ—जहाँ १. १३, ५२, (Gᴅ.) ७६, १४३, १५८; २. ३, १५०, १७६; ३. ५८; ५. ७; ६. ३८; १०. ७०, १५६; ११. ६; १४. २३; १५. ४, ८; १६. १८, ६५; २०. ३१; २१. १७, ५६; २३. ३०, ३१, ६०, १७०; २४. ४०, ११२; २५. १, ६, ३५.

जहवाँ—जहाँ ११. १६; १२. ४४; २३. १०१; २५. १२७.

जहाँ—यत्र १. ३६, ५३; ३. १६; ४. १६, ६२; ५. २४; ७. ५२, ५८; ८. १५, २३, ३६; ६. २, ४; ११. २१; १२. १६, ३५, ६४, १०१; १३. १६, २३, ३६, ५२, ५६, ६३; १४. ८; १६. २७, ४१; १८. ६, २८; २०. ५६; २१. ४०, ६०; २३. ७३, ७५, ७७, १२०, १६८; २४. २, ४, ६, २०; २५. ८, १६, ४१, ४८, ५२, १२०, १३४, १५६.

जहाँगीर—पदवी विशेष १. १४४.

जाँघ—जङ्घा [*Ghengh—चलना; तु० जंहस्, जङ्घा; अवे० ज़ंग—टखना; जघन (देखो Schmiedt, KZ. 25. 112, 116); Lith. *zengiù*, *zengti* चलना; Goth. *gaggan*=to go; Ags. *gang*=घूमना इत्यादि; देखो VWI, p. 588] २. १२३.

जाँत—यन्त्रपट—चक्की के पाट १४. २०.

जा—यः—जिस १. ८, ७१, १४२; २. ६२, ८६; ३. ३०; ५. २१; ८. २१; १०. २५, ४३; १२. ६१, ७१, ८०; १३. ३२, ४६; १५. ७२; २०. १०४, ११२; २१. ३१; २२. ७६; २३. ६२, ६८; २४. २६; २५. १२, ६४.

जाइ—जाकर—प्रयाय १. १०६; ३. २३, ६१; ४. ६; ५. ३; ६. ७; १२. २३;

१३. ६; १६. ३०; १८. ५३; १६. २८, ५०; २०. ६५, १२१; २१. ६०; २२. २१, ६६; २३. ८, ४१, १७०; २४. १५६; २५. ४८, ५२, ११८, १५७; आता है अथवा जाती है १३. १, २१, (सूझा जाता है) ४४, ५६; १४. १६; १५. ४०; १६. २३, २५; १८. २१, ३४; १६. २०, ४५; २२. ५६; २३. ३०; २४. ३१, ७८, ६२; २५. ८४; जायगी २३. ३२; जाय १. ६१, ७७, १२३; २. १२३, १२५, १२७; ३. २, ७०, ७३; ८. २६; १०. ३२; ११. ७, २६, ३०, ३७; १३. २३, ३१; १८. २८; १६. ४२; २०. १३५; २२. १०, ६३, ७४; २३. ५५; २४. २८; २५. ४०; जाया=जाना १२. १६.

जाई—जाकर २. १७; ८. ३१; १६. ३०; २४. १५०; जाय २. १२४; ३. ७७; जाना ३. ५४; ८. ६१; १०. १११; ११. ५; १८. ४६; २४. १४३; २५. ४५.

जाइफर—जाति; आइ; हि० जायफल; पं० जायफल; गु० जायफल; सि० जाफुर; सिं० दापल २. ३२.

जाइहि—जायगा १३. ५६; २३. २५.

जाउँ—थानि—जाउँ ६. १६; १२. ३६; २३. २०; २४. ४०.

जाउँनि—जम्बु, जम्बुल=जामुन, जाम्मण; पं० जंबु; म० जाँब, जाँभ, जाँभूल; गु० बं० जाम; सि०, भा० जामु; सिं० दंब २. २७.

जाउ—यात—जाओ २४. २२.

जाऊँ—जाता ३. ६६; ८. ५५; २५. ३५.

जाऊ—जाय ६. ६; १३. ३८.

जाए—जाय १०. १८; २०. १२७; २३. १७५; २४. २२; २५. ६३, १४६, १५६.

जाएस—जायस नगर १. १७७.

जाग—जागृहि—जागो [—जाजर्ति *Ger तथा *Gerei, तु० Lat. *expergiscor* (**exprogriscor*) देखो जागर्ति; पा० जग्गति; प्रा० जग्गइ; ड० जागना; बं० जागिते; सि० जागणु; गु० जागहं; म० जागयें] ११. ४८.

जागइँ—जागने से २३. १२६.

जागइ—जागता है १३. ४; १८. ६.

जागसि—तू जागता है २३. १२५.

जागा—जागइ का मूल ११. १७, ४६; २०. १०६; २१. २; २२. ३५; २३. ५६, १२६, १६२.

जागि—(—उठेउँ=जाग उठा) २०. १२८; जागकर २३. १५४.

जागु—जागता २. १४३.

जाड—(जड) जड़ा जाड़ा २. २०.

जात—जाते हैं २. १६२; जाता है २०. ८०; २३. ७२.

जातरा-यात्रा-जत्ता १६. ४८; २४. ५०.

जाति-[√जन् *Gonē; तु० अवे० झात; Lat. *nātus* (oog-*nātus*); Lat. *gens*; Goth. *kind-ins*] वर्ण का उपभेद १. ८८; ७. २२; २५. ८, ६, १०, ७८.

जातिहि-जाति ही ७. २२.

जाती-जाति-जाइ ८. २७; २०. १४.

जान-[वै० जानाति √ज्ञा-*Gonē तथा Gnē; तु० Lat. *nosco*, *notus*, (*i*) *gnarus*; E. *ignorant*; Goth. *kannan*; Ohg. *kennan*; Ags. *knawan*; E. *know*-जानना] प्रा० जाणइ; अप० जणु; जणि (इव); हि० जानना; म० जाणणें; गु०, सि०, पं०, उ० जाण-; हि०, बं० जान-; का० ज़ान-; सि० जन-; सिं० दन=ध्यान; हि० जानो, जाने=इव; गु०, पं० जाण; का० ज़न इत्यादि] जानता है ११. २; १३. २८; २३. ६६, ८४; २४. १३५; जाने (संभावना) ८. ३७; ८. ५४; जान=जाने (न दीजिये) १८. २८.

जानइ-जानता है १. ४७, ६५, ७१, ७२; ३. ६२; ७. ६३; ११. २, ४०; १२. १२; १५. २३; १६. ८; २०. ८८; २३. ११४; २४. ४५.

जानउँ-जानता हूं १७. ८; २१. ३८; २४. ४५, ५०; जानो २. २४, ५५, ६६, ११०, १२८, १७८; ३. १०; ४. ३४, ३७, ५३; १०. १०, २१, ३५, ५८, ८३, १०५, १०६, १०७, १११, ११७; ११. १, २४; १२. ७२; १५. ४४, ६८; १६. ५.

जानत-जानते हैं २४. १८.

जानति-जानती २३. ११५.

जानसि-तू जानती है १८. ३०.

जानहिं-जानते हैं ११. ३५; २४. ६६.

जानहि-जानता है ७. ३७.

जानहुँ-जाने-जानो १८. ८; १६. १; २०. १०, ७०, ७१, ८४, ८६; २२. १८; २३. ७८, ८३, १०५; २५. २६, ८८, १४२.

जानहु-जानो ८. ४८; १६. ३६; २४. १५७.

जाना-[√या; याति; प्रा० जाइ; म० जाणें गु०, सि० ज-; पं०, हि०, बं० जा-; उ० जि-; का० यि; देखो Gn. Paiś. Lang. p. 119] जा १२. १८, ८२; १३. १६; जाना हुआ १. १३८; जानता है ८. २८; जानइ का भूत २. १५६; ४. ४८; ५. ४५; ८. ७; १२. ४७; १६. ३८; २१. २४.

जानि-ज्ञात्वा-जानकर १. ७८; ३. ६४; ७. १०, ३२, ६१; ८. ४४; ११. ५२; १३. ३८; १८. ८७; २५. ७२.

जानी-जानें १३. ४८; जानइ का भूत

१. १७०; २०. ८१; २५. ६५.

जानु—जानता है १. ६६, ७०, ७१, ७२; ३. ६२; २३. ६८; २४. १४६; जानौं २. २८, १६३; १०. ६, ४१, ६८, १००; १४. ६; १५. ६७; १८. २; २०. १२६; २३. ६६.

जाने—जानता है २. १७०; १२. ६०.

जानेउँ—जानता हूँ १०. १६०; जाना था १८. २०; २३. ८२.

जाप—जप—जब १६. ४७.

जाव—आऊँगा १२. ४०.

जाम—जमइ—जमता है १५. १६.

जामा—जन्मा १३. ५; २३. ७७.

जामि—जम कर ३. २१.

जार—जाल; [संभवतः जट (=फाँसना) से; तु॰ फुल=स्फुट; चाड=चाटु; चेल= चेट] सि॰ जारु; का॰ ज़ाल; सिं॰ दल; गु॰ जाळुं (तागा), म॰ जाळॅ (तागा) ५. ३६.

जारई—जला रहा है २४. ७२.

जारहिँ—जलाते हैं—तपाते हैं—सुखाते हैं [ज्वल्-प्रा॰जल; हि॰ जर, जल] २. ४८.

जारा—जारइ—जलाता है १५. २३.

जारि—जला कर २१. ४८.

जारी—जला दी १६. ४६; २१. ५७; २३. १११.

जारे—जलाये हुए २४. ७२.

जावँत—यावन्तः—जितने १. ३४, ७५, ७६, १२१; २. ४०, १८८, २००; ५. ६; ११. १०; १२. १८; २०. ३, ७१; २५. १२५.

जासु—जिस को (जिस से) २५. ६०.

जाहाँ—जहाँ १२. ६२.

जाहिँ—जाते हैं ६. ३२; १०. ४५; ११. ४८; १२. ८८; २३. ८; २४. ४, ७.

जाहि—जाता है ७. ३६.

जाहीँ—जाते हैं १. ११०; २. ६१, ६५, १०७; ३. ३१; १०. ७५, ६१; १४. २; १५. ६५; २१. ५४.

जाही—जाति; जाइ; म॰, गु॰ जाई; सि॰ जा॰, सिं॰ दा २. ८६; ४. ५.

जाही—जिसे—२५. ८७.

जाहु—जाव—जाओ १२. १६; १८. ४८.

जिअ—जी—जीव-मन; हि॰, पं॰, गु॰, म॰ जी; सि॰ जीउ, जी (तु॰ Lat. *vicus*= जीवित) ८. ५६; १५. ३५; २५. १५०.

जिअइ—जीवति; जिअइ, जीवंत—; हि॰ जी—; म॰ जियँ; गु॰; पं॰ जीव—; सि॰ जि—; बं॰ जि—; का॰ जुव—; सिंस॰ जिव—; अवे॰ जवइति=जीता है १. २७, ५८; २३. ११७.

जिअउँ—जिऊँ १३. १६; २५. ४६, १४६.

जिअत—जीते—जीवन् २१. ३१; २२. ८, ६४; २५. १८.

जिअतहिँ—(Gb.) जीते ही २२. ७८.

जिअतहि—जीते ही १३. ६४.

जिअन–जीवन–जीवण १. २१, १०२; २. ७०; १५. ५६; २२. ८०; २४. ३४.

जिअना–जीना–जीवन १. ३८.

जिअहिँ–जीएं २४. १६०.

जिआइ–जिला कर २४. ११०.

जिआवा–जिलावे २४. ४४.

जिउ–[जीव; *guiuss–Lat. *vivus*; Goth. *quius;* Ogh. *queck;* E. *quick;* Lith. *gyvas*] जिअ=जीव, जीवन, जान १. १, ५६; २. १०६; ३. ७२, ७७, ७६; ४. १५; ५. २, ३, ६, ११, ५७; ७. ३४; ८. ३; ६. ६, ३६, ४७; ११. ५, ७, ८, १४, २२, २३, २७, ५६; १२. ४५, ७१; १३. २३, ३१, ४७; १४. २०; १५. १, २१, ५६; १८. ३५, ४३; १६. १, २८, ६६; २०. ७४, ८४, ८८, १००, १०२, ११२, ११५, ११६, १२०; २१. १६, ३८; २२. १४, २७, २८, ३२, ४७, ५६, ६४, ७१; २३. ११, ४२, १०४, १२७, १४६, १५१, १५३, १६८; २४. ४, २२, ३४, ३६, ४२, ५५, ६८, ७६, ६४, ६५, ६६, ६८, १४०, १५८, १६०; २५. १६, २२, ४८, १५०.

जिउइ–जीव (जी) में ३. ८०.

जिउलेवा–जीव लेने वाला ५. ५२.

जिएँ–जीव; जीव के २०. ११६, ११७, ११८, ११६; २४. २७.

जित–जितने–यावन्तः २०. ६०.

जिता–जित; जिअ=जीता; म० जिंकणें; सि० जीत–; का० झेन–; अवे० झित (बढ़ गया; तु० Lat. *vis* *gvis शक्ति; तु० ज्या=धनुष की डोरी) २२. ३८.

जिति–जीत कर २३. १४४.

जिन्ह–जिन २. १७६; १२. ४७; १३. ५६; १५. २८; १६. ४६; २१. १३, ३२; २३. १७८; २५. ११, ६१, १२६.

जिमि–जेम–जैसे–यथा १५. ३२; १८. २६; १६. ८; २३. १४०; २४. ६६.

जीअन–जीवन–जीवण–जीअण २. १४४; ११. २३; १३. ४६, ६४; २४. ४७, ८२.

जीआ–जीअइ का भू० [जीवति; तु० जिनोति–जिन्वति; *Guoiē; Lat. *vivo;* Goth. *ga-quiunan;* Mhg. *quicken;* E. *quicken*] २. १४७; १६. ७१; २३. १६६; २४. ३, ३५, ५४.

जीउँ–जीवे जीव में २५. ६४.

जीउ–जीव १. ५८; ३. ६६; ७. ५०; ६. ४२; १०. १०४, १०६, १११; ११. ४, २०, ३५; १२. १२, ६१; १३. २५, ५८; १५. १८; १६. ३६; १८. ३३, ४८; १६. ४६; २०. १२०; २२. ८, ३०; २३. ५, २१, ७२, ७६, १२८, १३०, १६०, १८०; २४. ५१, ५३, ७७, ६१, १११, १२२, १३५, १३६,

जूझा–युद्ध किया १०. ८५; २४. १८, २८.

जूझि–युद्ध करके २२. ६६; युद्ध २४. २६.

जूझू–युद्ध २५. १०७.

जूझे–जूझने से २३. ४४.

जूरी–जूड़ी–जुड़ी २. ६४; (रस्सी के आकार के अंकुर, सु०) २०. ४५.

जूह–यूथ, समूह २५. ११४, ११६.

जूही–यूथिका; म० जुई; गु० जुई, जूई; हिं० जुही, जूही (पुष्प विशेष) २. ८६; ४. ५.

जेंवा–जीमा–भोजन किया ३. ७१.

जे–ये–जो; गु० जे; पं०, सिं० जो; म० जे, जें (JB. 206) १२. ८८; १३. ६४; २०. ७१.

जेइँ–जिन्हों ने २६. ३२; २४. २८, ३६; जिसने २५. ५६, १५०.

जेइँय–जेवँते हैं–खाते हैं ११. ३४.

जेइ–जिसने १. १, ८५, ८६, ८७, १२६, १३५, १५६, १८४; २. २३, १०३, १५२; ६. १; ७. ५१; ६. ६, ५०, ५४; १०. ८३; १२. ६७; १३. २६, ३१; १४. १३; १५. ६२; २०. ७६.

जेठ–ज्येष्ठ [ज्या (√जि–शक्ति) का तमबन्त] जेट्ठ–जेठ; सिं० जेठु; का० झेठ २. २०.

जेत–यावत्–जेत्तिअ, जेत्तिल–जितना १७. १५.

जेते–यावन्तः; प्रा० जेत्तिल (म० जेती, जेतुलां; गु० जेटलो; सिं० जेतिरो, जेतरो; पं० जिती, जितना, जितला, का० युत, बं० जत, उ० जेते) ११. १४.

जेहिं–जिनकी २४. ८.

जेहि–जिस (से, का, को, के) १. २०, २७, ३३, ४१, ४२, ४८, ६८, ६६, १०५, १५२, १५३, १५४, १८२; २. २, ६४, ८८; ३. १६, ६३, ६८, ६६; ४. ५४; ५. २१, २२, ३५, ४१, ४७, ५६; ७. १४, १८, ५२; ८. १०, १३, २४, २६, २७, ४०, ५२, ५५, ६१, ६२; ६. २०, २८, ४७; १०. ६, ६८, ७६; ११. २, १६, ४७, ५५; १२. ८, ११, १६, २७, ५२, ६६, ८०, ६८; १३. ५, ८, १४, २५, २८, ३६, ४७; १४. ११, १२, १७, २४; १५. २, ७, २१, ३५, ५१, ५८, ६०; १६. ३४, ४०, ४८; १७. ८; १८. ४३, ५३; १६. ८, १६, ३२, ४८, ५१; २०. ४०, ४६, ५६, ८०, ८७, ८८, १०४; २१. २०, २३; २२. ७, २४, २६; २३. ३२, ३७, ४०, ६७, ११५, ११६, ११७, ११८, ११६, १५३, १६५; २४. २७, ३६, ४६, ५०, १३०; २५. १७, १८, ३४, ३६, ६१, ६६, ६७, १२८, १४७, १५५, १७६.

जो–यः, यत् (सर्वनाम); प्रा० जो; गु०,

उ० जे; सि०, पं०, हि० जो; बं० जे, जिनि; का० यिह; सिं० यम–, १. २६, २७, ३८, ४०, ४३, ५५, ५६, ५६, ६५, ६६, ७२, ८०, ८६, ६१, ६२, ६५, ६६, १०१, १७५, १७६, १८०, १८४, १६१, १६२; २. २, १०, ३१, ३५, ७२, ७३, ६१, १२०, १२५, १३६, १४०, १४२, १४४; ३. १, ३, ८, १४, ३५, ५७, ६३, ६७, ७१, ७२, ७७, ७६, ८०; ४. १२, २३, ६२, ६४; ५. ५, १०, २१, २६, ४७, ७. २१, २४, २६, ३५, ३६, ५३, ५४, ५६, ६०, ६२, ६८, ७१, ७२; ८. १, २८, ३०, ३६, ४२, ४५, ४६, ५१, ५८, ६३, ६४, ६७, ७२; ६. ७, १३, १७, १६, २३, २६, ३१, ४०, ४४, ४८, ५१, ५२, ५४; १०. ४, १४, १८, ३२, ५१, ५८, ६७, ७२, ७३, ७५, ७६, १०१, १०२, १३६; ११. १७, २३, २६, ३२, ३५, ३७, ४०, ५१, ५४, ५६; १२. १४, २२, ३४, ४६, ५०, ६०; १३. १४, १८, २६, ४८, ५४, ५५; १४. ५, १५, २०; १५. १३, १५, १६, १८, २३, २६, २७, ३२, ३४, ४०, ५०, ७२, ७३, ७६, ७६, ८०; १६. १३, १४, १६, ४२; १७. १५, १६; १८. २, ४, १०, २७, ४१, ४४, ४५, ५४, ५५, ५६; १६. ६, १२, १७, २४, ३३, ३८, ४२, ५२, ५७, ५८, ५६, ७२; २०. ८, ४६, ५६, ८५, ६२, ६५, ६७, १०१, १०३, १२६; २१. २, ८, १६, २१, २६, २८, ३०, ३४, ४३, ५३; २२. ३, १५; २४, २६, ३१, ४०, ४६, ४८, ५६, ५६, ६२, ७३, ७८, ८०; २३. ५, १३, १७, ३६, ४८, ४६, ५३, ५४, ५८, ६२, ६४, ६५, ८४, ६३, १००, १०४, १०६, ११४, १२०, १२३, १२७, १६५, १६६, १७५, १७८, १८२; २४. १, ५, १०, २१, २६, ३०, ४३, ४६, ६४, ८८, ११३, १२५, १३७, १३८, १४१, १४६, १५५; २५. ६, १६, ४०, ५८, ७०, ७२, ७३, ७५, ८१, ८३, ८६, ६१, ६३, ६६, १०७, ११०, ११६, १३१, १३५, १३७, १५१, १५६, १७१, १७४, १७६.

जोअउँ–जोअ–जोहता है १७. ७.

जोआ–जोहकर–रुख देखकर ७. ६८.

जोख–जोखा–तोल १. ८८.

जोखीउँ–जोखिम–हानि १३. २२.

जोग–योग्य–जोग्ग–हि० जोग, जोगा, जोगा; गु० जोग; सि० जोगु; पं० जोग; जोगा; म० जोगा ३. २२, २६; १०. १६०, १७. ४; १६. २३, १२, ४०; २३. २६, ३२; योग ११.

३८, ४१; १२. ८; १८. १; १६. ५३, ७२; २०. ६१, १०७; २३. ३३, ३५.

जोगतंत–योगतन्त्र–योगशास्त्र २४. ४६.

जोगसाधना–योगसाधना; जोगसाहण २३. ३४.

जोगा–योग में १६. १०.

जोगि–योगी–जोइ ३. ४८; १६. २६; २०. ६७; २३. १७७, १७६; २४. १३६, १५२; (रत्ता नहीं किया जाता) ८. ६१.

जोगिनी–योगिनी–जोगिणी, जोइणी १२. ४२.

जोगिन्ह–योगियों का १२. ७२, ८१; (ने) २०. ६८; २३. २; (के) २५. १०६, ११२, १३२; योगियों ने २५. १४४.

जोगिहिँ–योगिभिः (सह) २३. ४४; योगियों पर २५. २५; योगियों को (के मतलब को) २५. ११३.

जोगिहि–योगी को १२. ५४, ५५; २०. १००; २३. ३२, ३३, ४०; २५. १०.

जोगी–योगी २. ४७; ६. ६; ८. १८; ११. ३७, ३६; १२. १, ५३, ६६; १३. १०, ११; १५. १२, १३; १७. १; १८. ४६; १६. ३५, ५१, ६५, ७२; २०. ६०, ६४, ६६, ६६; २१. ४७, ६१; २२. ४८; २३. ७, ६, १४, १६, १८, २४, २६, ४२, ४७, ८६, ६२, ११२, १३०, १३३, १७८; २४. १०, १६, ३३, १३०, १३१, १३५, १५३; २५. ३, ७, ८, ६, ५५, ५८, ८०, ६२, १०५, ११२, १५६.

जोगीनाथ–योगिनाथ–जोगिणाह १६. २४.

जोगु–योग २२. ८.

जोगू–योग्य (तु० जोगू=उच्च वाणी से स्तुति करने वाला √गु० से) १. ४४, ६६; २. ४; १०. ४६; १६. २६; योग ११. ३८; १२. २१, २८, ३८; १५. ११, ७६; २२. १२, २३; २३. १३४.

जोगोटा–योगोटा–"योग को ओटने वाला, अथवा योग का ओटा अर्थात् आधार" (सु०; 'जोगवाट' रा०; "जोगवटी" देखो Gn.) १२. ४.

जोजन–योजन–जोअण(न) १५. ४३, ४६.

जोति–ज्योति–जोई १. २, ८२, १३८, १४६; ३. ४, ५, ४. ६४; ६. ४; १०. १७, ६७, ६८, ७०, ७१; ११. ५१; २४. ८१, ८३.

जोतिखी–ज्योतिषिक–जोइसिअ–ज्योतिष-वेत्ता (हिं० जोषी; का० ज्रिजि; सि० जोसी, पं० जोसी, जोषी) ३. २५.

जोती–ज्योती २. १०१; ३. ३८; १०. १७, ६६; २४. ५७.

जोबन–यौवन–जोअण, जोव्वन=ज्वानी [युवन्; अवे० य्वन्; पह० युवान, जवान; फा० जवान] १. ७०; २. १५१; ३. ५३; १०. ११६; १८.

झ.

से संबद्ध; तु० पा०—झस—झांकी—खिड़की; झांसा देकर भाग गया, मुख दिखाकर भाग गया) २. १२३.

झाँखर—झँखड़; दे० "झंकः शुष्कतरुः" (134, 17) हि० झाँखड़, झाँकर (झाड़, झँकड़); म० झाँकर; गु० झाँखरु; पं० झंगड़ (JB. 107) १२. ६४.

झाँझ—झंझा (√झर्भ परिभाषणहिंसा-तर्जनेषु; झर्भ,—झज्झा—झाँझ) म० झाँज, झाँजरी (झर्झरिका), सि० झंझु; पं० झाँझ २०. ५८.

झाँपा—(√चप्=झंप आच्छादन देशी) झांप दिया—तोप दिया—ढांक दिया—बंद कर दिया—ढांप दिया; (ढक "ढकणी पिधानिका" दे० 141, 12; JB. 94. 119); तु० आँख झपकना, झपकना—मींचना (दे० JB. 107; p. 337) २४. ६२.

झाँपि—ढाँपकर—बंद कर ४. २६.

झार—झाट, झाड़—लतागहन; म०, गु० झाड़; सि० झाड़ु (फलवृक्ष); पं०, हि०, बं० झाड़ २०. ४२.

झारइ—(√क्षर् से; क्ष—झ; JB. 107) झाड़ता है; (तु० झाड़ू—बुहारी से सांभरना, सोहरना) २३. १५२.

झारखंड—"पर्वतविशेष, जो वैद्यनाथ महादेव के पास है;" सु०; छत्तीस-गढ़ और गौँडवाने का उत्तर भाग १२. १०३.

झारा—ज्वाला (तु० तेल की "झाल" उठती है) १५. २५, २६; २४. १०५, ११८; २०. ४१. ('क्षार=खार' सु०)

झारि—झाड़कर २. १११; केवल २. १५३.

झारु—झाड़ती है १०. ४.

झिझिकार—झटकारे—झिड़के (शब्दानु-करण) २३. १६५.

झीनइ—क्षीणे—झीने में, झांझर में ३. ७.

झीनी—क्षीण—झीण (पतला); म० झिणा; गु० झिणुं; सि० झीणो; पं० झीणी १०. १३८.

झुंड—समूह २. ६०.

झुरइ—(झृ=जृ झूरे ही=व्यर्थ) ७. ६.

झूँड—झुंड २०. ५७.

झूठा—झुट्ठ [√झप आदानसंवरणयोः; तु० छि झुट=छिपाया हुआ; परतो झुटी=चोर; छि झुटी=चोरी; सुधा० "झुणट्—कांटे ऐसा; अथवा √झप उपघाते, उच्छिष्ट, अपवित्र" अथवा जुष्ट—जुष् हिंसायाम्] ८. ५१.

झूठी—असत्य ५. ३८; ११. ५२.

झूमक—झूम झूम कर गाया गया गीत २०. ३५.

झूर—(√जृ—झृ—*Ger,-Gerū-, जूर्ण; अवे० झझरेसंत=वृद्ध न होता हुआ; प्रा० फा० झमनि=बुढ़ापा; अवे०

टेकइ—टेकती है २४. १२१.
टेका—टेके—रोके २३. २.
टेकि—टेक कर १. १०३; १५. ७.
टेकी—सहारी १. १५०.
टेकेउँ—टेकूँ २१. २७.

ठ.

ठग—स्थग-ठग[तु० √स्था *स्थाघ, स्ताघ] हि०, म० ठग, टक; गु० ठग; पं० ठग, ठग्ग; का० ठग २. ११६; १५. १४.
ठगि—ठग कर २५. ४२.
ठगी—ठगइ का भूत ५. ३७; ठगी हुई १०. ६८.
ठठेरिनि—ठठेरे की स्त्री २०. २५.
ठमकहिँ—ठुमकती हैं २०. २०.
ठमकि—ठुमक कर १०. १२४.
ठाउँ—[वै० स्थामन्; पा० थाम; √स्था; तु० Lat. *stamen* (खड़ा हुआ भवन); Goth. *stoma* (=नींव) तु० हि० ठेवा= ठाउँ] स्थान १. ८५; ७. ६४; १०. १०२, ११२; १२. ८५; १३. ४; १५. ५०, ५५; १७. ७; २०. १८, ११०, ११२; २३. ४२, ८८, १६०; २४. ४०; २५. ८.
ठाउँहिँ—स्थान में २. ४२; १०. ११२; १२. ७०, ८५; १६. ७; २३. ४२.
ठाऊँ—स्थामन् (=स्थान; हे० प० 4, 367, 4; P. 251) १. ६३, ८६, ८६; २. ४२; ३. ३, ३७; ८. ५५; ६. १६; १६. ३५; १६. १७; २३. २१; २५. २१, ३६.
ठाएँ—ठावँ १२. ६५.
ठाओँ—ठावँ (Gn.) २५. ८.
ठाकुर—ठक्कुर—स्वामी १. १६; ३. ६८; १५. ५८; २४. २०.
ठाटी—(√स्था का अभ्यास) ठट्ठ—समूह १४. १.
ठाटू—ठाठ—साज १६. १०.
ठाठर—ठाठ—सजधज २०. २५.
ठाढ—[√स्तम्भ्, स्तब्ध, ठड्ढ, थद्ध; हि०, पं० ठाढा; म० ठाडा (ठीक); सि० तद (दृढ); का० थोदु (ठाढा—ऊँचा); तु० स्थविर, पा० थेर; हि० ठेरा (बुड्ढा ठेरा) √स्था—खड़ा होना, अवस्था में बढ़ना; ध्यान दो स्थावर; पा० थावर= बुढ़ापा; उस से "बूढ़ा" (अर्थविकास के लिये तु० Lat. *senior*, संख्यावाची *sem* से (*som*—एक वर्ष का) अथवा √स्था— *Sthouā जिससे स्थूर (स्थूल) की व्युत्पत्ति हुई है; इस प्रकार ठेरा हुआ दृढ—संमान्य] खड़ा २. १२८, १६२; ७. ६; १०. ४६; १५. ५; २१. १७; २५. ५३.

*Dol (र=ल) भी इसी के साथ संबद्ध हैं। तु० दर, दद्दु, पुरन्दर आदि] डरता है ३. ७२; १४. २२; १६. ४०; २५. ५६, ६०, ६१, ६२.

डरउँ–डरता हूं ७. ३०; ८. २५.

डरऊँ–डरती हूं २४. ६५.

डरना–भय खाना २५. ८२.

डरपहिँ–डरते हैं [दरपहिँ=दर्प करते हैं के आधार पर] २. १३२; १०. ६५.

डरहिं–डरते हैं २. १३४; २५. ६१.

डरा–डर गया २४. १३, १५.

डरि–डरकर १.१०६; १५. २१; १६. ४०; २३. १२; २५. १५५.

डरु–डर ३. ६५; ७. ३२, ३४; १५. ४१.

डवँरु–डमरु–शिव की डुगडुगी २२. ५.

डसा–[√दश् √दंश; तु० Ohg. *zanga*; Ags. *tonge*; E. *tong* (दंशन, काटना)] १. २६; डसइ का भूत १०. १३८; १८. ३६.

डहइ–दहति [निष्ठान्त दग्ध; तु० दाह, निदाघ (–ग्रीष्म) Lat. *favilla* –जलते कोयले; Goth. *dags*; Germ. *tāg*, E. *day* (तप्त समय)] १८. ३.

डहन–डयन–डैना पंख ५. ३५; ७. ४५.

डहना–डैना १६. ११; २५. १५६.

डहा–जलाया १५. १७.

डही–तपाई २१. ६४.

डाँक–डक्का १. १३२.

डाँड–दण्ड २. १४०.

डाँडा–डाँटा, धमकाया २. १४०.

डाढन–दाहन *दाढन, *दाधन (द–ड P. 222;) तथा *दाघन; तु० दागना (जलते पैसे से चीन्हना); म० डागणें (जलाना); गु० डाघ (श्मशान-यात्रा); का० दाग; सि० दागणु; पं० दागणा; प्रा० दाघ (JB. 49) तथा हि० दाझना (पैर दोझा गया=जल गया); पं० दुज्झ, दाझ; म० दाजणें; गु० दाझवुं; सि० डझणु, डाझो; का० दझुन; प्रा० दज्झइ; सं० दह्यते (JB. 49, 52, 54, 172) २१. ६४.

डाढा–जलाया (तु० प्रा० दाढी=दंष्ट्रा P. 304) १५. १८; २५. ११६.

डाढे–दाहे–जले (P. 222) २२. १४.

डाभ–दर्भ–दब्भ–दाभ १. १६४.

डार–दल–डाल–शाखा; "डाली शाखा" (दे० 139. 10), सि० डारु २. २६; ४. ५०; २०. २४, ५७.

डारउँ–डाल दूं २२. ३०.

डारा–डाल २०. ४१.

डासन–बिछौना ७. ५२.

डाहि–जला कर २४. १०६.

डिढ–दढ–दिढ[पा०दल्ह; *Dhergh, तु० Lat. *fortis* (दृढ); Lith. *dirzas*-*strap*] ७. ५८; २३. २४.

डीठ–(दृष्ट) देखे १०. १३६; १८. १६.

ढारी—ढाल कर २. ८८; ढलका देती हैं २. ११०.

ढाहि—ढहा देता है १. ४४.

ढीठ—धृष्ट, धट्ठ, धिट्ठ; हि० धीठ, ढीठ (ऋ=इ P. 52; ष्ट, ष्ठ=ट्ठ 303; ध=ढ 223) म० धट, धीट, धट्ठ; पं० ढट्ठ, ढट्टा (हि० ढेठा); गु० धीट; सि० दिड़ही १८. ५६; २३. ८; २५. ८८.

ढीला—शिथिल; प्रा०सढिल, सिढिल; पा० सिथिल, सथिल; श्रा० ढिल (सिलोप P. 119, 150); नै० ढीलो; उ० ढील; बं० ढिल, ढल; वि०, हि० ढीला; पू० हि० ढल; पं० ढीलो; सि० ढरो, ढिरो, ढिलो; गु० ढीलुं; म० सढळ, ढिला; सिं० इहिल, लिहिल, लील; का० डिल, डल (तु० "ढेल्ली निर्धनः" दे० 142. 11) १५. ६३.

ढीली २५. ८५,

ढीलि—बाहर निकले ५. २३.

ढुकत—आता (√ढौकृ गतौ) ५. ३६.

ढुका—गया—छिपा ५. २५.

ढूँढा—[√ढुण्ढि अन्वेषणे, ढुण्ढुल्ल; "ढंढल्लइ भ्रमति ढंढोलइ गवेषयति" दे० (142. 12) तु० नहर का टंडैल—दौरा करने वाला पतरौल; ध्यान दो छि लूड़=हि० लोढना—ढूँढना; पं० लोढ=आवश्यकता] १. ७०.

ढूँढि—ढूँढ २२. ७२.

ढेँक—ताल के पक्षिविशेष २. ७१.

ढोल—प्रसिद्ध वाद्य २०. ५८,

ढोलिनि—ढोलिये की स्त्री २०. ३२.

त.

तँबोल—ताम्बूल—पान २. १०६; १०.६२.

त—तदा—तइ, तो, उस समय २. १२६; ७. ६६; ६. १५; १३. १६; १७. १०; २२. ६३; २३. १४४; २४. ६५; २५. २१.

तइँ—तेँ—से [तें, तेँ, उतोँ, उतोँ; ताँ, तोँ इत्यादि तरित, उत्तरित से व्युत्पन्न (H. 375)]; १. २४; २. १७३, १६४; ३. २२, ४६; ८. ११; १०. ८७, ८६, १३८; ११. ७, ३०, ३१; १२. ४६; १३. १५, ५१; १४. ११; १६. १७; २०. ६७, ६०; २४. १५५; तैँ=त्वम् २२. ६८; २४. ८६.

तइस—तादृश—पा०तादिस—तत्+दृश—तद्रूप १६. २१; २३. १४५, १८४.

तइसइ—तैसे ही २. २; १६. ४८; २३. ५६.

तउ—तव १. १६४, १६५; ५. ८; ७. ६३; ११. ४२; १३. २७; १५. ४०, ५६; १६. २६, ३२; २४. ४२, ५६, १०३; २५. १२६; तो ४. ४८; ५.

तपता है २३. १२; तपस्वी १. १८३; २. ४३; ७. ५१; १०. १५; ११. ३७; २५. १, ४, ६, २७, २८, ३३.

तपु–तप (Gn.) १४. १०४.

तपि–तप करके २. १५१; १०. १२०; २४. २८.

तप्प–तप ११. ४०.

तव–तदा १. १२०; ३. ३, ५४, ६०; ५. ४५, ४८; ७. २५, ४१; ८. ५७; ६. ५५; १०. १३३; १२. १०, ८३; १३. १६; १८. ५; १६. ३६, ३७, ५८, ७२; २०. १०७, १०८; २१. १; २२. २२, ४८, ५७, ७२; २३. ४०, ७१, ७६, ७७, १२८, १५६; २४. ५७, १२०, १२७; २५. २७, ४७, ४६, १०६, १३५.

तवल–तवला १. १७६.

तवहिँ–तब ही ३. ६४; ७. १७.

तवहुँ–तब भी ७. ३६; २३. १२६.

तमचूर–ताम्रचूड–मुर्गा १०. १०१.

तमचूरू–ताम्रचूड ८. १६.

तमोला–ताम्बूल–पान २०. २३.

तंबोलिनि–तँबोलन २०. २६.

तरँग–तरङ्ग (√तृ) २४. ६३.

तरंग–तरङ्ग १०. ४०.

तर–तल–नीचे [व्युत्पत्ति अनिश्चित; तु० तट, *Tl तथा तालु; तु० Lat. *tellus* (भूतल); *tabula*-(*table*-मेज); Oir. *talam* (पृथ्वी); Ags. *thel* (-deal); Ohg. *dili*-Germ. *diele* (तख्ता)] १५. ६, ४५; २०. ५५; २२. ७०; २३. १०, ४७, ४८.

तरइ–तरति [*Ter (tr) पार जाना; तु० Lat. *termen*, *terminus*; *trans*; Goth. *thairh*; Ags. *thurh*; E. *thorough*] तरता है १५. १.

तरई–तरति–(स्नान करता है) ४. ३६.

तरकि–तड़ककर (शब्दानुकरण) १०.७२.

तरवा–तलवा-तलपाद-पादतल १२. ५३.

तरहिँ–तले–नीचे २. १२२.

तरहु–तरोगे १४. १८.

तरा–तरइ का भूत १. ८७; ६. ६, ५०; १५. ५६.

तराईँ–तारे १. ७६; २. १५०; १०. १५६; १६. २० (Gn. तराई); १७. १६; २०. ६०.

तरायन–तारागण १. ६; ४. ४२. (Gn. तरायन)

तरासइ–[त्रासयति-डराता है अथवा कतरता है; तु० पा० तास=म० तरास (थकावट); हिं० तरस; सि० तर्सु; पं० तराह, तरास; सिं० तासी (–डर); (पच्छिमी पं० तर्स, तरस–दया); सिं० त्रस–डरना; प्रा० तसइ=सं० त्रस० Lat. *terreo* (भीत); *terror* *Terso *to से, जिस से व्युत्पन्न है

तारा-तारे २. १६१; ४. ३८; २१. ५, ३६.

तारामँडर-तारामंडल २०. ११.

तारी-ताली, कुंजी १६. ११; २३. १४७.

तारु-तालु १. १८०; २२. ७३.

तारे-नक्षत्र [√स्तृ-√स्तॄ; अवे० स्तारे; पह्० स्तारक; प्रा० फा० सितारह; फ़ार० स्तोरह्; अर्म्० अस्तार, इस्तार; कु० इस्तिर्क; ओस्से० स्तालि; Lat. *stella* *ster-la, Goth *stairnô*, Obg. *sterro*, Germ. *stern*, As. *steorra*, E. *star*] हि० तारे; गु० तारो; सि० तारु, पं०, बं० तारा; का० तारक, सिं० तरु, तुरु २. ६६.

ताल-तत्काल [सं० तद्य देखो JB p. 316] २. ६५.

तालहि*-तालाबों में २. ७२.

तासु-जिस को ५. ११, ११. ७२.

तासू-उस का २. ५०; ३. ६, ११, १४; ६. ३५.

ताहि-उस का ८. १०, ११. ८, २२. १०; २३. ११७, ११६, २४. ६५.

ताही-उसे ३४. ८०

ताहू-उसका (भी) १०. ११०, उसे (भी) २१. ४१.

तिन्हँ*-तिनों के ८. १५.

तिवारी-त्रिवारी (P. 240) १. ११०.

तिति-तैसे दिन ४. १.

तिन-[तृण *Trn (तु० तृणि)-वै०*कतृ,

मौलिक अर्थ प्रदर्शन (=blade) Goth. *thaurnus*; Ags. *thorn*; E. *thorn*; Germ. *Dorn*, अथवा विस्तारार्थक √स्तृ-स्तॄ से] प्रा० तिण; म० तण; हि० तिनका, तुनका; सिं० तण, १. ४५.

तिनहि-तृण को १. ४५.

तिन्ह-(तद्) उन २. ४२, ५८, ७२, १०८, १११, ११२, १५५, ११८, १६६, १६६; ४. ५८; ७. १५; ८. १५; १२. ४७; १३. ५६, ६१, ६४; १६. ४६; २०. ६६; २३. ८, ६६; २४. १५२; २५. ११.

तिन्हहिं*-उन के २३. ४८.

तिन्हहु-उन के भी १. १४८.

तिमिर-[*Tim; पा० तिम्ब, तिमित; Obg. *dimstar* तथा *finstar*, Ags. *thimm*; E. *dim*; तथा तमस् (तम्-तिम्), तमिस्र; ध्यान दो तिमिति पा० तेमेति का *tem रूप से भिन्न है] अन्धकार १६. ४.

तिरसूल-त्रिशूल [तिर-त्रि; पा० ति; अवे० थ्रि; Lat. *ter* (व्युत्पत्ति *ters*>*tris; तु० *testis*>*tristis, *trecenti*>*tricenti) Icl. *thrisvar*, Obg. *driror*] त्रिशूल; म० तिरसूल १. १६६.

तिरि-त्रि [Lat. *tris*, *tria*; Obg. *drim*

E. *three*] १०. १०२.

तिरिआ – स्त्रिका – स्त्री; प्रा० पा० इत्थी, थी; गाथा इत्थी; प्रा० हिं० इस्त्री, अस्त्री; का० स्त्रिय (Gn. Paiś. Lang. P. 79) १२. ४६.

तिल–तिल जैसा चिह्न १०. ५२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८८; १३. ६४; १८. ४.

तिलक–(तिल+क) तिलग, तिलय–टीका १०. २१; २५. १७०.

तिलंगा–तैलङ्ग देशवासी, पञ्चद्राविड में एक जाति १२. १०२.

तिसरइ–तृतीय–तीसरा (तिइज्ज=तिइय, तीअ) २०. ७५.

तिसिना–[तृष्णा, √तृष्; तु० Goth. *thaursus;* Ohg. *durst;* E. drought, तथा *thirst,* *Ters-शुष्क होना अथवा करना से; तु० Lat. *torreo* (भूनना); Goth. *gathaírsan;* Ohg. *derren* इत्यादि] प्रा० तण्हा; पा० तण्हा, तिण्हा, तसिणा; पं० तांघ; सि० तश; म० तहान, तान्ह; अवे० तर्श्न; पह० तिश्न; शि० तिश्न(गी); ग० तश्न; यि० त्रुश्न; हिं० तिस, तिरखा; पं० तिहा; का० त्रेश; ल्सि० त्रुश; सि० टिह; गु० तरस (तु० हिं० तरस–दया); सि० तिरस; आ० फा० तिश; सरि० तुर् (इ); अफ० तम्हइ; सं० तृष्; दोनों प्रकार के रूपों की व्युत्पत्ति एक ही धातु √तृष् से है; Gray तिरखा को तृष्णा के साथ मिलाते हैं] ५. ३३; ११. ४६.

तीतर–तित्तिर; हिं०, गु० तीतर; सि० तितिरु; पं० तित्तर ५. ५०; ६. ४८.

तीनउँ–तीनों [त्रीणि; प्रा० तिण्णि; पा० तीणि; का० त्रिह; उ० तिनि; बं० तिन; वि० तीनि; हिं० तीन; पं० तिंन; सि० टी (ट्रे); गु० तण; म० तीन; जि० त्रिन; सिं० तुन, तुण] २१. ५२.

तीनि–तीन ६. ४०.

तीर–तट १. १४१, १५२; ४. २५, ३३; १०. ४०, ५६; १८. २४.

तीरथ–तीर्थ [√तृ–*Ter; तरना–मध्य में से जाना; मौलिक अर्थ "नदी में से मार्ग"] तित्थ २. ४२.

तीरू–तीर–तट [वै० तिरस् *Ter से; तु० तरति; मौलिक अर्थ दूसरा तट, पार; ध्यान दो तीर्थ पर] सि० तीरू; सिं० तेर; पं० तिड १५. ५१.

तीवइ–तीव्र–तिव्व; [पा० तिप्प–तिव्व; संभवतः √तिज् *Stig से, तु० Lat. instigāre; किन्तु बुद्धदत्त के अनुसार √तप् के साथ संबद्ध] १०. १४६.

तीस–[त्रिंशत्; पा० तिंसा; तु० Lat. *triginta;* Oir. *tricha;* अवे० थ्रिस्तेम]; प्रा० तीसं, तीसा; हिं०, म०,

ऊपर उठना; Lat. *tumeo*, तथा *tumulus*; Mir. *tomm* (पर्वत)] २४. ४६.

तुरंगा–घोड़े २. १६६.

तुलाना–तुल गया, नप गया, पहुँच गया [तुल्–उठाना (तोलने के लिये), मौलिक अर्थ सहना; वै० तुला; पा० तुला, तुलेति; तु० Lat. *tul-i* सहा, *tollo* (lift); Goth. *thulan* (शान्ति से ले जाना); Germ. Godul-d= (सहन) E. *thole*-सहना; तुल तथा तुला की तुलना के लिये देखो JB. P. 348] ५. ४२.

तुलानी–जा डटी २०. ६५.

तुलाने–जा धमके २१. ५०.

तुहीँ–त्वं हि २. ६६.

तूँ–[त्वम्; पा० तुवं, त्वं; Lat. *tu*; Goth. *thu*; E. *thou*]हि०तू, तूँ, तुम; पं०तूँ, तुसि; म० तुं, तुम्हा, तुहमीं; गु० तुँ, तमे; सि० तूँ, तौइहिँ; बं० तू, तुमि; त्सि० तु, तुमेन; सिं० तो, तोपि; का० चह, तोहि; प्रा० तुमं; तुज्झं, तुम्हे; सं० त्वम्, तुभ्यम् (युष्मद् से; JB. p. 348) ३. ७६; ५. ६, ७, ४०; ७. १६; ८. ५६; १६. ६, १६; १८. २५; १६. ४१; २०. १०८; २१. २७; २२. ६०, ७५, ७७; २३. ११२, १२६, १३०; २४. १६, ८४, ८५, ८७, ८८; २५. ५५, ५६, ८०, १३०, १५१.

तूत–शहतूत २. ७८.

तूर–तूर्य–तुरही २०. ५८.

तूरू–तूर्य, व्युत्पत्ति अनिश्चित; तूर, तूरिअ; पा० तुरिय; उ० तुरी; बं० तुरम; हि० तूरी, तुरही; पं० तुरम; सि०, गु० तुरी; जै० प्रा० तुडिय; पा० तुदिय; [तु० तुदति=बजाना *Stoud, *Stou का दीर्घ रूप; तु० Lat. *tundo*, *tudes* (घन); Goth. *stautan*; Ohg. *stozen* (धक्का देना); E. *stutter*; Nhg. *stutzen*; Ags. *styntan*=E. *stunt*] २५. ५.

तूही–त्वमेव २. ३४.

तेँ–से १६. १२; २५. १६०.

ते–(तव) वे १२. ८८; २१. १०, १२, १३, ३२; २३. ६४; २५. ११०, ११६, १७६.

तेइँ–तेन–उसने २२. १४, ६६.

तेइँतिस–त्रयस्त्रिंशत्–तेँतीस २५. १०२.

तेइ–तेन–तिसने–उसने १. १७, १२७, १५७, १८४; ४. ४६; १३. २६; २१. ६१; २४. ३७; वे ७. ३५; उसकी १०. १२८; उस २३. ६५.

तेल–तैल (तिल) प्रा०तेल्ल, तेल; गु० हि०, पं०, बं०, त्सि० तेल; सि० तेलु; का० तील; सिं० तेल ४. ४८; १५. ३२.

थ.

थाका–[सं०स्थगयति; पा० थकेति *Stog =ढकना; तु० Lat. *tego, tegula* (E. *tile*), *toga*; Oir. toch (घर); Ohg. *decchu*(ढकना); *dah*(छप्पर); लाक्षणिक अर्थ मार्ग तथा कार्य को ढकना (–पूरा करना, पूरा करके थकना); तु० पा० थकेति; ढक्कइ (म०, जै०म०; शौ०, मा०); थक्किस्सति जै० म०; P. 309] थका २. १२७; ५. ३०; १२. ८६; १५. ६७.

थार–स्थाली–थाल [स्थाल; थल=स्थल–चौरस स्थान, √स्था से; तु० Ags. *steal* (स्थान); पा० थंडिल; थाल=चौरस पात्र P. 310; Gray. 362; JB. 350] म०थाळा; गु०थाळो; सिं० थालु, थाल्हु; सिं० तलि १०. ११३.

थाह–[√स्तम्भ्; पा० थंभ=आधरण, दृढीकरण; तु० अवे० स्तम्र (ठहरा हुआ, दृढ); Goth. *stafs*; Ags. *staef*; E. *staff*; Ohg. *stab*; तु०थंभा, खंभा; ध्यान दो थाह=थह=थग्ध; अत्थाह=अत्थग्घु *स्ताध्य, *अस्ताध्य; तु० उत्थंघइ, उत्थंघिय (√स्तम्भ), *उत्स्तघ्नोति (P. BB. 15, 122 ff); स्तघ=थह=ठह; पा० ठहति (=तिष्ठति); ठड्ढ=स्तग्ध (*स्तघ्); ठाढा=खड़ा है; ठाढा आदमी=विशाल पुरुष (P. 333, 88, 505:)] भूमितल, गहराई २४. ६५.

थाहा–थाह १३. ३३; २३. १७०.

थिर–[वै० स्थिर=कठोर, दृढ, √स्था= *Stor (stā)=खड़ा होना, दृढ बनना; तु० Lat. *sterilis* (E.=sterile=सं० स्तरी=हि० तह) Ohg. *storrēn*; Ngh. *starr* तथा *starren*; E. *stare*; तथा Lat. *strenuus*; E. *strenuous*; ध्यान दो हि० थुण, थुणा, थूणा (थम्भ, √स्था से; तु० थावर=थूरा–थूला) "ण" के लिये देखो सं० तुला, तुणी *Tl̥m] स्थिर; म० थीर; सि० थिरु; सिं० तर, तिर; हि० थिर (तु० ठिर=ठण्डक) १. १५०; २. १४१, १७५; १०. २३, ६०; १२. ८६; १६. ४५; २५. १५६.

थिरु–स्थिर १६. ११; २३. ११५.

थीरा–स्थिर १५. १०.

थोर–[सं० स्तोक (=थोड़ा P. 90) तु० स्त्यान, स्त्यायते (कठोर होना) का निष्ठान्त प्रयोग–*Stoia (तु० थिर); Lat. *stītho* (दाबना); सं० स्तिमित (निश्चेष्ट)–पा० तिमि; Mgh. *stīm*; Goth. *stains*=E. *stone*; Lat. *stithes*. (पीला) Ohg. stif=E.

tamian; E. *tame*, *Domā = सं० दम = घर; तु० दम्पति = गृहपति २१. १५.

दयाल—[वै० √दय; दयते—विभाजित करता है *दा] १७. ५. ६.

दर—दल [*Dol = फाड़ना, देखो डर] सेना २. ११, १७६; १२. ३२; २४. १०, ११; २५. १०८; दरी (√द, तु० छि दलेव=फाड़ना)=वँटी २४. १८.

दरकि—फटकर १०. ७२.

दरपन—दर्पण—दप्पण १. १६८; ४. ६३; ८. ३; २२. ६०.

दरब—द्रव्य, दविश्र, दव्व = धन [√द्रु—द्रविण; तु० द्रा, दारु, द्रु, द्रुम, दरख्त आदि] १. २०; १३. ४८; १५. १०, ११, १२, १३, १४, १५.

दरबार—(द्वार) दरबार १. १२८, १३२.

दरस—दर्शन—दरिस (√दृश्) १. १२८; १२. ७८; १६. २६, ३३; १७. ७; १८. १३; १६. ३१; २१. २०.

दरसइ—दर्शन करे १. १५१.

दरसे—दर्शन करने से ४. ५८.

दरसन—दर्शन, दरसन, दंसन; सि० दरसणु १. १२३; २. ६६; ८. ३; १५. ६२; १६. ३४; १७. २; २३. ८६; २४. ५६, १४६; २५. ३४.

दवइ—[√दु=हुं; तु० दव=द्रव *Dreu तथा *Drā (दरिद्र में) √Drām]

दवाग्नि—जंगल की आग २४. ६२.

दवाँ—दव २१. ७.

दस—दश [Lat. *decem*; Goth. *taihun*; Ags. *tien*; Ohg. *Zehan*; *dokm = dv+km "दो हाथ" का समस्त प्रयोग] प्रा० दह, दस; पा० दस; का० दह; उ०, बं० दश, दस; पं० दह, दस; सि० दह; गु०, हि० दस; म० दहा; सिं० दहय, दस; जि० देश आदि १. १२५, १३५; ३. ६; ५. २२, २५; ८. १, २२; १०. ८५; ११. १६, ४५; १२. ६४, ८८; १३. ३; १४. १६; १६. २४; २०. १२; २५. ६६, ७१.

दसउँ—दशम २. १३७; ११. ७; २२. ६८, ७३.

दसउँधी—दशाधी-भाटों की एक जाति राय है और दूसरी दसौंधी २५. ४८, ४६.

दसएँ—दसों २०. ६३.

दसगुन—दशगुण १३. ५१.

दसन—दशन—(√दंश) दांत १. ६६; २. ६३; ३. ४६; ४. ३०, ६४; १०. ५४, ६५, ७२; १५. ७७; २१. १७; २५. ६, १६४.

दसनजोति—दशनज्योतिः १०. ६८.

दस्तगीर—हाथ पकड़ने वाला (दस्त—हस्त; गीर—ग्रह—ग्रभ) १. १४३.

दसा—दशा २. ८६; ४. ६०; ११. ५३; तेज ४. २८; गति २५. ३२.

दहइ–दहति–जलाता है १८. ११; २३. ७८.

दहन–दहन् १६. २.

दहहिँ–जलाते हैं २३. ५१.

दहा–जलाया २२. ११.

दहिउ–दधि, दहि; पं०, गु०, म० दहीँ; बं० दई; मि० दी १२. ७३, ७४.

दहितर–दक्षिण–दाहिने हाथ १२. ७६. ७८, ६५, २०२.

दहिनावरत–दक्षिणावर्त (शुभा० प्रद-क्षिणा) १२. १०४.

दहीदही–दधि दधि २. १८.

दहुँ–दुहुँ=द्वयोर्हि–दो में से एक=क्या जानें ३. २१; ४. १६; ५. १६; ७. २०, २८, ३१; ८. ७; ६. ८, ३३; १०. ३१, ५५, १०३, ११६, ११२, १४०, १५०, १५०; १२. ८६, ६५, ६६; १६. ३६, ६०; २०. ६५; २१. ३६, ५०; २२. १८; २३. ५०, १०४; २५. ३१, ३२.

दहु–दह–दग्ध–दाग–दगा–माग्य १६. १.

दाँत–[दन्त, द्विगीवा वहु० दन्त, षष्ठी दन्तः=Lat. dentis, द्वि० Lat. dentem, Gr. ὀδόντ, Goth. tunthus, Obg. Zend, Germ. Zahn, Ags. tôth, E. tooth तथा Ags. toss E. tusk, इत्यादि करने √अद्–*Ed (खाना करना) से व्युत्पत्र, तु० दन्ति, दन्त] हि०, गु० दाँत, सि० डद, पं० दंद, दंद; का०, सिन्ध० दंद; सि० दत; मरे० दंतन; पह०, का० दंदान; बा० दुंदुक; शि०, सरि० धंदान; बलू० दंतान, कु० दिदान; ट०, ओस्से० दंदाग; बि दनान इत्यादि २३. ४८.

दाख–द्राक्षा २. ७६; ३. १४; १०. ११६; १५. ३६; २०. ४१; २४. १२०.

दाखा–द्राक्षा ४. ३६.

दाग–[*दाघ–√दह] निशान २१. १०.

दागि–दग्ध्वा–जला कर २१. ११.

दागी–जलाये २१. ११.

दाता–दातृ (√दा) १७. ६; २०. ७५.

दातार–दातृ १. १२५.

दादुर–दर्दुर–ददुर–मेँढक १. १५२.

दाधा–दग्ध–दद्ध=दाध–दाह–जलन (अवे० दझइइ–जलाता है) १८. १४; जलाया २२. १४.

दाधे–जलाने से २३. १४.

दान–[वै० दान √दा; जैसे ददाति, दाति, दाति–विशेष में; इससे मिलता, मिलता; तु० Lat. damnum (E. damages) Lat. donum; Ags. tid (=E. tide=समय का भाग) तथा time (E. time); ध्यान दो ददाति तथा ददो पर] दान देना १. ११६, ११२, ११५, ११६, १७१; २. ११८, १३. ४८; २५. ८६.

दानउ–दानव (दनु का पुत्र) २५. ११५.

दानि–दानी (Lat. *donum*-दान) १.१३६.

दानिश्राल–एक मुसलिम तत्ववेत्ता १. १५७.

दानी–दान देने वाला १. १३०.

दामवती–दमयन्ती २४. १२७.

दारिउँ–दाडिम–अनार; प्रा० डालिम; पा० दालिम; सि० डारहूँ २. ७६; ३. ६४; ४. ३६; १०. ५४, ७२, ११६; २०. ४३.

दारिद–दारिद्रय (√द्रा–भागना का अभ्यास) ६. १३३.

दारिदखोआ–दारिद्रयचोदक २२. ५८.

दारुन–[दारुण–दारु+न=वृक्ष की तरह कठोर; तु० Lat. *dūrus*; Oir. *dron* (स्थिर); Mir. *dur* (कठोर); Ags. *trum*; ध्यान दो द्रु, द्रुम, दारु, द्रोण *Dereuos=दृढ़त्त] ४.१५; २४.६२.

दाविँनि–दामिनी, विद्युत् १०.११,६६,७१.

दामिँनी–दामिनी ४. ३०.

दासू–[√दस्–क्लेश सहना; मौलिक अर्थ अनार्य; अवे० दाह–एक सीथियन जाति; तु० दस्यु] सि० दासु; सिं० दस १. १६.

दाहब–जलावेंगी २०. ३६.

दाहि–जलाकर २३. ११२.

दाहिन–दक्षिण; प्रा० दक्खिण (P. 323) दाहिण; पा० दक्खिण; का० दछन, दछ्युनु; उ० डाहण; बं० डाईन; पू० हि० दछिन; हि० दखिन, दक्खन, (दाहिना); पं० दक्खन; सि० दाखिणो दकुणं; म० डाखीण १२.७७; २५.८८.

दिआ–दीपक–दीवअ–दीआ ३. ३, ८; १०. १०; १५. ३८; २०. ७०, १११; २४. ५६; दत्त ३. २०; १३. ५०, ५४, ५५. ५६; दीपक और दत्त १३. ५१, ५२, ५३.

दिआरहिँ–दिवाकर से–सूर्य की चमक से–मृगतृष्णा से २०. ७१.

दिआरा–दीपाकार–दीपक जैसा उज्ज्वल (P. 150) १६. १८.

दिपउँ–वर्णन किया (दिया) १०. १६.

दिएउ–देने पर भी ११. ३५.

दिन–दिवस १. ६, ३४, ५५, १२७; २. १६०, १६७, १८०; ३. ६, ११, १३, ५०; ४. ११, ४०; ५. ११, २५, ५२; ८. १, २४, ३६; १०. ६८; १२. ६, १०, १२, १४, २८; १३. १; १५. ७२; १६. ३६, ४०; १८. ४६; १६. ४८; २०. ८०, १२६; २३. ४६, ८०; २४. ३६, ५०, ६२, १०१, ११७; २५. १४०.

दिनहिँ–दिन ही में २. ६६, ७२; ४. २८; २४. १६.

दिनहि–(दिनहिँ) दिनको ८. १४.

दिनिअर–दिनकर १. ६.

दिपइ–दीप्यते (दीप्-दीव्-दिप्प) चमकता

तु० दीवट—दीपकाधान) पं० दीश्रा; सिं० दिवु १. १३८; २. १६०; ३. ७; १४. २२; २३. १३६, १७४; दीपक और दत्त १३. ४६.

दीखइ—दृश्यते (√दृश्) २. ६१.

दीजिअ—दीजिये ५. ५६; ११. २७; १३. १२; १६. ३६; १८. २८; २४. २६, १११; २५. १२८.

दीजिअइ—दीजिये २५. १३६.

दीठि—दृष्टि—दिट्ठि २३. ६६; २५. ४६.

दीन—अवे० दएना; पह०दीन; आ० फा० दीन=सत्यधर्म १. ६०, ६१, १५५.

दीन्ह—दिया १. १, १७, २२, ४०, ५६, १०२, १०४, १३७, १४६, १५४, १६२; ३. २६, ३४, ३८, ७३; ६. ८; ७. ५७; ८. ४, २४, ३५, ५७, ६५; ६. ४२; १०. ६६, १०३; ११. ३५; १२. ४०, ४१, ४७; १३. ४८, ५८, ६०; १५. ३७, ५७; १६. ११; १६. १६; २०. ८; २२. २१, ५१; २३. २, ५६, ५८, १०१, १५४; २४. ३२, ३६, ७५; २५. ३६, ५३, ५७, १११. १५०.

दीन्हा—[ददाति का भूत √दा का अभ्यास, यथा Lat. *do*; dĕ-di भूत-काल] दिया १. ८३, १२६, १३५; ७. ६५; ८. ३४; ६. ४७; १८. ३८; २०. १००; २३. ६०, १५६; २४. ४१.

दीन्ही—दी ३. ३५; २३. ४, ५४.

दीन्हे—दिये २०. २५; २३. ११.

दीन्हेसि—दिया १. ६५, ६६; २३. १४६, १६३.

दीप—द्वीप [द्वि+अप—दो पानियों के मध्य] १. ५, १००; २. ३, ४, ८, १७, १६६; ३. ३१; ७. ४; ६. २४; १२. ६६; १३. ८, ११; २५. १५७; दीपक २. ७२; १०. ८६, ६२; ११. ५१; १५. ४०; १६. ७; १८. ८; २१. ३८; २३. १०५; द्वीप और दीप ६. १८, २०, ३०.

दीपक—[वै०दीप्, दीप्यते; Idg. *Doiā-चमकना; तु०देव, दिव्य, द्युति आदि] १. ८३, १४६; २. ३, १६६; ३. २४; २०. ७२; २३. ११६, १४०.

दीपकुँभसथल—सुन्दरी का पयोधररूपी द्वीप २. ७.

दीपमहुसथल—सुन्दरी का गुह्याङ्गरूपी द्वीप २. ७.

दीसा—दिस्सा—देखा १. १२३; २. १२६; ८. ५४; २५. ७५.

दीसी—अदर्शी, (दृश्यते—दीसइ; दृश्—दिस्) तु० म० दिसर्णे; हिं; सिं०, गु०, उ० दिस; सिं० डिस-; पं० डिस्स-, दिस्स-; का० डेश-; १०. ६६.

दीहीँ—देइहीँ—देंगी ४. १५.

दीही—देइही—देगा ४. १८.

दुअउ—द्वौ; दि; दो १. १४८; ३. ४०;

दुखी–दुःखी १.७१;२३.६२,६६;२४.१३८.
दुनिआईँ–संसार में १. ७६, ११५.
दुनिआई–संसार २३. ६५.
दुनी–दुनिया १. १००.
दुंदु–दुन्दुभि [शब्दानुकरण, यथा दद्दभ, दुद्भुभि, दर्दुर] २०. ५८.
दुपहरी–दोपहर का पुष्प १०. ५८.
दुरजन–दुर्जन–दुज्जण ३. ५६.
दुरुपदी–द्रौपदी (P. 132) २. १४५; २३. १४४.
दुलारी–दुलरुई-मां बाप की लाड़ली ५.१.
दुहुँ–(देखो दहुँ) १.८७,८६,१४६,१५०; १०. ४१, ५५, ६०, ६१, १४०; १२. ६५; १३. ५७; १६. २४; २०. १२५.
दुहूँ–दुहुँ १. ६५, १५०; ६. १६; १०. ६२, ६४, १२४; १३. ५५; २३. ४६.
दुहेला–दुर्भग; "दुहेलो दुर्भगः" (दे० 172.16) हि० दुहेला, दुहेला, दहेला (कठिन, म० दुही, दुई = अप्रसादक); सि० दुहिल; तु० "दुहमसुखम्" (दे० 172.9) ६. ५०; १८. ३०; २१. ६; २४. ७१.
दुहेली–कठिन २४. ११४.
दूअउ–दोनों ही १२. ६६.
दूइज–द्वितीया–दुइज्ज–दोयज (का चाँद) ३. १४, ४३.
दूखन–दूषण=दोष २१. ४३.
दूखा–दुखा २५. १७२.
दूजा–दुइअ, दुइय; बिइअ, बिइय (P. 82, 165) १०. ७१; २०. ३७, ७५; २१. ३०; २२. १८; २३. २०; २४. ५०; २५. १३०.
दूजे–द्वितीय २३. ५८.
दूत–[√दू=दूर जाना; Lat. *dudum*] २४. ५८.
दूध–दुग्ध अवे० दुघ्ध, बि० दूध; पं० दुद्ध, दूध; सि० डोधि; बं० दुध; का० दोद; सिं० दुदु [√दुह्; छि दूच; दूची=दुहना] १. ११८.
दून–द्विगुण; दिउण; दुउण; दुगना, दूना; म० दुणा; सि० द्रुणु; पं० दूणा; बं० दुणा; सिं० दियुणु (P. 298, 300) ७. २४.
दूनउ–दोनों १. ११७.
दूना–द्विगुण १६. ५.
दूबर-दुर्बल-दुब्बल (P. 287); बं० दुबला; बि० दुबरा, दूबर; सि० डुबिरो, रवलो; गु० दुबल १. ११६.
दूर–[वै० दुव (चोदक, प्रेरक), दवीयान्; अवे० दूरो (दूर), *Dāu; तु० Ohg. *zawen*; Goth. *taujan*=E. *do*; दूसरा रूप है *Deuā (–दूर, समय की दृष्टि से) यथा Lat. *dū-dum* (तु० dūraro=en-duro) ध्यान दो दूत तथा पा० दुतिय पर] फा० दूर; ग० दीर; वा० थीर; अफ० लीरि,

gatarhjan—स्पष्ट करना; पा० के दक्खिति, दक्खति, तथा उद्दक्खि, सं० अद्राक्षीत् के आधार पर बने हैं। इसके विपरीत दस्सति, सं० दर्शयति *Dorś के आधार पर बना है। तु० हि०दीसइ तथा देखइ। "दक्खइ तथा देक्खइ *दृक्षति, धातु से जो ईदृक्ष, कीदृक्ष, तथा तादृक्ष में पाया जाता है" P. 66, 554; देखो Pāli Dict. दस्सति पर] २. १७७; ५. १; ६. ५४; १०. ८३; १२. ३६; २०. ६६; २१. ८; देखता हूँ ७. १२; देखता है ७. १६; देखती है ७. ५३.

देखइ—(तु० देहइ—देक्खइ—*दिक्खइ—*दृक्षति P. 66, 554) देखता है १२. १०; १३. ४२; १६. ४३; २५. १२१; देखने १. ६७, १६०; १०. १३५; २०. ६६; २५. २८; दीखता है १६. ३४.

देखउँ—देखूँ ३. ५५; ७. २८; ८. ७; ६. ४०; १६. ५०, ५६; २०. ६७; २२. १७; देखता हूँ २४. ४०.

देखत—देखते १०. ८७; १५. १७, ४१; २०. १२८; २५. ११२.

देखन—देखने २५. ३१.

देखराई—दिखलाई १०. १११; १२. ७८.

देखरावा—देखने में आया १४. ४; १५. ३३.

देखसि—देखता है २२. २६.

देखहिँ—देखते हैं ६. ३; २३. ३; २५. २६.

देखा १. ६१, १२६, १८४; २. २, ३०, १६१; ३. ७०; ४. ६२; ५. २८; ७. ३२; ८. ४६; ६. २४, ५४; १०. १०२, १३४; १२. १०, ६७; १३. २६, ४५, ५७; १६. ४; २२. ७३; २३. १५०; २४. ४६.

देखहु ५. २७; २०. ८६; २३. ८; २५. १०६.

देखाइ—दिखा कर २३. ६१.

देखाउ—देखाता है=दीख पड़ता है १६. ८.

देखावइ—दीखता है २. २१; ३. ७.

देखावसि—दिखलाते हो १६. २७.

देखावहु—दिखाओ २४. १२८.

देखावा—दीख पड़ा ४. २६; २४. ६३; दिखाया २५. १५०.

देखि—देखकर २. ३३, ५६, ७६, १२४, १३२, १८१, १६१; ३. ४५, ४७, ६४; ४. १०, ६२; ५. २६, ३१; ६. ३; ७. ५; ८. ३; १०. १८, ५०, ५४, ५६, ६३, ८८, १२४, १५३; १२. २७, ४०; १३. ४३, ५१; १५. १०, ४८, ७४; १६. १७; १६. २२; २०. ६६, ८५; २१. ३६; २३. ३१, ७१, १२४; २४. ३, १७, २६, ६६, १५४; २५. २, ५, १२, ३२, ४२, ४३, ५३, १६६.

देखिअइ—देखी जाती है २५. ३२.

देखिहइ—देखोगे १४. १०.

देखी—देखइ का भू० २. ६७; ४. ६४;

म्हद्, उ०, बं० दुइ; हि०, पं० दो; सि० बा; गु० बे; म० दोन १०. ६६; १६. ६३; २३. १८०;२४.१६०.

दोऊ– दोनों १.१३१; ७. २२; १०.३३; १२.६८; १४.२०; १८.५०;२२.५१.

दोख–दोप–दोस (दुप्; तु०प्रदोप, दोपा= निशा) ६. ४८; २५. १३८.

दोखू–दोप४.२१;१२.३७;२३.४६,१८२.

दोस–दोप ६. ७२; ५. ५५; ८. २७, ५१; २१. ४१; २५. १५५.

दोसर–द्वितीय–दुइअ; उ० दुसर; प्रा० हि० दूज; आ०हि० दूसरा; पं० दूजा; सि० वीजो, वीओ; गु० बीजो; म० दुसरा; १. ८,४३; २. १५; ४. ४०; १०. ३२; १२. ६६; १६. ४६; २२. ८०; २४. ४०, ११६.

दोसरइ–दूसरे से २२. २५.

दोसरि–दूसरी २३. ३३, ८८; २४. १२२; २५. ६६.

दोसरे–दूसरे १. ८५.

दोसहि–दोप को २५. १५५.

दोसू–दोप २५. १५४.

दोहाग–दौर्भाग्य–दोहग्ग–पा० दोब्भग्ग (=दुः+भाग) दुःख (दुर्भग–दूहच; ग=व, यथा तडाग–तलाव; भागिनी-भाविनी-भामिनी P. 231) ८. ५०.

ध.

धँधारी–चक्र–गोरखधंधा ["गोरखपंथी साधु लोहे या लकड़ी की सींकों का चक्र बना, उसके बीच में छेद करके, कौडियां डाल देते हैं, और उन्हें मन्त्र पढ़ कर निकाला करते हैं। इस धंधे को न जानने वाला व्यक्ति चक्र में से कौड़ी नहीं निकाल सकता। इसी लिये कठिन काम को गोरखधंधा कहते हैं" सुधा०] १२. ४.

धँसइ–[वै० ध्वंसति–गिरता है; नीचे जाता है, नष्ट होता है; *Dhouos= धूल की तरह उड़ना; तु० सं० धूसर Ags. *dus*; Germ. *dust* तथा *dunst*; E. *dusk* तथा *dust*; संभवतः Lat. *furo* भी इसी के साथ संबद्ध है] हि० धँसना; पं० धस्सणा; म० धास-ळणें; धँसता है २३. १७१.

धँसा–पैठा–नीचे गया २३. १३१.

धँसि–धँस कर २२. ७४; २३. १०३, १२०, १३६, १६६, १७२, १७४.

धउरहर–धवलगृह (सु० 'धुवहर' असं-गत है; म० धवलार; पं० धौलर= श्वेत भवन) धवल; अप० प्रा० धवलु; उ०, बं० धला; हि० धौला, धौळा; सि० धैरो; गु० धौळुं; म० धवळ; २. १५४, १६१.

कर्मन्, धामन्; नामन्=Lat. *nomen*) √धृञ् धरणे, तु० Lat. *firmus* तथा *fretus;* Lith. *derme* (संधि); ध्यान दो सं० धरिमन्; Lat. *forma*, E. *form*] धर्म्म; तु० छि धरम=पृथ्वी; पश्तो धाँजली=भूकम्प < *धर्मजली (हि० धाँधली अस्तव्यस्त); किन्तु छि धमान=वायु; पश्तो दामान=तूफान, तथा फा० दमीदन=हवा चलना सं० √ध्मा के साथ संबद्ध हैं; धम्म १. ११६, १४०; २. ११५; ३. ७६; ६. २, ७; १४. १६; २३. २२; २५. ६५, १३४.

धरमअस्थानू–धर्मस्थान १. १७७.

धरमिन्ह–धर्मियों में १३. ५४.

धरमी–धम्मी=धार्मिक १. ५०, ८५.

धरहिँ–धरते हैं (√धृञ् धरणे) २४. ८.

धरहु–धरो ३. ५६; १२. ८६; २४. १०.

धरा–रक्खा=धरइ का भूत० १. ६८; ५. ४३; १०. १३; १६. २४; २१. ३८; (पकड़ा) २२. १६; २४. १२६, १३३.

धरि–धरकर–(पकड़ कर) ५. ३३; ६. ४६; १३. ३८; १६. १५; २०. ८८; २५. ६८, १०५, ११०.

धरीँ–रक्खीँ ४. ३३.

धरी–रक्खी १०. १४.

धरु–धरो–रक्खो २३. ३१.

धरे–रक्खे २. ११३; ४. ३५; ५. ४; २२. ६; २४. ३३.

धवर–धवल २. १००.

धवरी–धवल=उज्ज्वल ३. ४१.

धवलागिरि–धवलगिरि १४. ८.

धसइ–ध्वंसति=धँसता है [*Dheuos का निरनुनासिक प्रयोग] २२. ७२.

धसमसइ–धँस जाता है १. ११०.

धसावा–धस+आव=धँसता है १३. ४३.

धसि–धँसकर १५. ६४.

धाइ–[सं० धात्री √धे, *Dhōi; तु० Lat. *felare, femina* (दुग्धदान) *filius* (चुची देना); Oir *dīnu*=मेमना; Goth. *daddjan;* Ohg. *tila*. चूची; तु० दधि, धीता, तथा धेनु] पा० धाती; धाउ, धाय (P. 87, 292) ८. २०, २५, ३३, ५३, ५७; १८. १४, १७, २४, ३३, ४१; २४. ६७; धावित्वा=दौड़कर १६. १६; १७. १२.

धाईँ–दौड़ीँ २४. ६७.

धाई–दौड़ कर १२. ७६; धावा मारना २५. ११३.

धाउ–धावति; धावइ, धाइ; हि० धावना, धाना (दौड़ती है); पं० धाउणा; म० धावणेँ; गु० धावुं; छि धाव–; (तु० का० दवुन; पश्तो दव–; फा० दवीदन; छि० धाव; ध्यान दो सं० √द्रु, दूत पर) ३. ५६.

धाए–दौड़े ३. ५६; २५. ११०, १३६.

धुनाति, धुवति (णिजन्त धूनयति) √धू = *Dhū = संतत आन्दोलन में होना; तु० Lat. *fumus* (धूम्र–fumo); Lith. *duja* (धूल); Goth. *dauns* (धूम तथा गन्ध); Ohg. *toum;* इसी से संबद्ध है; तु० धावते, धूप, धूम, धूसर, तथा धोन; तु० *Dhe-ṷos = ध्वंसति = धुनता है] ७. ७२.

धुना – धुनइ का भूत १०. ७८.

धुनि – ध्वनि – झुणि – धुनि (P. 299) धुनी; म० धून; पं० धुण, धुन; सिं० दनि; १३. ७; २०. १०३; २५. २३; धुनकर २१. ८.

धुंध – धुन्ध – अन्धकार ७. ३२.

धुव – ध्रुवतारा [अवे० द्रव] १. १४८; १०. २१, ८८, ६२; ११. ३१.

धूप – [*Dhūp>*Dhū, धुनाति में] धूअ, धूव = आतप १. ७; ४. २०; (घाम – तेज) ६. ३२; १२. २६; १५. १६; २०. २; २४. १४६.

धूपा – धूप; का० दूफ; २. २३; २१. ६.

धूम – [देखो धुनइ, धूप] धूम्र २. १६३.

धूरि – धूलि १. १८३.

धूरी – धूलि १. १०६.

धूवँ – धूम्र – धूम – धूआँ १०. १२८.

धोआ – धो डाले [√धाव्, पा० धोव्, देखो धुनइ] २०. ८७.

धोइ – आधूय – धोकर १६. ४३.

धोई – (√धाव) धोअइ – धोता है २५. ६७.

धोख – धोखा ३. ७४; ८. २८; २४. ४३.

धोखा ८. ४३.

धोती – धौतवस्त्र [√धाव् = पा० धोव; तु० पा० धोन = धोत = सं० धौत, अथवा = धूत (देखो धुनन); Korn के मत में धोन की निष्पत्ति पोण के आधार पर है] २५. ६७.

धोवइनि – धाविनी, धोबन १२. ७८.

न.

न १. ८, १६, २०, २१, ३३, ३६, ३७, ३६, ४७, ५१, ५२, ५३, ५६, ६३, ६४, ६५, ७०, ७१, ७३, ७७, ७६, ८४, १०५, ११२, ११३, ११४, ११६, १२६, १२६, १३१, १३४, १३५, १३६, १६४, १६७, १८४, १६२; २. ४, ५, ६, ८, १६, २३, २४, ३०, ६५, १०३, १०७, ११२, १२७, १२८, १४१, १४३, १५२, १५६, १५८, १६८, १७३, १७४, १६८; ३. २, १६, ३१, ३६, ४८, ५१, ५२, ६०, ६२, ६३, ६४, ७०, ७२, ७४, ७८, ८०; ४. १५, १६, ४५, ४६, ५४, ६०; ५. ४, ७, ८, १०, १६, २४, २८, ३६, ३८, ४५, ४७, ५२; ७. ५, ७, ६, १२, २१,

२३. १६१; २४. ५२.

नइन—नयन=णयण=आँख २२. २६; २३. ६३, ६४, ६६, ८६, १४०, १५०, १७४; २४. ६०, ८८; २५. १५२.

नइनन्ह—नयनों से २३. ६०.

नइनहिँ—नयनों में २३. ५२; नयनों से २३. ६४; नयनों ने २३ १६०; नयनों के २४. १५७.

नइना—नयन १०. ४२; २१. १८; २२. ३६; २३. ५६, १२४.

नइहर—मायका ४. ११, १८, १६, २४.

नई—नता=णय=झुक गई (तु॰नमति) १. १००; ३. १४.

नउँजी—लौंजी=लोचों २. ७८; २०. ४२.

नउ—नव=णउ=णव=नौ १. १८५; २. १२५, १३६; १२. २६, ६४; २२. ६७; २४. ५२; २५. ११८; नव=नया २. ७६, १५१, १६८; १६. ७०.

नउ—उ=नवों २. ८७, १२५, १३०, १३६.

नउगढे—नवघटित=नये घड़े हुए १३. १८.

नउरँग—नवरङ्ग २. ७४.

नउल—नवल—णवल्ल—नव(Osk. *nuv-la* √नू—स्तुतौ) [नव, neuṉ, Lat. *novu-s*, noviu-s; Goth. *niu-yi-s* (नया); Ags. *niwe*, *neowo*, *niwa*; Lith. *naú-ye-s* (नया); *nauyd-ka-s* (नौसिखिया); Slav, *nov-u* (नया), Hib. *nua*] नवा; म॰ नवा; गु॰ नवुं; सि॰ नइंउं; पं॰ नवां; बं॰ नई; सिं॰ नव; का॰ नोवु; त्सि॰ नेवो; अवे॰ नव; पह॰ नवक, नोक; आ॰ फा॰ नो, नव; शि॰ नउ; सरि॰ नुज; यलू॰ नोक; कु॰ नु; री नाक (पत्नी)—*नाव्यका; परतो नावे (दुलहन; सं॰ नव्य, नव्या—नववधू) २०. २, ४, ५, ६२; २१. २४.

नउलि—नवल=नई ३. ३६.

नउसेरवाँ—नौशेरवाँ=प्रसिद्ध न्यायी मुसलिम बादशाह १. ११४.

नए—नवीन २३. ३८.

नएउ—नताः=झुके १. ११२.

नखत—[वैदिक नक्षत्र, नक्तिः अथवा नक्ता से; तु॰ Lat. *nox*, Goth. *nahts*; E. *night*=रात्रीयाकाश, रात्रि के तारागण; (P. 270) के मत में *नक्षत्र; (नक्षत्र Aufrecht. KZ. 8. 71; तु॰ Weber, naxatra; Grassmann के मत में *नस् से)] १. ६; ४. २८; ५. १४; १०. १६, ४५, ६८, ८६, १५८; १६. ७, १५, २०; २०. ११, ६८; २४. ६५, ८०; २५. १२४.

नखतन्ह—नक्षत्रों १. १६३; २. १२६; ५. १२; १०. ८१.

नखसिख—नखशिख [वैदिक नख; तु॰ सं॰अङ्घ्रि=चरण; Lat. *unguis*=Oir. *inga*; Ohg. *nagal*=E. *nail*;

*narda) नरसल की नली = लग्गी जिस से बहेलिये खोंचा मारते हैं १६. १४.

नरपती – नरपति = णरवइ = राजा २. १५.

नराजी – नाराज हुई १४. ५.

नरिअर – नारिकेल; नै० नारिवल; सिं० नेरळु; बं० नारेल; बि० नारियर; हि० नारियल; पं० नरेलु, नलेरु; सि० नारेलु, नाइरु; म० नारळ २. २८; २०. ४५.

नरेस – नरेश = राजा २५. ६४.

नरेसा – नरेश ३. ५५; १०. २; २५. ६३.

नरेसू – नरेश २. ६; २४. १५६; २५. ८३, १५०, १५६.

नरिंदू – नरेन्द्र=णरेंद=णरिंद २५. १२४.

नरिंदु – नरेन्द्र = राजा २. १५.

नल – प्रसिद्ध राजा का नाम २१. १५; २४. १२७.

नलिनि – नलिनी = णलिणि, णलिणा – कमलिनी = कमल का तार १०. १४०.

नवँइ – नमति = झुक जाता है १८. २२.

नवइ – नवापि = नवों [वै० नवन्*Neun; तु० Lat. *novem* (*novon); Goth. *niun;* Oir. *nōin;* E. *nine;* संभवतः नव = *new* के साथ संबद्ध; नौ के साथ गणना का क्रम नवीन हो जाता है] नव; प्रा० णव; पा० नव; का० नाउं; उ० नअ; बं० नय; बि०, हि० नौ; पं० नौं; सि० नवं; सि० नम, नव; अवे० नवनि; प्रा० फा० नवम; आ० फा० निहम; वा०, शि० नओ; सरि० नव; कु० नेह २५. १०४.

नवउँ – नवम = नवों २. १३७; नमेयम् = झुकूँ २४. ५४.

नवल – नव = नई ४. ३७; १८. १८.

नवाँई – झुकाव १. १००; २१. ३७.

नवेला – नवल = नया २४. ७१, १४५.

नवो – नवापि = नवों १. १००.

नस – शिरा = नाड़ी २५. २३.

नसट – नष्ट = अधम = नीच ७. २.

नसत – नष्ट [वै० नश्यति, नशति; Lat. *neco; necco, noxius*] २३. ३७.

नसाऊ – नाशय = नाश करो १३. १४.

नसापहु – नाश किया २२. ८.

नहाइ – [वै० स्नाति, स्नायति √स्ना; तु० Lat. *nare* (तरना); तु० सं० स्नौति; Goth. *sniwan*, तु० पा० नहापक, नहापित; नहापेति] स्नाति ४. ३८.

नहिँ – नहीं १. ५०, ५४, ७८, ८४, ८६, १११, १६७; २. ५, ६, १२३, १२८, १४७, १६१; ३. ५१, ५४, ६६, ७५; ४. १८, ३८; ५. ३६; ७. २३, ५०, ६३; ८. १६, २३, २६, ४०, ४३, ६८; ६. ५२, ५५; १०. ३५, ७६, ८६, ८८, ६१, ११६; १२. ३८; १३. २१, ३१; १४. ७; १५. ६३; १६. ४४;

नामन; पह०, फा० नाम; वा० नुंग; माक्र० नूम; गिला मोम; अफ० नूम; ओस्से० नोन; ट० नोम १. ८, ८१, ८७; २. ४०; ३. २०, ६६; ५. ५२; ७. ६४, ६७; ६. १६, ३३; १०. २४; ११. २७; २२. १२; २३. ८८, १६०; २४. ८६, १२७; २५. ८, ७६.

नाउ—[वै० नौः; Lat. *navis*; O. Germ. *nacho*; As. *naca*; Bavarian *naue*=जहाज] नौका, णावा; बं० ना; सिं० नव (√ष्णु से) १. १५२; ३. ८०; २१. २६.

नाउत—नापित; महा० प्रा० ण्हाविश्र—*स्नापित; मा०, शौ० णाविद (P. 210, 213, 347; हे० 1. 237) नाई, नाऊ; पं०, गु०, सि०, बं० नाई; म० नाऊ, नाहु, न्हावी, नाहावी; का० नायिद २०. ८४.

नाउनि—नाइन २०. २६.

नाऊँ—नाम १. ६३, ८६, ८६; २. ३०, ४२; ३. ३, ३७; ६. १६; १६. ३५; १६.१७; २३.२१; २५.२१, ३५, ३६.

नाऊ—नापित ३. ५६.

नाए—झुकाए (√णम् णिजन्त) ७. ५१.

नाओँ—नाम २५. ८.

नाक—नस्; *नस्क (तु० सि० नहय); हि०, गु०, म०, बं० नाक; सि० नकु; पं० नक्क; सिं० नख ("नक्को घ्राणं मुखं च" दे० 155. 5) १०. ५२.

नाग—णाग [संभवतः *Snagh से; तु० Ags. *snaca* (snake) तथा *snaegl* (snail)] १. २६; ३. ४३; १०. ८, १३०; १२. ७५; १८. ३६; २५. १०१.

नागफाँस—नागपाश २४. ३५.

नागमती—रानी का नाम ८. २, २६; १२. ४१.

नागरि—नागरी—चतुर धाय ८. ५६.

नागन्ह—साँपों को ६. ४६.

नागिनि—साँपन ४. २६.

नागिनी—सर्पिणी ८. ३५.

नागिनिबुद्धि—सर्पबुद्धि ८. २६.

नागू—नाग १०. १३५.

नागेसर—नागेश्वर २. ८४; ४. ६.

नाटक—णाडग—णाडय २. ११८.

नाठा—नष्ट—णट्ठ [पं० नाटा (भागा, छोटा) हि० नठ (नष्ट); म० नाँठा (बुरा); सि० नट (नष्ट)] भाग गया २३. ५५.

नाता—संबन्ध (पैतृक) [तु० ज्ञाति—णाइ; √ज्ञा; सुज्ञात; Goth. *knodi* पैतृक संबन्ध, उससे संबन्ध मात्र] १. ५१.

नाती—नसर्, नप्तृ—कन्या या पुत्र का पुत्र [√णभ—णह=संबन्धार्थक से; तु० Lat. *nepo(t)s*; O. Germ. *nefo*= पोता; Slav. *netii*= भतीजा; E. *nepotism*=संबन्धियों का पक्षपात; छि नवा=पोता *नवाद्य= ——

णाहल, लाहल २. १३३.

नाहा – नाथ ८. ५.

नाहिँ – नहीं १. ४३, ५८, ५६, ६०, ६१; २. १२६; ७. ६६; ६. १५; ११. ११, ३६; १३. ५३, ५८; १५. ५०; १६. १७; १७. १०; २२. ६६, ७७.

नाहीँ – नहीँ १. ३५, ५८, ५६, ६०, ६६, १४८; २. ६, ६५; ५. २६, ५६; ७. ५२; ६. ३१; १०. ६, ५५, ७५; ११. ५३; १४. ११; १७. ५; १८. ३१; २०. ७८, ११५; २१. ५४; २४. ५, १३०; २५. ४०.

निँउकउरी – निम्बकपर्दी=निम्बकवड्डिया =निमकौडी =निँबौली २०. ४७.

निअर – निकट=णिअड=नेड़े १. १६०; २. १७; ११. ११; १५. ४८.

निअरइँ – पास में २०. ४८.

निअरहि – निकट ही १. १६१; १६. ८; २४. १२५.

निअराना – निकट आता हुआ १५. ४७.

निअरावा – निकट किया २. १७.

निआउ - न्याय=णाय; (अ०मा०नियाग– *न्याव – न्याय; य=ग; और य= व P. 254) सि० निआउ; गु०, बं०, का० न्याय; म० न्याव, न्यावो; सिं० नियाव, नियाय १. ११६.

निआन – निदान=णिआण=अन्त में १२. ३४, ६७.

निआना – निदान १६. २२.

निकट – समीप २४. १२६.

निकलंकू – निष्कलङ्क १०. १६.

निकसत – निःकसन्=णिक्कास्, णिक्काल्= निकलती १६. ४.

निकसहिँ – निकलते हैं २३. ६४.

निकसा – निकस का भूत १२. ६५.

निकसि – निकलकर १०.१२३; २१. ६२; २२.१४; (निष्कर्ष्य सु०) २५.१४०.

निकसु – निःकसति=निकलता है ११.४१.

निकाजइ – निः+कार्य=णिक्कज्ज=बेकाम (निकाम=निष्कर्मन्) १८. ५६.

निखेधा – निखेधइ का भूत (णिसेह= निषेध) २०. १२७.

निचिंत – निश्चिन्त=णिचिंत १. ७२, १५२; २. १४०, १४२; ५. ३१, ४५, ४६, ५५; १२. २४; २१. ८.

निचोआ – [दो प्राकृत धातुओं की परस्पर भ्रान्ति; छड्ड तथा छोद्; पहला पा० छड्डेति; दूसरा=सं० चोदयति, अप० छोल्लइ; तु० पा० छुद्ध, दे० P. 326] निचोड़ा २४. ७५.

निछतरहि – बिना छत्र वाले को १. ४३.

निछोही – निःक्षोभी = णिच्छोही = निर्मोही २३. ११२.

निजु – स्वयम् [संभवतः नित्य=णिच्च के साथ संबद्ध] १३. १६.

निठु – [निष्ठुर तथा निष्ठूर=नि+थूर;

निरदोखा – निर्दोष = णिद्दोस ८. ४३.
निरदोखी – निर्दोष २१. ४३.
निरभउ – निर्भाव = भावशून्य १३. १४.
निरमई – निर्मिता = बनाई ३. ४; बनाया ३. १४; १०. ६८.
निरमरे –[निर्+मल] निर्मल; णिम्मल= स्वच्छ १. ११.
निरमर – निर्मल = णिम्मल १. ६३, ८३, ८६, १३८, १५१, १६८; २. ५०; ४. ५८, ६४; ८. ६४; १३. ५६; १६. ४.
निरमरा – निर्मल १. ८१, १२५, १४५, १४७; ३. २२, ६७; १६. २०, ४१.
निरमरी – निर्मल ६. २२.
निरमल – निर्मल २३. १२२.
निरापुन – जो अपना न हो २०. ११६.
निरारा – न्यारा (निर्+आरा √ऋ गतौ) पृथक् १. ११८; (निरालय = पृथक् सु०) ७. ५०; १५. ५२; २५. १५.
निरारे – न्यारे = अलग ८. ६६.
निरास – निराश २. ४७; ७. ५६; १०. १२८; १५. ५६; २२. ३२; २३. २४.
निरासा – निराश २. १११; ७. १६; ६. ४६; २१. ३१; २२. १३; २३. १०३; २४. ३६; आशाहीनता १. ३६.
निलज – निर्लज्ज = णिल्लज्ज २५. ११.
निवासू – निवास ३. ३४.
निसँसइ – (निर्+श्वस् = णिस्सस) निःश्वसिति = हांपता है ११. ५.
निसँसि – निःश्वस्य = उसाँस लेकर २४. ८२.
निसचइ – निश्चय = णिच्चय = णिच्छय (तु० सणिच्चर = शनैश्चर P. 301) २५. १६२.
निसत – निःसत्, जिस में सत न हो १५. २३. १७. १२;
निसतरउँ – निस्तार पाऊँ १६. ३६.
निसरइ – √सृ गतौ, निसरण=निसरने= निकलने ४. १५; २३. १०४.
निसरउँ – निकलती हूँ २०. ११२.
निसरा – निकला ६. १०; १६. २७.
निसरी – निकली २३. १०७.
निसरे – निकले २०. ६१.
निसाँस – निःश्वास = णिस्सास ११. ५.
निसान – डंका २. १७६.
निसासि – निःश्वासी=वेदमका २१. ४०.
निसि – निशा=रात २. ६६, १६०, १६७; ३. ११; ४. २८, ४०; ५. ११; ८. १४, ३१, ३३, ३६; १०. ६६; ११. ४७, ४८; १३. ५३; २०. १२२, १२३; २४. ८८.
निसितर – निस्तार = निस्तरण २२. १०.
निसेनी – निःश्रेणी = णिस्सेणि = सीढ़ी २५. ७६.
निसोग – निःशोक = निश्चय करके जिसे शोक हो = अभागा २. १४३; ३. ७२.
निसंक – निःशंक = बेफिक्र २४. २.
निहकलंक – निष्कलङ्क = णिक्कलंक १.

१४४; ३. १४.

निहचर–निरचय १३. ५६, ६०; २२. ११, १४, १५.

निहोरा–"निरोधपति"=निहोड–निहोरा का मूल २३. २१.

नींद–[वै० निद्रा=नि+द्रा (सं० द्राति, द्रायते) •Dore, Lat. dormio] पा० निद्दा; प्रा० णिद्दा, णींद; गु० निन्द्रा; म० नींद; का० नेन्दर; सि० निंदि, निंडु; १. १४, १८२; १२. २६; १३. ५; १८. २, ५०.

नीउँ–निम्ब=नीम [निम्ब (हे० I. 230) मराठी लिम्ब, गु० लिम्बड P. 247] २४. ११५.

नीअरे–निकटे=नेडे=समीप (म० नेटी JB. 63, 109) १. ६४; ११. २४.

नींदै–निन्द्=नींद; (गु० सि० निंडु; पु० हि०, नींद II. 160) २. ७४.

नीक–स्वच्छ=नेक ११. २१.

नीका–नीकि=भाँइ २३. ६७.

नीर–पानी १. ११८; २. १४५; ४. १४, ११, ६४; १५. ८, १३, १८, ४५; १८. १२; १९. ७; २३. ६१, ७८, १११; २४. ७८, ११२.

नीरा–नीर=जल ४. ४१.

नीरू–नीर=जल १४. ६, ११.

नेउछावरी–न्योंछावर करके ११. ५६; २२. १०; २५. ११.

नेउरी–नियरी–छूटी २४. १५१.

नेगी–स्नेही (स्निह=स्निग्=निग=निग=नेग) साथी, "नेग लेने वाले पूज्य" ११. ६.

नेम–नियम=निअम; हि० नेम (JB. नील मशुद) पं० नेम; का० नेम, सिं० नेमि; गु० नीम, नेम; म० नेम; सि० नेमु १४. १६.

नेयताहु–निमन्त्रयथ=न्योतो १३. १४.

नेवारी–पुष्पविशेष २. ८४; २०. ५०.

नेह–स्नेह–प्रेम १५. १६; १६. ८; २४. १७; २५. ११, १५.

नेहहि–स्नेह को ११. २८.

नेहा–स्नेह २४. ११६.

नेहु–[√स्निह; यवे० स्नएजइति (बर्फ पड़ता है) = Lat. ningvit; Oir snigid (बरसता है); Lat. nix (=snow) = Goth. snaiws, Ohg. sneo = E. snow; Oir. snigen वर्षा इत्यादि] स्नेह, पा० सिनेह, हि० नेह (P. 313) ११. २७.

प.

पँखि–पक्षी=पक्खि=पंखी १. ७५.

पँखिराज–पक्षिराज=पक्खिराअ=हीरामणि शुक ५. ५६.

पँखी—पक्षी २४. ७६.

पँखुरिन्ह—पंखुड़ियाँ २. ५३.

पँडित—पण्डित=पंडिअ १. ६२; ८. ४५; २३. १७७.

पँडितन्ह—पण्डितों १. १७८.

पँवारी—लोहे को छेदने वाला औज़ार १०. ५२.

पँथ—पन्थ १. १५२; २. ४६, ४७; ८. ४५; ६. ५२; ११. ३५, ३७; १२. ६०, ६६; १५. ३४, ५६; २३. १०१, १३६.

पइँत—परितः=सर्वतः २२. ७१.

पइ—प्रायेण, (किन्तु), अप० प्राइव; म० पइँभ (JB. 57, 125), पर=किन्तु १. ५८, ५६, ६०, ६१; ५. ३६; ७. ५१, ५४; ६. ६; ११. २३; १२. ६२; १३. १६, २५, ५६; १४. २१; १५. ३१; १६. ३५, ६४; २१. ३२; २३. २१, ६५, ६८, ११४; २४. ७; २५. ६१, १४७;=प्रायेण=निश्चयेन अपि—एव १. ६६, ७०, ७२; २. १२०; ७. ६, ६२; ८. २७, ५४, ६०; ६. १६; ११. २, ४०, ४३, ५३, ५४; १३. २८, ३१; १६. ३७; १६. १३, २३, ६६; २०. ११५; २१. ५३; २२. ७५; २३. ६३, ७७; २४. १, २, ३, ४, २८, १०१, १३५, १४६; २५. ७, ३८, ८१, १४८, १५०, १५३, १६०, १७५; उपरि—पर १०. १, ५४; १३. ५८; २५. ६६.

पइग—पदिक (पदाति); प्रा० पाइक्क (=पादातिक P. 194); हि० पइक; म० पाईक; बं० पाईक; पह० पइक; आ० फा० पइग; (JB. 46, 57, 225) पैरों, पैर; २. ४१, १०७; ५. २६; १०. १४१.

पइगहि—ठोकर से २. १६६.

पइगु—पइग १५. ३४.

पइठत—प्रविशन्=घुसते (प्रविष्ट—पइट्ठ "पइट्ठो ज्ञातरसो विरलं मार्गश्चेति त्र्यर्थः" (दे० 216. 3); हि० पइठना, पइसना; सि० पेहणु; गु० पेठुं; बइठना तथा बइस के लिये देखो (JB. 56, 125) ४. ५२.

पइठव—घुसूंगा ७. १५.

पइठि—घुसकर ४. ३८; १२. १३; १४. २२; २२. ७१.

पइठीँ—घुसीं ४. ३३.

पइठी—पैठ गई ३. ४३.

पइनइँ—[√पैणृ गतिप्रेरणश्लेषणेषु] पैनी=तीखी २२. २७.

पइनाई—पैनाई=पैनापन=तीक्ष्णता (प्रेणी=पैणी=हरिणी "तीव्रता") १५. ५४.

पइनि—पानी, पान (पाण) जिस में हो, ("अनेक वस्तुओं को पानी में मिला

कर उस मिश्रित पानी में पच्चा करने के लिये शब्द को बुलाते हैं। इस मिश्रित पानी को संहिताकार "पान" कहते हैं; ध्यान दो म॰ पइन=पइज, प्रतिज्ञा) १५. ५४.

परहिं॰–पैरते हैं=तैरते हैं २. ५५, ६८.

परसारू–पैरसाल ४. ५२; (प्रवेश सु॰) २०. ७१.

पइँठा–पैठा=घुसा २४. ७७, ११२, १४७.

पइँठि–पैठी=प्रविष्ट हुई २३. ६६.

पइँठी–पइट्ठ–(॰प्रविष्टति II. 77) २०. १२१; २१. १८.

पउँरी–पादुका १२. ६१.

पउनारि–पद्मनाली=कमल की नाली=मृणाली १०. ११२.

पउनि–पाने वाली २०. २४.

पउन–प्रा॰पउण; पा॰पवन; का॰पावन, उ॰, बं॰ पवन; हि॰ पउन, पढन, पौन; पं॰ पौण; गु॰ पोण १. ३; ४. ५४, ६०; ५. ११, २४; १०. ३६, ५६; १५. २, ६५, ६८; १६. ७, ११, २१; १८. १६; २२. ५५; २३. ५१, ११०, १३३, २४. ७८, ७६; २५. ६८.

पउरि–पौरी २. १०३, ११२, ११७, ११५; २४. ११५.

पउरिहिं–पौरी पर २. ११५.

पउरी–पौरी २. ११५, ११०, ११३, ११६; २२. ६०.

पख–[Lat. *pectus*] पक्ष; पा॰ पक्ख=पक्ष, प्रत्य, पख; का॰ पख; पू॰ हं॰ पाही; बं॰ पाखी; वि॰ पंख, पाँखि (पाख), पंछी=पक्षी; हि॰ पख, पंख (P. 74); पक्खी, पंछी; पं॰ पक्ख, सि॰ पंगु; म॰ पाख; सिं॰ पक, पस; जि॰ फक १६. २८.

पखंडी–पाखण्डी, पासंडी, पाखंडी (P. 265) कटुतर्की वाचा (शु॰ पा॰ पक्खंडक=वै॰ प्रस्कन्दिन्; पक्खंडति=प्रस्कन्दति) २. ११७.

पखरिहउँ–प्रक्षालयेयम्=धोऊँ (शु॰पा॰ पक्खालति=प्रक्षालयति, प्रक्खलति; किन्तु पक्खर=प्रखर) १२. ४८.

पखेरू–पक्षी १२. १६; २३. ६१.

पगु–प्रग=पग=पैर १०. १५६; १३. २६; २०. २०; २१. २७; २३. ६१.

पंकज–[पङ्क √॰Pono=॰Pelo, वै॰ Lat. *palus*; देखो Goth. *fani* (दल-दल); Obg *fenna* "fen" (दलदल) तथा Ital. *fango* (कीच); Obg. *fuht*=आर्द्र] कमल १०. ११६.

पंख–पक्ष (सानुनासिकत्व के लिये देखो II. 159) २. ५५; ५. ४८; १०. ४६; १५. ३; १६. ११; २४. ४.

पंखि–पक्षी १. ११, २६, १०७; २. ३१, ४०, ६८; ३. ६२; ७६; ४. २४; ५. १, २०, ३४; ८. ३१, ३८; ६. ११,

१८; १४. १४; २१. ४६; २५. १५१.

पंखिखाधुक — पखिखाधक = पखिरूप भोजन ७. ३५.

पंखिन्ह — पखियों ५. २६, ४४, ५०; ७. ३३, ३८, ३६.

पंखिहिँ १०. ४८.

पंखिहि — पत्ती के ३. ३८; १६. १०.

पंखी — पत्ती १. ३६; [सूची में छरहटा (Gn.) के स्थान में "चिरहँटा" = बहेलिया; पेखन के स्थान में पंखी रा०] २. ११७; ३. ६६; ५. १७; १२. १६; १६. २५; १८. ३७; १६. ६६; २५. १५३, १५६.

पंग — अपाङ्ग = कपोल भाग १०. ८२.

पछराति — [वै० पश्चा, पश्चात्; भायू० *Pos, तु० Lith. *pàs* = (समीप), *pastaras* (अन्तिम); अवे० पस्चा (पश्चात् = पीछे); Lat. *post* = पीछे] पश्चाद्रात्रि = पच्छराई = पिछली रात १५. ७२.

पछलगा — पश्चाल्लग्न [तु० पा० पच्छगु = पच्छग = पटुग = प्रतिग = प्रतिगमक RPD.] १. १७६.

पछलागू — पश्चाल्लग्न १२. ८७.

पछिउँ — पश्चिम [पश्च का तमवन्त] सब से पिछला २०. १२४, १३२; २५. १७४.

पछिताउ — पश्चात्ताप = पच्छातताव = पछतावा [गु० पस्तावुं; सिं० पछताओ; बं० पसतान; सिं० पसुताव; शौ० प्रा० पश्चादाव; किन्तु तु० पा० पच्छ = पटि = प्रति, यथा पचक्कख = पटि + अक्ख = प्रत्यक्ष; पचक्खाति = पटि + अक्खाति = प्रत्याख्याति; P. 280] ३. ७१; १२. २४.

पछिताना — पश्चात्तपन ८. २८; पछताया ८. ४१; पछताने लगे २५. २.

पछितावा — पश्चात्ताप ७. ६.

पछिलहिँ — पिछलों को १. १११.

पंचम — पाँचवाँ [पंच *Qenque; Lat. *quinque;* (वै० पञ्चार = Lat. quinpu-ennis) Goth. *fimf;* Lith. *penki;* Oir. *coic;* म प्रत्यय के लिये तु० Lat. *supremus;* ध्यान दो Lat. *quinctus* = सं० पञ्चथः] २०. ५७.

पंचमि — पञ्चमी तिथि २०. ४.

पट — (संभवतः √पॄ पूरणे से) पट = वस्त्र अथवा पर्दा २४. ४१.

पटइनि — पट्टवाहक (व्युत्पत्ति अज्ञात); रेशम वाले की स्त्री २०. २३.

पटोरा — पट्टोर्ण = रेशमी और ऊनी कपड़े २०. १८.

पठवा — प्रस्थापित [प्र + स्थाप् = पट्ठाव्; प्रस्थापयति; पट्ठावइ (P. 308, 309); हि० पठाना; गु० पाठाववुं; सिं० पठणु; म० पाठविणें; बं० पाठइते; उ० पठाइबा] १. ६६; २३. १५६.

पठाई–भेजी २२. २२; २३. १०४.

पठायहु–भेजो ११. १६.

पड़ा–पड़इ=पतति का भूत [पतति; पा॰ पतति; उ॰ पड़िया; बं॰ पड़या; हि॰ पड़ना, परना; सि॰ पवणु; गु॰ पड़वुं; म॰ पड़णें; पं॰ पड़्णा, पउणा; P. 218, 219] २३. ५५.

पड़–पड़ने हैं १३. १७६.

पड़इ–पतति; पं॰ पड़णा; गु॰ पड़वुं; सि॰ पड़्दणु; म॰ पड़णें, बं॰ पड़िने; का॰ पईं; उ॰ पड़िया; का॰ पड़न ३. २६, ६१; ७. २४.

पड़न–पड़ने हैं १. ८६.

पड़हिं–पड़ते हैं २. ११५; ३. ४०.

पड़ा–पड़इ का भूत ५. ४८; ७. २७.

पड़ाए–पड़ाने से ३. ६१.

पड़ि–पड़ कर ७. १२, ६१.

पड़ी–पड़इ का भूत ३. २८, ३०.

पड़े–पड़े १. १७४; ७. २४; २३. १७७; २५. १४४.

पंडित–पण्डित [पण्डा=बुद्धि; व्यु-त्पत्ति?] १. १००; २. ८५, ११५; ३. १८, २७, ३६; ५. १०, ४०; ६. ३; ७. ११, १४, १७, ४०, ६४; ८. ३७, ३४, ४३, ४१, ४४, ४५, ४६; ६. ८, ३१; १०. ७८; १२. १२; २३. १७८; २४. ११८, १४४.

पतंग–[स्पृ॰ *Pet, गु॰ परे॰ पत्पृति= उड़ना; Lat. praepes = त्वरित, peto = जाना; impetus; E. impetuous] पतङ्ग=फतिङ्गे १. ३६; ७. ९८; १८. ८; २०. ७२; २१. १८.

पतंग–फतिङ्गा ३. १५, २४; ५. ७; १५. ४०; १६. २८; २३. १५, ११८; २४. ५६; २५. ६३.

पतंगू–पतंग ६. २०; २०. १११; २३. ११६.

पतर–पत्र, कागज या पत्ता [गु॰ पा॰ पत्त=पात्र Potlom; Lat. poculum, Oir. ol, प्याल दो पान, दिएरी] १०. १२१.

पतराई–पत्तलाई–[पत्र "पत्रकं इयम्" (दे॰ 186. 3) हि॰, पं॰ पत्तला; सि॰ पतिरु; गु॰ पातळुं; बं॰ पातल, पातला; म॰ पातळ; तु॰ हि॰ पत्तल= पत्तों की थाली] १५. ५४.

पतरि–पत्री=पत्ती=पाती २३. ११४.

पतार–पाताल–पाताल (√पत्) २. १४८; १०. ४; १४. २४; १६. ४०; २४. ११८; २५. १०१, १२१.

पतारहि–पाताल को १. १०८; २. १२४; १५. ५६.

पतारा–पाताल १५. ५; १६. ४५; २३. १०२, ११३.

पताळू–पाताल १. ४, ८३.

पति–[वै॰ पति; अवे॰ पइतिश=प्रभु: Lat. potis, potens, possum, Lie-

pes; Lith. *pāts*=पति] २५. १५४; प्रत्यय; पा० पत्तिय, (Trenckner, Notes 7. 3. 9), पच्चय; प्रा० पच्चय; (P. 280) हि० पत=लाज=मर्यादा= विश्वास २३. ४४.

पदारथ—पदार्थ १. १८१; २. १०१; ३. २२; ६. ५; १०. ६६; १४. २३; १६. २२, ३३; २२. ५२.

पदिक—पद [=भाग वाला; तु० पा० पदिक, पदक तथा अट्ठपदक]=अनेक (सुधा० के मत में पदिक=पद के योग्य=रत्न) ६. ५; २२. ५२.

पदुम—पद्म; म०, अ० मा; शौ० पउम; पा० पदुम (हे० च० 2. 112. P. 139) २. ५८; सौ करोड़ २४. १४.

पदुमगंध—पद्मगन्ध ३. १५; ६. ११.

पदुमनी—पद्मिनी ८. ७.

पदुमावति—पोमावइ ३. १, ६, २७, ३७, ४१; ४६; ४. २, १०, ४२; ५. १, ६; ७. ६४; ८. ६; ६. ११, ३०, ३२; १२. ८; १३. ८, ३५; १४. २४; १६. २५, ३१, ३२, ४१; १७. २; १८. १, २५; १६. १, ६, ३५; २०. ३, १०, १७, ३४, ३८, ७३, ८५, १०५, १२१; २१. १, १५, ३५; २३. १८, ८८, १६१; २४. ४६, ५७, ६५, १२१; २५. १६, २०, ३३, ६२.

पदुमावती ३. २०; २२. २१; २३. १३६.

पदुमिनि—पद्मावती, पद्मिनी जाति की स्त्री २. ३; ३. २६, ३४, ४५; ६. १३, २३, २७; १६. ४; २१. २३; २२. २२; २४. ८८.

पदुमिनी—पद्मावती, पद्मिनी स्त्री १. १८६; २. ५७, ६६, १६४; ४. २५; ८. ३५; १२. ४६; २०. १४, ६८; २३. ३.

पनिहारी—पानी ढोने वाली २. ५७, ६४.

पनग—पन्नग [पद्भ्यां न गच्छति, अथवा पन्न=पनत=पणत=प्रणत यथा पा० उन्न=उन्नत, पा० निन्न=निम्नत; नकारद्वित्व उन्न तथा निन्न के आधार पर; इस प्रकार पन्नग=झुक कर चलने वाला, तु० पन्नधज तथा पत्तक्खंध] साँप २३. १६६.

पनिग—पन्नग (पतङ्ग) ६. १८; ११. ५५; १६. ६८.

पंथ—मार्ग १. ८४, ६४, ६६, १३७, १४६, १५४, १५७; २. ६६, ११५; ३. ७८; ७. ४०; १०. १०; ११. ३२, ४४; १२. ६६, ८८, ६७, ६६; १३. ३८, ५६; १४. ७, २४; १५. ११, १४, ३०; २२. ४८, ६१, ६४, ७०; २३. १०२, १६०, १८१; २४. १३२, १४२; २५. ३६.

पंथा—पंथ=मार्ग ११. ४५; १२. ३०, ८८, ६४; १३. ३६, ५८.

पंथिन—पथिक=पहिअ=बटाऊ २. २२.

पंथिहि–पान्थ=रास्तागीर को १५.१४.

पंथी–पान्थ=यात्री १२. ८८; १५. १५.

पंनग–पन्नग=सर्प १०. १३६.

पपिहा–पप्पीह=पपीहा=चातक २३.८०.

पपीहा–चातक २. ३६.

पयारइ–प्रचारयति [गु० पा० पयारणा, पयारित, पयारेति=आमन्त्रित करता है प्र+चृ=सन्तुष्ट करना; गु०पव्यास=पव्यास्=प्रापय्; पव्यार–प्राग्भार P. 270] पयारता है=फेंकता है=देता है १५. १२.

पयारा–फेंका २०. ८३.

पयाग–प्रयाग २०. १२६.

पयान–प्रयाण=पयाण=प्रस्थान १२. ८१, ८८; १३. १, २७; २०. ११३.

पयाना–प्रयाण ७. ६६; १२. ८२.

पर–[उपरि वै० उप से, *Uper (I); Lat. super; Goth. ufar; Ohg ubir = Germ. über = E. over; Oir for] ऊपर; सि० परि; गु० पर; म० वर, वरी; बं०, उ० परे २. १११, १४५, १५३, १७४; ४. ५, ४०; १०. ११, १४, ३१, ८८, ६२, १५५; १३. १०; १४. ११, २०; १६. ५, १४, ३१, ४०; २२. १४; २३. ११०, ११६, १८०, १८२; २४. ८, ४६; पाछु २५. १०, १८, ६६, ७०, ७१. ६४; २७. १२, ४८.

परइ–पतन्=पडंत=पड़ा २३. २७.

परइ–पतति=पडइ=पड़ती है २. ६४, १२४; ८. २८, ४३; ६. ४०, ४१; १०. ६५; १५. ५, २४; (परे) १६. ४०; १८. २, ३३, ४३; २०. ७१; (पड़े) २२. ६२; २३. १०२, १७१; (परे) २५. ८१.

परई–पड़ती है २१. ३४; परे २४. ६१.

परउँ–पड़ूं २२. १०.

परउ–पतेत्=पड़े २५. ११.

परऊँ–पड़ता हूं १३. ३६.

परकाया–परकाय २४. १४१, १५२.

परखइ(हिं)–परीक्षन्ते=परखते हैं; हि० परखना; पं० परखणा; गु०पारखवुं; सि० परखणु; म० पारखणें; बं० पर्ख, तथा परीखा; बं० परक्ख, परक्खाइ; सि० पारखिम; परक्खणु; म० पारखणें, पारखी २. ४५.

परखहिं*–परखते हैं ११. ११.

परखि–परख कर ६. ८; २२. ६५; २५. ११५.

परगट–(प्र+कट) प्रकट=पगड=प्रगट, सि० पाधडु; सि० पहड १. ३६, ५०; ४. ३७; ७. ६३; ११. ४४; २०. १११; २२. ३६, ४४, ७१; २३. ५; २४. ४०, ६१.

परगटा–प्रकट १. ७८.

परगटी–प्रकट हुई ३. १३.

परगटे—प्रकट हुए १८. ५४.

परगसा—प्रकाश किया (पगासू=प्रकाश) ४. २८.

परगसी—प्रकाशित हुई ६. ३५; १०. ११, ७०.

परगाढी—प्रगाढा=बहुत कठिन १८.४.

परगास—प्रकाश १६. ३२.

परगासा—प्रकाशते=प्रकाशित होता है १०. २०; १६. ६; २३. १६३.

परगासी—प्रकाशित की २४. ८१.

परगासू—प्रकाश (विस्तार के लिये देखो H. 185) १. २; ३. ६, ११.

परछाहीँ—प्रतिच्छाया = पडिच्छाया = परछाईं; [तु० महा० छाहा, शौ० सच्छाह (हे० 1. 249); महा०छाहीं= *छायाखा = *छायाका, और* छाखा *छाखो P. 255, 165, 206] २४.४३.

परजरे—प्रज्वलति=पज्जलइ=पजरइ का भू० (तु० ज्वल, ज्वर) २१. १०.

परत—पतति=पडइ=पड़ता है १. ८४; पड़त ही=पतन्नेव २५. १२०.

परतापु—प्रताप=पयाव २.१८४;७.५७.

परथम—[वै० प्रथम, पा० पठम; अवे० फ्रतेम; वै० प्रतरम्, *Pro का अतिशय में तमवन्त] प्रथम=पढम, (कढइ=क्रथति, P. 221) २.१६८.

परदेसी—परदेशीय २२.६१;२५.३८,४०.

परधानी—प्रधान=पधाण=पहाण [तु० पा० पधान, प्रयत्न, योग, ध्यान दो पा० पदहति, पधानिक, पधानिय] २. १६६; ८. २.

परवत—पर्वत=पव्वय (पर्वन्+त) १. ४४, १०६; १२. ८४; १४. ४; १५. ४३; १६. २८, ३३, ३४, ४२, ४३; २०. ११३; २१. ५७; २३. ३७; २५. १०३.

परवता—पर्वतीय=पर्वत का=हीरामणि शुक १६. ४२.

परवते—पर्वतीय=पहाड़ी ७. २१.

परवत्ता—पर्वतीय=पहाड़ी १२. ५८.

परवि—(परव) पड़ेंगी ४. २४.

परविला—[वै० पूर्व *Por देखो परि; तु० Goth. *fram* = E. *from*; Goth. *fruma*= As. *formo* अवे० पोउर्वो; सं०पूर्व्य=Goth. *frauja*= Ohg. *frō* (परेश), *frouwa*= Germ. *frau*] पूर्विल=पुव्विल्ल= पुरविला=पहले जन्म का (इल्ल प्रत्यय P. 595; तु०पा०पुब्ब=पूर्व्य तथा वै० पूय>पूव>पूव्य>पुव्व) २०.१३५.

परवेस—प्रवेश २४. १४१.

परवेसु—प्रवेश २४. १५२.

परभात—प्रभात=पभाय १०. १०७.

परभाता—प्रभात २३. ६१.

परमँस—परमांस ७. ३५, ३८.

परम—अत्यन्त [पर का तमवन्त; Lat.

परासहि – पलाश=ढाक (के), म० पळस; सि० पलासु; पं० पलाह; सिं० पलस २०. ५.

परासउँ – परसउँ=फासउँ=छूऊँ १८.५३.

पराहीं – परायँ (परा+अय्–पल, देखो "रे पलह रमह वाहयह" इत्यादि, वज्जा० 134) पलायन करें=भागें ५. २६.

परि – पड़ २. १७७; पड़कर ७. ५२.

परिउँ – पड़ गई १८. २४.

परिगह – परिग्रह = परिगाह = आश्रित जन (परि+गृह, ग्रभ्) १२. ३२.

परिछाहीं – परछाहीं १०. ६७, ८७; १४. १२.

परिमल – पुष्प पराग २२. ३४.

परिमलामोद – आमोद = आनन्द देने वाला पुष्परस ४. ८.

परिलेखा – परिलिखइ का भूत (लेखा= समझा) १३. २६.

परिहँसि – परिहास से १०. १३६.

परिहि – पड़ेगी=आयेगी १२. २६.

परी – परइ=पतति का भूत १. ११६; ४. २७; ५. ६, ११; १०. ७, ८७, १०२; १२. २; १८. १, ६; १६. २५; २०. ४७, ७७, १२०; २१. ४, १६; २३. २; २४. ६४; २५. २६.

परोआ – पिरोया (पोअ=प्र+वै) ७. ६८.

परीख – परखे [वे० परि; अवे० पइरि; Lat. *per* (तु० per-magnus= अत्याधिक विशाल) Obulg. *pariy* (परितः); Lith. *per* (बीचोंबीच); Goth. *fair*; Ohg. *fir* = *far* = Germ. *ver*-; देखो "पर"; म० परीस = परीक्षा (JB. 42, 49) परिक्ख=परि+ईक्ष; (तु० फलिहा= परिखा; फलिह = परिघ P. 208, 257)] २५. १३६.

परे – पड़े ६. ४४; १३. ३४; २१. १०; २५. ११८, १२०.

परेउँ – पड़ा हूँ १३. ३७; २१. ३६.

परेउ – पड़े हो १२.६२; पड़ गया १८.१८.

परेता – प्रेत=पेअ=एक देव जाति १. ३१.

परेम – प्रेम=पेम्म=पेम ४. ४८; १५. ४०; २१. ५६.

परेवइँ – परेवा=परावत=पक्षी ने १६.६६.

परेवा – पारावत; पा० पारेवत; मा० पारेवय; हि० परेवा, परेवो; गु० परेवो; सि० परेलो; म० पारवा; सिं० परविय २. ३५; ३. ७४; ५. १८, ५२; ७. २५; ६. १४; १०. ६६; १२. ३६; १५. ७१; १८. ७; १६. १२, ६३; २०. ८३; २३. ५६, ५७, १५६; २४. १४०; २५. १३१.

परोस – प्रतिवास = प्रतिवासिन्; गु०, सि०, पं०, हि० पडौस; बं० पड़सी (पड़ोसी) उ० पडिसा; म० पड़ोस; (JB. 49, 50, 78) ३. ७२.

पल १. १६; १०. ३७; १४. २.

पलक–पलक (झपकने का काल) २. १७६; ११. ४६; २२. ४२.

पलंका–पर्यङ्क; प्रा॰ पल्लंक (P 285) शौ॰ प्रा॰ पलिअंक; पा॰ पल्लङ्क, परियङ्क; अप॰ पालङ्क; बं॰ पलंग; उ॰ पलंक; मं॰ पालोंग; पालंक; वि॰; हि॰ पलँग; सि॰ पलगु २१. ५६.

पलटि–पर्यस्य, (पलट कर, उलट कर); "पल्लत्थः पल्लट्टः पर्यस्त इति पर्यस्त-शब्दभवम्" (दे॰ 186, 8), तथा "पल्लट्टइ, पल्लत्थइ, पर्यस्यति" (193, 11); तु॰ म॰ पालटयें; हि॰, पं॰ पलटा; गु॰ पलटवुं; पालटवुं; सि॰ पलटणु; बं॰ पालटिते आदि (तु॰ वि पलेव=इकट्ठा करना JM. p. 279; JB. 48, 83, 110, 122, 141, 148 तथा H. 143, P. 295; तु॰ पा॰ पल्लत्थ=पर्यस्त; पल्लत्थिका; हि॰ पलौथी; पल्लत्थित आदि) ११. ५२; २४. १४२.

पलागहिं–पलाश को १२. ६८.

पलुहर–["पल्लविल" तु॰; पर्यस्त=अस-ग=उलटा हुआ, तु॰ पा॰ पल्लत्थि=पल्लत्थिस; पल्लत्थइ, पल्लत्थिका=पर्यस्त; पल्लट, *पल्लट्ट=पर्यस्त; (P. 245, 330) हि॰ पलटना, पैर रखना,–पर्यस्त "पल्लत्थिका पर्यं- परिवर्तनम्" (23, 6) म॰ पलाटन, पलेटन=यात्रा (JB. 48, 51, 77, 109, 141) तु॰ पा॰ पल्लत्थिका; हि॰ पलौथी=पल्लत्थ से (पैरों को एकत्र करके बैठना)] २१. २६.

पलुहत–पल्लवित २४. ११६.

पल्लउ–(तु॰ सं॰ पल्लव) पल्लव=पत्ता २०. ७.

पवँरि–पौरी २४. ११२.

पवनबंध–पवन को बांधने वाला=प्राणों को रोकने वाला, [तु॰ पा॰ पवन= वै॰ प्रवण; Müller P. Gr. 21, पवन=उपवन असंगत; तु॰ Lat. *pronus*=E. *prone*] १८. ४६.

पसारसि–प्रसारयसि=फैलाता है (प्रसा-रय=प्रसारय JB p. 363) २३. १०.

पसारहिं*–प्रसारयन्ति २. ११४.

पसारा–फैलाया, फैलाव २. १००; ४. ४१.

पसारी–फैलाई २३. १०; २५. ११६.

पसीना–प्रस्वेदित हुआ (पसेव, पसेव, पसीज) २१. २६; २३. ६५.

पसेऊ–प्रस्वेद २३. ६६.

पहँ–पर्श्वे, पाहीं*, पै (पर H. 373) ५. ६; ८. ४; १०. २७, ३०, १६०; १७. १; २३. ८७.

पहन–पैहर २१. ५१.

पहर–प्रहर; प॰ पहर; हि॰ पहर (शहर, पहिरा=रात में चौकसी करना) तु॰

पोर; म० पहार, पार; बं० पहर २. १३८, १४३.

पहरहि–पहर पर २. १४३.

पहाड़–पर्वत (प्र+धारय् अथवा प्र+ धाड) २१. ५३.

पहार–पहाड़ २. १६६; ३. ७६; ७. १६; ११. ४३; १२. ८४; १८. ४३; २१. ६४; २३. ६५; २४. १२.

पहारा–पहाड़ १. ६; २. १६२; १२. १०३; १५. ५; २३. ८३; २४. १०८.

पहारू–पहाड़ [पहार; मा० अप० पढि-अअडे–प्रथितकः; तु० पहाड़ा, पहारा; मा० अप० पडिअअए=प्रथितकः H. 118] १३. ३०; १८. २१, ४३; २५. ८५.

पहिँ–पर २०. १२५.

पहिचानि–पहचान (P. 276) प्रत्य-भिज्ञा २. ११२.

पहिरइ–परिधत्ते=पहरता है [हि०पहि-रना, पहरना, पहनना; पं० पहनना; गु० पहेरवुं; सि० पहरणु; का० पह्र] २०. ११.

पहिरसि–परिदधासि ११. ४५.

पहिरहिँ–पहरते हैं २०. १३.

पहिरि–पहर कर १२. ५; पहर लो १२. ६१; २०. ११, १८, २३.

पहिरे–पहरइ का भूत १०. ६३, १०६.

पहिलइँ–प्रथमे=पढम; अप० पहिल; हि० पहला, पहिला; पं०, उ०, बं० पहिला; म० पहिला; गु०पेहलुं; सि० पहर्यों; आ० पोन; सिं० पलमु (देखो Gray पहलइ *प्रथर) २१. ३४; २५. २, १२६, १६१.

पहिलइ–पहले ही १. ८, ५४, ६०, १७८; ८. ७२; ११. २८; १३. २६; १६. २६; २३. ५७.

पहिले–प्रथमे २५. १३५.

पहुँ–पहँ (पचे से) २५. ४४.

पहुँचइ–पहुचइ *प्रभुत्यति *प्रभुत्वति (म० पहुप्पइ; देखो Weber, Hall 7; P. 286, 299) हि० पहुँचना; पं० पहुँचणा; सि० पहुचणु; गु० पोचवुं; म० पोंहचणें; बं० पहुँचन; उ० पहुँ-चाही (संभवतः प्राघूर्ण=पाहुना के साथ संबद्ध JB. 252) २. १७६; ११. ३२; पहुँचना है १२. ७६; पहुँचे १२. ८३; १३. ६२.

पहुँचउँ–पहुँचूँ ११. ५६.

पहुँचत–पहुँचने में ११. २४.

पहुँचा–पहुँचइ का भूत २. १७६; १६. २१.

पहुँचाउ–पहुँचाओ २३. ३५.

पहुँचाए १. १६८.

पहुँचावई–पहुँचाता है १०. ५६.

पहुँचावहीँ–पहुंचाते हैं २. १७६.

पहुँचि–पहुँच कर १०. १४६, १५६; ११. २६.

पहुँची—कलाई का गहना २२. ४.

पहुँचे २२. १.

पहुनाई—प्राघुण्य [प्राघूर्ण, प्राघुणक; हि॰ पाहुना; (किन्तु प्रा॰ पाहुणाओ=उपानही P. 141, 304) गु॰ पोणो] १३. १२.

पहुँचा—पहुँचा ११. १०; पहुँचनी १६. १७; २५. ११८.

पाँ—पाइ=पाय=पैर २५. १२७.

पाँउरी—खड़ाँऊँ २. ४१.

पाँएन—पावों २५. ३६.

पाँओ—पाद २५. १०६.

पाँख—पक्ष, पंख, पाँख, पाख, पाक (मास का पिछला पाख); गु॰, बं॰ पाख; म॰ पाख, पाँख; सिं॰ पखु, पंगी, पंगु; का॰ पच्छ; जि॰ पक ५. २०, १२, ३३, १८, ६२; ११. ११; २३. ५१, १६२, १६६.

पाँखन्ह—पंखों में ६. ४५.

पाँखा—पंख १. ७१; ५. २; ६. १५; ११. ६६.

पाँखी—पक्षी १. ३६.

पाँखू—पंख १२. ६८.

पाँच—पञ्च; हि॰, म॰, गु॰, बं॰, उ॰ पाँच, पं॰, सि॰ पंज, सिं॰ पच; प्रवे॰ पञ्च (प॰), पह॰ पंच, फा॰ पंज, पा॰ पंज, का॰ पांच, ग्रि॰, मरि॰ पिंज; सेंग॰ पंज, अफ॰ पिंज; पोश्ते॰ पोँज; कु॰ पंज २. १११; ३. ३६; ५. १२; ८. १; १३. ७; २२. १५; २५. ११०.

पाँचउ—पाँचों ११. ४६.

पाँडक—[वै॰ पाण्डु, पलित, पाण्डर (पीतरक्त); Lat. *palleo* (पीत होना), *pullus* (भूरा); Lith. *palvas* (पीत), *pilkas* (भूरा); Ohg. *falo* = E. *pale*; गु॰ पा॰ पण्डर=वै॰ पाण्डर] ६. ४०.

पाँतिन्ह—पंक्ति—पंति; सिं॰ पंगति; हि॰ पंगत, पाँत २. १८६.

पाँतिहि—पंक्ति में २. १०.

पाँति—पंक्ति, पंक्तिय, पंति—पाँत (गु॰ पन्ती=पंति P. 260) १. ६; २. १०, १७१, १८६; ५. ३३; १०. १६६.

पाँय—पाद; प्रवे॰ पाघ; पह॰ पाई; फा॰ पाइ; बा॰ पुप; शि॰ पाप; सेंग॰ पुर; गी पो; बलू॰ पाइ; प्रफ॰ बलू॰ फ्राप १२. ७.

पाँउ—पाँव १. ११८; २. ११९, १६८, १७४; ४. १२; ६. ५३; ११. ३६; १२. १०, १६; १४. ८; १६. १४; २०. १६; २२. ४६; २३. ३१, १४, १६८.

पाँवा—पावे—पावहिं; अप॰ पाई (H. 77) ५. ४६; ७. ३१; १०. ४८, २०. ५४; २२. ७०; २३. १९१.

पाइ—प्राप्य=पाकर ४. १४; १८. ४८;

पाद [वै० पद्, पाद्, पाद; पद=पग; Lat. *pēs*; Goth. *fōtus*=Ohg. *fuoz*=E. *foot*; Lith. *pēdà*=मार्ग; Ags. *fetvan*=E. *fetch*; Arm. *het*=मार्ग] २१. ६४.

पाइअ—पाइये २. १६१; ५. १७; ७. २३; ८. ६३; ११. ३६, ४०; २२. ४८, ६६.

पाइत—प्राप्यते ११. ३८.

पाइल—पादल=पायल=पाजेब १०.१५८.

पाइँ—पाद (सिर से पैर तक=सर ता पा फारसी) २. ६३.

पाई—प्राप्त की १. १७, २७, १५६; २. २३; ३. ५; ४. ५७; ५. ५; १२. ५०; २०. ४८; २२. २२, ६०; २३. ८१, १००; २५. ११३.

पाउ—पाता है १. १५२; २. १४६; ३. ३०; ७. ६; १०. ५५, १४७; ११. ४२; १२. ८६; १६. १४, २५; २०. ५६; २२. ६४.

पाउब—पावेंगे १२. १६; २१. ५४.

पाउबि—पावेंगी (तु० रामा० 1. 123. छ 5) ४. १६, २१, ५२.

पाऊ—पाँव १२. ८६; १६. ३६.

पाए—प्राप्त किये १. १५७, १६६; ५. २०; १०. १५४; १५. ७३; २४. ३२; २५. ११२.

पाएउँ—(मैंने) पाया १. १५१, १६०; ६. १५; १०. १६०; २१. ४७.

पाएउ—पाया १०. १२०; १६. ५७.

पाएन्ह—पाश्वों को ४.५८; पाश्वों में २०.७७.

पाओ—पाता है २३. १७०.

पाकि—पक्क—पक्व, पिक्क; पा० पक्क; प्रा० पक्का; नै० पाक; का० पपि; उ० पक्का; बं० पाका; पू० हि० पाकल; सि० पको; म० पीक; पिका; जि० पको; अवे० पक्क; फा० पुख्तह; सरि० पख्त; वलू० पक्र; उत्त० वलू० पहत; ट० फ्रिड्स्थ; √ पच्; [Obulg. *peka* (भूनना); Lith, *kepu*-सेकना] २.२७.

पाके—पके २. २६; २५. १६४.

पाछ—पश्चात्, पच्छा, पच्छ; पाछे; पीछे (तु० पश्चिम) १२. २४.

पाछइँ—पाछें, पाछैं, पाछें, पाछे; गु० पाछी; प्रा० पच्छइ (पच्छहिँ—पश्चे H. 77) २५. १०५.

पाछइ—पीछे १२. ६३; १५. ६४.

पाछिल—पिछला (पश्चा—पच्छ; इल्ल प्रत्यय P. 595) १६. २६.

पाछू—पश्चात् *पश्चे; अप० प्रा० पच्छइ; उ० पछे, पाछ; बं० पिच्छे, पच्छे; पं० पिच्छे, पिच्छों; सि० पोए, पुठाँ; गु० पछे, पछीं, पछो; (अवे० पस्च, पस्चइत=पीछे) १५. ४; २३. १७२.

पाछे ८. २८; १०. १२६, १३४.

पाजी—पाद्य "पज्जा अधिरोहिणी, मार्ग-

यापकन्तु पद्याश्मद्भवः" (दे॰ 181, 5, 6) म॰ पाय; गु॰ पज; पदाति २. ११६.

पाट – पट्ट = सिंहासन (तु॰ पटरानी = पट्ट-राज्ञी) २. १६६, १६७; ८. २; १०. २१, २२, १५५; १२. २५, ३२; २३. ३२; पट्ट = रेशम १०. १५०.

पाटा – पट्ट = पाट = सिंहासन २. १८०; २३. २७; = स्फाट = फाट = विस्तार १५. ५१; पटी हुई = पूर्ण २. ६७.

पाटी – पट्टी = परंपरा १२. ८४; पट गये १४. १; २२. ५४; पट्टिका २५. ६६.

पाटू – पट्ट = सिंहासन १. ६८; ११. १०; २४. ५१, १२६.

पाठ – पाठग्रन्थ १०. ८०.

पाठा – पट्ठा (ठठ) हैने के ओड ७. ४५.

पाठन – पाठित १. ८५.

पात – [पत्र *Pet (पतति); तु॰ Lat. penna = पर = Germ. fittig, accipiter; Obg. pelera = E. feather] पत्र; हि॰ पत्ता, पात; पं॰ पत्त; गु॰ पत्तुं; बं॰ पात; सि॰ पत २. १५०; १५. ६६; २०. ७; २१. २४.

पातरि – पतला [तु॰ प्रा॰ पत्तर = वै॰ प्रतर, देखो Trenckner, Notes 62. 16, Geiger, PGr. 33, 4. गु॰ पातळ = पातल] १५. ५४.

पाता – [पर्ण Ags. fearn = E. fern] पत्र २. ७६.

पातार – (√पत्) पाताल २५. ६०.

पाति – पत्री (√पत) २०. ६४; २३. १५४.

पातिसाहि – बादशाह १. १०४.

पाती – पाती, चिट्ठी २३. ५४, ७०, ७२, ७३, १०४, १०५, १०७, ११७; पत्री = पत्ती २०. ५६.

पान – (प्रसिद्ध पान का पत्ता) पर्ण; हि॰ गु॰, म॰ पान; सि॰ पनु; का॰, सि॰ पन; बं॰, उ॰ पाथ; जि पोन्न = पर १. १५; २. १११, १८२, १६५; १०. १२२; १६. ५७; २०. १४, १३६; २५. १६४.

पानन्ह – पानों के १०. ६०.

पानि – [पानीय, पान से; √पा *Po(i); तु॰ पिबति; Lat. bibo, पीत; Obulg. pili = पीना; pivo = पान, Lith. penas = पयस् = दुग्ध; Lat. potus = पेय, poculum = पात्र] पानीय; जल; हि॰, पं॰, गु॰, सि॰, म॰ पाणी; बं॰ पानी; का॰ पोनु. सि॰ पन् १. १११, ११७, ११८, १६५; २. ५०, ५७, ८०, १४५, १४७; ३. ६७; ४. ५४; ५. २४; १३. ४१; १६. २१; २२. ५४, ५५; २३. ४०, ८८, १२०, १२१, १४१, १४५, १६६; २४. २७, ३०, ३१; २५. ५५, ५६

पानिहि—पानी को २४. ३०.

पानी—पानीय=जल २. ६७, १४६; १३. ३७, ४२; १५. २४; २५. २६, ३१.

पाप—[तु० Lat. *patior*; E. *passion* आदि] पाव=कुकृत्य १. १२३, १४०, १५१; ४. ६०; १६. ४६; २०. ६६.

पापी—कुकर्मी १. ५०.

पापु—पाप ८. ३२.

पायन्ह—पाँओं में १२. ६१.

पाया—पाद=पाअ; पाओ, पाँव; गु०, म० पाव; बं० पोआ; सिं० पा (JB. 55, 125, 225) १. १५१; ८. १५; १२. २५, ४५; २३. ५१; २४. ५२, ७३, १२१.

पार—[पर से √पृ, अवे० पेरेस=पुल; Bactrian *peretha*] २. १३६, १७४; १०. ४३; १२. ८६; १३. १६, ३३, ४८; १४. १६; १५. २४, ५५; २१. २६, ३२; २४. १२३.

पारइँ—पार करने में (पसे) २५. ७२.

पारइ—पार हो सकता है १. ७३.

पारउँ—पार हो सकता हूं २. २४; १८. ४०.

पारख—परीक्षक=परिक्खि २५. १३६.

पारखी—परीक्षक ६. ८.

पारबती—पार्वती (पर्वतस्य पुत्री) २१. ६०; २२. ५, १७; २५. २६, २८, ३७.

पारभा—प्रभा=पहा=प्यारे की कान्ति [पा० पारिभट्य=परिभृति] १३. ४५.

पारसरूप—स्पर्श पाषाणरूप ४. ५७.

पारहु—सकते हो १४. १८; २२. ८.

पारा—पारयति=पारइ=सकता है; (बंगाल में अब भी प्रयुक्त है; कबीर और तुलसी ने प्रयोग किया है) १. ११६; २. ५; २०. ११७; २२. ७८; २४. १५५; पार १. १३२, १४२; १३. ६२; १५. २३; २१. २८.

पारी—सकी ८. ५०; २३. १११.

पारू—पार १५. ३.

पाल—पालि=पाली=रेखा, प्रान्तभाग=तट=किनारा २. ५६.

पालइँ—पाले पड़े=पालि ("पालिः स्त्र्यश्र्यङ्कपंक्तिषु" अमरः) पड़े पड़ गया २०. १०१.

पाला—किनारा ५. १५; पालित=पोषित (√पाल् √पा से) ८. २१; पालइ २२. ५०.

पालि—तट=किनारा ४. ६; ५. १३.

पाली—प्रान्त=तट=किनारा ४. १३.

पावँरि—पादाकार; पावड़ी; (पादुका); म० पायरी, गु० पायरि; सि० पइरो; सिं० पियवर (JB. 52, 62) सुधा० पादपतक, पायवडण, पावड़ी १२. ७.

पावइ—पावे (पावइ; पाना, पाओना, पावना; पं० पावणा; गु० पांवुं; सि० पाइणु; म० पावणें; बं० पाइते; उ० पाइबा; का० प्राउन २. ७२; १५.

प्यार; गु० प्यारुं; सि० प्यारो ६. ६.

पिआरा – प्रियतर = पिआरा = प्यारा १. १३७; ३. ७६; २०. ११७; २१. ४२; २५. १५.

पिआरी – प्रिया = प्यारी ८. ५२; २२. २६; २४. ५३.

पिआरे – प्रिय = प्यारे ८. ६६; २३. ७२.

पिआलइँ – प्याले में २०. १०१.

पिआस – पिपासा = प्यास २. ५६; ७. ५६; २३. ८१.

पिआसा – पिपासित=पिवासिय=प्यासा २३. ७४, ८४, १४१, १६५.

पिउ – प्रिय = पति २. ३६; ४. १६; ८. ४६, ५१, ५६, ६४; २३. ८०.

पिंगल – प्रसिद्ध छन्दःशास्त्र १०. ८०.

पिंगला – एक रानी का नाम; अथवा दक्षिण स्वर नाड़ी (नासिका का दाहिना स्वर) २२. ११; २३. १४७.

पिंजर – पिंजरा; सि० पिंजिरो; बं० पिंजर; उ० पिंजिरा; (तु० पंजर; म० प्रा० पंजलअ; पा० पञ्जर; उ० पिंजिर; सि० पिंगिर) ५. १८, २१, २२; ७. २५.

पिटारी – पिटक, पा० पिटक; हि०पिटारी, [तु० पा० पेळा, पेळिका] २५. २०.

पिंड – पिण्ड=शरीर २३.२२; २४. १३६.

पिंडु – [संभवतः √पिप् से; Grassmann के मत में √पीड से; अन्य व्युत्पत्तियों के लिये देखो Walde, Lat. Wtb. s. v. puls; तु० पा० पेळ; पेडलाल] शरीर १७. १५.

पितइ – पिता ने २२. ५०; २४. ५८.

पिता – [पितृ, पितर् Lat. *pater*; *Juppiter*, *Dies-piter*; Goth. *fadar* = Germ. *vater* = E. *father*; Oir. *athir*, शब्दानुकरण पापा से, यथा तात, माता] पिअ, पिउ १. ५१; ३. ४, ५१, ५२, ६१; ४. १२; १६. १७, १६, ३६; २२. ३८; २४. १३१.

पियार – प्रेम = प्यार ४. १६.

पिरितम – पियतम – पिअअम – पति ६. ५५.

पिरिति – प्रीति – पीइ ३. ७८, ७६; ७. ७२; ८. ५४, ५६.

पिरिथुमि – पृथिवी [व = थ P. 192 = म P. 241] ६. ५२.

पिरिथुमी – पृथिवी [√प्रथ्; पुढवी, पुहई, पुहवी, पुहवि, पहुवी, पिरथी, पिरथमी (P. 51, 115, 139; H. 132, 144)]; पा० पठवी, पथवी; प्रा० हि० पदुमी; सिं० पोलव २. ८; १६. ४०.

पिरीतम – प्रियतम – पिअअम १६. ३५; २०. १२०; २१. ४८; २३. १३७, १५१, १६८; २४. १२०.

पिरीता – प्रीत=पीय=प्रसन्न (प्री; अवे०

प्री; पह० अप्रीतम, अप्रीणितन; फा० अप्रीद्न; तु० पा० पिहालु=वै० पिपाद; प>ह यथा पट्टपति=पट्ट-हति; अथवा पिहालु=स्पहालु) १२. ४४.

पिरीति—प्रीति ३. ७६, ७७; ११. ११; ११. १४; २४. १२.

पिरीमी—प्रीति १३. २८.

पी॑अर—पिअर=पिअरा ३.७५; ५.१८, २१, २२; ७. २५; ११. ६, १०, १२.

पी॑ह—पिहर २. २६; २०. ११८.

पीआ—पिआ=पिअह का मूल २. १४७, ११. ७१; २३. १६६.

पीउ—[वै० प्रिय √प्री; तु० Goth. *frijon*=प्रेम करना; *frijonds*=E. *friend*, Germ. *frei*, *freund*, Obg. *frias*=प्रिया; E. *Friday* इत्यादि] पिय, हि० पिया, पिउ, पिय; पं० पीआ; सि० पिउ, गु० पिउं; म० पियो, पिहू; गि० पिय २. ११; १२. ४४; १८. ११, ४८; २३. १४१.

पीठ—पिय १२. ६१; १८. ४१; २३. ७६.

पींद—पान का पूछ १०. १०२.

पींढि—पृष्ठ, अर० मा० पुट्ठि; पिट्ठि, पुट्ठि, पा० पिट्ठ; फा० ज० पिटि, वं० पिठि, पीठ, हि० पीठ; पं० पिठ, पुठ; सि० पुठि; गु० पुठ, पीठ, म० पाठ; पि० पुराें, बलो० पीति, पह०, फा० पा० पुश्त; पा० पर्त; पश्० पुश्त; कु० पीश्त, प्रि पेस=पीछे [Grassmann पृष्ठ= प्र+स्थ=ऊपर की उभरा हुआ भाग; तु० पट्ठी, पिट्ठी, पुट्ठी P. 53, 358; तथा पीठ, पा० पीठ=आसन; पिट्ठ >पिट्ठि पर देखो Trenckner, Notes 55; Franke, Bezzenberger's Beitrage XX, 287] २. १६४; १०. १२६, १३०, १३१; २४. १५.

पीठी—पीठ २, १२२; १२. २२, ४७; १५. २८; २५. ६१.

पीत—पीत (सं० पीतक "पीतकं पीत-मिति तु-पीतचन्दनम्" हे० 204. 13); हि० पं० पीआ, पीला, पेला; गु० पीळुं; सि० पीलो (त=ल P. 218, 219; ल=ळ P. 226, 238, 240; देखो P. 244) २. ६८, १६१; ६. ४१; ११. ६; ११. १६; २५. १४१, १६०.

पीतम—प्रियतम २१. ७; २२. १२; २३. १२०.

पीर—पीड=पीडा १. ११७, १२२; ११. १५; १८. १२; २२. १५; २३. ६७; २४. ६५.

पीरा—पीडा १८. १२.

पीसन—[√पिष् अथवा √पिंष्; तु० Lat. *pinso*=पीसना; *pila*=*pestle*, *pistillum*=*pistil*; Lith. *paisyti*= भी कूटना; Obg. *pisa*; Nbg. *fese*;

तु० पा० पिंसति = वै० पिंशति, जिस में दो धातु संमिलित हैं (अ) *Poig जैसे पिञ्जर, पिङ्गल तथा Lat. *pengo* में; (आ) *Poik जैसे सं० पिंशति और पेशस् में; अवे० *paes* सजाना] पीसते (हुए) २३. २५.

पीसा–पिनष्टि–पीसइ, हि० पीस–; पं० पीह–, पीस–; गु० पिस–; पीस–; सि० पीह–; म० पिसणें; बं० पिष्; का० पिह–; (JB. 44) २३. २५.

पुकार–पूत्कृत-पुक्करिय-बुलाना २३. १७६.

पुकारइ–पुकारता है ६. ४८.

पुकारई–पुकारती है ४. ४०.

पुकारउँ–पुकारूं ४. ५०.

पुकारहिँ–पुकारते हैं १०. १०१.

पुकारा–बुलाया २. ३८, १३६; २३. ६.

पुकारि–पुकार कर २३. १८३.

पुकारु–पुकार २३. १४१.

पुछारि–पिच्छालि [पिच्छ तथा पुच्छ = पूंछ; तु० Lat. *pinna*; E. *fin*; Germ. *finne*; मयूर की पूंछ के पर (P. 74); तु० सं०, पा० पिच्छिल; हि० पिछलना] ६. ४४; मोर का मादा १०. ६८.

पुतर–[वै० पुत्र; भायू० *Putlo = Lat. *pullus* (*Putslos) जानवर का बच्चा (Pōu से, तु० Lat. puer, pubes); Lith. *putytis* = पशुपोत; Cymr. *wyr* = पोता] पूत; अवे० पुथ्र; आ० फा० पूर, पुसर, पिसर; गम्री पूर; का० पुर, पूर; वा० पोत्र; सरि० पोच १६. १६.

पुनि–[वै० पुनर्, पुनः *Pŭ (*Apo = अप के साथ संबद्ध) जैसे पुच्छ में; तु० Lat. *puppis*, *poop* (अन्तिम), प्राथमिक अर्थ पीछे] फिर १. २४, ३२, ५४, ६१, ६२, १२१, १२६, १७१; २. २६, ७३, ८१, ८६, ६७, १०५, १२१, १६१, १६६, १७७; ३. ४, ५, १४, ६७; ४. १३, १४, १६, १६, २४; ५. ८, १६; ७. २; ८. १८; ३२; १०. २०, ७१, ८१, १०२; ११. २८, ४८; १२. १५, ३६, ६३, ८१, ८६; १५. १, २४, ४१, ५८; १६. ३१, ३६; १८. ६, ४५, ४८, ५४; १६. ६, २६, ५६; २०. ३६, ३७, ३६, ४०, ४६, ७७, ८१, १०६, १२५, १३३; २१. ३, २४, ५६; २२. १२, ७८, ८०; २३. ४६, ५८, ८७, १२१, १३७, १८४; २४. २४, ४६, ८१, १०४, २३७; २५. ६५, १५७, १६१.

पुन्न–पुण्य = पुण्ण = (P. 242, 243) पा० पुञ्ञ √पु से १. १३५.

पुरइनि–पद्मिनी = पद्मिनी = कमलिनी १५. ७४; २४. ६७, १०२.

पुच्छइ; पा० पुच्छति; उ० पुच्छना; वं० पुच्छिते; हि० पूछना, पूंछना; पं० पुच्छ; सि० पुच्छणु; गु० पुच्छवुं; म० पुसणें; G. 177, 30. पचार की व्युत्पत्ति पुच्छ से मानते हैं, यह असंगत; है; पचार=प्रचार=प्र+चर्; (पुच्छ=पृच्छ P. 74; तु० "पुच्छिआइ मुद्धाए"=पृष्टाया मुग्धायाः; हाल 15); १२. १२.

पूँछइ–पृच्छति=पूंछता है ७. १६; १२. १३; १८. १४.

पूँछउँ–पृच्छानि–पूंछूं ११. ५६.

पूँछव–पूंछेगा १. ८८; ४. ५२.

पूँछसि–पूंछता है २२. २६; २५. ८१.

पूँछहिँ–पूंछते हैं १६. ४; २५. ८.

पूँछिहि–प्रक्ष्यति=पूंछेगा ४. २१.

पूँछहु–पूंछते हो ३. ७०; ८. १४; १२. १०१; २३. ८५; २५. ६, १३२.

पूँछा–पूंछइ का भूत पु० ए० ५. १०; ७. २०, २२; १६. १; १६. ६; २३. २२; २५. १६३.

पूँछि–पुच्छ=पूंछ २. १३४,१७४;२१.३२.

पूँछी–पूंछइ का भूत स्त्री ८. ३५; २३. ११२, १७७; २५. १४३.

पूँछे–पूंछने ७. १५, २३, ६०, ६१.

पूँछेहु–तुम पूंछी हो-तुमने पूंछा है २४.१४५.

पूँजी–पुञ्जित–पुँजिअ = मूलधन १. १८०; ७. १३.

पूज–पूजता, पाता (बराबरी नहीं पाता); पूज=पूजा=पूजइ (पूर्यते) का भूत १. १३१; २. ६, १५८; ३. १६; १०. ३३; १६. १०; २२. २४.

पूजइ–तुलना करती है २. ६, १३६; बराबरी करती है ८. १४; पूरा या पूरी होती है १५. ७६; (बराबरी में) पूरा नहीं पड़ता १८. २५; पूरी होवे (संभावना) १६. ३२; १७. ८; २०. ८०; पूजता है २४. १३१; पूजने के लिये १६. ३०, ३१.

पूजा–पूजा के योग्य २. ८३; २०. ५२; २५. १३०; पूजा का सामान २०. ७५; पूजता है २१. ३०; पूजन १६. ५४; २०. २४, ३७; पूजा=पूजइ का भूत २२. १८; २३. २०; पूरा पड़ा १०. ७१; पूरी हुई २०. ८; २४. ५०.

पूजि–पूजकर १८. ४८; २०. ४०, १२३, १३०; २२. १३; पूरी हुई २२. १३; २३. ८७.

पूजिअ–पूजिये २१. ३१.

पूजिहि–पूरी होवेगी १६. ३२.

पूजी–पूरी हुई २०. १,८;२४.२१;२५.१६.

पूजे–पूजइ का भूत २३. ५८.

पूत–[वै० पुत्र; *Putlo=Lat. *pullus* (*Putslos=पशुशावक) *Por से, तु० Lat. *puer*, *pubes*; Lith. *putýtis* (पशु अथवा पक्षी का

शावक); तु० सं० पोत तथा पुम्] पुत्र=पुत; हि० पूत ("पुत" JB काइड); गु० पूत; पं० पुत, सि० पुट्ठ; म० पूत; उ० पुष; सिं० पित, पुत; का० पुत (मुर्गी का बच्चा); मवे० पुत; पट० पुसर, पुस; का० पुसर, पुर, १. ४१; २०. ६६; २५. ७१.

पुन–पुण्य=पुण्य ४. ६०.

पुनिउँ–पूर्णिमा [तु० हि० पुनो, पुन्यो, म० पनव=पूर्णिमा का चन्द्र; तु० पा० पुन्निमा चन्द=चन्द्र से] १. ८१, १४०, ३. १२. ४. १.

पूर–पूरा=पूरित ३. ६; १६. २.

पूरा–पूर्ण [वै० पृणाति, पृणते √पृ *Pel=भरना; तु० सं० प्राय तथा पूर्ण, मवे० पेरेन, Lith *pilnas*, Lat. *plenus*; Goth. *fulls*=E. *full*= Germ. *voll*] भरा हुआ १. ६६; १६.१; परिपूर्ण २०.११८,२५.१२२.

पूरि–पूर=पूर्ण १. ६४; ३. ५; ६. १३; १०. ६४; २२. ४३; २३. १११; २४. ४०; पूरि=पूरित=पूरेगा २०. ८४.

पूरी=आपूर्ण=भर कर १. १०६, पूर्ण भरा हुआ ११०; पूरि=पुरी=नगरी ३. ४७, पूर्ण १०१; भरी= भरई=कूट से भर गई १२. ६६; २४. ११४, पूरि=पुरी=पुरनिवासी जन २५. १.

पूरू–[वै० पृणाति, पृणते; सं० पूरयति; पा० पूरेति √पृ; तु० Lat. *pleo*; Goth. *fiu*=Germ. *viel*; Obg. *fde*=*f/k*] भरता है २४. ४५.

पेई–पाता है (चुराने पाता) २२. ६२.

पेखा–प्रेक्षित=पेखा=प्रेक्षते; पेक्खइ; पेखना; पं० पेखना; गु० पेखवुं; म० पेखणें; सिं० पेकनिय [तु० पा० पेसुण=पैशुन्य, वै० प्रेक्ष √प्र+ईक्ष; *प्रेक्षुण>पेसुण>पेसुन; P. 89; Childers पेसुण=पश्मन् असंगत है] २४. ५६.

पेट–पेट्ट=उदर=पुट "पोटम् उदरम्" (दे० 20, 4) म० पोट; सि०, पं०, पं० पेट (JB 80) ५. ८, ३३; ७. ४१, ४८; ८. २२; १०. १२१; २३. १५१; २४. ६५; २५. ८२.

पेम–प्रेम (√प्री से) १. ११८, १८१, १८४; ४. ३६; ७. ७१, ६. ३७, ४०, ४१,४२, ५०, ५१, ५२, ५३; १०. ७; ११. ३०,८१; १२. २, ११; १३. २५, २८, ३६, ३७; १४. १०, १८, ३१, ३२, ३३; १६. ९७; १७. १०; १८. १, १२, ३०, ३३, ४१, ४४; १६. ३६,५१; २०. १०४; २२. ३४, ३५, ३६, ४०, ४५, ७२, ७७,८५, १०३, ११८, १३१, १४१; २४. ३५, ३७, ३८, ३३,१०१,११४,१३३;२५.१५.

पेमघाओ – प्रेमघातः = प्रेमघाय = प्रेम की चोट (तु० घत्त=घात्य; अघत्त= आघात्य तथा घत्त=घात P. 90, 281, 357) ११. २.

पेमधुव – प्रेमध्रुव = अचल प्रेम ११. ३१.

पेमपँथ – प्रेमपन्थ = १३. ६१; १५. ६२.

पेमपंथ – प्रेममार्ग १२. १०; १३. ६२; १४. २१; २३. ४०; २४. ३६.

पेमवार – प्रेमद्वार (व=द्व P. 300) ६. ५४; २४. ५५.

पेममद – प्रेममद = पेममय २०. ६६.

पेमवेवसथा – प्रेमव्यवस्था = पेमववत्था प्रेम की स्थिति ११. ७.

पेममधु – प्रेममधु १०. ७६; २०. २१.

पेमरँग – प्रेमरङ्ग १३. ५.

पेमा – प्रेम १४. १७.

पेमावती – प्रेमावती = मोहनी = समुद्र-मथन के समय निकली हुई स्त्री २३. १३५.

पेमसमुद-प्रेमसमुद्र-पेमसमुद्द १५. ६०.

पेमसमुद्र – प्रेमसमुद्र १३. ३३.

पेमसमुंद – प्रेमसमुद्र ११. ३; १३. ४०.

पेमसुरा – प्रेमसुरा १५. ३५.

पेमहि – प्रेम का १५. २४. प्रेम ही १७. ११; प्रेम को २२. १८.

पेलहिँ – प्रेर = पेल्ल (√प्र+ईर) ढकेलती हैं २. १६६.

पेलहु – पेलो २५. ११४.

पेलि – पेल कर २५. ११५.

पेले – ढकेले १३. ६१.

पोँछे – पूँछे = प्रोञ्छति, "पुंछइ पुंसाई पुसइ मार्ष्टि" (दे० 201. 11); हि०, गु० पूंछ; पोंछ –; पुंछ; पं० पूंछ –; म० पुसणें –; बं० पुंछ, पोंछ –; सिं० पिस –; पिह –; ५. ४६.

पोई – पकी पकाई ११. ३४,

पोखहि – पुष्ट करता है (पुष्=पोख, पोस) ७. ३७.

पोखि – पुष्ट कर के १३. ३४.

पोखी – पुष्ट की २१. ४३.

पोचू – पोच = पोच; गु० पोचु = दुर्बल (तु० पोचढ = दुर्बल) ३. ७८.

पोढि – प्रउह्य=ऊपर को खींचकर १. १४१.

पोतहिँ – पोतते हैं (राम०) २. १००.

पोती – पूत = पवित्र="पोत्ती काचः"(दे० 204. 4); म० पोत (रत्नहार); हि०, पं० पोत; सिं० पूती; बं० पोत (काच शुभ्र होता है अतः लाक्षणिक अर्थ "पवित्र" है); ["पकती डेग में से नली द्वारा महुआ गुड़ का वाष्प दूसरे बरतन में जाता है। इस नली के चारों ओर पानी रहता है, जिस से ठण्डा होकर वाष्प पानी के रूप में परिवर्तित हो जाता है। नली के चहुं ओर के पानी को पाचारे=पोती का पानी कहते हैं" सु०] १५. ३८.

पोते—प्रोत=पोश=प्रवपन्ति=पूरते हैं २. १२.

प्यारे—प्रिय ८. ५.

प्रतीहार—पड़िहार=द्वारपाल १२. ७६.

प्रथम—पढम, पढुम (P. 104) १. २, ८२; ३. ४; २३. ११६.

प्रथमहि—पहिले ही १०. २.

प्रान—प्राण २३. २२;२४.११८,२५.४७.

प्रीतम—प्रियतम २३.६७,८२;२४.१२१.

प्रीति—प्रेम १. ८२; २३. ११५, १३८, १४४; २४. १११, ११४, ११६.

प्रीतिपेलि—प्रेमवल्ली=प्रेम की बेल २४. ११५, ११६, ११७, ११८, १२०.

फ.

फेंद्पारि—फन्द में मोले फाड़े वाले १०.८.

फन्न—फन २. ११८; २५. १०१.

फनपति—शेषनाग २५. १०१.

फर—फल [तु॰ हि॰ फली, फार्सी; मवे॰ फालफल (की फार्सी)] २.१२,५६, १५१; २०. ११, १५, ५७, ७६.

फरइ—फलति=फलता है २. १४.

फरहरा—फरक रहे २५. १०१.

फरहिं—फलते हैं १८. ११.

फरहुरी—फरहरी "निर्जित फल" ५.४१.

फरा—फला ५. ४४.

फरीं*—फलीं* २. ७१.

फरी—फल देने वाली १. २८; २. २८.

फरहरी—फरहुरी २. २८.

फरे—फले २. २५, २८, ६२, ७५, ७६, ७८; १०. ५७, ११६.

फल—[वै॰फल √फल Sphal=मिलना; फूटने वाले] मेवा १६. ४४, ४८; १७. ११; १८. ५४.

फाँद—बन्धन, फंदा [संभवतः √स्पन्द से; तु॰ Lat. *pendes* "pend" (=लटकाना); तु॰ *pendulum*; Ags. *finta* = पुच्छ] ५. ४, ८, ५१; ६. ४२, ४४, ४८, ५६; ७. ३०, ३१; २२. ५०, ५५.

फाँदू—फन्दा ६. ४५.

फाँसी—पाश; [√पश्; प्रा॰ पा॰, पास; हि॰ पास, फाँस; फाँसना, फाँसा; पं॰ पाह; सि॰ फाही, (फासी, फासियी) फासी; गु॰पास; (फाँसो); सानुनासिक के लिये तु॰ मुम=भैंस (JB. p. 93); वर्गों के प्रथमाक्षर के स्थान में द्वितीयाक्षरविधान के लिये देखो परशु=फरशु; द्वितीयाक्षर के स्थान में प्रथमाक्षरत्व के लिये देखो W. I, 230; P. 205, 206; M. Jacobi, Ausgew. Erz. 34, JB. p. 93] २४. १८.

फागु–फाग (तु० पा० फग्गु=अनशन-व्रत का विशेष समय, तथा फगुन=वै० फाल्गुन) २. ८८; २०. ३६; २१. ४४, ४५.

फाटई–[फट=स्फट्; फल=√स्फल P. 386; Lüders, KZ. XLII, 198, फाटेति=स्फाटयति तथा फल] २. १६८.

फाटेउ–फट गया १०. ७२.

फाटी–फट गई २२. ५४.

फारहु–फाड़ो १२. ६४.

फारि–फाड़कर २. १६६.

फिरइ–[वै०स्फुरति, स्फरति; पा०फरति; तु० Lat. *sperno* "*spurn*"; Ags. *speornan* (ठुकराना); *spurnan*=*spur*; अ=इ, P. 101-103] फिरता है २. १४१; ७. ५५; ११. ५२; १३. ३०, ३२; १५. २१, ३४, ४३, ४६; १६. ४४; २२. ६४; २४. ७६.

फिरउँ–फिरता हूँ ७.१६; फिरूँ १३.१६.

फिरत–फिरती है १५. ४६, ७०.

फिरहिँ–फिरते हैं २. १३१; १६. १८, २०; १८. ४१; २२. ६७; २५. १२३.

फिरा–फिरहिं=फिरा करते हैं २५.११६.

फिराए–घुमाये २५. ११०.

फिरावहीँ–फिरते हैं १०. ४०.

फिराहिँ–फिरते हैं १०. ३८.

फिराहीँ–फिराते हैं २. ५८.

फिरि–फिरकर १. १०७; ३. ३१, ५५, ५६; ५. १६; ६. ४५; १०. १२६; ११. ५६; १२. ५६; १५. २८; २१. ४८; २३. ५०, ६६; २४. ८६, १४३, १५२; २५. ३७; (उलट कर) २५. १२६, १५७; पुनः २५. १२१, १७६.

फिरी–फिरइ का भूत २०. ६.

फिरे–फिरइ का भूत ३. ६५.

फुलायल–फुलैल ४. ४८; २०. ३०.

फुलवारि–फुल्लवाटिका २. ८१; ४. २; २५. १४२.

फुलवारी–फूल वाली स्त्रियां २. ११३; फुल्लवाटिका, फुलवाड़ी २. ७८, ११३, १६०, १७८; ६. २८; १८. ४७; २०. १६, ३३, ५०, ६६; २१. ४.

फूँक–फूत्कार=फुक्क–फूक २५. ५१.

फूट–स्फुट्यति [फूटना, फोड़ना; सि० फुटणु, फोड़णु; म० फुटयें; फोडयें; बं० फुटिते] फूटा (जवान हुआ) ६. १४; १२. ६४; फूटती है १५. २०.

फूटिहि–स्फुटिष्यति=फूटेगा २१. ५३.

फूटी–फूटइ का भूत स्त्री० ए० १५. ७५.

फूटे–फूटइ का भूत पु० ब० २३. ८६.

फूल–फुल्ल १. १५, १६१; २. ८२, ८७, ८८, ११३, १५०, १६५; ६. २८; १०. ५८, १२२; ११. ५६; १३. १८; १८. ४७; १६. ५५; २०. ६, १४, १६, २४, ३०, ३५, ४६, ५६,

---

ब.

वइठी – बैठी (भूत एक०) ३. ४३.
वइठु – बैठा २. ११४; ४. ४१; १२. ७५.
वइठे – बैठे २. ४०, ६३, १३०, १७६; १०. ६५; १६. ४५.
वइठेउ – बैठा है १०. २२.
वइद – वैद्य = वेज्ज ११. १०; २४. ६८.
वइदहि – वैद्य को २१. ४०.
वइन – वचन = वयण, वयन, वैन १६. ५५; २४. ६६; २५. १५२.
वइना – वचन २१.१८;२२.३६;२३.१२४.
वइनु – वैन्य = वेन का पुत्र, राजा पृथु बर्हिष्मती नगरी का राजा १६. ६.
वइपार – व्यापार, वावार; हि० वेपार, व्योपार, (वेपारी); का० वेवहार; सि० वपारु; म० वावर २३. १३.
वइपारा – व्यापार ७. १.
वइपारी – व्यापारी-वावारि ७.२;१३.२१.
वइरागा – वैराग्य, वइराग, वइराय १४. ३; ११. १७.
वइरागी – वैराग्यी = विरक्त १३. ७; २०. १०३; २३. १६, १३२; २५. ३४.
वइरिनी – वैरिणी १०. १२६.
वइरिन्ह – वैरियों का ५. ४२.
वइरी – वैरी – वइरि ७. ५६; १२. ३५; १५. ३६; २५. १२६.
वइल – वइल्ल = वैल (वलीवर्द = वलिद्द, वलद्द, वलद) १५. ६६;२२. १,४५.
वइसंदर – वैश्वानर=वइसाणर (वइस्साणर) वासन्दर, अग्नि २३. ७६.
वइसारई – उपवेशयेत = बैठावे (JB. 65, 125) हि० वइसना; पं० वेसना; सि० विहणु; गु० वेसवुं; का० वेहुन; (किन्तु ध्यान दो अमा० वइस्स = मा० वेस = द्वेष, द्वेष्य P. 300) २०. १२०.
वइसारिअ – बैठाइये २. ४०.
वइसारी – बैठाई – विठाई ३. २६.
वइसारे – बैठाये १०. ६२.
वइसि – बैठी २५. ४६.
वइसनि – वेश्या (वेसा, वेस्सा) वा बैस ठाकुर की स्त्री २०. १६.
वइसुंदर – वैश्वानर २५. ६७, १०३.
वईठ – बैठा १०. १३६; बैठता है १८.१६.
वईठा – बैठा १०. २१; २४. ७७, १३२.
वईठी – बैठी २. १७७; २०. १२१.
वउराई – बावला होना २. ११६; ११. ५.
वउरावा – बौरहा किया २०. ६२.
वउरी – वातुल=वाउरी=बौरही १२. १३.
वउरे – वातुल – वाउल्ल, वाऊल २१. ३३.
वकउरि – बकावली (वकुल = वउल) ४. ४; २०. ५३.
वकत – वक्ति – वकता है (वच=वय) २०. ८८; वकते २४. १०४.
वकर – मुहम्मद स्थानीय चार मित्रों में से एक [तु० वकरा = वर्कर; म० वकड; गु० बोकडो; पं० बोक; हि०

वजाइ – संवाद्य = वजाकर २४. ६.

वजागि – वज्राग्नि १६. ४२.

वजागी–वज्राग्नि २१.५२;२४.६६,१०७.

वजावा – वजाया २४. ३७; २५. ६६.

वटपार – वर्त्मपाल = वट्टवाल = मार्ग की रक्षा करने वाले कोल, भिल्ल आदि; डाकू १५. १४.

वटपारा – वटपार; "वर्त्मपातक = वट्टवाडए = वटवार" = राह के मालिक = डाकू १२. ८५.

वटाउ – यात्री २. ११२.

वटाऊ – यात्री [वर्त्मन् = वट √वृत् = घूमना] २. १४२; १२. ८६.

वड़ – सं० वड्; "वड्डो महान्" (दे० 246. 13); हि०, वं० वड़ा; पं० वड्डा; सि० वडो; गु० वडुं; म० वाड; का० वोड्ड; त्सि० वरो (JB. 246, 13); किन्तु तु० वुड्ढि, वड्ढि = वृद्धि (P. 52, 53) तथा वद्ध (विशाल), यथा परिवड्ढि=परिविद्धि=परिवृद्धि; वद्ध, विद्ध, वुड्ढ; पा० वुड्ढ, वुड्ढ; आ० वर; नै० वरो; उ० वड; पू० हि० वड़ा, वरा; ख० वो० वड़ा; जि० वरो; किन्तु सं० वृद्ध (जरोपेत); उ० वूड्हा, वूड़ी; वं० वुडा; हि० वुड्ढा, वूढ़ा; पं० वुढ़ा; सि० वुधो, वुढो; गु० वुड्हो १. ४१, ८०, ६२, १२६, १३०, १७३; २. १०, १८४; ७. ५७, ५८; ६. २६; २३. २७; २५. ८३, ६५, १०७, १३४.

वडहर – वढल २. २६; २०. ४२.

वड़ाई – वड़प्पन १. १७, ४५; २२. ३१.

वडि – वड़ी ८. ३८; ११. १३.

वडे – महान् १. १७३.

वढइ – वर्धते=वड्ढइ; वढ़ना; पं० वधणा; गु० वढवुं; म० वाढणें; वं० वाडिते; सिं० वढ़िनवा; का० वडुन (JB. 48, 115) २४. ११७.

वतकही – वार्ताकथा = वत्ताकहा = वातचीत २५. ४८.

वतीसउ – द्वात्रिंशत् = वत्तीसौं २. २००; १६. २०; २०. ६३; २५. १६८.

वतीसी – द्वात्रिंशिका=वत्तीसिया; वत्तीस दांतों का समूह १०. ६६.

वदन – वदन = वयण ८. ४६; १०. ४६; २२. ३६; २४. ६३.

वादाम – वादाम २. ७४.

वद – वन्ध = कैद ५. १६.

वधसि – मारता है (√हन् √वध्) ७. ३४.

वधि – वधकर २४. ४.

वन – [√वन्, वनति, वनोति; तु० अवे० वनइति; Lat. *venus*; Ohg. *vini* (= winsome = आकर्षक) *wunse* = E. *wish*, *giwon* = E. *wont*] वन; तु० अवे० वना (वृक्ष); पह० वन्; आ० फा० वुन्; का० वन; अफ०

बन; अ० वन्; फि० वान्; ओसे० बुन्; द० विन्; (तु० पा० वण=वन Serbian vana, Obulg. vare= घाव) ५. २४, २८, २६, ३०, ४१, ५१; १०. १६, ५७, १४४; १२. १६; १३. ६, ८; १८. १०, ११, १८; २०. ६४; २१. ११; २३. ६१.

बनखँड–वनखण्ड १. ११०; ५. ३, १२. ६२; २१. १२.

बनखंड–वनखण्ड १. १२, १६२.

बनढाँखा–वन को ढाँकने वाले=वनवृक्ष (ढक-ढंक-ढंख-ढाँख) १. ७५; ५. २.

बनढँखर–वन के ढकने वाले वृक्ष १०. ४८.

बनफ़ती–वनस्पति=वणप्फइ (तु० विह-प्फदि, बहप्फदि] प्रा० भा० वइस्सइ, विहस्सइ (P. 53, 311) २३. ६२.

बनवासी–वनवासी ६. ४४.

बनवारू–वनवार १२. ४१.

बनाई–बनाकर २. ५१.

बनाउरि–बाणावलि १०. ४१.

बनारस–वनराजि २०. ५.

बनि–बन पड़े ११. १६.

बनिज–वाणिज्य=वणिज; गु० वणज; सि० वणिज, पं० वंज ७. ६, ६; वणिज, वाणिज; वणिया; म० वाणी; गु० वणिया; वाणिज; बं० बणिया; सिं० वेळंद (तु० वणिजक, वणिज= वणिज Geiger, PGr. (6.1) ७. ४२; २३. ११.

बनिजार–वाणिज्यकार=बनजारा २३. १.

बनिजारा–बनजारा=वणिजकार ७. १.

बनिजारे–बनिये २३. ६.

बनी–रची १०. ४१, ६६; १३. २.

बनोवास–वनवास ३. ६६; १६. ११.

बंदरछावा–वानरशाव=बन्दर का बच्चा (शाव=छाव) २२. ६.

बंदी–बद्ध=कैद २२. ७४.

बंध–बन्धन १०. १५१; २०. १०४.

बंधु–(√बन्ध्) भाई बन्धु २०. ११७.

बंस–वंश ११. १६; २५. १७०.

बंसकार–बंसी २०. ५५.

बंसि–बंसी १०. ७४.

बंसु–बाँस २५. ५१.

बबुर–बाबूल, बबूर [तु० बर्बर–बब्बर] बबूल; सि० बबुर; गु० बावळ; म० बाभूळ १५. ३६.

बयन–वचन १. १८५; १०. ७३, ७४, ७५.

बयना–वचन १. ६७; ३. ६३; ७. ५३; २०. २७.

बयस–[वै० वयस=शक्ति, अवस्था; तु० सं० वीर; Lat. vir, (नर), vis (शक्ति) के साथ संबद्ध; तु० सं० वीडयति= समर्थ करता है; तथा वेत्ति; ध्यान दो वयस्=अवस्था तथा वयस्=पक्षी के भेद पर, वै० वयस्=सं० वयस्= पक्षी] २. १६८.

वरंभा—ब्रह्मा—बम्हा २५. ६०.

वर—(√वृ) दूल्हा ३. ५२, ५५; ६. ३१; १६. ४०; २०. ७८, ८०, १३१, १३२; २३. १३५; २५. १६६; श्रेष्ठ १. ६८; (वर Gn; कर रा०) १५. ६५; २५. १६४; वर = वट = वड़ १५. ६६; २३. ६६; वड़ा १८. ४६.

वरइ—वर लोक ३. ३१; वलता है = ज्वलति; पा० जलति; उ० ज्वलिबा; हिं० जलना, बलना, बरना; पं० जलणा, वलणा; सि० जलणु, बरणु; गु० जळवुं; म० जलणें २३. १७४.

वरइनि—[पार्ण = पयण, वयण, वरण, वरणी] पान वाले की स्त्री २०. २३.

वरजनहार—[√वर्ज, वज्ज, बरज; ध्यान दो फा० वर्ज = अवे० वरेचस् = सं० वर्चस्] रोकने वाला १. ५६.

वरजा—रोका २४. ५८.

वरजि—रोक २३. ८.

वरतइ—[वै० वर्तते √वृत्; इसी का रूपान्तर पाली में वट्टति, तु० अवे० वरेत् = घूमना; सं० वर्तन = घूमना; वर्तुला = Lat. *vertellum* = E. *whorl*; Germ. *wirtel* तथा *vertil*; Goth. *wairthan* = Germ. *werden* (होना) तथा Lat. *vertex*, *vortex* आदि; Goth. - *wairths* = E. - *wards*; Obulg. *vreteno*; वर्तते का मौलिक अर्थ घूमना पा० वट्टण में स्पष्ट है; वै० घृत = पा० वत √वृत् से, अर्वाचीन अर्थ = दुग्ध (दे० M. K. Ved. Ind. II. 341)] बरतता है, मत करता है, ८. ६४.

वरता—बरतता है १. ४६.

वरन—[√वृ = ढकना से; तु० E. *coating* अथवा coat (of paint); Lat. *color* = ढकना, *oc·cul·ere*—ढकना आदि] वर्ण, रंग २. १६४; ३. ३६; ७. ४४; ६. २८; २०. १२१; १८. १५; २०. १३; २४. १००; प्रकार १. ४, ३२; वर्णन कर ६. ५६.

वरनइ—वर्णन करते हैं २. ४; १०. १३८.

वरनउँ—वर्णन करता हूँ १. ४१, १०५; २. ४६, १२१, १२८, १६५, १६६, १६३; ७. ६७; ८. १५; ६. २५; १०. १, ६, ४१, ५१, ८१, ६७, १५३; १५. ६; १६. १८.

वरनहिँ—रंग के २. १६४.

वरना—वर्ण, रंग, प्रकार १. १०, ७३; २. ८७, १७३; वर्णन किया १६. ५६; पुष्प विशेष ("वरुणो वरणः सेतुस्तिक्तशाकः कुमारकः" अमरः) २१. ५१.

वरनि—वर्णन करना १. ७३; २. ६५; १०. १६०; १६. २०; वर्णन करके २. २४, १५६.

वरनी—वर्णन की १. १५६.

देखो वरीक २५. १३४.

वलइँ–[सं॰वलय; भायू॰*Uel=घूमना; तु॰ √वृ=ढकना तथा √वल्= घूमना, जिसके साथ संबद्ध हैं वरुत्र= उपरिवस्त्र, ऊर्मि; वलित (नत); वालयति (लुढकाना), वल्ली (लता), वट (रस्सी, बाँट) तथा वाण (बेंत); ध्यान दो Lat. *volvo;* Goth. *walwjan* (लुढकना); Ags. *wylm* (ऊर्मि)] चूड़ियां १२. ५६.

वलि–राजा का नाम १. १३०; २०. १२०; २५. ६०, १२४; बलि होना (√भृ Grassmann) १०. २; २०. ११४; २३. ५८, ५६, ६०, १६८.

वलिहारी–बलिदान २४. ५३.

वली–वलवान् [E. *debility*] २.१३,१६५.

ववंडर–वात्या (तु॰ वव–वुव्–म्रू, ववंधर) १०. १४६.

वसइ–[√वस्, भायू॰ *Ues= ठहरना; तु॰ अवे॰ वरेहइति Lat. *vesta* (चूल्हे की देवता); Goth. *wisan*= ठहरना=Ohg. *wesan*=E. *was, were,* Oicel. *vist*= ठहरना; Oir. *foss*= आराम इत्यादि] वसती है; पं॰ वस्सणां; म॰ वसणें; सिं॰ वसनचा १६. ६४; २३. १६०; २५. १५०.

वसत–वसता २१. ५.

वसतु–वस्तु=वत्थु ७. ७, ४३.

वसंत–[वै॰वसन्त; भायू॰*Uēr; अवे॰ वेरेहर=वसन्त; Lat. *vēr;* Oicel. *vār* = वसन्त; Lith. *vasarā*= ग्रीष्म] २. २४, ८८, १६०; ४. ३७; ८. ३६; ६. २७; १६. ८, ३२; १८. ४७, ४८; १६. ५४, ७२; २०. ४, १६, ३४, ३७, ६१, ६२; २१. १, २, ५, १८, २०, २२, २३, २४, ४४, ४८; २३. ८७, ६२, ६७, १६१.

वसंता–वसन्त २१. १६.

वसंतू–वसन्त १८. १८.

वसहिं–बसते हैं २. ३३, १५३; २३. १६८.

वसा–वसइ का भूत १. २६; २. ८६; ५. १६, २४; १०. ६२; १७. ११; १८. ३६; २५. ४७, १५३; वरर=वर्रे १०. १३८, १३६; वास ११. ५३; वस गया=ठान लिया २५. १२.

वसाइ–वसती है १. १६४; वस चलता है २४. ८.

वसाहीँ–वसते हैं २. ५८.

वसिठ–वशिष्ठ=दूत २३. ६, ४६.

वसिठहि–दूत ने २३. ४१.

वसी–वस गई ६. ३५; १०. १२७.

वसीठ–वशिष्ठ=दूत १. ८७; २३. ८, २३, २५; २५. ८८.

वसीठी–दूत का काम २५. १२६.

वसेरा–वास, ठिकाना ५. ४२; १३. १, २५. १३.

बसेरे—बसेरा २. १२६.

बहा—बहइ का भूत १३. ३८; १६. २१.

बहि—बहने ५. १३.

बहिर—[बधिर; व्युत्पत्ति देखो Walde, Lat. Wtb. *balbus* पर; बहिरा; गु॰ बेहेर; सिं॰ बिहिर; बं॰ बहेरा; सि॰ बोडो; गु॰ बेहेरो; पि बहू; परतो बोशा; गु॰ हि॰ बोडा] ७. ५४.

बहु—बहुत (बहु) १. १०, १५, २३, २८, ३७; २. ३३, ३७, ७३, ७४, ८०, ८७, १३३, १७१; ३. ५; ५. ३; ६. ४; ७. ४३; ६. ४२; १२. ६३; १६. ४७; १६. ६७; २०. ६, २५, २६, ३३; २१. २४; २५. १६, १४०, १४१.

बहुत—प्रभूत, पा॰ बहूत=पहुत १. १६, ३०; २. ८२; ३. ७०; ५. ३४; ७. ४, ५, ३२; ८. ५३; १०. १२०, १२८; १३. १५; १७. ६; २०. ११०; २२. १५, ५८; २३. ४६, ५७; २४. १८, ३६; २५. ४५, १०७.

बहुतई—बहुत ही २३. ११०.

बहुतइ—बहुत ही १.३, ११, १०.६८, १८६.

बहुतक—बहुत २५. १११, ११६.

बहुरंगी—बहुत रंग वाला ७. ५५.

बहुरंडा—बहुरंगा २७. ६६.

बहुरइ—व्यावर्तते = बहोडति=बहुरता है = फिरता है १२. ३०.

बहुरा—फिरा ६. ३६; १६. ३१.

बहुरि—लौट कर २. २३; ४. ४६; ५. २३; १३. ६२; १४. ७; २०. ३८; २१. ३६; २३. ४६; २५. ११२.

बहुरी—लौटी २३. १५३.

बहुरे—लौटे ३. २५; २५. १११.

बहुल—बहुत २. ११४.

बहोर—फेरा ७. ८.

बहोरा—(लाइ=ला बाहुरता है=फिर आता है) १०. ३६.

बाँक—वक्र [वै॰ वङ्क तथा वक्र=झुकता हुआ; वङ्कु=टेढ़ा चलता हुआ; वञ्चति=टेढ़ा चलना (पीछे से धोखा देना); तु॰ Lat. *con-vexus* = E. *convex*; Ags. *woh* (wrong), Goth. *wahs*; Obg *vanga*= कपोल, पा॰ वंक तथा वक्क (P. 74)] २. १२, ६३; १०. ३३; कठिन २२. ६५; २३. १७६.

बाँकइ—बाँक ही १८. ४३.

बाँका—वक्र=कठिन; पं॰ बंगा; सि॰ विंगो; हि॰ विंगा; बाँगा, बाँक (गाड़ी के पहिये को रोकने वाली); गु॰ बाँकुं; बं॰ बाँका; सिं॰ बक; प्रा॰ वंक; पा॰ वक्क २. १३३.

बाँकी—दुर्गम २. १२५; २२. ६८.

बाँच—√वञ्च=टेढ़ा चलना; (टेढ़ा चल कर बचना) २. १२०; बचाव ५. ३३; बचे ५. १२; बचता है १४. ३०.

बाँचा—बचा ३. ६६; २३. ५; २४. ६४;

१५. १६; १७. १; १६. २७; २१. १०; २३. १७१.

बाउरक्ता—बातुलरक्त=बावले जैसा रक्त १२. ५८.

बाउरी—वापी, वापिका; हि० बावड़ी, बावली; बाँवली, बावरी; बाईं; गु० बावो, बाईं; सि० बाईं; म० बावडी २. ४१.

बाएँ—वामे; हि० बायाँ, बाँयाँ; पं० बाइयाँ; म० बाम; सि० वम १०. ८३; १२. ७८, ७६, ६५, १०१, १०४; २५. ५३, ५७, ७८.

बाग—बगाम की डोर १०. १००.

बागा—बाग २. १७३; १०. ३५, ११६.

बाजइ—बाजने; हि० बजना, बाजना; पं० बजणा; गु० बाजवुं, म० बाजवें; बं० बाजिते; [गु० सं० वाद्; अवे० वाद्; पह० वाह; फा० बाज, बाम्; बावाम्; Gray के मत में अवे० वश्त (बोलना) = पह० वशाप्, वाशम्; पाम० वघाम्; फा० बाङ्, बा० बाङ्; देखो p. 10] १. ११२; २५. ५१.

बाजत—बजते २०. ६०; २५. १५६.

बाजन—बाद्य २०. ५६, ६०; २४. ११; २५. १०६.

बाजहिं—बजते हैं १६. ४०. २०. ५८.

बाजा—बजता है २. १४१; १०. १४२; १२. ८१; २५. ५, १२१; बाजई बी १. ७१; बजा=पूरा हुआ २५. १७५.

बाजि—[वै० वाज=शक्ति; भापू *Ueg; गु० वज्र; Lat. vegeo=चौकस रहना, vigeo=दृढ होना (E. vigour); अवे० वस्; Oicel. vakr = Ags. wacor = Germ. wacker; E. wake इत्यादि] घोड़ा २. १२६.

बाजी—बजी=पहुँची १४. ५.

बाजु—संवर्ज्य=बिना १. १६; ११. ४१; २०. १२०; बजता है २१. १७.

बाजे—बजे २०. ६, ५६; २४. ११; बाघ बाँर बजे २५. १७६.

बाट—वर्त्मन्=वट्ट=बाट=मार्ग १२. ६५. ६६, १०४; २२. १८; २३. १६८.

बाटईं—मार्गो; "वट्टा पन्थाः" (दे० 247.4); पं०, सि०; गु०, म० वाट; बं० बाट; सि० वत; का० वत; मा० वट्टा ५. २३.

बाटहि—राह में २३. ८३.

बाटा—मार्ग १. ११७; ७. १०, २८; १३. ६; २३. ११.

बाढइ—(√वर्ध—बढ्) १६. ४३.

बाढत—बढ़ता है २४. ११६.

बाढा—बढ़ा १०. ६६; १५. २७, ४४; २४. ११६; २५. ५२.

बाढ़ि—बढ़ता है १. १२८; बढ़ती १५, ४८.

बाढ़ी—बढ़ी ३. १०; १८. ४; २४. १००; वृद्धि ७. ३.

बात—वार्त्ता=बाता; फा० बाद १. १७०;

७. ४२, ६१; ८. ४४; १०. ८०; ११. ४९; १९. ३९; २०. ९७, ११०; २२. ६१; २३. २६, २८, ४६, ४८, ५०, ११२; २४. ९३, १३७; २५. १६, ८८, ९१, ९५, ११३, १४७, १६०.

बातहिँ – बातों में २२. ९.

बाता – बात १. ९४; २. ९५; ३. ५१; ७. २९, ४६; ८. ३९; ९. २, ३३; १०. ५८; १८. १४; १९. ३३, ५२, ५७; २०. ९३; २२. २०, २५, ७६; २३. ४१, ८५, १०८, ११३; २५. १४३.

बाती – वर्तिका (√वृत् = घुमाना से; तु० बँट, बँटना = रस्सी भानना); वत्तिआ; पा० वट्टिका; उ० बती; बं० बाती; हि० बत्ती, बात; पं० बत्ति २३. १४०.

बान – बाण २. १०८; ५. ३२; १०. २४, ४१, ४५, ४६, ४८, ८०, ११६; २३. ६४, ८८, ८९; २४. ७०.

बानपर – वानप्रस्थ २, ४८.

बानबिख – विषबाण २३. ६१.

बानहिँ – बाणों ने १०. ४४.

बानन्ह – बाणों से २४. ७९.

बाना–बाण=प्रकार=वर्ण १.९४; १०.२५.

बानारासी – वाराणसीय = बाणासरी (अक्षरव्यत्यय के लिये तु० णिडाल= ललाट; दीहर=दीरह P. 132, 351) बनारस का १०. १२७.

बानासुर – बलि का पुत्र, बाणासुर २५. १७१.

बानि – वर्ण, बान, म० बाण; गु० वान; सि० वनकु (तु० हि० बाना, बनावट) सिं० वण ८. ६; १०. १६.

बानिनि – बनियाइन २०. २२.

बानी – वर्ण=वण्ण २. ६७; बारह वर्ण= द्वादशादित्य, वर्ण अर्थात् द्वादशादित्य की कला २. १९९; ९. १२.

बानु – बाण २४. १२८; वर्ण १९. ५०; २५. १६८.

बापुरा – बप्पुडा, बापड़ा, बापरा; गु० बापडुं; म० बापुड़ा (वराकः) ११. ४०.

बाम्हण – [ब्रह्म की व्युत्पत्ति के लिये देखो Osthoff "Bezzenberger's Beiträge" XXIV, 142 sq; (= Mir. *bricht* = जादू; Oicel. *bragr* = कविता); तु० वै० ब्रह्म] ब्राह्मण=बम्हण; बंभण, बंहण; हि०, गु०, बं० बामण, बाम्हण; सि० बाँभणु; पं० बाम्हण; म० बामण ७. २, ८, २०, २४, ३३, ४०, ४४, ४९, ६५; १९. १५.

बार – द्वार १३. १६; २०. १०८; २२. ३०, ६३; २३. १९, २०, २४; २४. २५, ५०, १३३; २५. ३५, ५६, ६८; बार = मर्तबा ३. १३; १९.

वासहिँ—बासती हैं=बसाती हैं=सुगन्ध देती हैं २. ३४.

वासा—वास=सुगन्ध १. १७५; २. ८१; ३. १५, ४२; १०. ६, ५३; २०. ६; २४. ८६; बसेरा १. १०७; २. ६०; २३. ११६.

वासु—वासस्थान [Lat. *ver-na* (गृह में निवास करने वाला); As. *wes-en* (होना); Eng. *was*, were] ५. १६; सुगन्ध १६. ७२.

वासुकि—एक सर्प १. १०६; २. १२२; १०. २; १६. ४०; २४. १३; २५. १२४.

वासू—वास=सुगन्ध २. २६; वासुकि नाग २५. ६०; वासस्थान १३. ६३; २३. ७५.

वाहन—[√वह; आर्य० *Uegh=खेदना, ले चलना; सं० वहित्र=Lat. *vehiculum*=E. *vehicle*; अवे० वज़्-इति=ले जाना Lat. *veho*=खेदना; Goth. *ga-wigan*=Ohg. *wegan*=Germ. *bewegen*; Goth. *wegs*=Germ. *weg*; E. *way*; Ohg. *wagan*=E. *waggon* इत्यादि] वाहन, सवारी २२. १.

वाहर—बहिः से; पा० बाहिय, बाहिर; प्रा० वाहिर; हि० बाहर, बाहिर; पं० बाहर; सि० बाहरि, बाहरु; गु० बहार, बाहेर; सिं० बपर २४. ४८.

वाही̃—बाँहु=बाहु [बाहति से; Ohg. *buoc*; बाहा प्राचीन समय का प्रयोग; तु० *vaihstā*=कोना] २०. ११५.

विआध—व्याध=बाह=बहेलिया, अहेरिया ५. २५, ४३; ७. १७, ३६; १६. १४.

विआधहि—व्याध का ५. ५८.

विआधि—व्याधि=बीमारी [वि+आ+√धा] पा० व्याधि २. १५२; ५. ५३.

विआधू—व्याध ५. ५३; ७. ३८; १८. ३७.

विआपी—व्यापिन्=व्यापि, व्याप्त=व्याविश्र (व्यापक) १. ५७.

विआस—व्यास ऋषि, विश्रास=ग्रास=वास (तु० श्रास=भाष्य P. 268) १. १६०; ७. ४७; १२. ८०.

विआह—विवाह=विआह=ब्याह; विवाह वियाह (H. 86), ब्याह, विवाह; पं० वियाह; सि० विहाँड्उ; गु० विवाह; म० विवाह २५. ६५, १३४.

विआही̃—ब्याही गई २०. ७८.

विआहू—विवाह=ब्याह २०. १३४; २३. १४४.

विओग—वियोग=विओअ, विओग=विरह ८. ४१; १२. ८; १३. ४१; १६. १, ६५.

विओगा—वियोग १६. १०; १८. १.

विओगी—वियोगी २. ४७; ६. ६; ८. १८; १२. १, ६६; १७. १; १६.

५१, ६५; २०. ६४; २१. ६१; २३. ८६; २४. ११; २५. १, ६२.

बिओगु—बियोग २२. ८.

बियोगू—बियोग १८. २०; २३. ११४.

बिकट—[बि+कत √कृ] बिकट=बिगड=बिग्रह=कठिन २४. १२६.

बिकरम—बिक्रम=बिक्रमादित्य (स); प्रा० [स=ष; ध्य=च्च; ध=अ; च्य=उम; तु० सघद=सृष्यति (पंजाबी में सच=सृप); दोष=दीप; धीवध्य=भेषज्य; पच्छ=पथ्य; मझ=मध; वेझ=वैद्य; मज्झ=मध्य P. 280] बिक्रमादित्य १. ११०; ६. ८; ८. ४१; १६. ६; २२. ४६; २३. ११३; २५. १४८, १६०.

बिकरारा—बिकराल=बिगराल=बेकरार ४. ३०; भयङ्कर २४. ७६.

बिकल—बिकल=बिगल=बेचैन २०. ८८; २५. ४५.

बिकरी*—बिकी; बिक्रम, बिधम, बिगम २०. ११.

बिकाइ—बिकता है (बिक्र=बि+क्री, Qarot-) हि० बिकना, बेचना; पं० बिकना, बेचना; सि० बिकिणु, गु० बेचवुं, म० बिकवें; सि० बिकुणु २. १०४; ७. ६१.

बिकान—बिकाता=बिकता ७. ३०.

बिकाना—बिका है ८. ३१.

बिकाही*—बिकती है १. ७७.

बिक्ख—बिष १. २७.

बिख—[बिष; पा० बिस; अवे० बिष्; Lat. virus; Oir. fi=बिष] १. २६; ५. ४३; ८. १६; १०. ३५; २०. ४८, ८४; २४. ७५, ६५.

बिखचारइ—बिषचारे से ५. ३७.

बिखघारा—बिषधारा ५. ४०.

बिखदाना—बिषदाना ५. ३५.

बिखभरी—बिषभरी १०. ७.

बिखम—बिषम=बिसम १२.८४;२३.१७०.

बिखबाँधे—बिष से बंधी=बिषमय १०.४३.

बिखबान—बिषबाण २३. ६५.

बिगसइ—बिकसति [बि+कस्=प्रेरित करना, खोलना, खिलाना तु० बिकाशते=दीप्त होता है; पह० गुकास; फा० फा० गवाह] २. १८४.

बिगसत—बिकास होते २४. ६२.

बिगसा—खिला १४. १५४.

बिगसानी—खिल उठी=हंस दी २०.१०.

बिगसि—बिकसित होकर १५. ७७;२०.६.

बिगसी—बिकसी=खिली ३.१६;४.६२.

बिगासा—बिकसा=खिला १०. ६४; २४. ८६.

बिगासू—बिकास=प्रकाश १८. ११.

बिघ—बिध=भाँति ७. १६; १०. ६५, १२४, १२६, १४०; १२. ८५; १४. ३०; २४. ४१.

विचला—विचल गया=टल गया (विचल=वि+चल्) ७. १६.

विचारि—विचार (विश्चार) करके ३. ५६; २०. १२८.

विचारी—विचार कर ४. ११; २०. १२६.

विछाई—(वि+स्तृ) विछा कर २३. १५७.

विछिश्रा—विछुए=बिच्छू के श्राकार वाला पैर की अंगुलियों का जेवर [√व्रश्च्; वृश्चिक; प्रा० विंछिअ, विंछुअ, विंचुअ; पा० विच्छिक; उ० विच्छु; (श्रा); बं० बिच्छा; हि० बिच्छू, बिछुआ; पं० बिच्छू; सिं० बिछूं; विंछू; गु० विंछू, विछु; म० विंचू] १०. १५६.

बिछुर—बिछुड़ना=(वि+छुट्=छुड्) १६. ५२.

बिछुरइ—बिछुड़ता है १२. ४४.

बिछुरन—जुदाई ("विछुरण" सु०) ३. ७५; १६. ६.

बिछुरता—बिछुड़ता=बिछुड़ा हुआ १६.८.

बिछुरहिँ—बिछुड़ते हैं १. १७६.

बिछुरि—बिछुड़ कर ४. ४०; २३. १४२.

बिछूना—बिछुड़ा हुआ १६. ५.

बिछोश्रा—विक्षोभ=बिछोह=विरह=दुःख २१. १३.

विछोई—बिछोही=बिछुड़े १६.२;२१.४२.

बिछोउ—बिछोह ("विच्छोड=विच्छोल=विकंपित=वियोग") २१. ८, ६, २१.

बिछोऊ=बिछोह=वियोग २२. ५१.

बिछोह—वियोग ५. ८.

बिछोहा—वियोग २. ६६; २४. ८७.

बिजइगिरि—विजयगिरि=विजयनगर का पहाड़ १२. १००.

बिजउर—बीजालय=बिजौड़िया नींबू=गूदड़िया नींबू २०. ४५.

बिजुरी—विद्युत=विज्जुला=पा० विद्युता (हे०च० 2, 173), विज्जुली *विद्युती; विज्जुलिआ, *विद्युतिका; विज्जु=विज्जुआ=विज्जुला (त=ल P. 243); हि०, पं०, म० बिजली; उ० बिजुली; सिं० विदुलिया १६.१३,१८;२५.६१.

बिटंड—वितण्डावाद=बखेड़ा २५. ७७.

बिथरि—विस्तृत=वित्थड, वित्थय, वित्थुय, फट कर ८. ५४.

बिथा—व्यथा १३. २८; १८. ६; २४. ६६, १००, १३४, १५०.

बिदर—विदर्भ देश १२. ६५.

बिदिश्रा—[वै० विद्या √विद्=जानना, पाना; Goth. *witan*=जानना; Germ. *wissen*; Goth. *weis*=E. *wise*. देखो Waldo, Lat. Wtb. *video*] विद्या; पा० विज्जा २. ११६.

बिधंसव—विध्वंस करना (विध्वंस=विद्धंस) २०. १३४.

बिधँसइ—विध्वंसयति=नाश करता है १८. १६.

बिथाँसी – विध्वंसिता = मट्टी में मिलाई २०. ११८.

बिधाता – विधाता = विहाव ५. ६; २१. ५५.

बिधान – विधान = विहाण = विधि २. ११३.

बिधि – विधाता, अवे० दातर; फा० दादार १. ८२, ८८, ५६, १२७, १६२; ३. १४, ५४; ७. १६, ५८; ६. ११, २६; १०. १०३; ११. २१, ४३; १५. ७६; १७. ८; २२. २१; २४. ८१; २५. १७५; बिधि = प्रकार १. ५७; ५. १४; २०. ६५; २१. १६; २२. ४, ५१; २४. १२१, १४२.

बिधिना – विधि = ब्रह्मा २५. ४४.

बिनइ – विनीय = विनय करके २५. ७३.

बिनउ – विनय = विणय ११. १४.

बिनउब – विनय करेंगे १. ८८.

बिनति – विनय [प्रा० विण्णत्ति; बिनती; बं० बिनति; सि० बीनति; गु० विनति बिनंति; म० विनती, विनंती; Gray के मत में विज्ञप्ति; बं० मिनति; पू० हि० मिनती, खड़ी बोली मिन्नत, (बिनती); पं० मिन्नत; सि० मिनती इत्यादि] ७. ५०; २५. ४५.

बिनती – विनति = विनय १. १७८.

बिनय – विनय १७. ८.

बिनवैं – विनती करती है ३. ६१; १२. १५.

बिनवैहिं – विनय करती है २५. ८३.

बिनवइ – विनय करती है १. ११५; २. १८.

बिनवउँ – विनय करता हूं १. १६०.

बिनवाँ – विनय किया ३. ६५.

बिनवा – विनय किया ७. १३; २०. ८१; २५. ८६.

बिनाती – विनति १३. १६; २०. ११०.

बिनासइ – नाश करता है १५. ११, १५.

बिनास – विनाश – विणास ८. ३२.

बिनासा – नष्ट किया गया १. १६६; ६. ७; विनाश ८. ६७.

बिनु – विना १. १६, ६३; ३. ७१; ४. २०; ५. ३२; ७. २३, ६०; ८. ३६, ६१, ६८; ६. १, ३६; १०. १०, २०, १०६; ११. १५; १२. २०, २६; १५. २०; २०. ८४, ११६, ११७, ११८, ११६; २१. ६, २३; २२. ४८, ५६; २३. २२, ४७, १४६; २४. ८.

बिनोद – विनोद १. २१.

बिपति – विपत्ति = विपत्ति २०. ३२.

बिपर – [Ueip–, वेपते, Lat. vibrare] विप्र = विप्प ७. ५०, ६६; २४. ११३.

बिभास – विभास – कान्ति २४. १०२.

बिमूति – विभूति = विभूइ = भस्म २२. ३.

बिमोहा – विमुग्ध हो गया ४. ३२.

बिमोही – मूर्छित २३. १४६.

बिरचि – रचयत्र = करके ८. ५१.

बिरमाया – विरमाया (धा० विरम् = विहुण होना, अटकना) भुलाया २२. ६.

सि० विस्सु, विहु; गु०, पं० विस; म० विस, वीस; हि०, बं० बिस; का० वेह, सि० विस, वह ४. १५.

विसमउ – विस्मय = विस्मय २४. १५, बे समय = बिना समय २४. ६०.

विसरइ – विसारयति = विसारता १. १५, १६; २०. २२; विस्मरेत् = बिसरे = भूल जाय (विस्मरति; वीसरइ; हि० बिसरना; विसारना, पं० विसारणा; सि० विसारणु, गु० विसरउं; म० विसरणें) २३. २१; २४. १६.

विसरा – छोड़ दिया ५. ८, ४७; २३. ७५.

विसरामा – विश्राम १. १४; १३. ५; २३. ७७.

विसरामी – विश्रामी = विस्साम = वीसाम विश्राम देने वाला ८. २६.

विसरामू – विश्राम २. २२.

विसरि – भूल ५. ५.

विसहर – विषधर = विषैले ४. १५; १०. १; २०. ८५.

विसारा – छोड़ दिया ५. ७; २४. ७०.

विसारे – पसारे = बढ़ाये हैं १०. ५.

विसाहना – विसाधन = भिन्न भिन्न सामग्री ७. ४.

विसुआसी – विश्वासघाती; [दयानन्द, ईसा तथा सूरद ने इसी अर्थ में हिन्दी शब्द का प्रयोग किया है; वैमनस्य; काद्दूरस प्रयोग हो; अथवा यिसु = मिस्म, तु० पा० वीमंसति = वै० मीमांसते; म > व के लिये दे० Geiger, PGr. 46. 4] ७. ४१; २१. २५.

यिसुन – विष्णु = विष्णु २५. १००, १२२.

यिसेखहिं – विशेषयन्ति = विशेषता को बनाते हैं ६. ३.

यिसेखा – विशिष्येत = वर्णन किया जाय १. ६१; २. ३; विशेष(ता) ६. ५४; शोभित है १०. ११४.

यिसेखी – शोभायमान है १०. १२, १५५.

यिसेसर – विषधर २०. ४०.

यिहँसत – हंसता है १५. ५६; २० १२; २५. १६४.

यिहँसाते – विहसन = खिले हुए ४. ४.

यिहँसाना – हंसा ४. ६१.

यिहँसानी – हंसती है १०. ६२.

यिहँसानी – हंसी २०. ८६.

यिहँसि – हंस कर १०. ७०; २२. १६.

यिहँसी – विहंसइ का भूत १५. ७७.

यिहराना – विहरइ का भूत = टुकड़े टुकड़े हो गया २३. १६७.

यिहाई – विहीना = बीती १८. ५.

यिहान – विहाय = प्रातःकाल (विभात, गु० विहायसु, विहीन) ३. १८; २०. १२३; २५. ८८.

यिहानी – बीती ३. १७.

यिहारी – विहारि = विहार की (वि + ह = टहलना, इधर उधर घूमना) २०, १३१.

विहून – विधून, [√धु = √धू से; हेम० के मत में √ही=√हा से व्युत्पत्ति है, जो असंगत है; देखो P. 120] १५. २१.

विहूना – विधून=विहूण=विहुण=विना= रहित ११. २२; २३. ११०.

वीओग – वियोग ११. ३२.

वीच – वृत्य=विच्चु=मध्य [तु० सि० विचि; प०विच; प्रा० विचि, पा० हि० वीच; अप० प्रा० विच्चे अथवा विचि= वृत्ये; ध्यान दो वीचि = ऊर्मि, वै० अर्थ प्रतारण, तु० Lat. *vicis*; Ags. *wice*=E. *week*, शब्दार्थ परिवर्तन] १०. ४२, १५८; १६. २२; १६. ४२; २२. १८; २३. १५६.

वीजानगर – "विजयनगर" १२. १००.

वीजु – विद्युत्=बिजली १. ७; ३. ६३, ६७, १२६; १०. ६४, ६५; १५. ६५; १६. ५; २१. ३७; २५. ६, १६४.

वीझवन – "विन्ध्यवन"; (बींधने वाला जंगल, तु० पा० विज्झति = विध्यति, विज्झन = व्यधन) १२. ६२.

वीता – व्यतीत; हि०बीतना; उ० वितिबा; गु० वटवुं, १२. ६३; २५. १०८.

वीति – व्यतीत = बीत (तु० पा० वीति = वि+अति) २. १४४; ६. २६.

वीती – व्यतीत हो गई १३. २८.

वीन – वीणा २. १०७; १०. ७४, १४३; १८. ५.

वीनहिँ – चुनती थीं =(वीनइ = वेणति; √वेणृ गतिज्ञानचिन्तानिशामनवादित्रग्रहणेषु) २०. ४६.

वीर – [वै० वीर; अवे० वीर; Lat. *vir*, *virtus* (E. virtue); Goth. *wair*; Ohg, Ags. *wer*; तु० वयस् = शक्ति] १. १७२; २१. ५७; २२. ६; २५. ३०, ६७.

वीरउ – वीरुध = बिरवा = वृक्ष २०. ५५.

वीरवहूटी – वीरवधूटी=इन्द्रवधू २३. ५३.

वीरा – वीटक = बीडग = बीड़ा, चलने के समय संकेत १५. ५७.

वीस – विंशति = वीसइ; पा० वीसं, वीसति; का० वुह; बं०बीस; पं० वीह; सिं० वीह; गु०, म० वीस; अवे० वीसइति; पह० वीस्त; आ० फा० बीस्त; का० बीस्ता; वा०वीस्त; बलू० गीस्त; तु० हि० बिस्सा, बिसवांसी १२. ७२; २५. ६६.

वीसुनाथ – विश्वनाथ=विस्सनाह २०. २४.

वीहर – भिन्न (वि+हृ = फटना) २. १६२.

वुझइ – (बुध् = बुज्झ, यथा "दीपो नन्दितः") बुझती है २४. १०७, ११२.

वुझहिँ – बुझते हैं २१. १०.

वुझा – बुझइ का भूत १६. ३.

वुझाइ – बुझता है १५. २७; बुझाकर १६. ४३; २३. १०१; बुझ २४. ३१.

वुझाई – समझा कर ३. ५०, ५४; बुझ ४. ५६; २५. ५६.

बुझाए-समझाने पर १३. ४४; २१. ५१.
बुझान-बुझ गया २५. ११७.
बुझायइ-बुझावे १८. ११.
बुझायत-बुझाते २२. १६.
बुझायहिँ-बुझाते हैं १२. ६२; २४. ११२.
बुझी-बुझ गई १६. २२; २४. १०७.
बुद्धि-(बुध्+ति) समझ ५. ४०.
बुधि-बुद्धि=अप॰ बमोद ३. ५७, ६३; ५. १७, ४६, ५०; ७. १२; ८. ५७; ११. २७.
बुधियंत-बुद्धिमत्=बुद्धिमान् १. ६६.
बुधी-बुद्धि २५. १५२.
बुंद-बिन्दु १३. ४०.
बुंदा-बिन्दु=बूंद १५. २६.
बुरहानू-शेख बुरहान १. १५४.
बुलाक-वह घोड़ा, जिसकी गरदन और पूंछ के बाल पीले हों ("बोल्लाहस्त्वयमेव स्यात् पाण्डुकेशरवालधिः" हेमचन्द्रः) बोल्लाह २. १७१.
बूँद-बिन्दु; पं॰ बूंद, बिंद; सि॰ बिंदु; बंगो॰ बींदी; उ॰, बं॰ बिंदी; सि॰ बिंद; का॰ बिंद १. ७६, ७८; १३. ९९; १५. ११, ६०; २५. २०, २१.
बूँदहि-बूँद से २३. १४८.
बूक-बुकवा बुक्का=(बुक्का=मुष्टि=मुट्ठी से रगड़ कर हाथना, बुकना) २०. ६२.
बूझ-बुध्यते=(बुध्यते=बुज्झइ; प्रा॰ बुज्झदि; बा॰ बुज्झिय; उ॰, बं॰ बूझन; हिं॰ बूझना; पं॰ बुज्झणा; सि॰ बुझणु; गु॰ बुझवुं; म॰ बुझ समझ २५. ५६.
बूझा-समझा १. १२६; ११. ५१; १३. ४४; १४. १५; १६. ३८; २१. ५१; २४. २८.
बूझि-बूझ कर ४. ४५; ६. ४०; १२. ६७; २५. ६६.
बूझे-बूझने पर=बोध होने पर २३. ४४.
बूड़-डूब (√बुड मज्जने; बुड्ड=डूब; व्यञ्जनप्रत्यय के लिये देखो H. 133) २. १७३; ५. १३; १५. ६३.
बूड़इ-डूबता है (बुडति, बुड्डइ, बूड़ना; गु॰, सि॰, पं॰ बुड; का॰ बोड; म॰ बुडणें) १०. ८८; २१. ३८; २४. ६६.
बूड़त-बुडत्=डूबता २५. ६४.
बूड़ि-डूबकर ४. ५६; ११. ५; २२. ५७; २३. ६१.
बूड़ी-डूब गई १०. १०७,
बूड़े-डूबे २१. ३२.
बूढ़ा-वृद्ध=बुड्ढ=बूढ़ (वद्धिष्ट); प्रा॰ हिन्दी बुड्ढाटेरा=बूढ़; टेरा=टेर=स्थविर. P. 166, 308) १. ७०.
बूत-भूति=(प्रा॰ विभूति=बभूति=भभूति H. 177) १३. २४.
बेँचइ-बेचने (वि+क्री=विक्र) ७. १८, २६.
बेँचत-बेचते ७. ३६.

बेँचा – बेचा १६. १५.

बेइलि – बेल्लि = बेल्लरी (वल्ली से नहीं; *विलि से); तु० वीली, वेल्लरी, वेल्लिर, उव्वेल्लइ; वेल्लमाण, उव्वेलिद इत्यादि P. 107) २. ८७.

बेग – वेग (√विज्) १. ८०.

बेगि – वेग से = शीघ्र १. १४२, १५२; ४. ६१; ७. ४६; ८. २०; १२. २१; १३. ३६, ६१; १८. ५२; २०. ८०; २३. ४३, १५५, १५६; २४. ८७, १२८; २५. १६, १३६.

बेगी – शीघ्र ११. ६.

बेटा – विट्ट = पुत्र २५. ८४, ६३.

बेडिन – पहाड़ में रहने वाली बेड़े जाति की स्त्री (तु० वेष्टयति, वेढिअ; हि० बेढना; सि० वेढणु; वं० वेडिते; सिं० वेलणवा; म० वेढणें) १०. १११.

बेद – वेद = वेअ (√विद्) ३. ४०; ७. ४०, ६१; १०. ७७, ८०; १४. २४; २३. १७६, १८१; २५. १४४.

बेदी – वेदों के जानने वाले २३. १७६.

बेद – वेद ७. २३.

बेध – (√व्यध्; नासिक्य के लिये तु० JB. J. As. 1912, I, p. 332 et seq; Grierson, Phonol. pp. 34, 38; JB. 82). (विध्यति; विंधइ, वेहइ; बींधना) बेंधना, बेधना; पं० विन्न्हणा; सि० विंधणु; गु० विंधवुं; म० विंधणें १०. ११२, ११५.

बेधय – बेधता = बींधता २०. १३४.

बेधहिँ – बींधते हैं १०. ११७; १८. ५१.

बेधा – बींध दिया ३. १५, ४२; १०. २६; १५. ३२; विंध २०. १२७.

बेधि – विंधकर १. १७५; २. ८१; ४. ८; १०. ४४, ४६, १५२; २३. ६४, १४४, १८३, १८४; २५. २२.

बेधी – बींध दिया १०. ४८; २१. १८.

बेधे – बींधे १०. ६, ११५.

बेना – वेण = खस १. २५, १०२.

बेनी – वेणी ३. ४३; १०. ४, १३, १३०, १३२.

बेरा – बेड़ा = (बेड़िया, बेडी) नाव "बेडो नौः" (दे० 216, 6); पं० हि० बेड़ा; गु० वेड़ो; सि० बेड़ी; म० वेड़ा १३. ३१; १५. ६०; वेला समय २४. १५८; "बेंडा = वक्र = कठिनता" २५. १२०.

बेरि – वेला = बार; १. १३४; बदरी, बअर; पा० बदर; उ० बर; बं० बइर; पं० बेर; सि० बेरु, बेरि; गु० म० बोर २. ७८; ३. ७२; १०. ४०.

बेल – बिल्व = बेल्ल (तु० पा० बेलुव, बेलुव बिल्ल का गुणित रूप; सं० *बैल्व= *वैल्व = पा० वेल्ल) १०. ११४; वेल्ल = लता ११. १६.

बेलसहु – बिलसहु = विलास करो १२. २६.

बेलि—वेल्लि=वेल (गु॰वल्ली; "वेल्ला वेल्ली" (दे॰ 270, 30); प्रा॰ वेल्लि; हि॰ बेल; सि॰ वलि; सि॰ वल; पं॰, गु॰, म॰ वेल) १. २८; २. ८०, १४६; २३. ११३, ११६, १२०.

बेली—बेल ४. १४; २०. ४६; २३. ११४.

बेवहरिआ—व्यवहारी=ववहारि ७. १४.

बेवहारू—व्यवहार=ववहार (गु॰ पं॰ बेवोरा; हि॰ ब्यौरा; का॰ वेवहार; सि॰ ववहार; म॰ वेवहार; सि॰ वहर JB. 158) ७. १४; १६. १७.

बेसर—विसर=विशिष्ट सर=मोतियों की लड़=मोतियों का बना नाक का आभूषण १०. ५०.

बेसरा—वेश्या=वेस्सा=वेसिया, गणिका; हि॰, पं॰, म॰ वेसवा; २०. ३१.

बेसा—वेश्या २. १०५.

बेसाहनी—वैश्यपन=खरीद २. १०४.

बेसाहहु—वैश्यपन करो=खरीदो २३. १२.

बसाहा—"विसाधनम्"=खरीदने की सामग्री २. १०६; १२. १६; खरीदा ७. ४०.

बेहर—भिन्न १५. ८.

बेहरी—भिन्न (वि+हृ=करना) १. ६४.

बैरागी—बैरागी २४. १०.

बोंधा—बोंधा (√बन्ध्) ७. ११.

बोंदि—बोंधइ का भूत २१. ११; २३. ११०.

बोझ—बोझ [√वह्, वाह्य=बोज्झ=बोझा=भार (फा॰ बोझा= साख, ध=ब)] १०. ३०.

बोड़इ—डुबाता है (√बुड) १२. १६.

बोरइ—बोड़यति=डुबाता है ३. ८०.

बोरा—बोरते हैं=डुबाते हैं १०. १८.

बोल—बोलता है (√ब्रू; ब्रवीति, ब्रूते; पा॰ ब्रूति; णिजन्त ब्रूमेति Geiger. POr. 141, 2) २. १७; १०. ७८; ११. ८; २४. ८१, १०४; २५. ७६.

बोलइ—बोलता है ५. १०; ७. १६, १६; ८. ४२; ६. ३१; १०. ७६; २४. १; २५. १११.

बोलइँ—बोल २५. ३२.

बोलई—बोलता है ७. ४८.

बोलउँ—बोलूँ २३. १२४; २५. १२३.

बोलहिं—बोलते हैं २. ३३, ३४, ३६; १२. १७; १४. १४; २४. १०३.

बोला—बोलइ का भूत १. ८६, १८१; ७. ६०; १०. ७६; १२. ७६, ७७, ६७; १५. ४६; २३. ८८; २४. ३३, ७८; २५. ६४, १४५, १६१, १६६.

बोलाइ—बुलाकर २५. ११३.

बोलाइ—बुलाई ४. २.

बोलाउ—बुलाता है २३. १२५.

बोलाए—बुलाये ११. १०.

बोलायउ—बुलाये २३. १६८.

बोलायहु—बुलाओ २५. ११८.

बोलायहु—बुलाओ २४. ६६.

बोलि—बोली (वाणी) १. ६८, १८२; बोल ३. ५१; ७. ४८, ६०; ८. ३८; ६. ४६; १३. १७; २२. १६; २३. १६२; २४. ६१.

बोलिन—बोलियों (से) ४. १५.

बोली—वाणी १. १८१; बोलइ का भूत स्त्री० २०. १२६; २५. ६६.

बोलु—बोलो ६. ४६.

बोले—बोलइ का भूत १५. ७६; १४. १७

बोहारा—व्याहार=बोहार=बुहार २५.६८.

बोहित—वहित्र = बोहित्त = बोहित्थ = जहाज १. १४०; १३. १५, ६०, ६१; १४. १, २, १६; १५. २, ६, ६५.

ब्याध—व्याध=बाह ५. ५२.

ब्याधा—व्याध २४. ८७.

ब्रहमचरज—ब्रह्मचर्य=बम्हचरिअ (०चेर, ०घेर) २. ४६.

ब्रहमंडा—ब्रह्माण्ड १. ५,१०८; २. १२५; २५. ११८, १२३.

भ.

भंगराज—भृङ्गराज—भंगरय २. ३७.

भँडार—भाण्डागार = भंडाआर कोठा; हि० पं० गु० भंडार; सि० भांडारु; बं० भांडार १. १८०.

भँडारहि—भण्डार को २३. १८४.

भँडारी—भण्डार के स्वामी ५. ६.

भँडारु—भण्डार १. ३३.

भइँ—हुई; (भवति; प्रा० हुवइ, भवइ; पै० प्रा० भोति; शौ० होदि, हुवदि, हवदि, भोदि, भुवदि, भवदि; पा० होति, भवति; उ० होइबा, हेबा; बं० होइते; हि० होना; पं० होणा; सि० हुअणु; गु० होवुं; म० होणें; अवे० बू; पह० बूतन; फा० बूदन २०.१७.

भइ—[√भू (भूमि=पृथ्वी); Lat. *fui*= मैं हूँ; *futurus*=E. *future*; Oir. *buith*=होना; Ags. *būan*=Goth. *bauan* = जीना; Germ. *bauen*; तथा *byldan* = to *build* = रचन; Lith. *būti* = होना; *būtas* = घर; (भू अवे० बू; पह० बूतन; पं० बूदन)] हुई १. ११५, १५१; २. १६, ८१, ८८; ३. २, ६, १६, १७, २७, ३३, ४१, ५७; ४. ४६, ५०, ६०, ६२, ६४; ५. ८, ५३; ७. १२; ८. १६; ६. ३६, ४५; १०. ६०, ११२; १२. १७; १३. २; १८. ८, ४०; २०. १७, १८, ७७, ८१, ८४, ६६; २२. १६; २३. १, ५४, ८०, १७६; २४. ८२, १३८; २५. ५७, १३६, १४१.

भईं—हुईं ४. ६; २४. ५२, १४६.

भई—हुई १. १८८; ३. ४, १३, २६;

भटंत – भट का काम [√भट्=किराये पर लेना; मौलिक रूप में √भृ, तु० भृत्य, भृति] २५. ७७.

भय – डर [सं० भयते; पा० भायति √भी का अभ्यस्त प्रयोग बिभेति; भायू० *Bhei; तु० अवे० बयन्ते=डराते हैं; Lith. *bijótis*=डरना; Ohg. *bibēn* =Germ. *beben*; तु० त्रस्]२.१६.

भया – हुआ २२. ६०.

भा – मात्र ६. १५; भरी=पूरी १८. २३.

भरइ – भरति [√भृ; Lat. *fero*; Oir. *berim*; Goth. *bairan*=E. *bear*; Germ. *gebären*] अवे० बरइति; प्रा० फा० बरति; पह० बरत्; आ० फा० बरद्; ग० वर्तमून; माम्क० चवर्दन; गि० बर्दन् २. ५७, १४२; २३. ६६; २४. २४.

भरई – भरेत्=भरे १. ७४.

भरत – भरते हो १२. २७.

भरथरि – भर्तृहरि [भर्तृ = भत्तु = भट्टि; अवे० बेरेथ्रि=गर्भिणी] १२. ५२.

भरथरी १६. १०; २०. ६४; २२. ११.

भरन – भरना २. १४४.

भरना – सहना ४. २३.

भरम – भ्रम=भम=भ्रान्ति १३. ५६.

भरहिँ – भरते हैं २. १४५; १२. ३६.

भरा – पूर्ण (भरइ का भूत) १. १४५; २. ४६, १६३; ५. १२; १०. १३; १६. १४; १६. ७; २५. १४२.

भरावा – भरवा दिया २०. ७६.

भरि – भर १. ६४, ८६; २. ४०, १०२; ३. ६४; ५. १४; १०. ६१; १६. ६; २०. ७७; २२. २३, ५६; २३. १३, ५२, ६६, १५०; २४. ६४, ८२, १४०.

भरीँ – भरइ का भूत बहु० ८. १६.

भरी – पूर्ण=भरइ का भूत १. २८, १८१; २. १२६, १४४; ४. ३७; ७. ४३; ८. ५६; १०. ६३, १०८.

भरे – पूर्ण (भरइ का भूत ब०) १. ११; २. ७०; ४. ३५, ५३; ५. ३२; १०. ५, ४०, ५७, ६३, ७६, ६१, ११४; १२. ७४; २०. ६६.

भरोस – भरोसा ८. ३०.

भरोसइँ – भरोसे पर २३. १२८.

भरोसइ – भरोसे (भरोसे पर) ८. ५६.

भल – अच्छा [भद्र; प्रा० भद्द; पा० भद्र, भद्द; आ० भाल; उ० भल; बं० भाल; हि०, पं० भला; सि०, गु० भलो; म० भला; JB. 48, 141; Geiger, PGr. 53. 2] १. १५५; २. १००, ११६; ३. ७८; ५. २६; ७. ७२; ८. ७१; १२. ३८, ८३; १५. ६६; २०. ११, २२, ५२, ८६; २३. ४६, ८२.

भलहिँ – भली प्रकार १२. ४७.

भलहि – भला ही ८. ५; भली भांति १. १६२.

मला—अच्छा २. ११८; २४. ६७.

मलि—अच्छी २. १२८; २५. ६१, १४७.

मली—अच्छी २. १२६; ५. ५६; २०. १७; २२. ५१.

मले—अच्छे २०. ६०.

मलेहिं—भले ही १३. १२; २४. ३८.

मलेहि—भले ही = "अच्छी तरह से" शु० ६. ५०; १२. ४६; २२. २५; २३. ६०.

मवँइ—भ्रमति = भमइ = घूमता है १०. १४५; १२. ४७.

मवँति—भ्रमन्ति = घूमतीं २४. ६१.

मवँर—भ्रमर [√भ्रम् (त्वरित गति = भनंभन ध्वनि) अथवा भ्रमर=भ्रमर; तु० Ohg. *bremo*—Germ *bremse* (Gadfly), *bremen* = *brummen* (गुनगुनाना); तु० Lat. *fermo* = गर्जना; देखो Walde, Lat. Wtb. *fermo* पर] तु० प्रा० भमर (भमल, भमर, भमन; अप० प्रा० भमरु; शै० प्रा० भमर) पा० भमर; बं० भोमार; बि० भोंवँरा; हि० भवँर, भौंर; सि० भँरा; म० भौंर; सि० भँवरा; (देखो P. 231; JD. 79, 129, 132, 153) १. ३८, १६२; २. २४, ५४; ३. १५, ४२; ६. ६; ८. १७, १९, ३६; १०. ३, ११५, १२१, १२९; ११. ३५, ५५; १३. २८; १५. ७७, ८०; १६. १६, २५; १८. ७, ११, १३, १६, २७, ३६; १९. २७, ३२, ७१; २०. ६, ७२; २१. १६; २३. ७५, ११६, १३८, १७६; २४. ६३, ८६; २५. १७३; सुरखी-रंग का घोड़ा २. १७०; भँवर = आवर्त १०. ३८, ४०, १४५, १४६; ११. ४; १५. ७०; १८. ३५; २४. १४.

मवँरन्ह—भ्रमरों की १०. १२५.

मवँरा—भ्रमर २५. १७.

मवँरी—भ्रमरी = फेरा २. १११.

मवँहीं—भ्रमण करते हैं २४. २.

मवनदुख—भ्रमण = मारे मारे फिरने का दुःख ("घर का दुःख" शु०) १. ४६.

मवाँईं—भ्रामयन्ति = फेरते हैं २१. ३७.

मवाँ—भ्रमरी = भौंरी १०. ३४.

मसम—[भस्मन्; पा० भस्म (न्); √भस्=चबाना; चर्वित वस्तु; चूर्णी-भूत, धूलि, बालु आदि; √भस् √प्सा (प्सा = भोजनग्रास, प्सात = भूखा, पा०-छात) का ही रूपान्तर है। भायू० *Bhsā तथा *Bhsam; Lat. *sabulum*; भस् भस्मीकरणे धातु पाठ] भस्म; द्रि भाष *बसाका = *भमाका (= भस्म; राख, गर्द) २. ३; २१. ५४; २३. ११, ११२.

मसमंत—भस्मान्त २१. ४८; २४. ७२.

मांजइ—भनक्ति = तोड़ता है १. ४८.

भाँजहिँ—भाजते हैं २. १७५.

भाँट—भट्ट=भाट [भट् किराये पर लेना; तु० भृत्य, भृति] २. १५६.

भाँटिनि—भट्टिणी=भाट की स्त्री २०.२७.

भाँडा—भाण्ड=बरतन [तु० हिं०, बं० भाँड; हिं०, पं० भाण्डा; गु० भाँडुं; सिं० भाँडो; म० भाँड; सिं० बढ; का० बार; (ध्यान दो हिं०, पं० हांडी, हंडिया; उ०, बं० हांडी; बि० हांड, भांड; सि० हंडी)] १. १४०.

भाँडे—भाण्ड=बरतन १२. १३.

भाँति—भांति=प्रकार १. ३७, ६१; २. १८८; १३. ४४; १५. ७२; २०. ६०.

भाँतिहि—भांती २. ६०.

भाँती—भांति=प्रकार २. ६०, १७१, १८६; १३. १६; २५. १४१.

भा—भया=हुआ १. ८३, ६१, ६५, १२५, १३८, १३६, १६०, १६६, १८३; २. १७, १५२, १८६; ३. ६, ११, १८, १६, २०, ७२; ४. ५८, ५६; ५. ८, २०, ३३, ३५, ३७, ४३, ५२; ७. २६, ४०, ४१; ८. ४८, ४६, ५०; ६. ३३, ३७, ४४; ११. १७, ४१; १२. १, ५३, ५७; १३. १०; १५. ४२, ४४, ४७, ६४, ७१, ७५; १८. १२, १५, ३६; १६. ५, ११, २६, ३४, ३५, ५८; २०. ३८, ७२, ७४, ८३, ८४, ११६, १२२, १३६; २१. ६, २७, २८, ४६; २२. ४७, ५८; २३. १६, ४१, ७८, ६५, १०८, १४५, १४६, १५०, १५६, १६१, १६६; २४. २७, ४३, ८०, १०१, १२६, १४८, १५२; २५. ५२, ६१, १०१, १६२, १६६, १७०.

भाइ—भ्रातृ; अवे०, प्रा०फा० ब्रातर; पह० ब्रातर; आ० फा० बिरादर; बा० ब्रुत्; शि० ब्रोद; विराद; सरि० ब्रोद; अफ० ब्रोर; बलू० ब्रात; कु० ब्रा; ओस्से० अर्वाद; ट० अर्वाद, [Lat. *frater*; Germ. *brüder*; Eng. *brother*] २०. ११७.

भाई—भ्रातृ १०. १०५.

भाउँरि—भ्रमरी=घुमरी १६. ४.

भाउ—भाव १. १६८; २. १८२; १०. ४१, ८८, ११०; १३. १३; १६. ३५; २२. ६०; २५. ८.

भाऊ—भाव ८. ३७; १०. १०३; १३. १४.

भाओ—भाति=अच्छा लगता है २२. २५.

भाखउँ—कहता हूँ ६. ६.

भाखहु—कहते हो ६. ८.

भाखा—भाषा १. १८६; २. ३३, ३७, ४०; ७. [illegible]; ६. १५; २२. ४३; २३. ३८; [illegible] २५. ८७.

भाखी—भाष=बोली ७. ३०.

भाग—भाग्य ७. ५८; ८. [illegible] ११३; भाग्य २३. ८८.

भागउँ – भागूँ २०. ७४.
भागवंत – भाग्यवान् = भागवान ७. ५८.
भागहिं – भागते हैं १३. २१.
भागा – भाग गया २१. ६३; २५. १५५.
भागि – भागकर १. १३३.
भागी – भागकर १५. २१.
भागु – भाग २. ८८.
भागू – भाग १०. ११५; ११. २१.
भागे – [भाग √भज=पृथक्करण; भागना = पृथक् होना] दौड़े ५. १३; १६. ४६; २०. ६६.
भाट – भट्ट = भाट २५. ३०, ४८, ४९, ५३, ५७, ६४, ७३, ७४, ७५, ७६, ८०, ८९, ९७, १६१.
भाटहिं – भट्टस्य = भाट को २५. ८२.
भाटिन – भाट की स्त्री २५. ३०.
भाटी – भ्रष्टः; भट्ठी, भट्ठा, भट्टी; पं० भट्ठ; गु० भट्ठी; म० भट्ठा, भट्ठी; सं० भ्राष्ट्री १५. ३०.
भात – भक्त = भत्त = भात = चावल १२. ५५.
भादउ – भाद्रपद, हि० भादों; भाद्वा; पं० भादों; गु० भादरवो; म० भाद्रवा; का० बद्रपेथ १०. ६६, १३. ६; १८. २१.
भान – भानु = सूर्य (√भा) २४. ८८, ८९.
भानु – सूर्य १. ११४; ४. १८; २५. १६८.
भानू – भानु १. ४७, ११. ३१, ५०; २०. १०५.
भार – बोझ (√भृ, जो ले जाया जाय सि० भर; का० बार) १. १०५, १५०; २. १६८, ३. ७८, ७९; १५. ६७; २१. ३०.
भारथ – भारत = महाभारत (मा०, अ० मा०, जैन० भारह; त = थ = ह P. 207) १०. ७९; २४. २४.
भारी – भारवाला (द्वि भार=वार=वमन) १. १०३; १३. ६; १८. ४२; १९. २६.
भारू – भार १८. २१.
भावँरि – भ्रामरी = घुमरी १५. १४.
भावइ – भावे ४. ४८; १५. २४.
भावसती – भास्वती, शतानन्द रचित ज्योतिष का करण ग्रन्थ १०. ८०.
भावा – भाता = सोहता ८. ४५.
भिखमंगा – भिक्षा माँगने वाला १३. १५.
भिखारि – भिक्षाकारी १. २३; २३. ६३; २४. ५६; २५. ११.
भिखारी – भिक्षाकारी २. १५२; ७. २; १२. २६; १६. २६; २३. ८, १५, १८, ३०, ४५; २५. ६, ८८.
भिखिआ – भिक्षा २३. २४; २५. ५६.
भिंग – भृङ्ग = भिंगि = कीट विशेष २३. ११४.
भिंगी – भृङ्ग १६. ६६.
भिच्छा – भिक्षा २३. १६.
भिनुसार – धर्मागार-प्रातःकाल १५. ७५.
भिरिंग – भृङ्ग १८. ८; १९. ५५.
भीँज – भीगा २३. ६५, ६३.
भीँजा – अभ्यञ्जित = भीगा २१. ३१; २३. ६५.

भीँजि – भीग कर २३. ६०.

भीजी – भीगी २३. १२१.

भीउँ – भीम २०. १२०.

भीख – भिक्षा, भिक्खा; हि०, भीख; बं० भीक; पं० भिक्ख; सि० बीख; गु० भीख; म० भीक; का० बीख, बेछ; सिं० बिक; (JB. 88, 169) १. ४६; २०. १०७; २५. ६६, १३६.

भीखा – भिक्षा २३. ६३.

भीखि – भिक्षा २३. १७, २३.

भीजइ – अभ्यञ्जन; भीजइ (P. 172) भीजना; पं० भिजणा; सि० भिजणु; गु० भिजवुं, भिंजवुं; म० भिजणें; (JB. 71, 75, 106, 128) १३. ३.

भीतर – अभ्यन्तर; प्रा० अभितर (अलोप H. 172, 188; न्त – त्त JB. 121) (अवान्तर के लिये तु०, छि घनीर= क्षेत्र; *वन्तइर, देखो अवे० अवअंतर) हि०, बं० भीतर; गु० भितर (JB. 44, 71, 75, 121, 128, 174) ६. ५१; १६. ४६; १६. ४७; २०. ७३; २३. १६०; २४. ४८.

भीमसेनि – भीमसेनी कर्पूर १. २५.

भीर – भीरू (अवे० बश्री; हि० भीर= कठिन) १२. ५६.

भुअंग – भुजङ्ग १०. ५.

भुअंगइ – भुजङ्ग ने १०. १३२.

भुआ – भूआ = सेमर की रुई ८. ५३.

भुइँ – भूमि; पा० भूमि, भुम्मि; हि० भूइँ–; भूँ, भू; पं० भुं; सि० भुइँ, भूँ; गु० भों, भोंय; म० भुई, भुईं; बं० भू; भूईं; सिं० बिम; का० बुम; त्सि० फुव (JB. 64, 71, 153) अवे० बूमि; प्रा० फा० बूम १. ६८, १०८; ३. १३, १६, ४७; ५. २६; ७. ५२; १०. ३६, १२०; १२. २२, २६, ८६; १३. २; १४. ५; १६. २१, २३, २४; २०. १२०; २४. ५१, १२६; २५. १७३.

भुइँचाल – भूमिचाल = भूकम्प २४. १५.

भुगुति – भुक्ति = भुक्ति = भोग १. १७, ३२, ३४, ३८, ४६; ३. ६२; ५. ४, ५, ५३; १२. ८, ७६; १६. ५६; २०. १०८; २३. १४, १६, २०, २६, १२८.

भुज – भुजा १०. ११२.

भुजा – भुज १०. १०५.

भुलाइ – भूल कर (प्रा० भुल्लइ; हि० भूल; पं० भुल्ल –; का० बुल –; म० भुलणें) १५. ११; २१. ३६.

भुलाना – भूल गया ६. १७; २४. १२४.

भुलाने – भूले १२. ६०.

भुलानेउ – भूल गया ६. २६.

भुलाहीँ – भूल जाते हैं २. १०७.

भूँजइ – [√भुन्ज्=भुनक्ति; पा० भुञ्जति; Lat. *fruor*, *frūx* = E. *fruit*, *frugal* इत्यादि; Goth. *brūkjan* = As. *brūkan* = Germ. *brauchen*;

गु० भुख पावने=जीवन के लिये खाना पीना] भोगता है १. १८;
भ्रमति=भूलता है १५. ३६.
भूँआ – भूला (भुल=भूलना; भुलित=भूला हुआ भाग्य) २४. ११०.
भूँजी – भूल कर ७. १३.
भूओ – सेमर के फल की रुई ६. १; १०. ३०.
भूख – *बुभुक्षा=बुभुखा; हि० भूख; पं० भुक्ख; सि०, गु० भुख; म० भूक; का० बुछ्य, सिं० बोस; "बुभुक्षा बुभु" (दे० 220, 13) १.१४,१८२; २.५६; ७.५६; १३.५; १८.५०; २२.४३.
भूखा – बुभुक्षित [संभवतः √भुक्क= भौंकना से संबद्ध; कुत्ते की भाँति दीनता से माँगने वाला; अथवा √भिक्ष्, भिक्षा=भीख=माँगना के साथ संबद्ध] १. ११४, १२. ३१.
भूत – मृतक आत्मा (भूत प्रेत) ४. ३१.
भूतपती – भूतपति और मरपति २. १५३.
भूरमी – भूरमि=अमीरान २. १५.
भूल – भ्रम १२. १३; भूल गई २०. १६; भूलता है २३. १५१.
भूलइ – भूलता है ८. ५१; २२. ४८.
भूलउँ – भूलूँ १२. ३५.
भूला – भूल गया ५. ३८; ६. १८; १२. ५१; २०. ६१; २१. ३१; २३. १५१.
भूलि – भूल कर ३. ५५; ४. ३१; ५. ३०; भूल ७. २७, ३२; भूली हुई १८. ११.
भूली* – भूल गई २०.१६,५५; १८.१०.
भूलु – भूलो ६. ४१.
भूले – भूल गये १. ६६; २. १८१; ३. २४; ५. ४१, ४७; १०. ३६; २०. ६६; २२. ६१.
भेंट – मुलाकात (भट भृतौ; भिट्=भेंटना) ५. ८; १६. ४८; २२. ४८.
भेँटइ – भेंटता है १३. १०; १६. ८.
भेँटा – मिला ६. ५५.
भेँटि – भेंट २.११२; २३.७२,१२६,११७.
भेँडु – भेष (भीख), भेष=भेर ["भेखो भेक्खो भेसलओ यथोऽप्येते भीरुवाचकाः" दे० 221, 4] २१. १२.
भे – भये=हुए १५. २४.
भेऊ – भेद=भेव (भाव) ७.६१, २३.६६.
भेदू – भेद [√भिद्, भिनत्ति; पा० भिन्दति; Lat. *findo* = फाड़ना; Goth. *beitan* = Germ. *beissen*] जो भेदा जाय=पता ७. २१.
भेद – (√भिद्; तोड़ना, फोड़ना; प्रकट करना; जो दूसरों पर प्रकट किया जाय; जिस के दूसरों पर प्रकट करने में डर हो=रहस्य) १. १७०; प्रकार २. ७८; २४. १४४; सेंध २५. १४४.
भेदी – भेद को जानने वाला २२. ६६.
भेदू – भेद=पता ७. ३१.

भेरिकारी—(नगाड़ा) बजाने वाले की स्त्री; हि० भेर, भेरी; म० भेर; सि० बेरय २०. ३२.

भेरी—नगाड़ा २०. ५८.

भेस—वेष=वेस (व—ब—भ यथा भिस—बिस; घ—ग, घाअण=गायण; झ=ज, झडिल=जडिल; ध—द, दधि=धइ P. 209) १. १८३; १२. ७; २१. १६; २२. ६; २५. ३०, ६७.

भेसु—वेष=भेस १२. ७२.

भेसू—वेष=भेस २२.१, ४५; २५.१३२.

भोकस—बुभुक्षु=भुक्‍ख=(तु० श्मश्रु=मूँछ=मोँछ H. 56) १. ३१.

भोग—भोग्य १. ४६; २. १५२, १५६; ६. ८; ७. ३६; ११. ३२; १२. ३२, ५४; १८. ५५; २४. १५०.

भोगबिरिख—भोगवृक्ष ५. ४४.

भोगभुगुति—सुखोपभोग १. ३७.

भोगिनी—भोगवाली १२. ४२.

भोगिहि—भोगी से ११. ३६.

भोगी—भोगने वाला १. ७२; १८. ५५; २४. १०, १३१.

भोगु—भोग २०. १३६; २३. ७५.

भोगू—भोग १. १५, ६६; ११. ३८; १२. २८, ३८; १५. ११, ७६; १६. २६; २२. १२, २३.

भोज—भोज नाम का राजा ६. ८; ८. ७२.

भोजन—भोअण=खाद्य ५. ८; ८. ३६.

भोजा—भोज राजा [पा० भोज=अधीन] २२. ४६; २५. १४८.

भोजू—भोज राजा १०. १४७; २५. ७.

भोर—प्रातः २. ३४; १२. ८८; २३. १७६.

भोरा—भ्रम=संशय १८. १५; बौरहा=वातुल २३. ११४.

भोरी—वातुल=बौरही=भोली ४. १७, ५४; २३. १२३.

भोरू—भोर=प्रातः २४. १३३.

भोला—भोल=सरलचित्त पुरुष, जो सहज में ठगा जाय (भोल्, ठगना) १. ६५.

म.

मँ—में=महँ २. १६८.

मँगावई—मंगवाता है ७. ५६.

मँझ—मध्य; अवे० मध्यैहे; पा० मज्झ; हि०मझि, मांझ्, मंह; आसा० माज्; का० मंझ्; उ० मझि; बं० माझ; पं० मांझ, मज्झ; सि० मंझु; म० माझ; सि० मद, शिलालेखो में मंद, मेंझ, मिंझ, (मँझा=वृक्ष का तना; मंझा=गाड़ी का मध्यभाग) ४. ४१; १८. ३२; २१. २८.

मँजारि—मार्जारी; प्रा० मज्जार, मंजार;

(P. 85) हि॰ मँजार, मँजाव; गु॰ मांज; म॰ मांजर; सि॰ मद्रि; (JB. 47, 69, 70, 106) ३. ६०; १६. १२.

मँजारी—मार्जारी (मार्जार=मजार; गु॰ मुंज=मूर्धन्; मँड, मिंड=मेढ् P. 86) ३. ५६, ६६; ५. १, ६, २२, ५०; ८. ३४.

मँजीठ—मञ्जिष्ठ=मंजिट्ठ १०. ६०; २३. ६१.

मँजूसा—मञ्जूषा=मंजूसा=सन्दूक ७. २६; २५. १४०.

मँझधारा—मध्यधारा=(ध्य=ज्झ गु॰ माज्झद=मध्याह्न P. 280) १५. ५२.

मँझियारा—मध्य; "माज्झारं मध्यम्" (हे॰ 233, 17); हि॰ मझारे; पं॰ मझेरू; बं॰ माझार; सि॰ मंझारु; गु॰ मोझार; म॰ माझारी (JB. 57, 107) ११. ४४; २२. ६.

मँडप—मण्डप=मंडप=वेदिका स्थान १६. ४१, ४६; १७. २, ६, १४.

मँडरा—मण्डप २०. ७१, ७४, ७६; २०. ८१; २१. १५. ६१; २३. १४६.

मँनिरिन्द्र—मणीन्द्र (मंनि, गु॰ पंति=पंक्ति; P. 260) २३. ४४.

मँपि—मिपकर (मपु=मद) १५. १८.

मँदगाला—मन्दगलत्मधुरा चलन ८. ३१.

मँदिर—मन्दिर २. १४७, १६०; ३. ८; ५. १, ६; ८. १०, ४८; १३. ५१; २०. १११; २३. ६८.

महँ—मध्य १. ४०, ५७, ७२, ८६; २. ६६, १६६, २००; ३. ७, ८, ११, २६; ४. २६; ५. १, ७, ६, ३४; ७. ४८, ६६; ८. १०, १७, ३८, ५४, ५६; ६. ३४, ५२; १०. १०, ११, ११६; १३. १, १४, २८, ३६, ४६, ५४; १४. २, ६, १६; १५. २६, ३१, ३३, ४१, ६०; १६. ३; १७. ६; १८. १३, २६, ३३, ३६, ४३; १६. १२, ६४; २०. ३४, ८२, ६२; २१. ६; २२. ७०; २३. ६२, ८४, ११८; २४. ४७, ५१, १२६; २५. २१, ४४, १०८, ११३, १२०, १३७, १५०.

मईं—मैं ३. ५६, ७०; ७. ११, १३, १५, ३२, ६४; ८. ३५, ५६, ५८, ६६, ७०; ६. ५३; १०. ३०; १२. १५, ४०; १८. २०; १६. २३, ५५, ५६; २१. २५, ४३; २२. १२; २३. १३५; २४. ३२, ३६, ४१, १५६.

मइन—मदन=मयण २५. १६५.

मइमत—मदमत्त=मयमत्त २४. १७.

मइमंत—मदमत्त १८. २२.

मइमंतू—मदमत्त १८. १८.

मइल—मलिन, मइल=मैल; गु॰ मैलुं; सि॰ मैल, मैलु, मेरो; पं॰ मैल १३. ३; २३. ८०.

मउलगिरि—मौलगिरी ४. ५; २०. ५१.

मउलगिरी—मौलगिरी २. ८७.

मउन – मौन = मउण २३. १४६.

मउर – मयूर सि० मोरु; सिं० मियुरु = मौड़ [= मयूर पंखों की आकृति के फूल पत्तों की टोपी जो विवाह पर पहरी जाती है] १२. ७५.

मकु – मया आख्यातम् = मैंने कहा = मखा = जानों ४. ३२; ७. ३; ८. ३१; १०. १५, ५३; १८. ५; २०. १०६; २१. १३; २३. १२५; २५. ७.

मकोइ – मकोय = पौधा विशेष १२. ६४.

मखदूम – मालिक १. १४४.

मगधावति – मगधावत्ती = मागधी = मगधराज की कन्या २३. १३२.

मगर – मकर १. १०; १३. २०, ४५; १५. ४.

मंगलचार – मङ्गलाचार [√मञ्ज् = सौभाग्यशाली होना; तु० मञ्जु] २५. १७६.

मच्छ – मत्स्य, मश्च (तु० मश्चली; गुज० माच्छली = मछली; P. 233) १. १०; १३. २०, ४५; १४. ६, १३; १५. ४; २३. १७३.

मछंदरनाथू – मत्स्येन्द्रनाथ १६. ११.

मजीठ – मञ्जिष्ठ १०. ६०.

मजूर – मयूर ८. २४, २६; १०. १०१, १३४.

मंछ – मत्स्य = मत्स्य; (तु० मत्कुण = मंकुण, मस्तु = मंसु = मछु इत्यादि P. 74) २. ६७.

मठ – मढ = जहां विद्यार्थी तथा साधु रहते हों २. ४३.

मठमँडफ – मठमण्डप २०. ६१.

मढ – मठ = मन्दिर २०. ६५, ६०; २२. १३; २३. ५६, ८६, १२३.

मढमाया – मठमाया = घरका ऐश्वर्य १२. ७१.

मढा – मण्डित-छादित-खचित १०. १३१.

मढी – मठी = छोटा मठ; सि० मढु; पं० मढ; का० मर २०. ६७; २३. ३.

मंडप १६. २७, ३२, ४५, ४८; १६. ५४; २३. १२३.

मंडफ – मण्डप [तु० मण्ड; संभवतः *Maranda से; तु० सं० विम्रदति = मुलायम करता है; व्युत्पत्ति देखो Walde, Lat. Wtb. s. v. *mollis*; मण्ड = सारभाग; शिरोभाग, मक्खन, मलाई, आदि] २. ४३.

मंडा – [√मृद् अथवा √म्रद से; देखो मंडप; मर्दते; मड्डइ (समड्ड); म० माँडणें; मृष्ट; मट्ठ, मट्ट; हि० मंडना, माँडना; सि० मंडणु; गु० मण्डवुं; म० माँडणें; सिं० मड = भूषण (JB. 86)] १. १०८.

मतइ – मत में १. ६४; मानता है १२. ४६.

मता – माता १२. ५७.

मतिमाहाँ – मतिमान् १. १७१.

मति – बुद्धि; अवे० मइति ७. ४०, मत ६१; ज्ञात ८. २५, ३३; ६. ७; १०. ७७; ११. १४; १२. ४६, १००; १६. ३८; २३. ४.

मती – मागमती ८. ४७, मति = बुद्धि ६६; मत हुई = स्वीकृत हुई ११. १४.

मथे – [धातुपाठ √मथ् तथा √मन्थ् विलोडने; तु० Lat. mamphur; Germ. mandel (mangle), E. mandrel; Lith. menturis (रई) इत्यादि] सं० मथन; हि० मथना, महना (मट्ठा = तक्र); पं० मंथणा; सि० मथणु; गु० मथवुं; (मठो); म० मंथणें, महणा; बं० मथिते; का० मथुन ११. ४१.

मद – [वै० मद; *Mad (तु० अवे० मत = मत्त)= मौलिक अर्थ चूना, टपकना, चर्बी से पूर्ण होना; तु० Lat. madeo भीगा होना; Ohg. mast = मोटा होना; सं० मेद = चर्बी; Goth. mats = खाद्य; Ags. mete, Ohg. muos = gemüse इत्यादि; संभवतः *Med के साथ संबद्ध; तु० Lat. medeor = नीरोग करना] अभिमान ११. ४६; मद १५. १८, ४०; २०. १०१.

मदमाता – मदमत्त १५. ३३.

मदन – मदन = काम ३. ५०.

मदारे – मदार वृक्ष ७. १५.

मधु – [वै० मधु; तु० Lith. medus (मधु), midus (मद्य); Ohg. metu = Germ. met (मद्य); संभवतः *Med (रस से पूर्ण होना)] अवे० मधु = मद्य; पह०, प्रा० फा० मइ; कु० मोत; ओस्से० मुद, मिद; सिं० मी १. २६, १८१; २. २६; ६. ५१; १७. ११; १६. ७१; २४. ८६; मधुकर, एक राजा का नाम २३. १३४.

मधुकर – मधुअर = भ्रमर ४. ३१; ५. १३; १०. ६४; ११. ५६; १६. ७२.

मधुर – मधुर = मीठा २०. २७.

मन – अन्तःकरण १. ४७, ७६; २. ७६, ११२, १२६, १७३, १७६, १८१; ३. ५६, ७१; ५. ५, ३०, ३८; ७. १६, ३६; ८. १२, ६५; ६. २०, ३५, ३८, ४०, ४१; १०. ५४, ७३; ११. २५, ४६; १२. २, ७६, ८७; १३. ३६; १४. २; १५. १०, ३६, ५७; १६. १६, ३२, ४८; १७. १३; १८. ४२, ५६; १६. ३५, ६३; २०. ८, १०४; २१. ३१; २२. १३, १७, १८, ४१, ७४, ७५, ७६, ८०; २३. २५, ४४, १५७, १७२; २४. २३, ४२, ५६; २५. ५, ३४, ५६, ८६, ११५, १५१, १६२.

मनइ – मन = ४० सेर १२. ६४.

मनमंथनी – मनोमन्थिनी १५. २०.

मनसकती – मनःशक्ति १३. २५.

मनसा – मन से = मन करके १५. ८०.

मनसूर – मंसूर ११. ४४.

मनहिं – मन से १५. १२; १८. १५.

मनहुँ—मानों ७. ७०; १८. १६.

मनाइहु—मनाया २०. १३०.

मनावहु—मनाओ १८. ४८.

मनावा—मनाया १७. ६; २०. ८६; २२. २७; २३. १.

मनि—[Fick तथा Grassmann के मत में Lat. *monile* के साथ संबद्ध; किन्तु Walde, Lat. Wtb. की मति भिन्न है; देखो Zimmer, Altind. Leben p. 53, 263] मणि (ज्योति) १. १२८; २. ८८, १८०, १६०; ३. ४, ८; ६. ४; १०. १३५; २०. ८७.

मनिकुंडल—मणिकुण्डल १०. ६०.

मनिहार—मणिहार ४. ४६.

मनु—मन [√मन्; तु० अवे० दुश्मइन्यु; पह०; फा० दुश्मन] ४. ११.

मनुवा—मन (अथवा "मानव=मनुष्य") १५. ११.

मनुस—[मन्; मनुष् से; तु० Goth. *manna* = *man*] मनुष्य=मनुस्स= मणुस्स, पुरुष; अवे० मश्यो १०. १४४.

मनोरा—मनोहर (=मङ्गल में सर्वप्रथम गीत गाकर किया जाने वाला देव-पूजन मनोरा कहाता है=) २०. ३५.

मयन—मदन २. ६४; १०. १५०; १७. ११.

मंत—[वै० मन्त्र; पा० मंत; √मन्; मौलिक अर्थ दैविक वचन अथवा निर्णय; अतः गुह्य मार्ग] २२. ४७.

मंतर—मन्त्र १२. २३.

मंत्र—विषनिवारक उपचार १. २६.

मंत्रिन्ह—मन्त्रियों २५. १०६.

मंत्री—सचिव २४. १.

मंदर—मन्दराचल २५. ६२.

मंदिर—मन्दिर ४. २०; २३. ३८.

मयंकू—मयङ्क=मृगाङ्क=चन्द्र १०. १६.

मया—माया=करुणा ३. ७३; ७. ३३; ८. ७१; १६. ६७; २१. ४१; २२. ३६; २३. ६१, ६६, १६१.

मयारू—मायालु=दयालु [तु० पा० ममायति, ममायना=ममता] २२. ५७.

मर—मृतक=मुर्दा [तु० अवे० मरेत= मर्त्य, प्रा० फा० मर्तिय; पह० मर्त; आ० फा० मर्द; गब्री मार्द; सी० मीर्द; बलू० मर; कुर्दी मिर, मेर; छि मेड़] १३. ३८; मृत्वा=मरकर १६. ७१; २०. ११६.

मरइ—[वै० म्रियते, मरते; पा० मरति; आयू० *Mer; तु० अवे० मिर्यैइते; सं० मर्त=मर्त्य; मार=मृत्यु; Goth. *maurthr* = Ags. *mort* = Germ. *mord*; Lith. *mirti*= मरना; Lat. *morior*= मरना; *mors* मृत्यु इसी के साथ संबद्ध हैं; तु० मृणाति= पीसना, मृद्नाति, मर्दयति तथा मृत्तिका] अवे० मर; प्रा० पह० मर; पह० मूर्तन; फा० मुर्दन; छि मेर,

मलीना—मलिन २५. १६३.

मलेछ—म्लेच्छ = मलेच्छ = मिलिच्छ (हेच० 1. 84) = मिलक्खु = मिच्छ, मेच्छ; (P. 84) तु० वम्मीअ, वम्मीय = वल्मीक, कुंमास=कुल्माष इत्यादि (P. 296) २१. २५.

मवन—मौन = चुप ७. ६६.

मवना—मौन = चुप ७. ५६.

मसटि—मष्ट = "मुष्ट=मूसा हुआ=चुराये धन के ऐसा संतोष" ५. ५६.

मसतक—मस्तक=मत्थअ=माथा ७. ४७.

मसवासी—मासवासी = वे संन्यासी जो एक जगह मास भर वास करें २. ४४.

मसि—मसी = स्याही १. ७४; अन्धकार १५. ७५; १८. ३६; २३. ५६, १२१.

मसिआरा—मसिकार=मशालची २५. ६८.

महरि—अहीरिन पत्नी २. ३८.

महा—[E. *magnanimity*; अवे० मझ; मझंत्=महान्] महान् २. १६६; ३. २८; २५. ६०, १४६.

महाअरंभ—महावेग १५. ४५.

महाउत—महामात्र=पीलवान; गु०.महावत, महात; म० महात, महावत, माऊत; २. १६७.

महाजन—धनिक २. ६८.

महादेओ—महादेव १६. २७, ३०, ४८; २०. ६५; २३. ८६, १००; २५. ३८, ४१, ५७; २५. २५, ६६, १२७.

महादेओमढ—महादेव का मठ १६. ३०.

महापँडित—महापण्डित ३. ३७.

महापातर—महापात्र २५. ८८.

महासिद्धि—बड़ी सिद्धि १२. ८०.

महि—[√मह; वै० महन्त्; Grassmann के मत में √मह् का शतृप्रत्ययान्त; किन्तु संभवतः "न्" मौलिक प्रत्यय है; तु० अवे० मझन्त; Lat. *magnus*; Goth. *mikils* = Ohg. *mihhil* = E. *much*] मही = पृथ्वी २. १६१; २०. ६४, ७०; २१. ५६; २४. ४०.

मही—पृथ्वी १. १५०.

महुअ—मधूक (P. 82) = महुआ के ऐसे रंग का घोड़ा २. १७१; २०. ४५.

महुअरि—मधुकरी = 'तुम्बी का एक बाजा जिससे सांप मुग्ध हो जाता है' २०. ५६.

महुआ—मधूक २. २६; १५. ३३, ३५; २१. २१, २२.

महेस—महेश २२. १६, ३३; २५. २६, ३६, ३७, ५४, ८६, ६०, १२६.

महेसइ—महेश को २३. १६६.

महेसहि—महेश पर १३. १८.

महेसी—महेशी = पार्वती २५. ३८.

महेसू—महेश २१. ६०; २२. १, ४५.

माँखी—मक्षिका = मक्खिआ १२. ६.

माँग—मार्ग = मग्ग = मांग = बालों की मांग १०. ६, १६; मांगइ = मांगता है २५. ८६.

माँगइ—मार्गयति; मग्गइ; हि॰ माँगना; पं॰मंगणा; सि॰ मङगु; गु॰ मागवुं; म॰ मागणें; बं॰ मागिते; उ॰ मागन; सिं॰ मगुन; का॰ मंगुन; जि॰ मंग (JB 47, 88, 229, 230) माँगने १२. ८, माँगे २३. ४१, ५४; माँगता है २५. ६६.

माँगउँ—माँगू १४. २१; २२. १६; २३. ५५.

माँगहि॰—माँगते हैं २५. ४४.

माँगहु—माँगो २२. १८.

माँगा—माँगइ का भूत १. १३४; ११. १४; १३. १७; माँग में २०. २२; २५. ८६.

माँगि—माँग २३. ३६.

माँगी—माँगइ का भूत २३. १२१.

माँजु—मध्य = मज्झ = मंझ १२. ७१.

माँझ—[L. medius, Goth. midjis = Obg. mitti; E. middle; Lat. medius-stinum—मध्य में सहायक] मध्य = मज्झ; हि॰ माझ, माँझ; पं॰ मंझ; सि॰ मंझि; म॰ माझ, माझीं; मांझीं; बं॰ माझ; उ॰ मझि; सिं॰ मद, का॰ मंझ (JB, P. 335); [मध्यम = मज्झिम; अ के इत्व आदेश रहित के उदाहरण पर] २. १८१; १०. १२, १४, १८७; ११. ५२; १२. १०१; २५. ६६, १२०.

माँझहि—मध्य में १२. १०२.

माँझी—मध्यि = मध्यस्थ (मल्लाह) २३. ५२.

माँटी—मृद् = मट्टी १. १०; ७. ६०.

माँति—मत्त (मस्त) होकर २०. १०२.

माँते—मत्त = मस्त २. १६७.

माँथ—मस्तक = मत्थ (मत्थग, मत्थय) माथा ३. ४०; १०. १२०; १४. ८.

माँथइ—माथे में, पर १. १२८; २. १८०, १८४; ३. ४, ६१; ६. ४; ८. ११, ४०; १०. १५७; १२. २५, ४८, ७५.

माँथहि—माथे पर २. ८८; ३. ४१; १०. ११५.

माँथे—माथे पर १०. १११; ११. ५५; २०. १०.

माँदर—मदल = (मर्दंग, मिर्दंग) मृदङ्ग का एक भेद २०. ५८.

माँनउँ—मानो २. १८१.

माँस—मांस; पा॰ मंस [*Memsro-; यथा Lat. membrum = (member = अवयव); Goth. mims (मांस); Oir. mir (काटना, मांसखण्ड)] ७. १७; १०. १४४; २३. ११०.

माँसु—मांस = मंस = मास (तु॰ कंस-ताल = कांस्यताल; पंसु = पांसु P. 83) १. १८४; २२. ५६; २३. ६१, १०६, ११०; २५. २४.

माँसू—माँस ७. १७; १२. ११; १५. १६.

माँह—मध्य = में २. २००; ३. १३, ७७; ४. ४०; ८. ५६; ६. ३६, १०; ११. १४; १५. १६; १७. ११; २३. ११८, ११०; २५. ३१, १०६.

माँहा—मध्य=में १.७,६८, १६३, १७१; २. २०; ४. २०; ५. २२, ४७; ७. २१; ८. ५, ७०; ६. १३; १०. ३७, ७७; १२. २६, ६२; १५. ३५, ७०; २०. २; २३. १४३; २४. १५१.

माखी—मक्षिका; प्रा० मच्छिआ; पा० मक्खिका; का० मछ; उ० मांछी; बं० माछी; पू० हि० मांछी; हि० मक्खी, मांखी; पं० मक्खी; सि० मखि; गु० माखा; म० मक्खु, माशी; जि० मखी (माछी=मच्छिआ=मक्षिका H. 143 अवे० मख्शी) २२. ४२.

माखे—[√मृक्ष्=लपेटना; पा० मक्ख=अवलेप; क्रोध] क्रुद्ध होगये २३.४२.

माघ—माह का महीना १६. २६.

माटी—[वै० मृत्तिका, मृत्व(√मृद् से); मट्टी; तु० पा० मंड; सं० विम्रदति; Osil. mylsna = धूल; Goth. mulda; Ags. molde; E. mould; सं मृदु Lat. mollis (छि मड़ो=मृदु); सं०मर्देति, मृद्नाति=पीसना, णिजन्त मर्दयति, इसी के साथ संबद्ध हैं; तु० *Mld; Ags. meltan; Ohg. smelzan = E. melt] मृत्तिका; पा० मत्तिका; हि०, पं० मट्टी, मिट्टी; सि० मिटी; गु० माटी; म० माती; का० मेचु; उ०, बं० माटी; सिं० मटि १२. २०, ३४; १५. ६८· · १५, १६.

मात—मत्त १०. ३४, ७६; माता ३. ५.

मातइ—माता ने २२. ५०.

माता—[वै० मातर्; अवे० मातर; Lat. māter; Oir, māthir; Ohg. muoter; Germ. mutter; E. mother; तु० Lat. mātrix; सं० मातृका=माता *Ma शब्दानुकरण; तु० मम्म] अवे० मातर; पह० मात (अर); आ० फा० मादर; ग़० माय; का० माइ, मोय; माफ़० मार, मूर; गि० माअर, मोर; छि माची; हि० मा, माई, माऊ; पं० माऊ; सि० माई, माऊ; गु० मा, माई; म० माई; बं० मा; सिं० मव, मा; प्रा० माआ; सं० मातृ १. ५१; ३. ५१; १२. ४०; १६. १६.

माति—मत्त (=मस्त) होकर १०.३४,७६.

माती—मत्त (हो गई है) १०. १२५; २०. २१, २६.

माथ—मस्तक १. १२०; ८. १५; १३. ३२; १६. २४.

माथइँ—[मस्तक, मस्तिष्क; पा० मत्थ; तु० Lat. mentum (ठोड़ी); Cymr. mant (डाढ की हड्डी); अप्रत्यक्षरूपेण Lat. mons; E. mountain=पर्वत] माथे पर २२. ४०.

माथा—मस्तक २३. ३१; २५. ५६.

माधउनलहि—माधवानल को २१.१४.

मान—[√मंन; संभवतः "उत्तसंमति"

उससे अभिमान] ८. १४; १०. ३३; मानता है १५. ७१; २५. १३५.

मानइ—मन्यते, मानता है १२. ५६; २०. ८६; माने २४. ११८.

मानउँ—मानों २. ६४; ३. ३६; १०. १४०, १४३.

मानसर—मानसरोवर ४. ४७; १५. ७३, ७४, ७०.

मानसरोदक—मानसर का पानी २. ४१; ४. १, ३.

मानहिँ—[वै० मन्यते, मनुते; पा० मञ्ञति; अवे० मइन्येइते; मायू० •Men; दू० Lat. *memini*=विचारना; *mens*>*mind*, *meneo*; Goth. *munan* (सोचना), *muns* (संमति); Oisl. *man*, Ags. *mon*; Ohg. *minna* (प्रेम); Ags. *myne* (इरादा); वै० मनस्=E. mind] मानते हैं २३. ६१.

मानहु—मानो १२.३३;१८.१५;२३.१६.

माना—मानइ का भूत १. १४३; २. १५६; ६. ८; ८. ४१; १६. ५६; २५. ६४, ११२.

मानाया—मानव=मनुष्य ७. ३५.

मानि—मानकर २०. ८०.

मानिय—मानिये २३. ४५.

मानिक—माणिक्य १. १४१; २. १०३, ११०; ३. ३८, ४६, ६४; ७. १८, ६६; १०. ४०, ६६; १५. १०.

मानी—मानइ का भूत ३. १७.

मानु—मानो ८. ६६; २२. २३.

मानुस—[वै० मनुष्य √मन्; दू० Goth. *manna* = मानुष, मानुष्य; हि० मानुस, मानूस, मानस; पं० माणस; सिं० माणहु; म० माणुस, माणस; सिं० मिनिसा (पर)] १. १७, १०७, ११६; २. ११३; ३. ७६; १०. ४७; १७. १०; २५. १०५.

मानुसह—मनुष्य १२. २४.

मानुसहरा—शून्य ("मनुष्यों को हरने वाला") २. ७.

मानू—मान=आदर २५. १३३.

माया—मोह; सिं० मा, माया; म० माव (प्रेम) ५. ३८; ११. ५३; १२. ३३, ३३, ६७; ऐश्वर्य = धन दारा १३. ४७; २२. ४३; ममत्व ११. ४६; ११. ४६; करुणा, दया १३. १३; १६.७०.

मार—मारता है ८. ६०; ११. ४५; मारने (राम०; On. छाया) २४. ४४.

मारइ—मारयति = मारता है ३. ७३; मारे ५. ३२; मारते ८. ३५, ६०; १५. १३; मारने २२. ७८; मारने में २३. ४६, ६३; मारे २४. ४४, ५४, १२५; मारने २५. ५, ३८.

मारउँ—मारूँ २५. ७५.

मारग—[√मृग्=पीछा करना] पा०

मिरगारन – मृगारण्य = जिस वन में अधिक मृग रहते हों १३. १.
मिरगावति – मृगावती २३. १११.
मिरघट्ठ – मिलाघों २०. ८०.
मिरिग – (√मृग्) मृग; प्रा० मग, मिग; २.१०७; १०.१६; २०.७१; २१.१२.
मिलइ – मिलता है ३. ५५; ८. ५४; मिलना ६. ५६; मिले १३. ३६, ६२; मिले १८. १२; १६. २, मिलने ६०; २४. २७, मिले ५०, १२०, १२६.
मिलउँ – मिलूँ ४. ४०; ६. ३७; ११. ५६; २३. ५१, १११.
मिलत – मिलत् = मिलते १६. ७.
मिलतहि – मिलते ही ८. ६६.
मिलन २३. १११.
मिलहिं – मिलते हैं ५. १७.
मिला – मिलइ का भूत १. ६४, ७०; ३. ३६; ४. ५४; ७. ६, ४०; ६. ३१, ५५; १०. ७४; १५. ७२; १६. ११; १६. ५, २१, ६६; २०. ११५; २१. ४८; २३. ८१, १४६, १६५; २४. १५०; २५. १४०, १४१, १५०.
मिलाइ – मिलाकर १८ ११.
मिलाएउँ – मिलाया है १६. १२.
मिलावहु – मिलाओ ५. २४; २०. ११८.
मिलावा – मिलाया २५. १२७.
मिलादी* – मिलाते हैं २. ६६.
मिलि – मिलकर १. १०६; ४. १४, ५६; १२. ४८; १६. ६१, ६४, ७१; २१. ८; २४. ११२, १६०; २५. १४३; मिल १. ११०; २३. ३८.
मिलिहि – मिलेगा १२. ६३.
मिली – मिलइ का भूत १६. २४.
मिले – मिलइ का भूत २. १२०; ५. ३; १५. ८; मिलने पर १६. ५; २२.५१.
मिलेहु – मिलने पर २४. १२६.
मिस – मिष = व्याज = बहाना ४. ३२; ११. ५४; २४. ६.
मिसु – मिष = व्याज = बहाना १६. ३१.
मीँचु – मृत्यु = मिच्चु (मच्चु), मीच = मौत (गु० मीचवा, म० मिचकणें; पं० मीचणा; गु० मींचवुं = बन्द करना) ६.२१,२७,२५.७५,७६,८२.
मीँजि – मामृज्य = मींजकर २१. ८.
मीचु – मृत्यु ७. ११; १०. १२७; १३. २६, ६३; १६. १४; २२. ७८, ८०; २५. ६६.
मीठ – मिष्ट = मिट्ठ = मीठा, मिठ; गु० मिठडुँ, मीठुं; सि० मींठु, मिठो; पं० मिठ; का० म्यूठु; १. २८; २. ५६; ११. २७.
मीठी – मिष्ट २. २७; २५. १२६.
मीठे – मिष्ट २. ७६.
मीत – मित्र=मित्त १. ८६, १६६, १७६; २०. ११७; २१. ४२.
मीन – मीन = मछली २. ७१; ६. ३६;

१६. ६४; २१. ६; २३. १११; २४. ४७.

मुँदरा–मुद्रा=मुद्दा=मुदरा=मुँदरा=वाली; पह० मुश्राक, मुदर, मुह; श्रोस्से०मिखुर; सि०मुंडी; मुडा; सिं० मुदुव, मुद १२.६; २०.१६; २५.१६५.

मुत्रइ–मरने पर २२. २६; २३. ४६; (मरता है) २४. ११५; २५. १८.

मुत्रहिँ–मरते हैं २. ६०.

मुत्रा–मरा (मृत; पं० मोत्रा; गु० मुत्रो; मुएलो; म० मेला; का० मूदु; सिं० मळ; प्रा० मत्रत्र, मुत्रा, मड (JB. p. 390) २५. ७०.

मुए–मरे १०. १२०, १२८; १३. ६४; २०. ११५; २१. ३१.

मुएउँ–मरा ६. ४६.

मुएहु–मृतेऽपि=मरे पर भी २५. ६६.

मुकुट–मुकुट २. १७६.

मुकुत–[√मुच्; तु० Lith. *mükti*= बचना; Ags. *smūgan* (रेंगना); Germ. *schmiegen* (रगड़ना)] मुक्त= स्वतन्त्र (P. 139, 140) २४.१२८.

मुकताहलि–मुक्तावली (P. 154) १५.७८.

मुख–[भायू०*Mu (शब्दानुकरण); तु० Lat. *mu* मुखाघात; Mgh. *mügen*; Lat. *mūgio* =गौ का रांभना; Ohg. *māwen*= शब्द करना; *muckazen* =चुप चुप बात करना; Ohg. *mūla* =Germ. *maul*; Ags. *mule*= नाक; वै० मूक=चुप; Lat. *mutus* =E. *mute*] मुंह; पं० मुहुं; सि० मुंहुं, मुखु; सिं० मुव; जि० मुय; छि मुख्या (चेहरा); पश्तो मख्श; री मुख्या १. १२१, १६८, १८४; २. ६५, १०६, १६६; ३. ३८, ४५; ४. २५, २६, ३५; ७. ६, २६, ५३, ६८, ७०; ८. ६, २२, ३६, ४२, ४४; ६. २, ६, १६; १०. ६२, १३४, १३६; ११. ६, ८; १२. २०; १३. ५१; १४. ११; १६. ५७; २०. २३, २७, ८८; २२. १६; २३. ४८, ५७, ८०, ८६, १०८, १५२, १५४; २४. ७४, ७५, ७८, ६०, ६१, ६३, १०४; २५. ४, १६, ३७, ४३, ६८, १४३, १६०.

मुखइ–मुखे=मुंह में १. २६.

मुखचंद–मुखचन्द्र २. ६१.

मुंठी–मुष्टि=मुट्ठी=मूठी=मुक्का १७.१०.

मुंद–मुद्रय्=मुद्द=मुंद=मंद २३. १६६.

मुबारक–एक नाम १. ४७.

मुरसिद–गुरु १. १५२.

मुरारी–कृष्ण २५. १००.

मुरुख–मूर्ख=मुक्ख=मुरुक्ख (मुरुह); अवे० मूरक=मूर्ख १. ६४.

मुरछाई–मूर्छित=मुच्छित्र ११. १.

मुरछि–मूर्छित होकर २०. १०. २४. ७१; २४. ६४;

मुहताज – मिसनंगा १. १०४.

मुहमद – मुहम्मद १. ८६, १५२, १५६, १६६, १७६, १८४; २. १४४; ४. ४८; १३. ६४; १५. ४०; २१. ५६.

मुहम्मद १. ८१, १०४.

मूँगा – मूंग के सदृश विद्रुम के सदृश ७. ६६; ११. ५०.

मूँठि – मुष्टि = मुट्ठी = मूठी; [मूठ, मूठा; सि० मुठी; पं० मुट्ठ; पं० मुठा; सिं० मिट; का० मोथ, मोठ इत्यादि (JB. 85, 89)] २४. ७८.

मूँड – मुण्ड = मुंड = सिर २२. २.

मूँदि – मुद्रय् = मुद = मूद = मूँद = बन्द कर २१. १५.

मूँदी – मुद्रित = बन्द २०. ११; २२. ६१.

मूँदे – मूँदरे का मूल १०. ११४; २३. १७५.

मूँसहिँ – मुष्णन्ति = चुराते हैं २३. १८४.

मूँसा – चुराया २३. १८३.

मूठि – मुष्टि = मुट्ठी (P. 303) ६. १५.

मूठी – मुष्टि = मुट्ठी १. १०२; १०. १०६.

मूर – मूल्य = मुल्ल = मोल्ल = मोल २. १०४; ७. १०, १२.

मूरति – मूर्ति = मुत्ति २. ११, ६. १४; २०. ६६; २१. १६; २५. ११, ५४, ६०.

मूरती – मूर्ति २. ६४.

मूरि – मूलि = मूलिका २३. १५३, २५. ११८.

मूरी – मूली १. ११; १६. ११; १६. ४४; २४. ११०; २५. ६८.

मूरख – मूर्ख = मुरुक्ख = मुक्ख; हिं० मूरख (P. 131, 287) १२. ४६.

मूल – जड़ २. १४६.

मूसइ – मूसने = चुराने [√मूष्; अवे० मोसहु = शीघ्र; Lat. *mus* = चूहा; ग्रि मूस, मूष् = जाना; परतो मूक, मूष = भागना; सं० मूष = चूहा]; भा० फा० मूश; ग० मुरक; अफ० मय (क); बलू० मुरक; उत्त० बलू० मुरक; कु० मिश(ह)क; ट० मिस्त २२. ६२.

मूसहिँ – चुराते हैं ११. ४७; १३. ५१.

मूसि – चुरा कर ११. ४८.

मूसे – मूसे गये = ठगे गये १५. १५.

मेँआ – मज्जा = मेज्जू = मिंजा (म = मि, P. 101) मिंजिया = *मज्जा (maijā *mazika, P. 74) "अपवित्र अङ्ग" मेंढक (पूरब मेजुका) १४. ६.

मेँटा – मेटा = मिट गया ६. ५५.

मेँटि – मिटा कर ८. ४८; २२. ७७.

मेँडराहीँ – मण्डराते हैं १४. १२.

मेखल – मेखला = मेहला = तगड़ी १२. ४.

मेघ – मेह = बादल १. ७, ७६; २. ६७; ४. २७; १६. ५, ११; २२. ५१; २३. ६४; २५. ६१.

मेघघटा – बादलों की घटा ४. २६.

मेघा – [मेघ; √मिह्; मागू० Meigh- बरसना; मु० सं० मिह = सींचना; अवे०

मएग = बादल; Lith. *might* = कोहरा; Dutch *miggelen* = रिमझिम बरसना; Ags. *mist*; Oicel. *mistr* = E. *mist*; छि मीक्ष=मूत्र; री मिक्षी=मूत्र √मिह्] २. १६४.

मेघावरि—मेघावलि=मेघों की पंक्ति २.६३.

मेघुदल—बादलों के घटान २५. १०२.

मेट—नष्ट १६. ४८; मिटता है २२. ४८.

मेटइ—मिटाता=मेटता ५.४; मेटे२५.१७१.

मेटा—मिटाया २५. ८४, ६३.

मेटि—मिटाई ३. २, ५४; १०. ८६; २०. १३५; मिट=मट्टी=मृत्तिका २४.६४.

मेद—[वै० मेदस्, √मिद्=मस्त होना] एक सुगन्धित जड़; "मृगमद, कस्तूरी" सु० २.६२,१८२; १०.१५२.

मेदिनि—मेदिनी=मेइणी=पृथ्वी१.१२८.

मेरए—मिलाये १. १५८.

मेरवइ—मिलावे ६. ५६.

मेरवहु—मिलाइये १. १७८.

मेरा—मेला १२. ५१; मेला २२. ४७; २३. १४८.

मेराऊ—मिलाव=मिलाप १०. १०३.

मेरावइ—मिलावे (मिलावेगा)२०.१३१.

मेरावा—मिलाया १६. ३१; मिलाप= समागम २०. १२५; २१. ७.

मेरु—उत्तर दिशा का प्रसिद्ध पर्वत १. ६, ११०, १४८; १६. ८, २७.

मेरुहि—मेरु में १६. २८.

मेरू—मेरु१६.२८; २४. १२६; २५. ६२.

मेलइ—मिलाता है, डालता है २४. ६६.

मेलउँ—मिलाऊं २१. ४५.

मेलहिँ—मेलते हैं २. १६६; २३. १८०.

मेलहु—मिलो २३. १०; मेलती हो= लगाती हो २३. ६७.

मेला—डाल दिया १. १४०; ५. ५१, ५४; ७. ७०; ६. ५३; मिलाता है ११. ५४; मिला १२. ६५; मेले= डाले १६. १३; मिले=डेरा डाला १६. ३०; डाल दिया २१. ६; २३. १५२, १५५; २४. ३६.

मेलान—मिलान (बराबरी) १२. ८३.

मेलि—डालकर २. ८०; १८. ३५; २४. ३२, ४५; लगा कर ४. ४३; लेकर २५. ५०.

मेली—मिले २३.४७; डाला २४.३५,३८.

मेले—मिले=एकत्र हुए २३. ७; एकत्र कर दिये २५. १०५.

मेलेसि—डाल दिया ५. ३३; २०. १०६; २५. ६८.

मेह—मेघ=बादल=वर्षा; मींह; अवे० मएघ; पह० मिघनाक; मेघ; फा० मीघ १६. ८;

मेहरी—कृपा करने वाली=स्त्री १२. ५४.

मोँति—मुक्ता, मुत्ता, मुत्ति, मोत्ति, मोती १. ११.

मोँहि—मुझे १४. १६.

मों—मुझे ८. २४; ६. ८, २४; १०. २४; ११. १३; २०. ७८; २२. ११, २०, २१; २३. ११३; मम=मेरे २१. ४४.
मोंख—मोच=मोक्ष १. ८८; ६. ४८.
मोंचु—मोच; री मोच, (मोच्=खोलना) ४. २१; १२. १७; २३. ४६, १८२.
मोंछंदरनाथ—मत्स्येन्द्रनाथ २३. १०२.
मोंड—मोड़ता है (मोटय्) १०. १४१.
मोंति—मुक्ता=मोत्ता (P. 270); पा० मुत्ता; उ० मोति; पं० मोति, मति; सि० मुत्; का० मोक्तु; म० मोती २. ५०, ५४; ४. ५३; ७. ६८; ११. ५०.
मोतिन्ह—मोतियाँ ५. १५.
मोतिहि—मोती की ३. ६७.
मोती—मुक्ता २. १०१, १४६; ३. १८, ६४; ४. ५६; १०. १४, ६६; १२. ६४; १६. १०; २४. ५७.
मोंन—(राम०) मोम=पिघली १०. ११४.
मोंर—मेरे १. १४०, १४१; ३. ५३; १२. ११, ४०, ५८; १३. १७; २१. ३३; २४. ४८, १३३, १२६, १३५; २५. १३३; मयूर २. ३६.
मोरइ—मोर=मुझे २३. ३६; २५. ४८.
मोरउँ—मोड़ूं; मोटयामि; मोटउ; हि० मोड़; म० मोडवें २४. ५६.
मोरहि—मेरे ८. ५, ८.
—रा—मोड़ा, मोड़ती है २०. १८; मेरा (मेरे लिये) २१. ३७.
मोरि—मेरी १७. ७, ८; २२. १२; २३. ५७.
मोरी—मेरी १६. २३; २४. ५८.
मोरे—मेरे ३. ६१.
मोल—मूल्य मुल्ल, मोल्ल (P. 237); हि०, पं०, का० मोल; उ० मूल; पं० मुल; सि० मुल्हु; सिं० मिल; ७. १८; १२. १६; १७. ११.
मोला—मूल्य=मोल ७. ६०.
मोह—प्रेम; पं०, सि० मोहु; सिं० मो; का० मुहुन; म० मोह, मोहो १२. ६७; १६. २.
मोहइ—मोह रहा है ११. १२; २०. ७१.
मोहहिँ—मुग्ध करती है २. ५६, मोह जाते हैं १०७; मोहती हैं १०. १४२.
मोहा—मुग्ध हो गया ३. ४५; मुग्ध कर दिया २४. ८७.
मोहिँ—मुझे १. ११७; ७. ५६; ६. ४०, ५६; १२. ११; १३. १६, १४. १८; १५. ६१, ६२; १६. ५१; २०. ८०; २१. ६४; २२. ६, २०, ३५, ३६; २३. ४०; २४. ५३; २५. ९६; मेरे में ७. २५; १७. ४, ६; २१. ४३; मेरा, मेरी ७. ६४; १६. ४०; २०. ५४; २४. ११६, १२८, १६०; २५. ८८; मुझ से २२. ८; २४. १४५.
मोहि—मुग्ध होकर ३. ५३; १०. ७८.
मोहिनी—मुग्धिकरिण १. १५१.
मोही—मेरे ही ८. ७०.

मोही—मोहीं=मुझे २४. ५५.

मोहूँ—मुझे भी १६. ३५.

म्रितमंडा—मार्तण्ड = सूर्य (ग्रहमंडा के अनुसार म्रितमंड) १.१०८;२५.१२३.

य.

यह—एतद्=एहो [दे० एह, एस; तु० एहु *एएपम्; हि० एहउं = एपकम् P. 426] २. २३; ३. ७१; ४. १३, २०, २३, २४; ५. १६, ३६, ४६; ६. ६; ७. ५१, ५४; ८. १७, २१, २७, ३१; १०. ८२; ११. ५१; १२. ३३, ५१, ६१; १३. ७, १४, २५; १४. १०; १५. ३२; १६. २२, ३३, ३६, ५७; २०. ३४, ३६, ६५, ६६; २१. ५; २२. १४, १८, ३४, ३७, ६५; २३. २३, २८, ४८, ८५, १६६, १६८; २४. २६, ६४, १०७, १११, १२५, १३७, १४०; २५. ३, ७, १६, ३८, ८०, ८४, ६२, ६५.

यहु—यह २५. १५६.

युसुफ—यूसुफ १. १७०.

र.

रँग—रङ्ग १०. ६०, ६२, ६५; १८. १४; २०.२६;२२.२०;२४.२७;२५.१६४.

रँगराती—रङ्गरक्ता=रङ्ग में रङ्गी हुई १०.६३.

रँगरेजिनी—रङ्गरेज की स्त्री २०. २६.

रँगाए—रङ्गे हुए २०. २८.

रँगीली—रंगिल्ल=रङ्गी हुई २०. १५.

रइनि—रजनी=रयणि=रैन (H. 73)= रात्रि १. १०७; २. १६, २१, १६०; (राम०, Gn. श्राछहिँ); ३. १७; ८. २४, ३७; १०. १०; १३. ६; १५. ७५; १८. २, ४, ५, ६; २३. १४२, १८४; २४. २, ६२, १३३.

रउताई—राजपुत्र=राउत [Th. Bloch. ZDMG. 1908, p. 373; JB. 121, 138, 153, 168] ठकुराई ४. ४७.

रकत—रक्त, रत्त, खून १. १८४; ७. २६; ६. ३६; १०. १०७, १४४; १२. ११; १५.३६;२२.५६;२३. ५२, ५३, ५४, ६५, ६६, ७०, ६०, ६६, ६७, १०८, ११०, १५०;२४. १०६;२५. २०.

रखवारी—[√रख; भायू० *Ark, तु० Lat. *arceo* इत्यादि; *Aleq तु० *Alexander*; Ags. *ealgian* = रखा करना; Goth. *alhs*=Ags. *ealh*= मन्दिर; तु० *Areq पा० श्ररगळ में] रखवाली २. ७३; १०. ११८; २०. ३६; २१. ५७.

रंग—रङ्ग (वर्ण, प्रेमरङ्ग) सि॰ रंगु १. १; २. १६८; १०. ६०; १३. ३२; २२. २५; २३. ११५, १४०; २४. २६.

रंगहि—रङ्ग में २३. १४६.

रंगा—रङ्ग २. ६८, १६६.

रंगू—रङ्ग २३. ११६.

रचहिँ—रचयन्ति=रचते हैं २. ६६.

रचि—रच कर २. ६२; २३. १००.

रचे—बनाये १०. ८६.

रज—[Goth. riquis अन्धेरा] रजस्=रजोगुण १२. ५८.

रजबार—राजद्वार=रायबार २. १६६.

रजाएसु—राजादेश=रायादेस ३. ५८; ७. ४६; २३. ८, १०, १०४; २५. ७६.

रतन—रत्न=रयण १. ६५, १४५, १८१; २. १०१; ३. २२, ३८; ६. ४, ८; ७. १८; १०. ६६, ११४, १५०; १२. ५७; १४. ३३; १५. ७८; १६. ३१, ३४, ३५, ५२; २२. ५२; २५. ११५, ११६, १६३; रतनसेन ६. ३३; १२. ५७; १६. ३३, ४१; २१. १७; २२. ५२; २५. ४२, १६२.

रतनपुर—रत्नपुर १२. १०३.

रतमुहीं—रक्तमुखी=लाल मुख वाली २५. १५१.

रतनसेन—रत्नसेन १. १८६; ६. २, ४; ७. ४१, ६५; १२. ३५; १३. १०; १६. १०, २२. ४६, २४. १०, २५. ८४, १५६.

रतनागिरि—रत्नगिरि १६. २४.

रतनारा—रक्तवर्ण=लाल २३. ६०.

रतनारे—रक्त=लाल २. १६३.

रथ—[Lat. rheda; rota=पहिया; rotundus; E. round] रथ २. १३६; १४. १; १५. ५७; २०. ६७, ११३.

रथवाह—रथ हांकने वाला २. १७६.

रथहिँ—रथों में २८. ६१.

रन—रण=युद्ध १. १७२; १०. ४८; २२. ३८; २४. २४; २५. ६६, १०५, १०६, ११५, ११७, १२१, १२६, १७६.

रनिवास—"राज्ञिवास"=रानियों के रहने का स्थान ८. २.

रनिवासू—रनवास २. १६३; १२. ४१.

रबि—रवि=सूर्य ६. ३३; १०. ६६, १०७; १५. ७५; १६. ४, १६; १८. ११; २०. १२४; २३. ११६, १४३; २४. १५४.

रबिहिँ—रवि को १. १०७.

रमैउँ—रमउँ=रमण करता हूं ७. ६४.

रस—[वै॰ रस; Lat. ros=ओस; अवे॰ रंहा (एक नदी का नाम) √अर्, आपू॰ *Eros=बहना; यथा अर्णस् तु॰ सं॰ ऋषभ] रस (आनन्द) १. १५, २८, ६६, १६०, १६२; ३. ३५; ४. ३१, ३७, ४७; ८. ६१, ६२; १०. ५५, ६४, ८२; १२. ३१; १५. ३६, ७७, ७६, ८०; १६. ३१;

२०. १३६; २४. १२०. १५५; २५. १४५, १५३.

रसना—जिह्वा १. ६६; १०. ७३; २५. १४५, १५३.

रसवाता—रसवार्ता १०. ७३; १७. ६.

रसबेइली—घनबेली ४. ७.

रसबेली—घनबेली, वेला की चार जातियों में से एक ४. ३.

रसभरे—रसपूर्ण २. ७५.

रसभोगू—रसभोग १८. २०.

रसलेवा—रस लेने वाला २५. १७३.

रसा—रस १०. ६२; १७. ११; रस गया है १५. ३६; २५. १५३.

रसोई—रसवती=भोजनशाला २५. ६७.

रह—रहती है २. १६७; ७. ५४, ६६; १२. २०.

रहइ—रहता है १. ५४, ७२, १८३; २. ३१, १२०, १६०; ३. ८०; ७. ५२, ५३, ५४; ८. ६४; १०. २३, ६०, १२२, १५५; १८. ५; १६. ४५; २२. ४६; २३. ५, ७६, १०४; २४. १२२; २५. १३३; रहे ३. ७३; २२. ४४; २४. १४०; रहेगा ११. २२; २५. १०८; रहने २३. ४७, ४८, १११; रहे २५. ६७.

रहई—रहे १८. २६.

रहउँ—रहूं १६. ६२.

रहचह—चहचह=आनन्द के शब्द २. ३५.

रहट—अरघट्ट=अरहट; रहट=हरट; हरँट, (H. 172;) वर्णव्यत्यय यथा सं० ह्रद=पा० रहद (*हरद से); पं० रट्ट, रट; सि० अरटु; गु० रेंट; म० रहाट [तु० हि० घराट; छि गराट; पश्तो गरट; बलू० ग्रुट; खे० ग्रत; का० ग्रट; जउनसरी घउरट=सं० घरट्ट (GM. 254)] १. ८०, १४४.

रहत—रहते ५. २८.

रहति—रहती १८. १७.

रहतेउँ—रहता=रह जाता १६. ६२.

रहन—रहना; का० रोझुन; गु० रहेवुं; सि० रहणु; पं० रहिणा; बं० रहिते; म० रहाणें, राहणें २३. १२०.

रहना—होना ४.११;१६.११;२५.१५६.

रहवि—रहेंगी ४. २०, २२.

रहस—रहस्य=रहस्स=एकान्त क्रीडा=सुख १६. ५.

रहसहिं—रहसती है=क्रीडा करती हैं ४.१०.

रहसि—क्रीडा २. ६१; ३. १७, ३५; ४. १७, २३; १२. ६१; २५. १४२.

रहहिँ—रहते हैं १. ३०; २. १२०, १३७, १७५, १६५; ३. ४०; १०. ७५; १२. ८८, १०२; १५. ७०; २५. २१.

रहहीँ—रहते हैं १. १३.

रहहु—रहो २३. ४४.

रहा—है (था; रहइ का भूत पुं० ए०) १. २१, ६४, १२६; २. १०२; ३.

५६; ४. ६१; ७. ९, ३२; ९. १९; १०. ४४, ८८, ९४, १५२; ११. ५०; १३. ५४; १५. ४८; १९. ६, ५८, ५९; २१. १६; २२. १४; २३. ८८, १४९; २४. ४०, १३६, १४३; २५. २४, ३३, ३५, ४९, ६९, ७१.

रहि — रहे १०. १२४, १४०; २४. ६३; २५. ४९.

रहिहउँ — रहूंगी १९. ५२.

रही — रहइ का मूल स्त्री० ११. ५०; २. ७७, १५८, १८२; ९. ३४; १९. ४; २०. १६, १०१.

रहे — रहइ का मूल २. ५३; १३. ४०; २५. ११२.

रहेहु — रहे हो १२. २८.

राँक — रङ्क = दरिद्र २. ९१.

राँचा — रचा गया २३. ११५.

राँधा — राधित = पूजित = प्रसादित [तु० हि० राँधना; सि० राँधणु; गु० राँधवुं; बं० राँधिते; का० रनुन; पं० राँधणा; सिं० रिद्दनवा; सं० रन्धयति = पकाता है] १९. ६२.

राँधि — पूज कर २४. १.

राँहा — राहु ४. २७.

राइ — राय = किसी राजा से कुछ न्यून प्रतिष्ठा हो ११. ९; राजा २. ११२.

राइकरौंदा — रायकरौंदा २. ७८; २०. ४९.

राउ — [वै० राजन् *Reg. तु० Lat. rēg-em = राजा; Keltic rīg-, (राजा); Germ. rik-, (शासक); Goth. reiki, As. rice = राज्य; तथा Oir. ri = राजा; Gallic Catu-rix = रण का राजा; Goth. reiks = Ohg. rihhi = E. rich = Germ. reich; इसके साथ ही मिलता है *Reig. तु० Ags. raeccean = E. reach = Germ. reichen; देखो वै० ऋजु (प्रा० उज्जु), ऋज्यते, इरज्यते = फैलना; Lat. rego = शासन करना; Goth. ufrakjan = सीधा करना; Ohg. recchen = Germ. recken = E. reach] राजा, राइ; (तु० राउल = राउर = राजकुल) २. ९१; २५. ४८.

राउन — राव लोगों की २. ३०.

राऊ — राजा ८. ३७; राय २५. ५३.

राए — राय = धनी १२. ६६.

राओन — रावण २. १०; ३. २४; १०. २८, ४२; १२. ५०; १६. २४; २०. १११; २३. १२८; २४. ७२; २५. ६५, ६६.

राओनगढ़ — रावण का किला २०. १२६.

राओनलंका — रावण की लंका २१. ६४.

राकस — राक्षस [√रक्ष = हानि पहुँचाना अथवा √रक्ष = रक्षा करना से; (देखो Macdonell, Vedic Mythology pp. 162–164) Goth. rohsns

राख–(रक्ष=रक्ख=राख=रख)रक्खे २१.५५.
राखइ–रक्खे ४. १६; १४. ८; १६. ३६; रखने को २०. ११७; २१. ६४.
राखउँ–रक्खूं ३. ७५.
राखहिँ–रखते हैं २५. ७४.
राखहु–रक्खो १२. ४८.
राखा–राखइ का भूत (रखता है) १. १६, ११६; २. ३७; ५. ४; ७. ६७; ८. ३३; ६. ६, ५१; ११. २१; २५. ६७; रक्खे १८. १६; १६. ५६; रक्षा= राख=भस्म २३. ६८.
राखि–रख कर १५. ४०; रखति=रखता है २४. २४; रख २५. ४०.
राखिअ–राखिये=रखिये ८. २३.
राखिहि–रक्खेगी ४. १६.
राखी–रक्खी ४. ३०, ४२.
राखु–रख ६. ५३.
राखे–रक्खे ८. १६; १०. ४६, ६१, ११६; २३. ४२.
राग–संगीत के छः राग १०. १४३.
रागिनी– छत्तीस रागिणी १०. १४३.
रागू–राग=मोह (रागद्वेष) ८. २७.
राघउ–राघव=रामचन्द्र १०.२७;१२.५०.
राघउचेतन–राघवचेतन १. १८७.
राज–राज्य १. ४१, ४२, ६८, १०१, १०४; ३. ७०; ८. १८; १०. १३६; ११. ३२, ३६; १२. १, ३२, ३८, ३६, ४८; १६. १६, १७; २२. १२; २३. ३२; २४. १३१; २५. १५८; राजा ३. २८; २३. २७; राजा को २५. ७८.
राजइ–राजाओं ने १. ६८; राजा ने ३. ३३, ५७; ८. ४१; ६. १, ४६; १४. १७; १५. ७, ५७; १६. १, ३३; २२. ४१; २३. १, ४६, १७७; २५. २७, १३७, १४१, १४३.
राजकुअँर–राजकुमार २३. १३३; २५. ३, ६२.
राजघर–राजगृह ६.१०;२३.३२;२५.६३.
राजघरिआरा–राजघण्टा २. १३७.
राजदुआरू–राजद्वार २. १६१.
राजन्ह–राजाओं के ३. २७.
राजपंखि–राजपक्षी=बड़े पक्षी १४. १२.
राजपाट–राजपट्ट=राजसिंहासन २४.१५६.
राजबइन–राजवचन २५. १६५.
राजभँडारमँजूसा – राजभाण्डागारमञ्जूषा=राजा के भण्डार का सन्दूक २३. १८३.
राजमँदिर–राजमन्दिर २. १८५, १६३; ७. ४८, ६६; १६. १४.
राजराजेसुर–राजराजेश्वर २५. १४६.
राजसभा–राजा की सभा २. १७७.
राजहि–राजा से ३. ५६; राजा को ११. १२; २१. १; २४. ३३; २५. १६२.
राजा–राआ, राअ; हि० पं० सि०, गु० राओ, राय, राई; का० राअ;

रीसा—रीस=रिस २३. २५; २५. ७५.

रीसी—ईर्ष्या उत्पन्न करने वाली; ऋष्या =ऋष्य="मृगविशेष की मादा" सु॰ [गु॰ रूव, रिच्छ, रिक्ख; म॰ रीस, रीस; गु॰ रींछ; सि॰ रिच्छु; पं॰ रिच्छ; का॰ इछ] १०. ६७.

रुद्रकवँल—रुद्रकमल=रुद्राक्ष २२. ४.

रुद्राछ—रुद्राक्ष १२. ४.

रुपवंत—रूपवन्त १. १२१.

रुपवंतह—रूपवानों के १. ११८.

रुपवंता—रूपवान् ३. १६.

रुपवंती—रूपवती ८. २.

रुपमनी—रूपमणि (पद्मावती) ८. ७.

रुहिर—रुधिर=लोहित ८. ३६, ४६; १०. ११, १५, ६१, १०८; २३. ८६.

रूख—[वै॰ वृक्ष; पा॰ रुक्ख (Geiger, POr. 13, Gray 75) सं॰ रुच=पा॰ रुक्ख, रुक्ष=चमकने वाला=वृक्ष (P. 120); प्रा॰ रुक्ख (W. Al. I. 181, 6)] हि॰, गु॰, म॰ रूख; पं॰ रुक्ख, रुक; [गु॰ रूख=रुखा=रूख; पं॰ रुक्खा; सि॰ रुखु; म॰ रुखा; प्रा॰ रुक्ख, रुह (P. 257; JB. 96) २. ५६; २१. २१; २३. ८०.

रूखि—रूख ८. १६.

रूचा—रुचा [वै॰ रोचते √रुच्, ॰Leuk, Lat. *luceo*=चमकना (ग्री॰ *lux*= प्रकाश, *lūmen*, *lūna* इत्यादि); सं॰ रोचन, रुचि, रोक, रुच=प्रकाश; अवे॰ रओचन्त=प्रकाशमान; सं॰ लोक, लोकते, लोचन; Lith. *lau-kti*=ताकना=प्रतीक्षा करना; Obg. *lioht*=E. *light*, Oir. *loche*= विद्युत; हि॰ रूच=रविवार; "रूच भइ घो" सूरज चढ़ गया; प्रा॰ फा॰ रउचह=दिवस; आ॰ फा॰ रोज= दिन] चाहा १२. ७६.

रूठा—रुष्ट हो गया ८. ५१.

रूठी—रुष्ट हो गई ११. ५२.

रूप—रूप=सौन्दर्य १. १२२, १२७, १४६; २. ६४, ६६, १६४, २००; ३. १, १२, १६, २४, ४५; ४. १२; ७. ५८; ८. ५, ८, ६; ६. १२; १२. ४६; २२. २१; २४. १४७; आकृति १. ६३; २. २, ५६, ५७, १८१; ४. ५८, ६३; ६. ३; १५. ७४; १६. २०; २०. ६१; २१. ३; २४. १३६, १४७; २५. २, २४, ३५; स्वरूप=आत्मा २०. १००; रौप्य=रूपा=चाँदी २. १००; अर्थे १. १२४; ६. ३८.

रूपइ—सौन्दर्य से ८. १६; रौप्य के= चाँदी के १२. ७३.

रूपमंजरि—पुष्प विशेष २. ८५.

रूपमाँजरी—रूपमंजरी २०. ५१.

रूपवंत—रूपवान् १. १२८; २. १५५.

विशेषण; पा० लक्खणो (P. 312); वैयाकरणों के अनुसार लक्षण = अङ्कन (√अङ्क लक्षणे); अङ्कन से लाक्षणिक अर्थ हुआ दर्शन; तु० धातु० लक्ष दर्शने] चिह्न, निशान ३. २४; ६. ८; १६. २०; २०. ६३.

लखाए–लखाया = दिखाया १. १५७.

लखिमन–लक्ष्मण ११. १२.

लग–[सं० लगति; पा० लगति, लग्गति तथा लङ्गति; √लग्=लगाना, दाव लगाना (तु० वै० लक्ष); लग्न = लग्ग, लग (RDP; किन्तु ध्यान दो Geiger, PGr. 136 पर); संभवतः Lat. *langueo*; E. *languid* इसी के साथ संबद्ध हैं; देखो Walde, Lat. Wtb. *langueo*] लगता है २. १८४.

लगन–लग्न ६. ३

लगाए–लगाये हुए २०. २८; २३. १४६.

लगावहीँ–लगाते हैं ३. ५२.

लगि–लग = तक १. ३६, ५२, ५३, १०१, १२०; २. १२८; ३. ५६, ६०; ४. ५७; ७. ४१; ११. ६, १२; १४. २३; १८. ६, ३२, ४६; २०. ३१; २३. ३०, ४२, ५६, ७६, ७७, १२८; २४. ६, ४१, ११२.

लगी–[लगुड; पा० लगुळ; म० लाकूड; हि० लकुट; सं० में लगुड शब्द भाषाओं से आया है और सं० में इसका रूप *लकृत = लकुट संभाव्य है; तु० Lat. lacertus (भुजा); Old Prussian *alkunis* = (कुहनी); ध्यान दो E. *leg* पर] लगुड = लग्गी = वंशदण्ड ५. ३७.

लंक–लङ्क = कटि = कमर ३. ४७; १०. १३७, १३८, १४०, १४४, १५३; २४. ४६; लङ्का १२. ६६; २०. १२८; २१. ५७.

लंकदीप–कटिद्वीप = सुन्दरी की कटि २. ६, ५१.

लंकसिंघिनी–सिंहिनी की कटि के समान जिनकी कटि हो २. ५६.

लंका–लङ्का २. १०, १२७; १५. २६; २१. ५८, ५६; २४. १०६, १०७.

लच्छि–लक्ष्मी ३. ३०; १२. २६.

लच्छिमी–लक्ष्मी २. ६७; ६. ३.

लजाइ–लजा कर = लज्जित होकर ४. ४१.

लजानेउ–लज्जित होगया १०. ५०.

लज्जा–लाज १३. ४२.

लटा–लट १२. २.

लता–[तु० Lat. *lentus* = लचकदार; Ohg. *lindi* = मृदु; E. *lithe*; Ohg. *lintea* = नींबू का वृक्ष] वल्ली; प्राणलता = पद्मावती १६. ४२.

लपेटा–[√लिप्, लिम्प, से] १. १८३.

लपेटि–लपेट कर २५. ११७.

लरहिँ–लड़ते हैं १०. ३, ३६.

लराईं—लड़ाई=युद्ध १. १८८.

ललाट—मस्तक (सं॰ रराट=ललाट, निटाल, निटल, निटिल; न>ल, तु॰ नङ्गल>लाङ्गल; पा॰ उग्गल> उल्लल=उद्+लल=लिलाडी; प्रा॰ णिडाल, पा॰ नलाट>ललाट) म॰ निढळ, निडाळ, निटाल; सि॰ निराडु, निर्डुं; सि॰ मत्थ आदि १६. २४; २३. १६८.

ललाटू—ललाट=मस्तक २४. ३१.

लहइ—लभते=प्राप्त होता है १७. १६.

लहना—लभन=लाभ=प्राप्ति (तु॰ सि॰ लाहो; पं॰ लाह=लाभ; सि॰ लभनश, लभना, लाभ होना) १६. १४.

लहर—तरङ्ग ११. १.

लहरइँ—लहर में १०. ५; लहरें १५. ६.

लहरइ—लहर को ४. १२, १५, १०. १११; १८. ११.

लहरन्हि—लहरों में ११. १; १८. १५.

लहरि—लहर १०. १८५; ११. १; १३. २१; १५. ५, ४१; २४. ६४.

लहि—लगि=तक १. १६४, १६७; २. ११२, १४७; ४. १२; ५. २; ७. ६१; ६. १६; ११. ४०, ४२; १२. ४५; १५. ४०, ४८, ५६; २०. ११६; २२. ६१, ६६; २४. ११; २५. ११४; पकड़कर २३. ७८.

लाइ—लगाकर १. १४४; २. १०५, ११२, १८७; ३. ७६; ५. ४४; ७. ५२, ७१; ६. ५; १०. ३६, १२०; १६. ३६; १८. ५१; १६. २; २१. ४४; लेकर २५. ६६.

लाइहि—लगावेगा ४. २१.

लाईं—लगाई २. १३५.

लाई—लगाया २. १६, ११६; ४. २५; १२. ५१; २३. १५७; लगाई=लिया १२. ५०; लगावे २३. १००.

लाउ—लगाओ १३. १४; २२. ७६; २३. १४०; लगाता है २२. ७१, ७१.

लाए—लगाये १०. १४५; १५. २; २३. ४६; २४. ५८.

लाख—[तु॰ वै॰ लक्ष; पा॰ लक्ख √लग =लगाना; वै॰ लक्ष=द्यूत में दाव लगाना; देखो Grassmann, W; Zimmer, Altind. Leben 287] हि॰ लाख; पं॰ लक्ख; बं॰ लाख; का॰ लछ; सि॰ लक ७. ७, १५; १०. ८५; ११. १६; २४. ११; २५. १०१, १६६, १७५.

लाग्यो—लग्ना=लगित किया २२. ४१.

लाग—लगी है; लग=लग्ग=लग्न= लगन अथवा *लग्य (तु॰ अग्गइ= अग्यति, मग्गति P. 197), हि॰ लागना, पं॰ लग्गणा, सि॰ लगणु; गु॰ लागवुं; म॰ लागणें, बं॰ लागिते; का॰ लागुन, सि॰ लगिनवा

१. १६; २. १८, ३१, ३६; १६०; ३. ४०; २३. ६; २५. १००; लिये २२. ११; लगता है १०. ४३; लगा ७. १८; ८. १६; १३. ६; १६. १३.

लागइँ—लगने से २५. ६१, लगाना = लगे हुए ११५, लगे १४७.

लागइ—लगता है २. २०; १०. १०४; ११. २; १२. २७; १४. १०; १६. ५; १८. ६; २०. १०४; २४. १५८; लगे २५. ८५.

लागउँ—लगूं २३. १६.

लागहिँ—लगते हैं १. ६६; १०. ८०; १८. ५१; २४. १०८; २५. ११२.

लागहु—लगो २३. १४.

लागा—लगा २. ३६, १७३; १०. ३५, ११६, १४१; ११. ४६; १४. ३; २०. १०६; २१. ६३; २२. ३५; २३. ५६, १२२, १६२; २५. १५५.

लागि—लगित्वा = लग कर २. ५८; ६. ३४; १४. ५; १६. २८; २१. ४२; २२. ६१; लिये ६. ६; १०. १४८; १६. २७; २०. १३३; २१. २७; २२. २६, ३७; २३. १८, २२, ८६, १११, १२०; लगी २२. १६; २३. ४०; लग गई २३. १४७; १३५; २५. ४.

लागिहइ—लगेगा ११. ४८.

लागिहि—लगेगा २३. ४६.

लागीँ— लगीं ४. ४१, ५६.

लागी—लगी २. ८०; १३. ७; २०. १०३; २४. १०७; २५. ३४; लग्न होकर = लिये १८. ४४; २२. ७; २३. १३२; लगने से २१. ५२.

लागु—लगा, लगी, लगता है १. १६६; २. ७३, ७७, ८१, ८६, १२१; ३. ५३, ७४; १०. ६७; १३. ८; १६. ४४; २३. १०६; २४. १०६, १४६.

लागे—लगे २. ४६, १५५; ५. १३; १०. ६०; १६. २६, ४६; २०. ६६; २१. ११; २३. १०६; २५. ३१; लगने पर २५. ७३.

लागेउ—लगा ८. १२; २४. ५६.

लागेहु—लगे हो २३. ११.

लाज—लज्जा, लाज, पं० लज्ज; गु०, म०, उ०, बं० लाज; सिं० लद ३. १३; १८. ५६; २३. ४५, १२४; २४. १२२; २५. ११.

लाजइ—लजाकर १०. ३२.

लाजा—लज्जा = लाज १०. ५१; २५. १०; लज्जित हुआ २५. ८६.

लाजि—लजाकर = लज्जा से १०. ५७, ७५.

लाडू—लड्डू; लाडू; सिं० लडु; (गु० लाडु = प्रेम JB. 88) १०. ११३.

लाभ—[√लभ्, प्राचीन √रूप रभ्, रभते, रभ, रभस; Lat. *rabies* = E. *rabies*; Lith. *lobis* = धन के साथ संबद्ध; प्राकृत रूपों के लिये देखो

P. 484] फल २. १०४; ७. १०, १२, २४; २२. २४.

लायक–योग्य ३. ५५.

लाल–रत्न २. १०१.

लावइ–लागयति; हि० लावना, लाना; पं० लाउणा; गु०लाव्युं; म० लावणें; सि० लनणा; का० लाय (JB. 55, 200, 242) लाता है १. २६, १४२; लगाता है ७. ५६; १५. ३; लगावे १८. २४.

लावसि–लागयसि=लगाता है २५.७८.

लावहिँ–लगाते हैं २२. ४२.

लावहु–लगाओ १२. ४३; २२. ७.

लावा–लगाया २. ८६, ११७, १८७; ४. २६; ६. ५२; १०. १२१; १५. ६२; १६. २; १८. २; लगाता है ८. ५५; २२. १५.

लाग्गा–लसदार द्रव पदार्थ जो वालों में चिपक जाय [लग संश्लेषणार्थीजनयो, गु० लि लइगो=चिपकना, चिपुचन-दार; का० लग्न=चिपकना; *लहस्य (सं० रवस्य); लसम्ईन=चिपुकना JH के मत में <(b) lazh (b) lagz < *slegh-s (k); गु० लसू० कपुरुष=चिपकना] ५. १२, १६.

लाहा–लाभ २. १०३, १३. ५१; १७. ११; २१. १०; २२. ३६.

लिए–लिये [गु० हि० लिये, सि० लाइ अथवा लइ; पं० लई; गु० लीधो; पश्चि० हि० लयौ; हि० लिया= लब्ध; H. 375] १०. १३६; १२. ५३; १३. २३; २३. १६; २५. ६६.

लिपउ–लिप्=लिये २०. ३५.

लिखउँ–लिखूँ (लिखति, लिहइ, सि० पं०, मं० लिख; सिं० लिखनवा; का० लीख; म० लिहयें, लिहियें २३.६५.

लिखत–लिखन्=लिखते [वै०लिखति; भारिखति (ऋग्वेद 6. 53. 7); गु० रिखति तथा रिखति; इसी के साथ संबद्ध हैं Lith. rikti=रोटी काटना, हल चलाना; Ohg. riga = Ags. râw=E. row; धातुपाठ में केवल "लिख लेखने" गु०उरेह] २३. १८१.

लिखनी–लेखनी=कलम १.७७;२३.५६.

लिखा–लिखइ का भूत १. ५७, ६२; ३. ५४; ७. ४५; २०. ११५; २१. ८; २३. ५६, १०४; २५. ६३.

लिखि–लिख कर १. १८६; २०. ११०; २३. १०४, १५६; लिखा १. ७७; लिख ६. ८.

लिखी–लिखइ का भूत, स्त्री ३. २, २५, १०; ६. ५; ७. ११; १०. १४८; १६.२४; २३.७०; २५. १७१, १७४.

लिखु–यदि लिखे; ["संभाव्य भविष्यत् का रूप वर्तमान के समान पुरुष भेद को लिये हुए होता है, पर टेट प्राची

अवधी में प्रथम पुरुष में भी मध्यम बहुवचन का रूप रहता है, जैसे "जीवन जाउ जाउ सो भँवरा" जाउ=जाय" राम०] १. ७७.

लिखे–लिखइ का भूत १. ८५; २०. १०७; २१. १३; २३. ६४, ७०, १८१.

लिलाट–ललाट=मस्तक १०. १७; १८. २१.

लिलाटा–ललाट २. १८०.

लिलाटू–ललाट १. ६८; २४. १२६.

लीक–रेखा १०. १०२.

लीखा–लिखा=लेखा=गणना १३. ५४; लीखा=लीख २५. ११६.

लीजिये–लीजिये १५. ५५; १८. २८.

लीप–[तु० लिम्पति, रेप=धब्बा; लेप=लपेटना; Lat. *lippus*; Lith. *limpù* =चिपटना; Goth. *bi-leiban*; Ohg. *bilīban* = पीछे रहना; E. *leave* तथा *live*; Germ. *leben*; प्रा० लिंपइ; पा० लिम्पति; उ० लिप–, बं० लेप–; हि० लीप–; लेप–; पं० लिप्प–, लिंब–, लिम्म–; सि० लिंब–; गु० लिप–; म० लेप–] लीपते हैं ३. ८; लीपे १८. ८.

लीपी–लीपइ का भूत, स्त्री० २. ६८.

लीलइ–लीलता है=निगलता है [संभवतः लीढ, √लिह् से; तु० लीला= लील्हा = लीढ = चमकाना, यथा "मणिः शाणोल्लीढः"; लीलइ= खेल खेल में खा जाता है; लीलइ में सं० लीला (=खेल) तथा लील्हा (=लीढ) दोनों का संमिश्रण प्रतीत होता है] १५. ४८.

लीला–लीलइ का भूत १५. ६३.

लीले–खा लिये ५. २३.

लीन्ह–लिया १. ८६, १४०; २. १०३; ४. २६, २७, ४४; ५. ४२; ७. ८; ६. ४६; १०. १५, १२६, १४४; ११. ८; १२. ७, ६४; १५. ८०; १६. १६, २१; २०. ७२; २१. १६; २२. १२, ७४; २३. ५४, ६३, १०३, १६४, १७४, १७५; २४. ८४, ८६, १०१; २५. ३६, ६८.

लीन्हइँ–लीन्हे=लिये २५. १२३.

लीन्हा–लिया १. ८७, १०१; ८. ३, ३४, ६६; १०. १००; ११. २०; १३. २७; २०. १००, १२४; २५. ३०.

लीन्ही–ली १०. १३२.

लीन्हे–लिये ५. ३; २३. ११.

लीन्हेसि–लिया ७. ३; १०. १०८; १५. ६४; २३. १७२; २४. ८२.

लीहा–लेता है २. १३४.

लीहीं–लेंगी ४. १५.

लुकाई–लुकायित होकर=लुक कर; "लिक्कइ लिहक्कइ निलीयते" (दे० 244, 7) हि० लुकना; पं० लुकणा; सि० लिकणु, लुकणु; म० लिकणें;

सं० लुब्धिने; प्रा० लुब्धइ २४. १४३.

लुबुध—लुब्ध = लोद्धय = लुब्धक, लोभी (P. 104, 125) १५.१७, २४.११२.

लुबुधे—लुभाय गये ३. ४२; १०. १५२; २०. ६.

लुटे—लुण्ठित हुए = लूटे गये; लुण्टति; (तु० Lat. *luton* = दागना) हि०, सि०, बं० लुट; पं० लुट्ट; का० लूर; गु० लुट, लुंट; (JB 109) ११.३५.

लूमी—लूटी [मूल हिमापाम; तु० √लुट्, लुण्ट्; लोट्, लुच् = दिखाना; धातुपाठ 'स्ट लुण्ठ उपघाते'] २०. १२८.

लेइ—लेकर १. ८, २१, १५८; २. ६७, १११, ११४, १८७; ३. ७८; ४. १६, २८, ३०, ३८, ६०; ५. २, २५, ३६, ३७; ६. ७, १४, १७, १८, ४४, ४६, ५६; ८. ११, २४, २५, ४०; ९. १०; १०. ११, १५, २२, ५३, १०३, १११, १२२, १५७; १२. ६, ५८, ७५, ६८; १३. १६, ३८, ४०, ५६; १४. ११; १५. ३; १६. २, १६; १८. ४८; २०. २४, ३०, ६१, ६८, ११४; २१. ५, ३८; २२. २६, ४६; २३. १४, १६, ७१, ७३, ८०, ८८, १२०, १६४; २४. ५१, ६८, ७०, ६०, ६८, ११४, ११६, १६८; २५. ३१; ४१, ४६, १००, १३१, १५५, १५६; लेता है १. १६२; ३. ६४; ४. ५६; १०. ६४, ११२; १५. १३; ले ७. ८; १०. ५३; ११. ५४; २१. ११२; २३. १२८; लिये २०. १०७; लेवे २१. ३०; लेने २२. ४०.

लेई—लेता है ११. ४; १२. १४; १५. ३४; १६. ६६; लेने २३. १७, ६६.

लेउँ—लूं १६. ३५; २३. १७.

लेउ—लेवे २०. ४०; २४. ३६.

लेऊँ—लूं १६. २८.

लेख—लेखा = हिसाब १. ८८.

लेखा—हिसाब ३. ७०; २२. ७१; लिखनि = लिखइ = विचार करता है १३. ४६.

लेत—लेते १२. १२; १५. ४४; २४. १०४; लेता है २४. ६६.

लेदी—"मत्स्य विशेष" २. ७१.

लेया—लेने वाला १८. ७.

लेसा—जलाया १. १३८.

लेसि—जला कर १. ८३.

लेहि*—लेते हैं १. १०७; २. ४०, ११६; ४. १७, ३५; १०. ३, ३५, ५६, ११६.

लेही*—लेती हैं २. १०६; ४. ३१; १०. १५६; १६. १३.

लेही—लेइ = लिया है १५. ७७.

लेहु—लो ४. १८, ५५; १२. १८, ३३, २४, ७८, ६१; २०. ३७; २२. ४०; २३. १३, १४, १६, २५, ४०.

लेहू—लेहु = लो २२. ३६.

लोक–जगत (√रुच्) ६. ४०; २१. ५२; २५. १२३.

लोकचार–लोकाचार २२. ७६.

लोका–लोक २५. ६५.

लोग–लोक=नरनारी २. ५२; ११. ६; १२. ६२, ६८; २५. ३.

लोगन्ह–लोगों ने २५. ४२.

लोगहि–लोगों १०. १३६.

लोगू–लोग १. ४४; २. ४; १२. २१; २५. १६६.

लोटहिँ–लोटते हैं *लोल्=विलोडन; लुठ्यति; लोट्टइ; हि०, पं०, गु०, बं० लोट–; सि० लोटिनो=विकीर्ण १०. ६.

लोन–(Zimmer, Altind. Leben. 54) लवण=सुन्दर (अव=अउ=ओ, यथा ओहि=अवधि, ओसाअ=अवश्याय P. 154) नोन, नूण ल=न, णांगुल=लाङ्गुल, णोहल=लोहल, नलाट=ललाट इत्यादि (P. 260) लवण; प्रा०, पा० लोण; का०, बं०, हि० नून, लोण; बि० लोन, नोन; हि० नोन, लोन, लूण, नूण; पं० नूण; सि० लूणु; गु० लूण; म० लोणा; जि० लोन; छि नम; फा० नमक; पश्तो मालगा=नमक (नम *नमयक से GM. P. 276) ८. १३, १६, ४०; नमक ८. १६.

लोना–सुन्दर ३. ३६; ८. ६.

लोनि–लोनी=सुन्दरी ८. ७.

लोनी–सुन्दर ३. ३०; ८. १३; ६. २३; १०. ११०.

लोने–सुन्दर २. ५५; १०. ६०.

लोभ–म० लोहो (मार्दव); सिं० लोव (इच्छा) १. २०; ५. ५४; ७. ३६; १२. ३३; २४. ५५.

लोभा–लुभा गया १०. ५४, १५३; १६. ३७.

लोभाइ–लुब्ध हो रहा २. ३१.

लोभानी–लुभा गई १. १२८.

लोवा–लोमाशिका=लोमड़ी १. २८; १२. ७८.

लोहा–[वै० लोह; आर्य० *(e)reudh "red" देखो रोहित लोहित, तथा रुहिर] लोहा; म० लोखंड; गु० लोखंड; सि० लोहु; बं० लोह; सिं० लोहो, लो; गु० लोढुं २. १७.

लोहारइ–लोहकार=लोहार ने (सि० लुहरु; लुहारु; सिं० लोवरु; हि०, गु०, पं०, बं० लोहार) ११. ८.

लोहारिनि–लोहार की स्त्री २०. २७.

व.

वइ–वह २५. ६८.

वई–उसने १. १००.

वरन-वर्ण २. ६४.

वइ-वह १. ४८, ४६, ५३, ६४, ८८; २. ६, २३, ७२, ११६, १५१; ३. ५, १०, ६४; ४. २०, ३१, ५४, ५५; ६. ५; ७. ४८; ८. ३६, ३८, ४२; ९. २४, ३४, ३६, ४७; १०. ३, १६, १९, २०, ४६, ५२, ५५, ६७, ६८, ८६, १३५, १३८, १४१; ११. ३८, ५१, ५६; १२. ३४; १५. १८; १६. ७, ४१, ४३, ५३, ५६; २०. ६५; २१. ३, ६; २२. ४७, ६३, ७२; २३. २७, ३३, ११२, १५१, १७०; २४. ११५, १४५, १४८, १५०, १५१, १५२; १५७; २५. ३४, १११.

वार-जिधर खड़े हो उधर का तट २. ६५; १३. ३३.

वारहि-बार १०. ४३.

विहँसइ-विहसन्=हंसते १. ६६.

वेई-उन्होंने २१. ६०, ८२ ६४; उन्हें २३. ४५.

वेइ-वे १. ५३, ५६, ८५, ९०, १४४, १५६, १६०, १७०; २. ६ , ८८, १३१, १३३, १६६; ३. ६५; ५. ३०; ८. ७; १०. ८, ३८, ४५, ७४, ७५, १०७, १२५; १३. ६३; १४. ६३; १५. ८; १६. ११. ४६; १९. १५, ३३; २०. ३६, ६३; २३. ६४, ८६, १११, १६८; २४. १०८.

वेईं-उसने १. १००.

वेही-उनमें (Gn.) "नग लाग उवेहे" उवेहे=खुले २. १८८.

व्याकरन-व्याकरण १०. ८०.

स.

सँकेत-[सं० सङ्केत √किन्=चित्= *(१) qait = स्वच्छ, तु० Lat. *cae-lum* (=caidlom); Obg. *hoitar, heit*; Goth. *haidus*; E. *-hood*, मौलिक अर्थ दर्शन; धातु के निरनु-नासिक तथा सानुनासिक दो रूप हैं; यथा (१) चित्त, चक्षु, चिकित, चिकेति, चिकित्सति आदि (२) चिन्तयति, चिन्तन आदि] संकोच, सिकोच, तटबन्धन ५. १५.

सँधाना-सन्धान=छावा १. ६४.

सँभारा-सम्भाला १. १२२.

सँभारि-संभाल २. १०६.

सँभारी-२. ९९, १०८; संभाल कर २. १३३.

सँभारे-सम्भाले १. १४६; २. ४३.

सइँ-से १२.४३,६७; सह=साथ २४.५४.

सईनइ-सँपतने=सम हो सकती है १२.११.

सइँतालिस—सप्तचत्वारिंशत्=सैंतालीस; का॰ सततजिह; उ॰ सतचालिया; बं॰ शतचालिश; पं॰ संताली; सि॰ सतेतालीह; गु॰ सुडतालीस; म॰ सत्तेचालीस १. १८५.

सइ—वै॰ शत अवे॰ सत; आ॰ फा॰ सद्; अफ॰ सल, सिल; कु॰ सद्; ओस्से॰ सद; पै॰ प्रा॰, पा॰ सत; मा॰ प्रा॰ शद; आसा॰ स; का॰ हत; उ॰ शए; बं॰ शय; हि॰, पं॰, सि॰ सौ; गु॰ शो; म॰ शें, शंभर १. १८५; से ४.५१; ८.३२; १२.५२.

सइअद—सैयद १. १३७, १५६, १५८. (सैयद राजे=सैयद राजी हामिदशाह)

सइन—सेना; अवे॰ हएना; प्रा॰ फा॰ हइना; पह॰, पाम्र॰ हीन २५. ११७.

सइना—सेना १०. ४२.

सउँ—से १. ४६, १५६, १७८, १६२; २. २६, ६१; ६२; ३. १७, ३२; ४. १०; ७. २०, ६४; ८. १७, ३४, ६६, ७२; ६. ८, २४; १०. ४३, ८०, १०३; ११. २६, २७, ३३, ४३, ५२; १२. २२, ३२, ५४, ५५; १३. १६; १५. १५, ३८, ४६; १६. ३४, ३५, ३७; १७. १६; १६. ३६, ४८, ५४; २०. १६, २४, २८; २१. ७, ३५; २२. २०, २३, २५, ३३, ४७, ४८, ६३, ७६; २३. ६, १४, ४४, ५७, ६८, ११३, १४४, १५७, १६८; २४. ७४, १००, ११०, ११२, ११६, १३३, १३४, १४४, १५७; २५. १३, १५, २२, २६, ३४, ५६, ६६, ७५, १०१, १६५.

सउँटिआ—सोंटिया=सोंटे वाला=द्वारपाल २५. ६८.

सउँपा—(सम्+√ऋ+इ) समर्पित=सौंपा; सं॰ समर्पयति; प्रा॰ समप्पिअ; हि॰ सौंपना; गु॰ सौंपवुं; म॰ सोंपणें, सोपणें ८.२०; १३.४७.

सउँपि—सौंप कर ५. २१.

सउँह—संमुख १०. १२७; १३. ४३; १५. २८; २३. १७१; २४. २३; शपथ=सौंह १६. २४.

सउँजहिँ—शवज=शिकार=पशु १०.४८.

सउँही—संमुखे हि=सामने २५. १४६.

सक—सकता है; शक्नोति, शक्यते; सक्केइ, सक्कइ; हि॰ सकना; पं॰ सक्कणा; सि॰ सघणु; गु॰ शकवुं; म॰ सकणें; सिं॰ सकि, हकि १०. १४१.

सकइ—शक्नोति=सकता है २. १८६; ३. ५१; ६. ४५; १०. ११८, १५६; १५. ५३; २४. ६१.

सत—सत्य; पा॰ सच्च; उ॰, बं॰ साचा; ब्रज॰ साँच; हि॰ सच; पं॰ सच्च, साँच; सि॰ सचु, सचो; गु॰, म॰ साच, सँचा; सिं॰ सस २. १३६.

७. १६; ८. ८; ९. १, ३, ५, ७, १०; १३. १०, ३१, ४८, ५७; १४. ११, २१, २२; १५. १, २, ३, ७, २३, ५६, ७३; १७. १२; १८. ४२, ४३, ४४; २२. ४५; २४. ३६, ८५; २५. ८१.

सतइ—सत्य ही १५. ३, ४.

सतएँ—सप्तम=सातवें २५. ७३.

सतडोला—सत्यदोलक=सत्य को डुलाने (छुड़ाने) वाला १५. ४६.

सतनासा—सत्यनाश=सत्यानाश ९. ७.

सतवादी—सत्यवादी ९. ४; १६. ६.

सतभाऊ—सत्यभाव २२. १७.

सतभाखा—सत्य वचन १. ११६; ९. ६.

सतभाखी—सत्यभाषी २५. १६१.

सतरु— *Kat = युद्ध करना; सं॰ शतपति, शत्रु; Gall. catu = युद्ध; अवे॰ चत्=युद्ध इत्यादि; VWI. p. 337] शत्रु १. १५.

सताई—शान्ति=शान्तता १०. १२६.

सताभइ—सताता है ३. ५०.

सतिबरत—सत्यव्रत २. ८४, ४. ७, २०, ५१.

सती—सत=सत्य वाली=पत्नी के साथ भस्म होने वाली स्त्री ८. ४०; ९. ५; १२. ११, २३, ६४; पतिव्रता १३. ४४, ५०; १५. ५५; १८. ४४, ५१; २१. ४०; २५. ११; इत्यादि २. ४५.

सतुर—शत्रु ३. ५६, ८०.

सत्त—सत्य ९. १, २, ३, ४, ६, ८, ९; १३. ५७; २४. २२, २४; २५. १७.

सदा—सर्वदा=हमेशा १. २१, ४२; २. २४, ८८, १५६; ९. २७; १०. २०; १३. ६१; १६. १७; २३. १५१.

सदाफर—सदाफल २. ७५; २०. ४३.

सन—संवत् १. १८५; से २५. ८२.

सनिआसी—संन्यासी २. ४४; ३. ४८; ७. ५१; ११. १७.

संत—भगवान् की कथा का प्रेमी २. ४७.

सकउँ—सकूं १७. ४.

सकति—शक्ति=अमोघ अस्त्र ११. २०; शक्नोति=सकता है २१. १०.

सकनिधान—शक्तिधाम ११. १२.

सकती—शक्ति [शक्, शेक; शक्नोति; शिक्षति अभ्यस्त प्रयोग; सं॰ शक्ति; शक्, शक्मन्, शाक्र; अवे॰ सच-इति; सिक्षति, अभ्यस्त प्रयोग; देखो VWI p. 331] २४. ११८.

सकल—सारा १. १२; २. १६६; १२. १८; १५. ४४; १६. १०; २०. ६४, ६६, ७०; २१. ५०; २२. ३१; २३. ४०, १०२.

सकसि—सकते हो २३. १४४.

सका—सकइ का मूल १०. ७२; १५. ८०; २३. १२८; २५. ४६.

सकारे—सबेरे १०. १०१.

(सं॰ स्व=हर फारसी में); अवे॰ ख्वफ्नन; पह॰ ख्वफ़्नो; आ॰ फा॰ ख़ुस्पीदन; सी॰ फतन; ता॰ खरर; बा॰ ख़ोफ़्सम्; शी॰ शीर्सम; सरि॰ ख़ुफ़्सम; थ्रि स्रोम (GM. 299) २०. १२३, १२८, १२९.

सपना—स्वप्न १३. ६४.

सपने—स्वप्न में ५. ८; स्वप्न २०. ११६.

सपनेहुँ—स्वप्न में भी २०. १०४.

सब—[अवे॰ हउर्व (सारा); Lat. *soli dus* तथा *soldus* (*solid*); *salous* =सुरक्षित] सर्व, सव्व; पा॰ सव्व; हि॰ सब, पं॰ सब्ब, सम; सि॰ सभु; गु॰ सवि; सिं॰ सव, हव; तथा हि॰ सारा; पं॰ सारा; सि॰ सारो; गु॰ सार्हु; म॰ सारा १. २१, २४, ३२, ३४, ३८, ४०, ४४, ४९, ५२, ५३, ५९, ६०, ६१, ७२, ७७, ७८, ९८, १००, १०३, ११२, ११८, ११९, १५०, १६८, १७९; २. ४, ८, ३०, ३२, ४०, ४१, ४३, ५६, ६८, ९१, ९३, ९५, ९७, ९८, १४०, १५४, १५६, १५७, १६२, १६६, १७६, १७९, १८०, १८२, १८५, १८९, १९७, २००; ३. ८, ११, १८, २४, ४१; ४. २, १६, १७, ३३, ३४, ५३, ५९, ६३; ५. ४, ५, ६, ३७, ४९; ७. ३३, ३३, ४३, ४५, ५१, ६९; ८. २, ७०; ९. २३, ३०, ३५; १०. ८, ४५, ४६, ४८, ५३, ६४, ७७, ८०, ९६, १०२, १५२, १५३; ११. ९; १२. १९, २०, २१, २३, २८, ३६, ५६, ६२, ६४, ६६, ६८, ७०, ७१, ७२, ९१; १३. ४, ११, १८, ५०, ५१, ६०; १४. ६; १५. २, ४, १६, १९, ३०, ३२, ५०, ६०, ६४, ७६; १६. १५, ४३, ४४; १७. ५, १६; १८. ६, ४७; १९. ४; २०. ३, ४, ९, १३, १४, १५, २४, ३४, ३५, ४९, ५७, ६०, ६१, ६३, ६४, ६६, ६९, ७६, ८४, ९१, ११६, १२८; २१. ४, ११, ३६, ५३, ५५; २२. ७७, ७९; २३. ४२, ६९, ७५, ९२, ९३, ९४, १०८, ११०, १५८; २४. १०, १२, १३, २४, ३३, ४०, ४२, ४४, ४६, ६०, ८३, १०८, १०९, ११२; २५. १, २, ८, ४३, ४४, ४५, ५३, ६३, ७४, १००, १०५, ११४, १२६, १६५, १६९.

सबइ—सभी १. ८, १६, ४८, ९९, १२०, १२१, १२४; २. ११, १६, १९, २१, ३१, ८७, ९५, ११४, १८८, २००; ३. ३६; ४. २, ८; ६. ८; ७. ५; ९. २४, ३२, ४०; १०. २२, १४३; १२. ४८; २०. १२, १४, ६६,

सरवन-[*Qlou-, श्रवण, श्रोण इत्यादि; तु० Klou-nis = श्रोणि, अवे० स्रश्रोनि: Lat. clunis = जघन] श्रवण = कान (तु० श्रवण = सुनना; उ० शुनिया; बं० सुनन; पं० सुणना; सि० सुणणु) १२. ३६; २३. १५५; २५. १५२.

सरवर-सरोवर २. ५१, ५६; ४. १३, २५, ३२, ३३, ३८; ५. १३, १४; ११. २४; २४. ६०; २५. १७३.

सरवरि-बराबरी १. ४३; २. १६८; १०. ७१.

सरसुती-सरस्वती १०. १२.

सरा-शर = शर की चिता = चिता ६. ५.

सराहा-सराहना = (श्लाघा = शलाघा = सराहा H. 185) ७. ६२; सराहना की २५. ३७, १६७.

सरि-सादृश्य = समता १. ४४, ११४, १३१, १३५, १६६; २. ४, ५, १५८; ३. १६, ३२; १०. १६, ३१, ३२, ३३, ७२, १३७, १४४; १५. ६८; १८. २५; २२. २४; २५. १५८; सरित = नदी २५. १६.

सरिसरि-बराबरी २. ११६.

सरीर-शरीर ४. ६४; २४. ११२.

सरीरा-शरीर १८. १२.

सरीरू-शरीर १०. १४६; १६. ३; २३. ७८.

सरूप-स्वरूप २. ५७; १५. ६; २०. ७०; रूपसहित = सुन्दर २०. १४.

सरेखा-सलेख = श्रेष्ठ ८. ४६; सलेख १२. १०, ६७.

सरोवर-सरोवर २. १८१; ४. १०; १६. १६.

सलारकादिम-मुहम्मद स्थानीय चार मित्रों में से एक का नाम १. १७१.

सलिल-पानी २२. ५३.

सलोनी-सलावण्य-सुन्दर (लोण्ण = लावण्य P. 154) ३. २; १०. ११०.

सलोने-सलावण्य = सुन्दर १. १७२.

सवँर-स्मरेत् = याद करे ५. ७.

सवँरइ-याद करता है १२. ६६; १५. १५१.

सवँरउँ-सुमिरउँ = याद करता हूँ १. १; २५. १८, १६०.

सवँरना-स्मरण ५. ८.

सवँरा-स्मरण = याद २५. १७.

सवँराइ-स्मरण करा कर २३. ५८.

सवँरि-याद करके ८. ६; ६. १६; १६. ४२; २२. २४, २६; २३. ५३, ७०.

सवँरिआ-स्मारक = [illegible] १२. ७७.

सवँरु-स्मर = याद कर १५. १७.

सवा-सपाद २५. १०३.

सवाई-सपादिका = सवाइया; उ० सउ-याइ; बं० सउया; सि० सवायो; पं० सवा; म० सवा १. १२७.

ससि-शशी = चन्द्रमा [शश, पा० सस; Ohg. haso = E. hare] १. ६, [illegible] १२८; ३. १२, १४, ४३; [illegible] १८, ४२; ६. ११,

समुंद–समुद्र १०. ४३; १५. २४.

समुंदा–समुद्र १५. २१.

समेटि–समेट कर १२. ६४; १५. १५; २४. ६४.

समेटेइ–समेटने से भी २१. ५४.

संपुट–सम्पुट (संपुटा) २४. ८८.

संसकिरित–संस्कृत; म॰ सक्कय; अ॰ मा॰ सक्कय; शौ॰ सक्कद (P. 76) २. ३५.

संसार–जगत् २. ८; १२. ५१; १३. ४८; १६. ४०.

संसारा–संसार ४. १८; १०. ४४.

संसारू–संसार; सिं॰ संसारु; सिं॰ ससार १. १, ११, ७७; १६. १०; २२. ५७; २५. ८५.

सञान=सयाना ६.८;११.१०.

„–सज्ञान ३. ५७.

सयानी–सज्ञाना=चतुर ३. ४६; १८. ३५; १६. ४; २४. ६५.

सयाने–सज्ञान=चतुर १. ८०; ३. ११.

सर–[√शृ, सर=शर √शृ हिंसायाम्; शरण, √शल=चलना, किन्तु √शृ हिंसायाम् से संबद्ध; देखो MW. 994-95; √Ker–, VWI. p. 410 Kel– 432] ३. ४४; २१. ११; सर-बिना=तृण की बिना २१.४७,४६;२३.१००,११५.

सरग–स्वर्ग १. ४, ७४, ८१; २. १४६, १८७; ४. ४०; ५. १६; ६. १७; १०. ४, ३६, १४६; १२. २३; १३. ४०; १४. ३, २०, २४; १५. ४, ३५, ४४, ६१; १६. ४०, ४५; २०. १०८; २१. १८, ५५; २२. ५१, ६४, ७३; २३. ५०, १०२, ११६, १७५, १७६, १८१; २४. १६, ११८; २५. १११, १२३, १७३.

सरद–[Kel–शीत अनुभव करना: सं॰ शिशिर; अवे॰ सरेत; आ॰ फा॰ सर्द; तु॰ वै॰ शरद; अवे॰ सरेध्=वर्ष; ओस्से॰ सर्द=ग्रीष्म (summer); आ॰ फा॰ साल= year; Lith. *silus*=August, Lat. *calco-ere*= उष्ण VWI. p. 430] अवे॰ सरेत; पह॰ सर्त; आ॰ फा॰ सर्द; वाखी सुर; यग्नी सर्त; अफ॰ सोर; बलू॰ सर्द; उत्त॰ बलू॰ सार्थ; कुर्द सार; ओस्से॰ साल्द २४. ३०.

सरन–शरण ४. २७; २२. १८.

सरनदीप–सवर्णद्वीप="सुन्दरी का कर्ण" ["अरब वाले लंका को सरनदीप कहते थे। भूगोल का ठीक ज्ञान न होने के कारण कवि ने सरनदीप लंका और सिंहल को भिन्न भिन्न माना है"] २. ५.

सरब–सर्व १. ३०.

सरबदा–सर्वदा १. ४२.

सरवन–[*Qlou-, श्रवण, श्रोण इत्यादि; तु० Klou-nis = श्रोणि, श्रवे० स्रश्रोनि; Lat. clunis = जघन] श्रवण=कान (तु० श्रवण=सुनना; उ० शुनिबा; बं० सुनन; पं० सुणना; सि० सुणणु) १२. ३६; २३. १५५; २५. १५२.

सरबर–सरोवर २. ५१, ५६; ४. १३, २५; ३२, ३३, ३८; ५. १३, १४; ११. २४; २४. ६०; २५. १७३.

सरबरि–बराबरी १.४३;२.१६८;१०.७१.

सरसुती–सरस्वती १०. १२.

सरा–शर=शर की चिता=चिता ६.५.

सराहा–सराहना=(श्लाघा=शलाघा= सराहा H. 185) ७. ६२; सराहना की २५. ३७, १६७.

सरि–सादृश्य=समता १. ४४, ११४, १३१, १३५, १६६; २. ४, ५, १५८; ३. १६, ३२; १०. १६, ३१, ३२, ३३, ७२, १३७, १४४; १५. ६८; १८. २५; २२. २४; २५. १५८; सरित=नदी २५. १६.

सरिसरि–बराबरी २. ११६.

सरीर–शरीर ४. ६४; २४. ११२.

सरीरा–शरीर १८. १२.

सरीरू–शरीर १०.१४६;१६.३;२३.७८.

सरूप–स्वरूप २. ५७; १५. ६; २०. ७०; रूपसहित=सुन्दर २०. १४.

सरेखा–सलेख=श्रेष्ठ ८. ४६; सलेख १२. १०, ६७.

सरोवर–सरोवर २.१८१;४.१०;१६.१६.

सलारकादिम–मुहम्मद स्थानीय चार मित्रों में से एक का नाम १. १७१.

सलिल–पानी २२. ५३.

सलोनी–सलावण्य–सुन्दर (लोण्ण= लावण्य P. 154) ३. २; १०. ११०.

सलोने–सलावण्य=सुन्दर १. १७२.

सवँर–स्मरेत्=याद करे ५. ७.

सवँरइ–याद करता है १२.६६;१५.१५१.

सवँरउँ–सुमिरउँ=याद करता हूं १. १; २५. १८, १६०.

सवँरना–स्मरण ५. ८.

सवँरा–स्मरण=याद २५. १७.

सवँराइ–स्मरण करा कर २३. ५८.

सवँरि–याद करके ८. ६; ६. १६; १६. ४२; २२. २४, २६; २३. ५२, ७०.

सवँरिश्रा–श्यामलक=काला १२. ७७.

सवँरु–स्मर=याद कर १५. १७.

सवा–सपाद २५. १०३.

सवाई–सपादिका=सवाइश्र; उ० सउ- याइ; बं० सउया; हि० सवाया; पं० सवा; म० सव्वा १. १२७.

ससि–शशी=चन्द्रमा [शश, पा० सस; Ohg. haso = E. hare] १. ६, १२२; २. १२६; ३. १२, १४, ४३; ४. २६, २७, ३६, ४२; ६. ११,

समुंद-समुद्र १०. ४२; १५. २४.

समुंदा-समुद्र १५. २६.

समेटि-समेट कर १२. ६४; १५. १५; २४. ६४.

समेटेउ-समेटने से भी २१. ५४.

संपुट-बन्दमुख (मंजूषा) २४. ८८.

संसकिरित-संस्कृत; म॰ सक्कय; अ॰ मा॰ सक्कय; शौ॰ सक्कद (P. 76) २. ६५.

संसार-जगत् २. ८; १२. ५१; १३. ४८; १६. ४०.

संसारा-संसार ४. १८; १०. ४४.

संसारू-संसार; मि॰ संसारु; सि॰ ससरु १. १, ११, ७७; १६. १०; २२. ५७; २५. ८५.

सयान-सज्ञान=सयाना ६.८,११.१०.

सयाना-सज्ञान ३. ५७.

सयानी-सज्ञाना=चतुर ३. ४६; १८. १५; ११. ४; २४. ६५.

सयाने-सज्ञान=चतुर १. ६०; ३. ११.

सर-[√सृ, सर=शर √शृ हिंसायाम्; शरद्, √शल=चलना, किन्तु √शृ हिंसायाम् से संबद्ध; देखो MW. 994-95; √Ker-, VWI. p. 410 Kel- 432] ३. ४४; २१. ११; सर-क्रिया=चिता की क्रिया २१.४०,४६;२३.१००,११५.

सरग-स्वर्ग १. ४, ७४, ६१; २. १४६, १८७; ४. ४०; ५. १६; ६. ३०; १०. ४, ३६, १४६; १२. २२; १३. ४०; १४. ३, २०, २४; १५. ५, ३२; ४४, ६१; १६.४०,४५; २०, १०८; २१. ३८, ५५; २२. ५१, ६४, ७२; २३. ५०, १०२, ११६, १७५, १७६, १८१; २४. १६, ११८; २५. १११, १२३, १७३.

सरद-[Kel-शीत अनुभव करना: सं॰ शिशिर; अवे सरेत; प्रा॰ फा॰ सर्द; तु॰ वै॰ शरद; अवे॰ सरेध्=वर्ष; ओस्से॰ सर्द=ग्रीष्म (summer); प्रा॰ फा॰ साल=year; Lith. *salus*=August, Lat. *calco-*=उष्ण VWI. p. 430] अवे॰ सरेत; पह॰ सर्द; प्रा॰ फा॰ सर्द; वास्सी सुर; पश्तो सर्द; अफ॰ सोर; बलू॰ सर्द; ब्राह॰ बलू॰ सार्त; कुर्द सार; ओस्से॰ सारद २४. ६०.

सरन-शरण ४. २७; २२. १८.

सरनदीप-स्वर्णद्वीप="सुन्दरी का अर्थ" ["अरब वाले लंका को सारनदीप कहते थे। भूगोल का ठीक ज्ञान न होने के कारण कवि ने सरनदीप लंका और सिंहल को भिन्न भिन्न माना है"] २. ५.

सरब-सर्व १. ५०.

सरबदा-सर्वदा १. ४२.

सखी) ३. ३५; ४. ३, १०, २०, ४६, ७८.

साँई—स्वामी; सामि; बं०, उ०, साईम; सि० साँई; म० साई (पति) ४. १८.

साँकर—[तु० शृङ्खला=रज्जु; √Kor-, संकल, संखला, सिंखला; का० हाँह्ल; उ० साँकल, साँकर; बं० शिकल, सिकल; पं०, संगली; सि० संघर; गु० साँकल] √कृ, सङ्कर=एकत्रीकरण=तङ्क=कठिन १५. ५०, ५३.

साँच—साँचा १०. १००; २५. २४; सच=सत्य १६. ४६.

साँचा—सत्य=सच्च (P. 299); हि० सच, साँच; पं० सच्च, साँचा; सि० सचु, सचो; गु० साच; म० साच, संचा; बं०, उ० साचा; सिं० सस १. ६५; २३. ५.

साँझ—सन्ध्या; प्रा० संझा; पा० सञ्झा; उ० साँझ; बं० साँझ, साँज; बि०, हि० साँझ; पं० संझ; सि० संझो, साँझी; गु० साँज; सिं० संद १०. १०१.

साँटिआ—सौंटिया=सोंटेबर्दार १२.१७.

साँटी—सोटी=छड़ी=सामर्थ्य १२.२०.

साँठि—चावल विशेष=द्रव्य=धन २.११२.

साँठनाठ—नीरस (=नष्टसत्त्व) २. ११२; सांठि=द्रव्य ७. ८.

साँती—शान्ति=संडि (P. 275) २५.१४१.

साँबर—[तु० √Kom, शम्बर, शम्बर प्रयोग भी प्राप्त हैं; अर्थ के लिये तु० सर्व शम्य, साम्ब=एकत्र करना; हिन्दी में तु० "सांभरना" एकत्र करना=झाड़ू से इकट्ठा करना] मार्ग के लिये संचित वस्तुजात १२. १८.

साँवरि—"संवल"=मार्गव्यय १३. २७.

साँवकरन—श्यामकर्ण २. १२.

साँस—[Kues, अवे० सुपि; W. I. 226; VWI. p. 474] श्वास १०. ११२; १५. २०; २१. ४०; २२. ७४; २३. १०७, १५३, १५७; २४. ७६.

साँसउ—संशय २०. ७४.

साँसहिँ—श्वासे=साँस में १८. ५४.

साँसा—श्वास १. ३६; ६. ४६; १७. ७; २२. ७५; २४. ३६, ८२.

साउज—शिकार के योग्य जीव; "मारकर खाने योग्य जीव" सु० १. १३.

साएर—सागर; सायर; म० सायर; सि० सयुरु=जलस्थान २२.५४;२४.११२.

साकुँतला — शकुन्तला = सौँडले (P. 275) २१. १४.

साका—शक (संवत्) ६. ८; २४. २१.

साख—शाखा १. ७५; २४. १२०.

साख—शाखा [Goth. *hoka*; Arm. Sax VWI. 335] २. ३१, ३३, १४६; ४. ३६; ५. ४, ३१; १०. ४६; ११. २१; १८. १६.

साखि—साखी २३. २३; २४. २४.

१७, १६; १०. ६६, ११४; १६. ६, १४, १६; १६. २१, ४१; २०. ११, ६८, १०६, १२४; २२. ४; २३. १२७, १२६; २४. ५७, ६५, ८०, ८१, ११८; २५. ६८.

ससियदन—शशिवदन २४. ८४.

ससिवाहन—शशिवाहन, हिरण १८.५.

ससिमुख—शशिमुख ४. ६१; ६. १२.

ससिरेखा—शशिरेखा=चन्द्रकिरण ४.६२.

ससुर—[श्वशुर, श्वश्रू; प्राप्र० *Suekuros, *Suekrū; Lat. *socer* तथा *socrus*; Goth. *swaihra* तथा *swaihro*; Ags. *sweor* तथा *sweger* इत्यादि] श्वशुर=सौहरा; सहुरा; सि० सहुरो, गु० ससरो; म० सासरा; बं०, उ० ससर; सिं० हुरा; तथा श्वश्रू=हि०, बं०, उ० सास; पं० सस्सु, सस्स, सि० ससु, गु० सासु; म० सासू, सिं० सुहुरा ४. १५.

ससुरार—श्वशुरालय में ४. २१.

सहइ—सहती है १. १०५; २. २१; ६. ५१; ११. ११; २२. ६६; २४. ११, ६७.

सहई—सही १८. १४.

सहज—स्वभाव ११. ५४.

सहदेऊ—सहदेव=युधिष्ठिर के कनिष्ठ भ्राता ७. ४०, ६१.

सहनाइनि—शहनाई बजाने वाले की स्त्री=मेहतरानी २०. १५.

सहथ—सहेंगे १२. २६, ३१.

सहराई १२. ५१.

सहलगी—सहलग्न=साथ लगा १२.६६.

सहस—सहस्र; प्रा०, पा० सहस्स; का० सास; सि० सहसर; सि० सहसु; सिं० दहसिय; दस, दाह १. १२; २. १२, १३, ५३, १३०, १६४; १२. ६६; १४. २, ११; १५. ७३; १७. १; १६. २६; २०. १२, १८; २४. १२, ६४; २५. १६८.

सहसउ—सहस्रापि=सहस्रों ६. १८.

सहसक—सहस्रक=हजारों २५. ११६.

सहसकिरान—सहस्र किरण १०. १८.

सहसन्ह—सहस्रों ७. ७.

सहसर—सहस्र १५. ५१.

सहसहुँ—सहस्रों २०. १०५.

सहसहु—हजारों (से) २३. १६१.

सहस्सरबाहु—सहस्रबाहु १०. २६.

सहहु—सहते हो १३. २२.

सहा—सहइ का भूत १५.१७; १६.४६.

सहाई—सहाय=सहायक १६. ३०.

सहाय—सहायता २०. ३१.

सहि—सहकर २. २२; सह १०. १४१; सहें १८. २१, ३४.

सहिअ—सहिये २४. १११.

सहियारू—सहचार=सहायक १५. ३.

सहेली—सखी; सही सि० सह; पं०, हि० सहेली (गु० म० सई, सख=

साथू—साथ २३. ३५.
साध—साधता है ११.४०; साधा २३.१३४.
साधत—साधता १२. ३८.
साधना—सिद्धि २३. ३४.
साधब—साधोगे १२. २८.
साधहिँ—साधते हैं ३. ४८; २०. १०४.
साधा—सिद्ध किया १०. १०४; १६. १४; २३. १३५; श्रद्धा = साध = इच्छा १६. १६.
साधि—साधकर ३. ४४; श्रद्धा = इच्छा १५. ३०; साधने १५. ७६.
साधी—साधा है १०. ४१.
साधु—समीचीन [तु० हि० साहु साहूकार, साउ (आदरणीय); पं० साऊ; सि० साहू; गु० साहु, साउ; म० साव, साउ; का० साबु] १३. ६४; साधय = साध १८. ३२; साध=श्रद्धा २२. ४०.
साधे—साधे हुए १०. ४३, ८२, ११७; साधने से २३. ३४.
साधेउ—साधा १०. ८४.
सानि—शाण = सान, छुरी आदि पैनाने का [आ० फा० सान, अफसान, पाम, प-सान √koi-VWI p. 454] २. १०८.
सामा—श्याम; पा० साम १. १४.
सामुदरिक—सामुद्रिक = अङ्ग लक्षण से शुभाशुभ बताने वाला शास्त्र ६. ३.
सामी—स्वामी ८. २६.
सामुहा—संमुख १०. ८४.
सायर—सागर १५. १; २३. ६६.
सारंगनयनी—कमल के समान नेत्रों वाली २. ५६.
सारउ—सारिका, मैना; [ध्यान दो शर= घास विशेष, शर=विविध वर्णों वाली (√शॄ अथवा √श्ट=स्; √Kōro; तु० Lat. *caerulus* = गाढनीला VWI. p. 420)] २. ३५.
सारस—प्रसिद्ध जलपक्षी २.७०; २३.१४२.
सारा—सब १. ४६.
सारी—[शार, √शॄ, पासा; शारि = खिलाड़ी; शंस VWI. p. 410; Ind. Stud. 15, 418; MW. p. 1001, 1109] पासा २. ११०, १५७; साड़ी (√सृ, शरीर के चारों ओर जाने वाली) ४. ३३; २०. १३, २६; सवारी २०. ७०.
साल—[JB. 144; Kol-, तीर; संभवतः √श्ट से] शल्य = तीर २४. ६४, दुःख ७१.
साली—साल दी = पीड़ित की २४.१२८.
साँवँ—श्याम ७. ३०, ४५; ८. ५४; १०. २५, ६५, ८७.
साँवँभुअँगिनि-श्यामभुजङ्गिनी १०.१२३.
साँवँरि—श्यामली = काली ४. ४४.
सावकमुख—शावकमुख १४. १३.

साखी – साक्षी ४. ४२; ८. २१, ३२; १२. ३६; २५. १६१.

साग्र – [√शाक, शोक, शाङ्ख (शोङ्ख?) शाखा; गु॰ शाखा; Goth, hoka; Arm. tax, शाकल, शङ्कु; शङ्कि = बाड़ी; Slav. socha = छुरी; Slav. ch = Idg. kk, VWI. p. 335] शाखा १२. ६८.

साखो – साक्षी = दूत १०. ४६.

साज – सामान १. ४८; २५. १७५; सजन = तैयारी २४. ५.

साजइ – सज्जते, सज्जयति; सजेइ; हि॰ (सजना) साजना; पं॰ साजणा; सि॰ सिजिणाइणु; गु॰ सजवुं; म॰ साजवें; सि॰ सईनश; (गु॰ साजम = सज्ज, साज्म = शाकम) बनाता है १.४८.

साजउ – तैयार होओ १२. २१.

साजना – सजना १. १८.

साजा – सजा २. ११, १२८, १८३, १८५, १८६; ६. १; ६. २६; १०. २३; १६. ४१; २०. ४; २४. ८; २५. १०२, १२६, १७५; साज १. १०५; सजाया ७. ४१; २४. १६६; सजाकर ८. ११; सजाना = पूरा करना १२. १००; सजाना है २१. ४६.

साजि – सजाकर = बनाकर १. ११; १०. ११४, १२०; १२. ८, ११; २०. १७; २१. ४६; २४. ६.

साजी – सजाई १. ८२; ३. ११०.

साजु – साज १५. ७२.

साजू – साज (तैयारी) १. १८; २. १०; ७. ५७; ११. ३६; १३. १०; २४. ६; २५. २८.

साजे – सजाये २. ४१, ६२, १६२; २०. ६, ५६; २४. ११; सजे हुए २४.१४.

साटी – सार १५. ३०.

सात – [सप्त, Lat. septem; Goth. sibun = E seven] प्रा॰ पा॰ सत्त; का॰ सथ; उ॰, बं॰, हि॰ सात; पं॰ सत्त; सि॰ सत; गु॰, म॰ सात; ग्रे॰ हप्त; पह॰, आ॰ फा॰ हफ्त; बा॰ हुफ; ओस॰ अवत; ट॰ अव्द १. ७४; २. ४, १३, १८६, १६२; ३. १४; १३. ३०, ३०; २२. ६४; २३. ११६.

सातउ – सातों १.६, १००; २.८; १५.८.

साता – सप्त = सात २०. १०६.

साथ – सार्थ = सत्य = साथ (P. 253) १. १७६; ३. ७७; ४. ५६; ५. ४२; १२. ४१; १३. ५६; २०. ३४; २१. ३३, ४२; २३. ७२, १२८; २४. ११६, १४०.

साथा – सार्थ ४. १४, ४५, ५१; १०. १०८; ११. ३३; १२. ४१, १७; १६. १५; २२. ५; २५. ४६.

साथी – साथ देने वाला १३. ४७; १५. ३, ७६; २३. ३६; २४. १७.

साधू—साथ २३. ३५.
साध-साधता है ११.४०; साधा २३.१३४.
साधत—साधता १२. ३८.
साधना—सिद्धि २३. ३४.
साधब—साधोगे १२. २८.
साधहिँ—साधते हैं ३. ४८; २०. १०४.
साधा—सिद्ध किया १०. १०४; १६. १४; २३. १३५; श्रद्धा=साध= इच्छा १६. १६.
साधि—साधकर ३. ४४; श्रद्धा=इच्छा १५. ३०; साधने १५. ७६.
साधी—साधा है १०. ४१.
साधु—समीचीन [तु० हि० साहु साहू-कार, साउ (आदरणीय); पं० साऊ; सि० साहू; गु० साहु, साउ; म० साव, साउ; का० सावु] १३. ६४; साधय=साध १८. ३२; साध=श्रद्धा २२. ४०.
साधे—साधे हुए १०. ४३, ८२, ११७; साधने से २३. ३४.
साधेउ—साधा १०. ८४.
सानि—शाण=सान, छुरी आदि पैनाने का [आ० फा० सान, अफसान, पाम, प—सान √koi—VWI p. 454] २. १०८.
सामा—श्याम; पा० साम १. १४.
सामुदरिक—सामुद्रिक=अङ्ग लक्षण से शुभाशुभ बताने वाला शास्त्र ६. ३.
सामी—स्वामी ८. २६.
सामुहा—संमुख १०. ८४.
सायर—सागर १५. १; २३. ६६.
सारंगनयनी—कमल के समान नेत्रों वाली २. ५६.
सारउ—सारिका, मैना; [ध्यान दो शर= घास विशेष, शर=विविध वर्णों वाली (√शृ अथवा √स्तृ=स्तृ; √Kēro; तु० Lat. *caerulus* = गाढनीला VWI. p. 420)] २. ३५.
सारस—प्रसिद्ध जलपक्षी २.७०; २३.१४२.
सारा—सब १. ४६.
सारी—[शार, √शृ, पासा; शारि= खिलाड़ी; शंस VWI. p. 410; Ind. Stud. 15, 418; MW. p. 1001, 1109] पासा २. ११०, १५७; साड़ी (√स्तृ, शरीर के चारों ओर जाने वाली) ४. ३३; २०. १३, २६; सवारी २०. ७०.
साल—[JB. 144; Kel-, तीर; संभवतः √स्तृ से] शल्य=तीर २४. ६४, दुःख ७१.
साली—साल दी=पीड़ित की २४.१२८.
सावँ—श्याम ७. ३०, ४५; ८. ५४; १०. २५, ६५, ८७.
सावँभुअँगिनि-श्यामभुजङ्गिनी १०.१२३.
सावँरि—श्यामली=काली ४. ४४.
सावकमुख—शावकमुख १४. १३.

साय़ँ – श्याम १६. ४७.

सासनर – [√शास् = दिखाना; प्रा० शास्ति, शिष्ट; अवे० सास्ति=रखाता है; सं० शास्त्र, अवे० सास्त्र; सं० शिष्टि; अवे० साश्तन; Lat. *castus* = सं० शिष्ट] शास्त्र ३. ४०; २५. १४४.

सासु – श्वश्रू ४. १५, २२.

ससुर – [प्रा० श्वशुर; पा० ससुर; पं० सहुरा, सौहरा; सि० सहुरो; गु०, म० सासरा; अवे० श्वसुर; कु० खशर; सखुर, खस्धीर] श्वशुरालय = ससुराल ४. १३, १५, २४.

सादस – [√सह्, प्रा० सहसा क्रियाविशेषण] ६. ४; १३. ५६.

साहि – शाह १. ११४, १८८.

सिँगार – शृङ्गार २. १०५; ८. ३; ६. ५६; १०. १, २२, ११०; २०. ५, ६, ३१.

सिँगारू – शृङ्गार २. १६७, १२. ६०.

सिँघला – सिंहल = सिंहल २०. ६५.

सिँघासन – सिंहासन १०.११६;२०.१३१.

सिख – सींगा = सिखा २३. ११८.

सिउ – शिव ७. ४१; २५. ६५.

सिउलोक – शिवलोक २. ६६; ३.८,१२.

सिउलोक – शिवलोक २२. ३१, ५६.

सिउमाल – शिव का मन्त्र ११. ६१.

सिख – [प्रा० शिक्षति; सिक्खइ; हि० सीखना, सीखणा; पं० सिखणा; सि० सिखणु; गु० शिखवुं; म० शिकवें, शिकवेँ] शिक्षा = सीख २५. ११०.

सिखर – [प्रा० हि० सेहरा; पं० सिहरा; का० शोरू; मा० सिहर; सं० शिखर = वर के सिर का मौर तथा पुष्पावतंस] शिखर २२. ५४.

सिखावन – शिक्षण=सिखावन ७. ११.

सिखावइ – शिक्षयति=सिखाता है १. १७.

सिखि – शिखा २३. ११.

सिखी – सीखी ७. ११.

सिखे – सीखे १.८५;२०.१०७;२३.१८१.

सिंग – शृङ्ग=सिंग, सींग; पं० सिंग; सि० सिङु; गु० शिंग; म० शिंग, शींग; का० हेंग; सि०' सिङु, सिगु, अङ्ग इत्यादि २०. ५६.

सिंगार – शृङ्गार २. १०५.

सिंगारहार – पुष्पविशेष २. ८४; ४. ६; २०. ५४.

सिंगिनाद – शृङ्गिनाद = सींग के बाजों का नाद १२. ८१.

सिंगी – शृङ्गी = हरिण के सींग का बाजा १२. ६५.

सिंघ – सिंह (P. 267, 405); प्रा० सींह; गाथा सीह; का० सुह; हि० सिंघ, सिंह, सींह १. ६१, ११७, १०३; १०. १४४; १३. ४६; १८. ६, ११, १७; २१. ११, १२; २४. ६, ११०.

सिंघमुख – सिंहमुख १६. ३६.

सिंघल – सिंहल २. ६७, १६५; ८. १४, ३५; ६. १३; ११. ३६; १२. ६६; १३. २७; १६. १२; २३. ३.

सिंघलगढ – सिंहल का किला २. १२१; २०. ११३; २२. ६४.

सिंघलदीप – सिंहलद्वीप १. १८६; २. ८, २००; ३. ३, ८, २३, २८; ६. ७; ७. १; ८. ६; ६. १०, २५; १२. ४०; १३. १५, २३; १५. ५०; १६. २८; २०. ३.

सिंघलदीपी – सिंहलद्वीपीय = सिंहल-द्वीप के २. ६८; ७. ४३; १०. ६३.

सिंघलदीपु – सिंहलद्वीप २२. ७२.

सिंघलनगर – सिंहलपुरी २. ८६.

सिंघलपूरी – सिंहलपुरी २५. १, १६७.

सिंघलरानी – सिंहलराज्ञी २०. ६५.

सिंघला – सिंहले १०. ६५; २२. ११.

सिंघली – सिंहल के २. १३, १५६, १६२, १६५; ७. ४२; २३. २८, ३६; २४. १२.

सिंह – शेर २. १३२.

सिर्ते – तें = से १५. ६१.

सिदिक – सिद्दीक १. ६०.

सिद्दीक – सिद्दीक १. ६०.

सिद्धन्ह – सिद्धों ने १. १७३.

सिद्धहि – सिद्ध के २२. ४२, ४३.

सिद्धि – [तु० सिध्यते; सिज्झइ; हिं० सिझ, सीझ; पं० सिज्झ; म० शिजणें, शिझणें = पकना, तु० स्विद्यते; पा० सिज्जति] १. १५६, १७३; २. ४७; ६. ७; १२. ५, ८; २०. ६१; २२. ४१, ४२, ४८, ६०; २४. १, २, ३, ४, ७, ८, २८, ३२, ४३, १४५, १५५; २५. १०४; सिद्धि १३. ५६.

सिद्धि – साधना ११. ४०; १६. ११; १६. ७२; २२. ४४; २३. १, १७८; २४. १४४.

सिद्धिगोटिका – सिद्धिगुटिका २३. १.

सिध – सिद्ध १२. ६; २१. ४६; २४. २५.

सिधाईँ – सिधारी (सिधु गत्याम्) २०. ६१.

सिधाई – गई २३. ८७.

सिधारा – गया २४. ६८.

सिधावउँ – जाऊँ १३. १५.

सिधि – सिद्धि ६. ४; १२. ५०; १५. ७३; १६. २६; २३. २.

सिधिसाधक – सिद्धिसाधक = अष्टसिद्धि के साधने वाले २. ४८.

सिर – [√Kor – शिरस्; Arm. *sar* = ऊंचाई; Lat. *cerebrum*; Ohg. *hirni* = दिमाग] शिरस्; सिर, सि० सिरु; म० शिर, शीर; अवे० सरो; पह०, आ० फा० सर; वा०, संग०, मि० सर; अफ०, बलू०, कु०, ओस्से० सर १. १२६; २. १६, २५, ६३, ८८, १३३, १७३; ७. ७२; ६. ४१, ५३; १०. ७८, ६४,

सुखुमना—सुषुम्ना=नासिका के दोनों स्वर २३. १४७.

सुगँध—सुगन्ध १. १६४; २. १८२; ६. १३.

सुगँधबकाउरि—सुगन्धबकावली=गुल-बकावली २. ८३.

सुगंध—सुराबू २. ६, ८८; ८. १५; ६. १२, २२, २८; १०. ५३, १५२; २०. १२, २८.

सुगुरु—श्रेष्ठ गुरु १. १६०.

सुजानू—सुज्ञान=जानकार ३. ६२.

सुठि—सुष्ठु=उत्तम (शुरठु=सुष्ठु; सुट्ठु P. 303) ७. ६, ८, ३०; ८. ४०; १२. ६३, ८४; २२. ६८; २३. ३३, ६४, ७२, ७८, ७६; २४. ६४, १२५.

सुदइबच्छ—सुदेववत्स २३. १३२.

सुदरसन—सुदर्शन पुष्प २. ८६; ४. ४; २०; ५२.

सुदिगंबर—जिनका दिशा ही वस्त्र हो=परमहंस, नागे आदि २. ४६.

सुदिसिटि—सुदृष्टि १७. ८.

सुधि—शोध=सुध=खयाल=खबर २०. १०१; २१. १; २२. ६०; २३. १००.

सुनइ—सुनना ७. ७२; १०. ७६; २४. १०५.

सुनउँ—सुनूं १. ६७; २३. १२०; २५. १६.

सुनत—शृण्वन्=सुनते [Klou-, सुनना; Lat. *inclutus*; अवे० सुरुनओइति सुत; सं० श्रोत्र=अवे० सओश्र=गीत; Goth. *hliuma*=श्रवण; अवे० सओमन=वै० श्रोमत VWI. p. 494] ३. ४०, ५६; ७. ४८; ८. १६; १०. ७३; १४. ६; २३. ४१; २४. ६७, ६६.

सुनतहि—सुनते ही ११. १; २३. ७६.

सुनव—सुनेगा १२. ८६.

सुनहु—सुनो १३. १३; २२. २०; २५. ३६, १०६.

सुना—सुनइ का भूत १. ६०, १८८; २. १०; ३. ३३, ५७; ५. ११; २०. १०५; २३. ७६, १७७; २५. १२२, १३७, १४१; सुनता है ७. ५४.

सुनाई—सुनावइ का भूत २५. ४५.

सुनाउ—श्रावय=सुनाओ ३. ५८; १२. ३३.

सुनावत—सुनाता २३. ७२.

सुनावहिँ—सुनाते हैं १. ६५.

सुनावहु—सुनाओ ७. २३.

सुनावा—सुनाया २३. १५४.

सुनि—सुनकर १. ६६, १८४; २. १०७, १५२; ३. ५६; ५. ४६; ७. ३३, ४०; ८. १८, ४१; १०. ७५; ६. १७, २१, ३३; १०. २४; ११. ४६; १२. ५२; १३. १०, १७; १४. १६, २५, ३३, ३५, ४६; २०. ६७, १२२; २१. ५६; २२. १२, ४१; २३. २५, ७६, १६१; २४. ६, १५३; २५. २६, ३७, ४७, ६२, ६६.

सुनी—सुनइ का भूत, स्त्री० १. ६२,

७. ७१; ६. ३५, ३६; १०. १२, १८, ६१, ६६, १५८; ११. १; १४. १५; १६. २०; १८. ३१; २०. १२५, १३४; २३. ७४; २४. ५६, १३७, १३८; २५. ६२, १६६.

सुरूप—सुन्दर रूप १. १२७; २. १६५, १६६; ३. २८; ६. १३; २२. १६.

सुलक्खने̐—सुलक्षण २३. १६०.

सुलगाइ—सुलगाता है ११. ५४.

सुलगि—सुलग कर १६. ४७.

सुलतानू—सुलतान १. ६७, १८७.

सुलतान—नाम १. १३६.

सुलेमाँ—सुलेमान=एक यहूदी बादशाह १. १०२.

सुहेला—सहेला=सहल=सरल १६. ८.

सूँड—शुण्ड; पा० सोण्डा; हि० सूँड; पं०, बं० सुंड; सि० सुंढि; गु० सुंद; म० सोंढ २५. ११०.

सूआ—शुक=सुआ=सूआ ३. ५८; ८. ४०, ४२; ६. १; १०. ५०; १८. ३६; १६. २, ६०; २३. ५२, ७१.

सूक—शुक्रग्रह १.१६३;१०.५०;२५.६८.

सूख—शुष्क; प्रा० सुक्ख, सुक्क; पा० सुक्ख; का० होख; हि० सूखा, (P. 302) सुक्का; पं० सुक्खा, सुक्का; गु० सूखो; म० सुखा, सुका; अवे० हुश्क; प्रा० फा० उश्क; पह०, आ० फा० खुश्क; का० उश्क; बा० वस्क; अफ० वुच; बलू० हुशघ २३. ८०.

सूखि—सूख ५. ११; २४. ६०.

सूखी—सूखइ का भूत २१. ४.

सूझ—शुध्यते=सूझता है ५. ५२; ८. २७; २०.१०४; २३.१७१; २५.३५.

सूझइ—[√शुध्=*K̆eu (प्रकाशित होना) *K̆u-dh; शुन्धति, (धोता है) शुध्यति (धुलता है) णिजन्त शोधयति (अवे० सुद्); K̆eu-bh-; शोभते, शुभ्र, शोभन, शुभ्र=Arm. surb (पवित्र) VWI. p. 386] शुध्यते=सूझता है २. ६५; ५. ५३.

सूझा—सूझइ का भूत १. १६३; १०. ८५; ११. ५१; १३. ४४; १६. ३८.

सूझि—सूझ १. ८४; ६. ४०.

सूझु—सूझता ७. ५.

सूत—सूत्र; पं०, हि०, बं०, उ०, म० सूत; सि० सुट; गु० सुतर; सिं० सुत; नापने का मान (दो सूत का एक पैन और चार पैन का एक इंच) १०.४७; १२.३७; १८.५१; २५.२२.

सूतहिँ—सूत ही १०. ४७.

सूतहि—सूत २५. २२.

सूती—[शेते; अवे० सएते √Koi; शया =शय्या, शान, श्मशान; शेव=प्रेम करना इत्यादि VWI. p. 359] शेते=सूतइ का भूत २०. १२२.

सूधी—शुद्ध; हि० सुध, सुद्ध; पं० सुद्ध,

सुद्दा; सि० सुधि; गु० सूंडं; म० सुदा, सुधा, सि० सुडु, डुडु; का० सोद् ८. ४४.

सून–[√Ṡeu, शिव, श्वयते, शवस (शक्ति); शवीर (=शववीर=शक्ति); शून= फूला हुआ (फूली हुई वस्तु भीतर से रिक्त होती है इसलिये शून का अर्थ शून्य अर्थात् रिक्त); Arm. sin (रिक्त), sor (छिद्र, फा० सूराख); sod (छिद्र); Lat. cavus (रिक्त), caverna (छिद्र); दे० VWI. pp. 365–367] शून, शून्य=सुञ्ञ, सुण्ण, सुन्न, सूना; म० सुना; गु० सूनुं; सि० सुञ; सि० सुन, ङुन २३. ५६.

सूना–शून्य ११. २२.

सूर–अफगानों की जाति विशेष १. ६६, १०५, १११; सूर्य (वै०, पा० सूर) १. १२५; २. १८८; ३. २१, ५८; ८. २८; ६. १२; १६. ४१, ४८, ५६; २०. १०६, १२५; २३. १२, १२६, १६१; २४. १२८; २५. २६, २०, १७१; शूर १५. ५८; २६. ५१.

सूरज–[वै० सूर्य; प्रा० सुवर् = प्रकाश, उजाला; आपू० *Sāuel, Lat. sol, Goth. sauil (सूर्य); Or. sūl (चक्षु)] सूर्य, पा० सुरिय २४. ६६; २५. १७, १२८.

सूरजयीं–सरजुओं का मुख्य १. १००.

सूरा–[√शू] शूर अवे० सूरो १. ६६; १५. १; सूर्य २. १२६.

सूरि–[वै० शूल; पा० सूल] शूली= फांसी ११. ४४.

सूरी–शूली २३. १८१, १८२, १८४; २४. ४५, ११४, १४७; २५. १, ५, १२, ४१, ६८.

सूरुज–सूर्य ३. १०; १६. ३१, १४; २०. १३१; २३. ६१.

सूरू–सूर्य ६. १७; २४. १०१; शूर २५. ५.

सेँतब–समेटेंगी, इकट्ठा करेंगी २०.१६.

सेँति–सेंती=से १४. ६; २४. ३१.

सेँदुर–सिन्दूर=सेंदूर; आसा० सेंदुर, सिंदुर; बि० सेनुर; सि० सिंधुरु १०. ६, १०; २०. १४, २२, ६२, ७०, ७७; २३. ६७.

सेँदुरलोह–सिन्दूर धूलि २०. ६४.

सेँदूरा–शार्दूल १३. ४६.

सेँदूरू–सिन्दूर १०. १५.

सेँधा–सेँध ११. ४७.

सेँधि–सेंध २२. ६२, ६३, ७१; २३. ४, १७६, १७८, १८०, १८४; २५. ५८.

सेइअ–सेवा करिये १६. १७.

सेई–सेवा करके २३. ११६.

सेउ–सेवक २. ७६; सेवा १८. ४०.

सेपई–सेवा की २२. ११.

सेब–सेव १. १४५, १४०, १५४, १७१.

१, २०, २७, ३०, ४२, १०६, ११५, १४१; २५. २०, २३, १३३, १३८, १५१, १७५.

सोउ—वह भी १. ११४, १३५; २१. ८; २५. ७०.

सोऊ—वह भी १०. १८.

सोग—शोक (√शुच्; तु० सश्रोक) ५. ८.

सोच—[Konk-शुच्=प्रकाशित होना, शोचना; तु० शोचति, शुच्यति, शोक (दुःख), शुचि (चमकदार= पवित्र); शुक्र=तेजस्वी; शुक्लि; अवे० सश्रोचत (=ज्वलन्); श्रा० फा० सोख्तन (ज्वल्); सोग=शोक; अवे० सुख़्र; श्रा० फा० सुर्ख़=रक्त VWI, p. 378] चिन्ता १९. १६; २४. ३८.

सोचू—सोच ३. ७८.

सोत—स्रोत २०. १०६; २३. ८६.

सोतहि—स्रोत से २३. ८६.

सोती—सोत १०. १४.

सोधा—शुद्ध किया २५. २२.

सोन—सुवर्ण; का० सोन; उ० सुना, सोना; हि०, पं० सोना; सि० सोंनु; गु० सोनु; म० सोनें १. ११६; शोण पुष्प २. ७१, १००; ८. ४०;

सोनइ—सोने के २. १५४, १८५; ३. ८; ८. १६; १६. १४, ४३; १९. २१.

सोना—सुवर्ण ३. ३६; ८. ६; शयन ७. ३६.

सोनार—सुवर्णकार>सोण्णार*सोवण्णार= सुवण्णार = सुवर्णकार (KZ. 34, 573); व=उ=ओ, यथा अंसोत्थ, अस्सोत्थ, आसोत्थ=अश्वत्थ (P.74, 152; H. 72) अ+आ=आ, अंधार= अन्धकार; कंसाल=कांस्यताल (P. 167; विस्तार के लिये देखो P. 66) ८. ५५.

सोनारि—सुनारिन २०. २१.

सोनिजरद—पुष्प विशेष २. ८५; ४. ६; २०. ५२.

सोने—सुवर्ण २. ५५.

सोभा—शोभा १०. ५४, १५३, १५८; १९. ३७.

सोभाओन-स्वभावेन=स्वभाव से १०.७०

सोरह—षोडश; प्रा० सोळह; पा०सोळस; सोरस; उ० सोहळ; वि० सोरह; हि० सोलह; ब्रज० सोरह; पं० सोलां; सि० सोरहं; गु० सोळ; म० सोळा; सिं० सोलस २. १२, १६४; १२. ५२, ६६; १९. २६.

सोहइ—*शोभति; पै० प्रा०सोभति; पा० सोभति १०. १०४, १४६.

सोहराई—[रा० च० सहराई]=सुहराती थीं; कण्डूयन करती थीं १२. ५३.

सोहा—शोभित हुआ ३. ४५.

सोहाइ – शोभित होते हैं २. ६०; सुहाती थी २०. २.

सोहाइँ – शोभायमान २०. ६१.

सोहाई – शोभित २. २०, ७७; २१. ३.

सोहाए – शोभित हुए १. ३१; २. २५.

सोहाग – सौभाग्य = (सुहव = सुभग P. 231) ८. ५०, ६१; १०. १६; २०. ११, ११६,

सोहागहि – सोहागे से ३. ३६.

सोहागा – (सुभाग्य=सुहागा) २३. १२२.

सोहागू – सौभाग्य ८. ५६; सोहागा १६. २१.

सोहाती – शोभायमान २०. २१.

सोहावन – शोभायमान = सुहावना २. ३६; ७. ४६.

सोहाया – शोभित २. ८६; ७. १७, ४४; १०. १२१; १५. ७८.

स्यावँ – [Arm. sev (अन्धकार, काला) Russ. sinyj, Serb. sie, Ags. heofon (नीला) = E. heaven; Goth. skeinan = E. shine] श्याम, श्यामक, अवे॰ श्यामक = पर्वत विशेष, साम = काला; (इस पर Bartholomae, Grdr. d. Iran. Phil. I. 37); सं॰ श्याव; अवे॰ श्याव; पह॰ सियाह, सियाह; फा॰ फा॰ सियाह; बा॰ सू; ओसे॰ सव २३. १०६, ११०.

स्यावँ – श्याम २३. ७०.

स्रवन – श्रवण १. ६०, ६७; ७. ५४; १०. ८६, ६६; १२. ६; २५. ११५.

ह.

हँकारि – अहंकृत्य = अहंकार करके ५. ५१; ६. ४८; हंकार करके = पुकार कर ११. २०.

हँकारी – पुकारी ८. १०; २०. ३, १२२.

हँकारेसि – पुकारा २३. ५२.

हँसइ – हँसती है; हसति; हसइ, हास; हि॰ हँस–; पं॰ हस्स–; सि॰ हास–; गु॰ हस–; म॰ हसणें, हँसणें; सिं॰ हस–; का॰ असु २४. ५७.

हँसत – हँसते ८. ४; १०. ७२; २०. १२१.

हँसतामुखी – प्रसन्न वदन २. ६१.

हँसनि – हँसती हुई ४. ६४.

हँसहिँ – हँसते हैं १५. ७८.

हँसा – हँसइ का भूत १. १८४; ८. ६; २०. ८५; २५. ५, ८, १२, ४७.

हँसि – हँस, हँसकर २. १०६; ११. ४, ६; २०, ४०; २२. ३३; २५. ३६, १४३.

हँसी – हँसइ का भूत १०. ७०; हास्य २४. ५८; २५. ११०.

हँसे – हँस दिये १५. ६.

३६, २७; २४. ४५, ४६; २५. ११०, ११२, ११६.

हसतिन्ह २. १६८; २५. ११४.

हसती २. १३, १६६; २२. ३.

हहिँ ७. ४३; ६. १३; १२. ८४, ६६; १५. १६; २४. १८; २५. ४८, ११३.

हहु ७. २३; २३. १३, १४.

हाँका—हांका=हुङ्कार=प्रवार २१. ५८.

हाँका—हक्कयति; हपाइ; हि०, गु०, बं० हाँक—; पं० हक्क—; म० हाँकणें, हाकणें, हकणें १२. ८६; १५. ६७; २०. ११३.

हाँसुल—कुमैत, हिनाई घोड़ा, मेहदी के रंग का, जिसके पैर कुछ काले हों २. १७०.

हा—हा हा ११. १८.

हाजी—शेख हाजी १. १४५.

हाट—[तु० हाटक=सुवर्ण; हरि के साथ संबद्ध; Goth. *gulth* = E. *gold*] सं०, प्रा० हट्ट; हि० हाट; पं० हट्ट, हाट; सि० हट्ठ; गु० हाट; म० हट, हाट; बं० हट, हाट; का० अठ २. ६८, १०३, १०५, १२०; ७. ५, २७.

हाटा—हट्ट=बाजार २. ६७; ७. १०, २८.

हाटि—हाट में ७. १८; ८. २२.

हाड—अस्थि; अट्टि; "हड्डम् अस्थि" (दे० 193, 13); हि०, गु०, म० हाड; सि० हड्ड; पं०, बं० हाड, हड्ड; का० अडिजु; सिं० अट १५. ३७; २३. ११०; २५. २३.

हाडहि—हाड को २५. २३.

हातिम—मुसलमानों में विख्यात दानी १. १३०; १३. ५४.

हाथ—[Ghasto; वै० हस्त, अवे० ज़स्त; आ० फा० दस्त] प्रा०, पा० हत्थ; आ० हाथ; का० अथ; उ० हात; बं० हात; पं० हत्थ; सि० हथु; म० हात; सिं० अत १. ४०, १०२, १२०, १३७; २. १०७, १११; ४. ५६; ५. ३७; १०. १२०, १५६; ११. २४, २६, ४८; १२. ३६; १३. २३, ३२, ५६; १५. १२; १८. २८; १६. १३, ३६; २०. २४, ४७, ५६; २१. ८, ३२; २२. ७२; २३. ११, ३०, ७२, १२८, १३६; २४. ७७, १३०; २५. ५०, ५३, ५७, ७८, ८२, ८७.

हाथा—हस्त; ज़स्त; छि दोस्त=हाथ ४. १४, ४५, ५१; १०. १०८; ११. २३; १२. ४३, ६७; १६. १५; २२. ५; २५. ४६.

हाथी—हस्ती=हत्थी; हि०, पं०, गु०, सि० हाथी; बं०, उ० हाती; का० होस्तु; सिं० अता; म० हत्ती १. १४३; २३. ३६; २४. १७.

हाथू—हाथ १६. ११; २३. ३५.

हानी—[√हा; *Ghe (i) और Ghi =

शून्य होना (सं॰विहायस्=आकाश), सं॰ जिहीते=प्रस्थान करना; Ohg. gen, gân; Ags. gan-go (हानि); Goth gaibla] हानि, हान; पं॰ हाण; मि॰ हाणि; का॰ हानि (मु॰ हि॰ तेरी होथी आयाई=मुसीबत आयाई) ७. १२.

हार—माला ४. ४३, पराजय ४.४५,५१, ५५,६१; ७.६८;१०.१०४; २०.५६.

हारा—हार, दीनता २. ३८; पराजित हुआ ४. ४३; माला ४. ५०; हार गया २५. १०१.

हारि—हारते हैं २. १११; हार कर १०. १४४; २४. ८६.

हारिल—तोते जैसा, हरे रंग का पक्षी, जो पृथ्वी पर नहीं उतरता और वह पीपल तथा पाकर पर रहता है २. १८.

हारी—हार गई ८. ५०; २३. १५; हार २३. ४५.

हारू—हार ४. ५३; १२. ६०.

हारे—हार गये ३. ४७,८.७२; १०.१०१.

हालि—"हल्लिअं चलितम्" (दे॰ 191, 16) "हल्लप्फलिअं शीघ्रार्थम्" (३०३, 13); हि॰ हलना, हालना; पं॰ हल्लणा; मि॰ हलणु; गु॰ हालवुं; म॰ हालणें (JB. 47); हिलती है २. ११८.

हाले—हिले २४. १२.

हिँ—ही २४. ५६.

हिँडोरी—हिंडोला ४. १७.

हिँडोल—हिन्दोल; हिँडोला; मि॰ हिँडोरो; गु॰ हिँडोलो; म॰ हिंडुँला, हिंडोला; पं॰ हेँडला; सिं॰ इडोलु ५. ४०.

हि—ही १. १०४.

हिअ—[वै॰हृदय, हृद्; और श्रवे॰ करेदा शब्द Lat. haru (आंत) के साथ संबद्ध देखो KZ. XL. 419)] हृदय, हिअअ, हियय (P. 250); वै॰ प्रा॰ हितयक पा॰ हृदय; श्र॰, ड॰, मि॰ हिया; हि॰ हिया, हिरदा; पं॰ हियों, हिऊँ; मि॰ हिँआउँ; म॰ हिय्या, हियें १. ६०, १८०; २. ११८; ३. ४६; ७. ६८; ८. ३०, ७०; १०. ८६, १४१; ११. ५१; १३. ३४; १४. २३; १५. ७४; १८. १२, २७, ४४, ५३, १०७; २३. ८६; २४. १२, १५, ५२, ८६, १००, ११३.

हिअईं—हृदय (ने, से, में) २. ११८; १८. ५०; ११. १, ६, ७, ४५; २४. १८, ८१; २५. ४, ७७.

हिअइ—(ने, से, में) १. ११८; ३. ६, ६३, ६५, ७५, ७८, ४. ३३; ५. २६; ८. ११, २५, ४१; ६. ७, २४; १०. ११६; १३. ५, ४५; १५. १,

परिशिष्ट

	सूची पृष्ठ संख्या
अहार = अराब = आड़े = तुर्कीबे	७
अधारी = आधार = "गुलगुल के मट्टे के आकार का एक ढांचा जिसके सहारे साधु बैठते हैं"	७
उपाई = उत्पन्न; उभइ = उठती है	२१
कचउरी = कटोरे	२५
करसी = करीष (उपलों की आग में शरीर को सिझाना तप समझा जाता था)	३१
किलकिला = "जल के ऊपर मछली के लिये मँडराने वाला एक जलपक्षी"	४४
कुरआर = खोदकर	४६
गँडयानी = खाँड का रस	५२
गरिहाना = ढेर लगाती हैं	५४
गाजू = गोत्र "गुरु का चिन्ह"	५८
घाद = लचर	७७
ताँयर = घी	१११
पानि = पाव (१. १७.)	१५६
बिरचि = चतुर होकर	१८४
बेर = बेग (Cn. बेधि)	१८६
मढ़ारे = मांदा (पाँयमढ़ारे = चिड़ियों के मांदे में)	२०२
सटा = "चोंच"	२२५
सीउ = शीत (१.६)	२४६

SELECTED BIBLIOGRAPHY.

Sir George Grierson. (A) Analysis of Padumāvati. JRASBe.

(B) The Padumāvati. Asiatic Society of Bengal, Calcutta, 1911.

Paṇḍit Rāmjasan Padamāvat, Benares.

Paṇḍit Bhagavān Dīn. Padamāvat. Allahabad, 1923

Paṇḍit Rāmacandra. Jaisi Granthāvalī, Indian Press, Allahabad, 1924.

Candrabalī Pāṇḍeya, पद्मावत की लिपि तथा रचनाकाल. Nāgarī Pracāriṇī Patrikā, Benares. Vol. XII. pp. 101-145.

जायसी का जीवन वृत्त Nāgarī Pracāriṇī. Vol. XIV. Part IV. pp. 383-419.

M. M. Gaurī Śaṅkara Hīrāchand Ojhā. पद्मावत का सिंहल दीप Nāgarī Pracāriṇī Patrikā, Benares. Vol. XIII, pp. 13-16.

Lālā Sītā Rām. Malik Mohammad Jaisi, Allahabad University Studies Vol. VI. Part I. pp. 323-347.

Pītāmbara Datta Baḍathvāl. पद्मावत की कहानी और जायसी का अध्यात्मवाद Dvivedī Abhinandana Grantha, pp. 395-401.

OTHER WORKS BY THE SAME AUTHOR

A History of Hindi literature, with a critical study of the Major Poets. It clearly explains the contribution of Hindi to Word literature and gives a full and detailed survey of literary tendencies and movements, an account of development of literary forms, a narrative of the origin of the language and a consideration of foreign influences both on language and literature. Rs. 3—12—0

Ṛktantra, a Prātiśākhya of the Sāmaveda, critically edited with an introduction, exhaustive notes, appendices, a commentary and Sāmvedasarvānukramaṇi. The notes contain a detailed comparison with the other Prātiśākhyas and Pāṇini. Rs. 20—0—0

(Vol. IIIrd. of Mehar Chand Lachhman Das Sanskrit and Prakrit Series)

IN PRESS

Kaṭha Brāhmaṇa. The Brāhmaṇa fragments printed by L. Von Schroeder and Caland have been improved upon with the help of new Mss. and several new Brāhmaṇas added with an introduction, notes and appendices.

Etymological Word-index of Tulasī Rāmāyaṇa.

(Punjab University Oriental Publication)

SHORTLY TO BE PUBLISHED

Atharva Prātiśākhya, with commentary critically edited with an introduction, exhaustive notes, appendices etc.

Publishers:—

M/S. MEHAR CHAND LACHHMAN DAS

Oriental Booksellers, Publishers & Printers

LAHORE (India)

कंचनपुर–कञ्चनपुर २३. १३१.

कंचनरेख–सुवर्णरेखा १०. ११.

कटक–कटक–दल–सेना–समूह २. ११; १२. ७२; १३. ११, १६; १५. ५७, ५८, २४. १७; २५. १२.

कटहरि–कटफल–कण्टकिफल–कटहर–कटहल २०. ४२.

कटाउ–(√कृत्–कर्त्–कट्ट) कटाव–काट काट कर अनेक फूल पत्तों की रचना २. ६६, १८६.

कटाछु–कटाक्ष–कडक्स–कनखियाँ (कट+अक्षि–टेढ़ी दृष्टि) २. १०६; १०. ८५.

कटार–कट्टार–काटने वाला अस्त्र, सि० कटारो; दे० कट्टारी छुरिका २५. ८२.

कटारी–कटार २. ६२; २५. ५०.

कठिन–कठिन; म० कठीण, कठीण, गु० कठण; सि० कठनु, ५. १६; ७. ४, ६. ४१, ५०, ११. ७, २८, ३३, ३६, ४३; १३. १५, ४१, १५. ३५; १८. ३०, ३९; १९. २६; २४. ६७, १०५.

कठोर–कठोर–कठिन १०. ५२.

कडुइ–कटु–कडुई–कड़वी; म० कडू; गु० कडू, सि० कड़ो; सि० कुरु २५.१२६.

कंठ–कंठा–(√कठि गतौ "केचित्तु इदितं मत्वा तुमि कुण्ठे कण्ठतीत्यादि वद-न्ति" सि० कौ० स्वा० ग० पृ० ४२६) सि० कंठी, पं० कंठा; सि० कड़ुब, छि० कघो<कण्ठ; १०. ११५.

कंठ–गला; सि० कंठु; सि० कट १. ६८; ७. ३०, ३१, ४५; ६. ४७; १०. १०४; १२. ६; १६. ३; २३. ५५, ७४, १०६, १०६.

कंठह–कण्ठे–गले में २२. ३.

कत–कुतः–अप० कहाम–क्यों १८. ३८.

कतहुँ–कहीं पर २. ११७, ११६; ८. १; १३. ३८; २०. ७८, ११२.

कतहूँ–कहीं पर २. ११५, ११६, ११८.

कदम–कदम्ब–कर्लंब–कदम २. ८१; ४. ७; २०. ५४.

कदलिखंभ–केले का खंभा–कयलि–कदलि (द–इ–अ P. 245) १०. १०६.

कथा–कहानी १. ८, १५६, १८५; २. ११६; ३. ३; ७. ७१; २०. १२२; २३. ७६.

कथे–कथन से–कहने से ११. ४१.

कनइ–कण की; कणिका–अन्न की कनी। तु० म० कणी, कण (अन्न का दाना); गु० कण, कणी, कणु; सि० कणी, कणि; हि० कन १६. ११.

कनक–सुवर्ण २. ५५, ६८, १०६; ३. ४६; ६. १२, १६; १०. १६, २२, ८६; २३. १२१; २५. ६६, ११६.

कनककलस–सोने के कलसे २. ६१.

कनकदंड–सुवर्णदण्ड–सोने का डण्डा १०. १०५.

कनकपानि—सोने का पानी (—जवानी की पाए) १८. ३८.
कनकसिला—सोने की शिला २. १३५.
कनहारा—कर्णधार—पतवार को पकड़ने वाला १. १४२.
कनिश्रा—कन्या ३. ६, १६; कन्याराशि ३. २०.
कनिक—कनक—सोना १०. ११३.
कंत—कांत—पति-(√कम्-√चन्; ह्रस्वत्व के लिये देखो P. 83) ८. १३, ३०, ४८, ६३, ६६; १२. ४१; १८. ८.
कंथा—कथरी (तु० Lat. *centon*; O. H. G. *hadara*; Germ. *hader*) ११. ४५; १२. ३०, ६४; १३. ५८; २३. ६०, १६७.
कंसासुर—कंस—कृष्ण का विरोधी असुर १०. २८.
कंसू—कंस २५. ५१.
कपूर—कर्पूर—कप्पुर; सिं० कुपुर०; गु०, सि; पं, हि०, बं, ओ० कपूर; फा०—काफ़ूर २. ५०, १०२, ११४, १८२, १८७.
कपूरू—कर्पूर २. १४६.
कपोल—कवोल—गाल २. १०६; १०. ८३, ८८.
कपोला—कपोल १०. ८१.
कब—कदा ११. २२; २३. ५६; २४. ७६.
कबहुँ—कभी ३. ८०; ८. १७; १६. ३.
कवि—कवि—कइ [√कू-√स्कू; तु० पह० कई; फा० कई Lat. *cav-ere* (—सावधान होना); Germ. *schauen*; As. *sceawian* (—देखना); Eng. *show*] १. १५६, १६१, १६६, १७७ १८५, १६०; ७. ४७; १२. ८०.
कवितन्ह—कवित्त—कवित्त बनाने वाले कवि १. १७६.
कविलास—कैलास—कइलास अथवा केलास—(तु० वइर वैर; कइरव—कैरव; P. 61) शिवपुरी—इन्द्रपुरी २. १३, १७, ६०; १५. ५६; २०. ६७; २१. ३६; २२. २४, २६.
कविलासा—कैलास २. १४८; २२. २८.
कविलासू—कैलास पर्वत १. २; २. १८५, १६३; ३. ११; ६. २५; १३. ६३; १६. १२.
कमरख—फलविशेष २. ७८; २०. ४४.
कमावा—(कर्म—कम्म—काम; सि० कमु; सिं० कम;) कमाया २४. १३६.
कया—काया—काय-शरीर (√चिञ् चयने) १. ७२, १८४; ३. ७३; १२. ८, ११; १३. ३, ५८; २०. १२०; २१. ४१; २२. २, ६०; २३. ५१, ५६, ७८, १११, १५८, १६१; २४. १३५, १४८, १४६; २५. २०, १६०.
कयापिंजर—शरीर का पिंजर २५. १४.
कर—का (तु० कृत—केर, केरि अथवा केरा,

THE
PADUMĀVATI

PUNJAB UNIVERSITY
ORIENTAL PUBLICATION

NO. 25

First Edition 500 Copies

Printed by

KHAZANCHI RAM JAIN AT THE MANOHAR ELECTRIC PRESS
SAID MITHA BAZAR, LAHORE
INDIA

THE PADUMĀVATI

OF

MALIK MOHAMMAD JAISI

EDITED WITH AN ETYMOLOGICAL WORD-INDEX

BY

Vidyābhāskara, Vedāntaratna, Vyākaraṇatīrtha,

SURYA KANTA SHASTRI, M.A., M.O.L.

Professor, D. A. V. College

LAHORE

WITH A FOREWORD BY

THE HON'BLE MR. JUSTICE TEK CHAND M. A., LL. B.

High Court of Judicature, Lahore.

VOL. I

TEXT AND WORD-INDEX

CANTOS I—XXV.

PUBLISHED BY

THE UNIVERSITY OF THE PUNJAB

LAHORE

1934.

TO

HIS EXCELLENCY

SIR HERBERT WILLIAM EMERSON

K. C. S. I., C. I. E., C. B. E., I. C. S.

GOVERNOR OF THE PUNJAB

AND

CHANCELLOR OF THE UNIVERSITY

AS

A HUMBLE MARK OF

RESPECT AND ADMIRATION

By Kind Permission

पदुमावति

मलिक मोहम्मद जायसी

सम्पादक

विद्याभास्कर, वेदान्तरत्न, व्याकरणतीर्थ,

सूर्यकान्त शास्त्री, एम. ए., एम. ओ. एल.

प्रोफेसर डी. ए. वी. कालेज

लाहौर

प्राक्कथन—

ऑनरेबल मिस्टर जस्टिस टेकचन्द एम. ए., एल एल. बी.

हाई कोर्ट—लाहौर

प्रथम भाग

खण्ड १—२५

मूल तथा व्युत्पत्तिसहित शब्दकोष

प्रकाशक

पंजाब यूनिवर्सिटी, लाहौर

१९३४

CONTENTS.

FOREWORD.

I have great pleasure in writing this Foreword for the *Padumāvati* of Malik Mohammad Jaisi, which has been edited with an "Etymological Word-Index" by Professor Surya Kanta Shastri, M. A., M. O. L., *Vidyābhāskara*, *Vedāntaratna*, *Vyākaraṇatīrtha*, for the Punjab University Oriental Publication Series.

The story of Padumāvati, the renowned queen of Chitor, is one of the most glorious episodes in the history of India and has been told by many writers. There is hardly a Hindu home throughout the length and breadth of the country, where round the family hearth are not related the various incidents connected with the life of the great *sati:* her birth in the royal palace of Rājā Gandharva Sena of Ceylon; her romantic marriage with the Sisodia Chief Ratna Sena of Chitor; the perfidy of the Brahman Rāghava who carried tales of her beauty to Alā-ud-Dīn *Khilji*, Sultan of Delhi; the infatuation of the Emperor to get hold of her and his firm resolve to storm the invincible citadel of Chitor; the inevitable war between the Mussalmans and the Hindus; the remarkable discipline and organization of the Imperial army, and the wonderful feats of gallantry by the Rajputs in their attempt to defend the last vestiges of their supremacy and protect the honour of their women; the arrest of Ratna Sena, his incarceration in Delhi and his release secured by a bold and clever ruse on the part of his devoted and faithful adherents, Gorā and Bādal; the killing of Ratna Sena by the

treacherous Deva Pāla of Kambhalner; the self-immolation of the Queen on the funeral pyre of her husband; the fall of the Fort and the triumphal march of the Emperor into the palace –anxious to realize the dream of his life by meeting the Beauty of Chitor face to face–but disappointed to find her transformed into a heap of ashes!

Contemporary chronicles naturally contain full and detailed accounts of the principal events connected with the siege and fall of Chitor. The life-story of Padumāvati, however, has furnished a fascinating theme to the poet and the patriot, and numerous are the poems which have been composed and the songs which have been sung during the last six centuries, describing her unequalled beauty, her pious devotion to her husband, her supreme anxiety to protect and preserve her virtue, and her remarkable courage in performing *Jauhar* without pain or contrition. Of all these works, perhaps, the most remarkable is the poem composed in 1540 A. D., in the reign of Emperor Sher Shāh Sūri, by Malik Mohammad, a descendant of the well-known saint Nizam-ud-Din, and a resident of Jais in Oudh. A pious and devout Mussalman, belonging to the *Chishtiya Nizamiya* sect, well-versed in Islamic theology and tradition, he seems to have acquired an encyclopaedic knowledge of Hindu mythology and folklore and a firm grasp of the essentials of Hindu culture and religion. For this purpose he had devoted several years to the study of Sanskrit language with renowned Hindu Pandits, and as is clear from the poem itself, he had obtained complete mastery over Sanskrit prosody and rhetoric.

Equipped with such intimate knowledge of all that was the best and noblest in the literature of Islam and Hinduism, the poet approached the subject with the reverence of a devotee, and it is not surprising that he succeeded in producing a work, which is remarkable alike for placing before us a true and faithful account of the various incidents connected with the life-story

of Padumāvati from her birth and childhood in Ceylon to her death at Chitor, as for preaching the highest lessons of universal love, self-sacrifice and devotion to duty. Throughout the poem, whether he is describing the unsurpassable bodily charms of the heroine, or the manly vigour of her husband, or the might of the Emperor, there is to be found in all that he has written a touch of spiritualism. Towards the end of the poem, he has converted his story into a mystic allegory, taking the reader from the known into the unknown, the visible into the invisible, the shadow into the reality, and after describing the last act in Padumāvati's life and the pathetic scene of the victorious Emperor looking at the funeral pyre in the palace gates of Chitor, he asks the pertinent question:—"Where is now that Ratna Sena, and where that wisdom-bearing parrot ? Where is that Alāu'd-dīn, the Emperor, and where that Rāghava who told him tales ? Where is that lovely swan Padumāvati ? Naught of them hath remained, but their story. Happy is she whose fame is like unto hers. The flower may die, but its odour remaineth for ever !"

A poem of this kind, written by a devout Muslim saint, describing in its true perspective all that is best in Hindu culture and tradition, deserves to be widely read by the people of this country in these days of communal strife and bitterness, breathing as it does a refreshing air of toleration and evincing a keen desire to realize and appreciate the view-point of others.

While the original poem has got these remarkable characteristics, no less valuable is the Edition which Professor Surya Kanta has brought out. The text of the poem has been revised after a comparison of all available published versions and manuscripts and may be regarded as the most authoritative. The learned Editor has made an analytical study of the first half of the poem, giving the derivation of each word and showing its relation with kindred Indo-European and Indo-Iranian languages. This Edition, therefore, possesses great philological

value, affording as it does a clear view of the successive stages through which each word has passed, and giving an accurate idea of what the language of Northern India was in the sixteenth century. The Index at the end is particularly valuable, containing as it does, the Sanskrit and Prakrit equivalents of every word. The whole work discloses great industry and learning, and, I think, the authorities of the Punjab University as well as Professor Surya Kanta deserve to be congratulated on this useful publication.

Lahore, 25th June 1934.

TEK CHAND

PREFACE

I need hardly offer an apology for bringing out an edition of Padumāvati in this age of indiscriminate communalism; for this is a book in which a Muslim saint describes one of the most glorious episodes of Hindu chivalry in a highly poetic vein.

The story of the poem is simple. Ratansēn, the king of Chitōr hears from a talking parrot–that indispensable character in the romances of mediaeval India–of the great beauty of Padumāvati; whereupon he journeys to Ceylon as a mendicant and returns home winning Padumāvati as his bride. Alāuddīn, the sovereign at Delhi also hears of the celebrated beauty and endeavours to capture Chitor in order to gain possession of her. He is unsuccessful, but Ratan is taken prisoner and held as a hostage for her surrender. He is afterwards released from captivity through the bravery of Gorā and Bādal. He then attacks King Devapāla, who had made insulting proposals to Padumāvati during his imprisonment. Devapāla is slain, but Ratansēn, who had been mortally wounded, returns to Chitōr only to die. His two wives i. e. Padumāvati and Nāgamati follow their dead lord and burn themselves on the funeral pyre. While this is happening, Alāuddīn appears at the gates of Chitōr, and though the fort is bravely defended, he captures it.

Such is the bare outline of the story which the poet by his visionary imagination, has transformed into the transcendental theme of the journey of the soul after its beloved, God. As we read the venture of the love-sick mendicant to Laṅkā in quest of Padumāvati, we are irresistibly reminded of the famous pilgrimage of birds to Simurgh, so beautifully set forth by Attār in his Mantiqu'ṭ Tayr. For like Attār the Malik is a confirmed Sūfi and considers Chitōr as nothing but the Body of man, Ratan as the Soul, the parrot as the Guru, Padumāvati as Wisdom, Rāghava as Satan, and Alāuddin as Delusion. He thus carries us from the known into the unknown, from the visible into the invisible, from the tangible into the far off, dreamy, intangible, where matter and spirit are one, where body and soul are identical. The poem, thus, is a gigantic dream, a fairy tale set to music, where imagination is turned into reality and the commonplace is not. The tale of earthly Padumāvati may become old, as it, doubtless, has become in the mouth of others, but the Padumāvati of the Malik will never grow old, because, in reality, it has never lived the life of the earth.

Needless to say that the Malik is a great mystic; but it may be observed here that his mysticism, active and ennobling principle of life as it is, never reveals a sentiment against nature, a sentiment that leads to a fear of physical beauty and takes the fair flower of life as no more than a lump of clay, giving rise thereby to a morbid delight in its humiliation. To the Malik nature is not the enemy of the soul, because it is not, in essence, separate from the ultimate principle of life. He views the visible world as illusion, a dream in the flesh, a chimera of the mind, the shadow of the spirit. The dreamer, the soul, has no contempt for his dream, that is body-life; he on the other hand regards it with extreme tenderness and deep compassion. He delights in senses; he is gratified with the charm of the body; he is amused or touched by the humorous or pathetic aspects of the world; only this pleasure and amusement are pervaded by or shot with a gentle seriousness.

And it is because of this synthetic view of life, the holy and unholy blended into one, that our poet could offer us a true picture of love; love that thrives in the body and yet transcends it; love that feeds upon the senses and is yet of the intellect; love which we call spiritual, even though it is of the earth.

The Indian mind, as mirrored in the Sanskrit love-lyrics leaves no alternative between home and the monastery, between love and renunciation. An Indian by his temperament conceives love in its concrete variety and not in its broad and ideal aspects. To him love is no more than a sense-feeling—colour, taste, touch and sound - an earthly feeling, an expanse of surging billows on which the maddened men and women are tossed about. In such a conception of life the idea of a higher love on the earthly plane finds little room.

Not that this realistic view of love is foreign to our poet. He too is swayed by the impulse of physical love; he gives a highly erotic description of the bodily charm of Padumāvati and brilliantly sets forth the various modes, expressions and make-shifts of the human love. But beneath this exhuberance of sensuousness there flows a clear stream of spiritual experience, an under-current of love-divine that translates the sensuous into the spiritual and finally makes us spectators of the mighty love-drama of Puruṣa and Prakṛti. This non-conceptual, intuitive and ultimate experience, experience in which Padumāvati is Ratan and Ratan Padumāvati—the multiplicity of the varied notes of life reduced to one whole harmony—is the dominant note of the Poem.

This conception of life; this perception and realisation of the inner spring of life - animate and inanimate - lifts our poet above castes and creeds, dogmas and rites, forms and formalism, which appear to him no more than a feverish imagination of a blind man reasoning on colour. For him there is no religion but love, no observance but self-renunciation, no

formalism but self-abnegation at the feet of the beloved. In short, he views man as man and believes in universal brotherhood. There is, thus, a remarkable vein of religious toleration in the Poem, toleration which is the very basis of the modern culture.

Laudable efforts had been made by Amīr Khusro and Kabīr in the direction of inter-communal amity; with this object in view, the former tried to evolve a common vehicle of expression and the latter to demolish formalism, that had created barriers between man and man. Kabīr, on one side, waged a constant war against prevailing superstitions, rituals and litanies of all religions, on the other, he dived deep into the depths of God-love, and beheld nothing but God on all sides. This life-absorbing passion of Kabīr struck deeper roots in the Malik, and he, leaving aside the crude, destructive methods of Kabīr, pursued his constructive side with zest and zeal, and by singing the song of agonised love – the one universal sentiment – showed the unity of the heart of man and thus, ultimately, created sympathy among the Muslims for the tragic Hindu figures of Ratansēn and Padumāvati.

This sympathy, this idea of the unity of man, was further stressed by a long line of Hindu and Muslim poets, who with their soul-stirring appeals, succeeded in bringing about a happy blend of the two warring cultures, the one essentially subjective and ideal and the other objective and activistic.

Such then, in brief, is the peculiar message of the Malik, who influenced by the deep power of harmony "has seen into the life of things" and creates thereby in our mind a desire to escape from the fetters of this "too, too solid flesh", a longing to get something out of mundane existence and a firm faith in the abiding unity of life. Under this spiritual light (of unity) the Malik is seen moving on to his goal with a pessimism, which is not shallow, or outcome of a temporary

disaster, but the deep-seated indifference of the saint "who has kept vigil over man's mortality", who has drained to the dregs the cup of life's pleasures and found it bitter in the sequel. As he nears his goal, sounding his lonely protest in the uproar of atheism, awakening his fellow-mortals now in tones of poignant, sweet, melancholy, now in tones of anger, now soothing, plaintive and meditative, his pessimism turns into optimism, optimism that is not of the merry youth, unfamiliar with fret and fever, but the deliberate joy of an accomplished philosopher, who has seen with his eyes the mighty crash of the universe, a complete metamorphosis of all duality into the Oneness. It is here that the ultimate goal of the traveller lies, and here he cries halt to his weary march, becoming one with his beloved, "a flask of water broken in the sea".

As for the personality of this Saint, we know little. Mohammad was his name, and Malik his family title. He was a resident of Jais, where he is still known as the Malik. He was born in 830 (H.) in the 'Kañcanā Muhallā' of the town. His parents were of ordinary standing. Unattractive from childhood, he became hard of hearing and lost one eye by paralysis. He received no education and married a lady in Jais itself. He was blessed with children, who unfortunately died in his life-time. His brother's family yet continues. Saiyad Aśaraf was his *pīr* and he owed instruction to Sheikhs Mohidi, Burhān and others. He lived mainly on agriculture. In old age he renounced the world and travelled far and wide delivering his message of love. Now and then he visited courts, and at last settled in the dense forests of Ameṭhi, where in 949 (H.), he was shot dead by some one, whose aim missed. This gives him an age of about 116 years. Fourteen works are attributed to him. i.e. Postīnāmā, Kahāranāmā, Murāīnāmā, Mekharāvat, Campāvati, Akharāvaṭ, Padumāvati and Ākharī Kalām; of these, Padumāvati and Akharāvaṭ alone are published.

To revert to Padumāvati. The great importance of the

Poem lies in the fact that its author wrote it in what was evidently the actual vernacular of his time, tinging it slightly with an admixture of a few Persian words and idioms, due to his Musalman birth and culture. It was his nationality, again, which made him use the Persian script and discard all the favourite devices of paṇḍits, who always tried to make their language correct by spelling (while they did not pronounce) vernacular words in the Sanskrit fashion. The Persian script did not lend itself to any such false antiquarianism. He spelt each word as it was pronounced. His work, therefore, is a valuable witness to the actual condition of the vernacular language of northern India in the 16th century. It is, so far as it goes, and with the exception of a few hints in Alberuni's India, the only trustworthy witness which we have. It is trustworthy, however to a certain extent only, for it often merely gives the consonantal framework of the words, the vowels, as is usual in Persian Mss. being generally omitted. Fortunately the vowels can generally be inserted correctly with the help of the Devanāgarī Mss.

The language being ṭheṭh *Audhi* and the work written in Persian script, it is very difficult both to read and to understand. It was frequently transliterated into Devanāgarī script, but the transcriptions, whether in manuscript or in print, were full of mistakes, generally guesses to make the meaning clear.

In 1911 Sir George Grierson, to whom we owe the monumental Linguistic Survey of India, brought out, in collaboration with M. M. Sudhākara Dvivedī, an annotated edition of the poem, together with exhaustive notes and a tentative English translation. The learned editors based their edition on seven Mss. (four of them being written in Persian, two in Devanāgarī and one in Kaithī characters) and by a diligent comparison of the material thus supplied, endeavoured to reproduce in Nāgarī characters, the actual forms of words written by our poet. But they could offer only the first instalment of their labours,

when destiny intervened and closed the career of the illustrious Mahāmahopādhyāya. Since then this important Poem lay incomplete and uncared for, till Hindi was recognised in some of the Indian Universities, as an elective subject in the B. A. and M. A. examinations. This necessitated a full edition of the Poem and Paṇḍit Rāmachandra of Benares brought out one in 1924, apparently rather in a hurry, which widely differed, of course, in the wrong direction, from the Calcutta edition, both with regard to its contents and linguistic matters.

In 1932 the Punjab Government set up a University Enquiry Commission, which after making a thorough examination of the large Educational problems, both of school and the colleges, made important recommendations, which included the desirability of laying a greater stress on the study and teaching of the Vernaculars. It was recommended that they should be included among the elective subjects for the B. A. and M. A. examinations; the deficiency of literary works (if there were any) was to be made up by the philological and historical study of the language.

This means that the study of the Vernaculars should be placed on a scientific basis and comparative study inaugurated in them; and this can only be done with the help of suitable reference books, on which alone can be based critical editions of standard works.

The present volume is a modest effort in this direction, although it was undertaken long before the Commission concluded its labours. In this I have been able to analyse critically, only the first twenty-five chapters of the Poem, the text of which I have carefully based on the Calcutta edition. I have, however, checked the authenticity of the edition with the help of an old Persian Ms. in the Panjab University Library, which records two or three readings on the margin, but agrees, in the main, with the Calcutta edition.

In the Index an attempt has been made to give the derivation of words, to record Indo-European equations, to give Sanskrit and Prakrit equivalents, to register equivalents in Indo-Iranian and Indian Aryan vernaculars, and occasionally to discuss and compare the forms of important words. This feature of my Index increases both its usefulness from a linguistic point of view and its practical value to the student, who will always better remember the meaning and history of a word, the derivation and equations of which are made clear to him. In derivation I have given Sanskrit roots corresponding to the vernacular roots. It may be rightly objected here, that it is a strange method to use in an Audhi Index, especially because the form of vernacular, on which Audhi is based has never passed through the stage of Sanskrit. That may be so; and it may not be possible, historically, that all Audhi words have been derived from the corresponding Sanskrit words. Nevertheless, Sanskrit forms, though arisen quite independently, may throw light upon the Audhi forms, and as roots other than those of Sanskrit have not yet been studied adequately in India, the plan adopted here will probably, at least for the present, prove more useful.

Needless to say that the plan is entirely new; the work is essentially preliminary; and the defects of the work are not a few. Take for instance the derivation. Here there is a large number of words of which I could not trace the origin; there are other words of which the derivation is doubtful, and yet others of which the derivation does not yield the required sense, but rather the reverse. But it is so in every living language. Then there is the puzzling phenomenon of nasalisation. The text of Padumavati as well as that of Tulasi Dasa's Rāmāyaṇa, whether in manuscript or in print, are hopelessly indiscriminate in this respect. We find both *māth*, *māṃth*, *nāth*, *nāṃth*, *nid*, *nīṃd*, *jehi*, *jehiṃ*, *tehi*, *tehiṃ* and the like, used side by side. I doubt very much if the same author could have used both nasalised and non-nasalised forms of the word in one and the

same work. No serious study of such minute philological problems has yet been done in any Indian vernacular, and no edition of any standard work in any Indian vernacular can come up to the mark in this respect. I have, necessarily, deferred the treatment of such problems to the second volume of Padumāvati

In the text caupāīs and dohās of each canto are numbered consecutively; one line being taken as one caupāī (as was the custom with the Malik and his followers) and one dohā as one single unit. This number is shown on the margin. I have also numbered dohās of the whole work (this number being shown after the dohās) for the sake of precision and ready reference. In the Index black figures stand for the canto and white for the stanzas. The letter *P* represents Pischel, whose *Grammatik* is an inexhaustible mine of correct information regarding Prakrit languages. *JB.* stands for Jules Bloch. For other abbreviations a separate list is attached herewith.

No one but those who have taken part in this sort of work will realise, what care and patient labour are involved in the collection of such material, and in the sorting, sifting and final arrangement of it. That I have been able to do this arduous task, is mainly due to the high ideals placed before me by my esteemed ācārya Principal (now Doctor of Literature) A. C. Woolner M. A., C. I. E., D. Litt., Vice-Chancellor of this University. A great humanist, a unique repository of what is best in the East as well as in the West, he is eminently known for his profound scholarship, original research, administrative efficiency and long and meritorious devotion to this University. Seldom were the students and teachers of a University given a more zealous guardian of their interests and seldom was a man of truer sympathy with, and a better understanding of the spirit of the East was placed at the head of an Indian University. The inclusion of the present volume in the Punjab University Oriental Publication Series

is entirely due to him. I am also indebted to him for going through the final proof of the preface.

I take this opportunity of expressing my sincere gratitude to the Hon'ble Justice Bakhshi Tek Chand M. A., LL. B. for writing a foreward to this book. A man of wide culture and liberal sympathies he is always an inspiring and stimulating example unto others—especially to the noble youth of the Punjab whose imagination and heart he particularly touches by the charm of his sympathetic heart and helping hand.

For reading proofs of the book I am indebted to Paṇḍit Vijayānand Śāstrī, and my wife, Śrīmati Sukhadādevī, who not only made some verbal corrections, but also offered suggestions of a more general character.

In conclusion I feel that if this book succeeds in interesting the Indian reader enough to make him study the Poem for himself and interest the students of Sanskrit and Hindi in its linguistic matters so much that they should feel impelled to further investigations along these lines, then this volume shall have justified its existence.

Lahore
Empire Day the 24th May 1934. } SŪRYA KĀNTA.

LIST OF IMMEDIATE SOURCES USED IN THE COURSE OF THE INDEX.

INDO-EUROPEAN.

Walde, A. Vergleichendes Wörterbuch der Indogermanischen Sprachen. 3 Vols. Leipzig. 1930.

Brugmann, K. Kurze Vergleichende Grammatik der Indo; manischen Sprachen. Leipzig. 1922.

Walde, A. Lateinisches Etymologisches Wörterbuch. Hei Berg. 1910.

Grassmann, W. Wörterbuch zum Ṛgveda. Leipzig. 1873.

Meillet, A. Introduction A. L'Etude Comparative Langu des Indo-Europeennes. Paris. 1922.

Jesperson, O. A Modern English Grammar. 3 Vols. Heidelberg. 1920.

IRANIAN.

Geiger, W. and Kuhn, E. Grundriss der Iranischen Philologie. 2 Vols. Strassburg. 1895–1901.

Bartholomae. Altiranisches Wörterbuch. Strassburg. 1904.

Haug, M. An old Pahlavi-Pazand Glossary. Bombay. 1870.

Haug, M. A Zand-Pahlavi Glossary. Bombay. 1877.

Johnson, E. L. Historical Grammar of the Ancient Persian Language. New York. 1917.

Jackson, A. V. W. An Avesta Grammar. Stuttgart. 1933.

NEW IRANIAN.

Grundriss der Iranischen Philologie. 1. b. 417–423.

Gray, L. H. Indo-Iranian Phonology. New York. 1902.

Trumpp. Grammar of Pašto. London. 1873.

Morgenstirne, G. Indo-Iranian Frontier Languages. Oslo. 1929.

PRAKRIT.

Pischel, R. Grammatik der Prakrit Sprachen. Strassburg. 1900.

Pischel, R. Hemacandra. Halle. 1877–80.

Woolner, A. C. Introduction to Prakrit. Lahore. 1928.
Davids, R. and Stede, W. Pali Dictionary. 1921-25.
Geiger, W. Pali Literatur und Sprache. Strassburg. 1916.
Müller. A Simplified Grammar of the Pāli Language. London. 1884.
Trenckner, V. Notes on the Milindapañho in JPTS. 1908. 102 sq.
Hargovind Das. Pāia Sadda-Mahaṇṇao. 4 Vols. Calcutta. 1923-28.

INDIAN ARYAN VERNACULARS.

Sir George Grierson. (A) On the Phonology of the Modern Indo-Aryan Languages. ZDMG. Vol. XLIX, pp. 101-145; L. pp. 1-42.
(B) Indo-Aryan Vernaculars. Bulletin of the School of Oriental Studies. London Institution. Vol. I. Part I, pp. 47-81; Part II. pp. 51-85.
(C) A Manual of the Kashmīrī Language. Oxford. 1911.
(D) Kashmīrī Phonology. JRASBe. LXV. 280-305, 108-184.
(E) Seven Grammars of the Dialects and Sub-dialects of the Bihārī Language. Part I. Calcutta. 1883.
Trumpp. A Grammar of the Sindhi Language. London. 1872.
Cummings and Bailey. Punjabi Manual. Calcutta. 1925.
Kellogg. Grammar of the Hindi Language. Allahabad. 1876.
Hoernle, A. F. R. A Grammar of the Eastern Hindi. London. 1880.
Bābu Ram Saksena. Lakhimpurī—A Dialect of Modern Audhī JASBe. 1922.
Linguistic Survey of India. Vol. VI.
Chatterji, S. K. Bengali Phonetics. Bulletin of School of Oriental Studies. London Institution, Vol II, pp. 1-25.
Molesworth, J. T. A Dictionary of Marāṭhi and English. Bombay. 1857.
Bloch, J. La Formation de La Langue Marathe. Paris. 1920.
Beams, J. A. Comparative Grammar of the Modern Aryan Languages of India. 3 Vols. London. 1872-79.

The following articles in the Nagarī Pracāriṇī Patrika, Benares have been consulted:—

Dhīrendra Varma. हिन्दी की पूर्ववर्ती आर्यभाषाएं. Vol IV. pp. 379-390.

Bābu Rām Saksena. भारतवर्ष की आधुनिक आर्यभाषाएं. Vol VII. pp. 121-162.

M. M. Giridhara Śarmā हिन्दी में संस्कृत शब्दों का ग्रहण Vol. X. pp. 195-231.

Gurū Prasāda. संध्यक्षरों का अपूर्ण उच्चारण Vol. XIII. pp. 47-56.

LIST OF ABBREVIATIONS

TITLES OF AUTHORS OR BOOKS

दे० = देशीनाममाला
सु० = सुधाकर
JB. = Julis Bloch
GM. = George Morgenstirne
Gn. = Grierson
H. = Hoernle
Lt. Wtb. = Lateinisches Etymologisches Wörterbuch
MW. = Monier Williams (Dictionary)
Pais. Lang. = Paiśaci Languages
PGr. = Prakrit Grammar
P. = Pischel
RPD. = Rhys. Davids, Pali Dictionary.
VWI. = Vergleichende Wörterbuch der Indogermanischen Sprachen.
(तु० = तुलना करो)

LANGUAGES COMPARED.

Arm. = Armenian
As., Ags., or Ang. sax. = Anglo saxon.
E. or Eng. = English
Cymr = Cymrish.
Germ. = German
Goth. = Gothic
Id. = Icelendic
Ital. = Italian
Lat. = Latin
अप० = अपभ्रंश = Apabhramśa
अफ० = अफगानी = Afghan
अ०मा० = अर्धमागधी = Ardhamagadhi
अवे० = अवेस्ता = Avesta
आ० = आसामी = Assamese
आ०फा० = आधुनिक फारसी = New Persian
Lett. = Lettish
Lit. or Lith. = Lithuanian
M. Germ. = Modern German
Obulg. = Old Bulgarian
Ohg. = Old High German
Oicel. = Old Icelendic
Oir. = Old Irish
Russ. = Russian
Slave. = Slavonic
उ० = उरिया = Uria
ओ० अथवा ओस्से० = ओस्सेटिया = Ossetish
कु० = कुर्दी = Kurdish
का० = काश्मीरी = Kaśmiri
ग० = गब्री = Gabri
गु० = गुजराती = Gujrati
प्रि० = परचि = Parachi
जि० = जिप्सी = Gypsy

जै०म०= जैन महाराष्ट्री = Jain Mahārāṣṭrī
ट० = टगौरिश = Tagaurish
रिस० = रिसगनी (= जिप्सी)
नै० = नैपाली = Nepalī
प० अथवा पह० = पहलवी = Pahalavi
पं० = पंजाबी = Punjabī
पाज़ं = पाज़ंद = Pāzand
पा० = पालि = Pāli
पै० = पैशाची = Paiśācī
प्रा० = प्राकृत = Prakrit
फा० = फारसी = Persian
बि० = बिहारी = Bihārī
ब० = बलूची = Balūcī
बं० = बंगाली = Bengālī
म० = मराठी = Marāṭhī
मा० = मागधी = Māgadhī
महा० = महाराष्ट्री = Mahārāṣṭrī
री० = ओर्मुरी = Ormurī
वा० = वाख़ी = Waxī
वै० = वैदिक = Vedic
शि० = शिग्नी = Śighnī
शौ० = शौरसेनी = Śaurasenī
संग = संगलीची = Sanglīcī
सं० = संस्कृत = Saṇskrit
सरि० = सरिकोली = Sariqolī
सि० = सिन्धी = Sindhī
सिं० = सिंहालीज = Siṃhālese
हि० = हिन्दी = Hindi

INTRODUCTION

(Reserved for the Second Volume.)

पद्मावति

अथ पदुमावति लिख्यते

अथ असतुति खंड ॥ १ ॥

सवँरउँ आदि एक करतारू । जेइ जिउ दीन्ह कीन्ह संसारू ॥
कीन्हेसि प्रथम जोति परगासू । कीन्हेसि तेहि परवत कबिलासू ॥
कीन्हेसि अगिनि पवन जल खेहा । कीन्हेसि बहुतइ रंग उरेहा ॥
कीन्हेसि धरती सरग पतारू । कीन्हेसि बरन बरन अउतारू ॥
कीन्हेसि सपत दीप ब्रहमंडा । कीन्हेसि भुअन चउदह-उ खंडा ॥ 5
कीन्हेसि दिन दिनिअर ससि राती । कीन्हेसि नखत तराइन पाँती ॥
कीन्हेसि सीउ धूप अउ छाँहा । कीन्हेसि मेघ बीजु तेहि माँहा ॥

कीन्ह सबइ अस जा कर दोसर छाज न काहिं ।
पहिलइ तेइ कर नाउँ लेइ कथा करउँ अउगाहि ॥ १ ॥

कीन्हेसि सात-उ समुद अपारा । कीन्हेसि मेरु खिखिंद पहारा ॥
कीन्हेसि नदी नार अउ झरना । कीन्हेसि मगर मच्छ बहु बरना ॥ 10
कीन्हेसि सीप मोंति तेहि भरे । कीन्हेसि बहुतइ नग निरमरे ॥
कीन्हेसि बन-खँड अउ जरि मूरी । कीन्हेसि तरिवर तार खजूरी ॥
कीन्हेसि साउज आरन रहहीं । कीन्हेसि पंखि उडाहिं जहँ चहहीं ॥
कीन्हेसि बरन सेत अउ सामा । कीन्हेसि नींद भूख बिसरामा ॥
कीन्हेसि पान फूल रस भोगू । कीन्हेसि बहु ओखद बहु रोगू ॥ 15

निमिख न लाग करत ओहि सबहि कीन्ह पल एक ।
गगन अंतरिख राखा बाजु खंभ बिनु टेक ॥ २ ॥

कीन्हेसि मानुस दीन्ह बड़ाई। कीन्हेसि अन्न भुगुति तेइ पाई॥
कीन्हेसि राजा भूँजइ राजू। कीन्हेसि हसति घोर तेहि साजू॥
कीन्हेसि तेहि कहँ बहुत बिरासू। कीन्हेसि कोइ ठाकुर कोइ दासू॥
20 कीन्हेसि दरब गरब जेहि होई। कीन्हेसि लोभ अघाइ न कोई॥
कीन्हेसि जिअन सदा सब चहा। कीन्हेसि मीचुँ न कोई रहा॥
कीन्हेसि सुख अउ कोड अनंदू। कीन्हेसि दुख चिंता अउ दंदू॥
कीन्हेसि कोइ भिखारि कोइ धनी। कीन्हेसि संपति बिपति बहु घनी॥
कीन्हेसि कोइ निभरोसी कीन्हेसि कोइ बरिआर।
छारहि तइँ सब कीन्हेसि पुनि कीन्हेसि सब छार॥ ३॥
25 कीन्हेसि अगर कसतुरी बेना। कीन्हेसि भीमसेनि अउ चेना॥
कीन्हेसि नाग मुखइ बिख बसा। कीन्हेसि मंत्र हरइ जो डसा॥
कीन्हेसि अमीँ जिअइ जेहि पाई। कीन्हेसि बिक्ख मीँचु जेहि खाई॥
कीन्हेसि ऊख मीठ रस भरी। कीन्हेसि करुइ बेलि बहु फरी॥
कीन्हेसि मधु लावइ लेइ माँखी। कीन्हेसि भवँर पंखि अउ पाँखी॥
30 कीन्हेसि लोवा उंदुर चाँटी। कीन्हेसि बहुत रहहिँ खनि माँटी॥
कीन्हेसि राकस भूत परेता। कीन्हेसि भोकस देव दएता॥
कीन्हेसि सहस अठारह बरन बरन उपराजि।
भुगुति दीन्ह पुनि सब कहँ सकल साजना साजि॥ ४॥
धनपति उहइ जेहि क संसारू। सबहि देइ निति घट न भँडारू॥
जावँत जगत हसति अउ चाँटा। सब कहँ भुगुति राति दिन बाँटा॥
35 ता करि दिस्टि सबहि उपराहीँ। मितर सतरु कोइ बिसरइ नाहीँ॥
पंखी पतँग न बिसरइ कोई। परगट गुपुत जहाँ लगि होई॥
भोग भुगुति बहु भाँति उपाई। सबहि खिआवइ आपु न खाई॥
ता कर इहइ जो खाना पिअना। सब कहँ देइ भुगुति अउ जिअना॥
सबहि आस ता करि हर साँसा। ओहि न काहू कइ आस निरासा॥

जुग जुग देत घटा नहीँ　उभइ हाथ तस कीन्ह ।
अउरु जो दीन्ह जगत मँह　सो सब ता कर दीन्ह ॥ ५ ॥　　40

आदि सोइ बरनउँ बड राजा । आदि-हु अंत राज जेहि छाजा ॥
सदा सरबदा राज करेई । अउ जेहि चहहि राज तेहि देई ॥
छतरि अछतरि निछतरहि छावा । दोसर नाहिँ जो सरबरि पावा ॥
परबत ढाहि देखु सब लोगू । चाँटहि करइ हसति सरि जोगू ॥
बजरहि तिन कइ मारि उडाई । तिनहि बजर कइ देइ बडाई ॥　45
काहुहि भोग भुगुति सुख सारा । काहुहि भीख भवन-दुख मारा ॥
ता कर कीन्ह न जानइ कोई । करइ सोइ मन चित्त न होई ॥

सबइ नास्ति वह असथिर　अइस साज जेहि केरि ।
एक साजइ अउ भाँजइ　चहइ सवाँरइ फेरि ॥ ६ ॥

अलख अरूप अबरन सो करता । वह सब सउँ सब ओहि सउँ बरता ॥
परगट गुपुत सो सरब बिआपी । धरमी चीन्ह चीन्ह नहिँ पापी ॥　50
ना ओहि पूत न पिता न माता । ना ओहि कुटुँब न कोइ सँग नाता ॥
जना न काहु न कोइ ओहि जना । जहँ लगि सब ता कर सिरजना ॥
वेइ सब कीन्ह जहाँ लगि कोई । वह न कीन्ह काहू कर होई ॥
हुत पहिलइ अउ अब हइ सोई । पुनि सो रहइ रहइ नहिँ कोई ॥
अउरु जो होइ सो बाउर अंधा । दिन दुइ चारि मरइ कइ धंधा ॥　55

जो वेइ चहा सो कीन्हेसि　करइ जो चाहइ कीन्ह ।
बरजन-हार न कोई　सबहि चाहि जिउ दीन्ह ॥ ७ ॥

एहि बिधि चीन्हहु करहु गिआनू । जस पुरान महँ लिखा बखानू ॥
जीउ नाहिँ पइ जिअइ गोसाईँ । कर नाहीँ पइ करइ सबाईँ ॥
जीभ नाहिँ पइ सब किछु बोला । तन नाहीँ जो डोलाउ सो डोला ॥
स्रवन नाहिँ पइ सब किछु सुना । हिअ नाहीँ गुननाँ सब गुना ॥　60
नयन नाहिँ पइ सब किछु देखा । कवन भाँति अस जाइ बिसेखा ॥

ना कोइ होइ हइ ओहि के रूपा। ना ओहि अस कोइ आहि अनूपा॥
ना ओहि ठाउँ न ओहि बिनु ठाऊँ। रूप रेख बिनु निरमर नाऊँ॥
ना वह मिला न बेहरा अइस रहा भरि पूरि।
दिसिटिवंत कहँ नीअरे अंध मुरुख कहँ दूरि॥ ८॥

65 अउरु जो दीन्हेसि रतन अमोला। ता कर मरम न जानइ भोला॥
दीन्हेसि रसना अउ रस भोगू। दीन्हेसि दसन जो बिहँसइ जोगू॥
दीन्हेसि जग देखइ कहँ नयना। दीन्हेसि स्रवन सुनइ कहँ बयना॥
दीन्हेसि कंठ बोलि जेहि माँहा। दीन्हेसि कर-पल्लउ बर बाँहा॥
दीन्हेसि चरन अनूप चलाहीं। सो पइ मरम जानु जेहि नाहीं॥
70 जोबन मरम जानु पइ बूढा। मिला न तरुनापा जग ढूँढा॥
दुख कर मरम न जानइ राजा। दुखी जानु जा कहँ दुख बाजा॥
कया क मरम जानु पइ रोगी भोगी रहइ निचिंत।
सब कर मरम गोसाईं जानइ जो घट घट महँ निंत॥ ९॥

अति अपार करता कर करना। बरनि न पारइ काहू बरना॥
सात सरग जउँ कागद करई। धरती सात समुद मसि भरई॥
75 जावँत जगत साख बन-ढाँखा। जावँत केस रोवँ पँखि पाँखा॥
जावँत खेह रेह दुनिआईं। मेघ बूँद अउ गगन तराईं॥
सब लिखनी कइ लिखु संसारू। लिखि न जाइ गति समुद अपारू॥
अइस कीन्ह सब गुन परगटा। अब-हूँ समुँद बूँद नहिं घटा॥
अइस जानि मन गरब न होई। गरब करइ मन बाउर सोई॥
बड गुनवंत गोसाईं चहइ सो होइ तेहि बेग।
80 अउ अस गुनी सँवारइ जो गुन करइ अनेग॥ १०॥

कीन्हेसि पुरुख एक निरमरा। नाउँ मुहम्मद पूनिउँ करा॥
प्रथम जोति बिधि तेहि कइ साजी। अउ तेहि प्रीति सिसिटि उपराजी॥
... तेहि जगत कहँ दीन्हा। भा निरमर जग मारग चीन्हा॥

जउँ नहिँ होत पुरुख उँजिआरा। सूझि न परत पंथ आँधिआरा॥
दोसरे ठाउँ दई वेइ लिखे। भए धरमी जेइ पाढत सिखे॥ 85
जेइ नहिँ लीन्ह जनम भरि नाऊँ। ता कहँ कीन्ह नरक महँ ठाऊँ॥
जगत बसीठ दई ओहि कीन्हा। दुहुँ जग तरा नाउँ जेइ लीन्हा॥
गुन अउगुन विधि पूछव होइहि लेख अउ जोख।
वह विनउब आगइ होइ करव जगत कर मोख॥ ११॥
चारि मीत जो मुहमद ठाऊँ। चहूँ क दुहुँ जग निरमर नाऊँ॥
अबा बकर सिद्दीक सयाने। पहिलइ सिदिक दीन वेइ आने॥ 90
पुनि सो उमर खिताव सोहाए। भा जग अदल दीन जो आए॥
पुनि उसमान पँडित वड गुनी। लिखा पुरान जो आयत सुनी॥
चउथइ अली सिंघ वरिआरू। चढइ तौ काँपइ सरग पतारू॥
चारिउ एक मतइ एक वाता। एक पंथ अउ एक सँघाता॥
बचन एक जो सुनावहिँ साँचा। भा परवाँन दुहूँ जग वाँचा॥ 95
जो पुरान विधि पठवा सोई पढत गरंथ।
अउरु जो भूले आवतहि तेहि सुनि लागहिँ पंथ॥ १२॥
सेर-साहि देहिली सुलतानू। चारि-उ खंड तपइ जस भानू॥
ओही छाज राज अउ पाटू। सब राजइ भुइँ धरा लिलाटू॥
जाति सूर अउ खाँडइ सूरा। अउ बुधिवंत सवइ गुन पूरा॥
सूर-नवाँई नवौ खँड भई। सात-उ दीप दुनी सब नई॥ 100
तहँ लगि राज खरग वर लीन्हा। इसकंदर जुलकरन जो कीन्हा॥
हाथ सुलेमाँ केरि अँगूठी। जग कहँ जिअन दीन्ह तेहि मूठी॥
अउ अति गरू पुहुमि-पति भारी। टेकि पुहुमि सब सिसिटि सँभारी॥
दीन्ह असीस मुहम्मद करहु जुग हि जुग राज।
पातिसाहि तुम्ह जगत के जग तुम्हार मुहताज॥ १३॥
वरनउँ सूर पुहुमि-पति राजा। पुहुमि न भार सहइ जेहि साजा॥ 105

हयमय सेन चलइ जग पूरी। परबत टूटि उडहिँ होइ धूरी ॥
रइनि रेनु होइ रबिहि गरासा। मानुस पंखि लेहिँ फिरि बासा ॥
भुइँ उडि अँतरिख गइ म्रितमंडा। खँड खँड धरति सिसिटि ब्रहमंडा ॥
डोलइ गगन इँदर डरि काँपा। बासुकि जाइ पतारहि चाँपा ॥
110 मेरु धसमसइ समुद सुखाहीँ। बन-खँड टूटि खेह मिलि जाहीँ ॥
अगिलहि काहु पानि खर बाँटा। पछिलहि काहु न काँदउ आँटा ॥
जौ गढ नएउ नाहिँ काहुही चलत होहिँ सब चूर।
जबहि चढहि पुहुमी-पति सेर-साहि जग-सूर ॥ १४ ॥

अदल कहउँ पुहुमी जस होई। चाँटहि चलत न दुखवइ कोई ॥
नउसेरवाँ जौ आदिल कहा। साहि अदल सरि सोउ न अहा ॥
115 अदल कीन्ह उम्मर कइ नाईँ। भइ आहा सगरी दुनिआईँ ॥
परी नाँथ कोइ छुअइ न पारा। मारग मानुस सोन उछारा ॥
गोरु सिंघ रेँगहिँ एक बाटा। दून-उ पानि पिअहिँ एक घाटा ॥
नीर खीर छानइ दरबारा। दूध पानि सब करइ निरारा ॥
धरम निआउ चलइ सत-भाखा। दूबर बरी एक सम राखा ॥
पुहुमी सबइ असीसइ जोरि जोरि कइ हाथ।
120 गाँग जउँन जल जब लगि तब लगि अमर सो माथ ॥ १५ ॥

पुनि रुपवंत बखानउँ काहा। जावँत जगत सबइ मुख चाहा ॥
ससि चउदसि जो दई सँवारा। तेन्हू चाहि रूप उँजिआरा ॥
पाप जाइ जउँ दरसन दीसा। जग जुहारि कइ देइ असीसा ॥
जइस भानु जग ऊपर तपा। सबइ रूप ओहि आगइ छपा ॥
125 अस भा सूर पुरुख निरमरा। सूर चाहि दस आगरि करा ॥
सउँह दिसिटि कइ हेरि न जाई। जेइ देखा सो रहा सिर नाई ॥
रूप सवाइ दिन दिन चढा। बिधि सुरूप जग ऊपर गढा ॥
रुपवंत मनि माँथइ चाँद घाटि ओहि बाढि।
मेदिनि दरस लोभानी असतुति बिनवइ ठाढि ॥ १६ ॥

पुनि दातार दई बड कीन्हा । अस जग दान न काहू दीन्हा ॥
बलि बिकरम दानी बड अहे । हातिम करन तिआगी कहे ॥ 130
सेर-साहि सरि पूज न कोऊ । समुद सुमेरु घटहिँ निति दोऊ ॥
दान डाँक बाजइ दरबारा । कीरति गई समुंदर पारा ॥
कंचन परसि सूर जग भएऊ । दारिद भागि दिसंतर गएऊ ॥
जउँ कोइ जाइ एक बेरि माँगा । जनमहु भएउ न भूखा नाँगा ॥
दस असमेध जग्ग जेइ कीन्हा । दान पुन्न सरि सोउ न दीन्हा ॥ 135

अइस दानि जग उपजा सेर-साहि सुलतान ।
ना अस भएउ न होइही ना कोइ देइ अस दान ॥ १७ ॥

सइअद असरफ पीर पिआरा । तेइ मोहिँ पंथ दीन्ह उँजिआरा ॥
लेसा हिअइ पेम कर दीआ । उठी जोति भा निरमर हीआ ॥
मारग हुता अँधेर असूझा । भा अँजोर सब जाना बूझा ॥
खार समुदर पाप मोर मेला । बोहित धरम लीन्ह कइ चेला ॥ 140
उन्ह मोर करिअ पोढि कइ गहा । पाएउँ तीर घाट जो अहा ॥
जा कहँ होइ अइस कनहारा । ता कहँ गहि लेइ लावइ पारा ॥
दस्तगीर गाढे कइ साथी । जहँ अउगाह देहि तहँ हाथी ॥

जहाँगीर वेइ चिसती निहकलंक जस चाँद ।
वेइ मखदूम जगत के हउँ उन्ह के घर बाँद ॥ १८ ॥

तेहि घर रतन एक निरमरा । हाजी सेख सुभागइ भरा ॥ 145
तेहि घर दुइ दीपक उँजिआरे । पंथ देइ कहँ दई सँवारे ॥
सेख मुबारक पूनिउँ करा । सेख कमाल जगत निरमरा ॥
दुअउ अचल धुव डोलहिँ नाहीँ । मेरु खिखिंद तिन्हहु उपराहीँ ॥
दीन्ह रूप अउ जोति गोसाईँ । कीन्ह खंभ दुहुँ जग कइ ताईँ ॥
दुहूँ खंभ टेकी सब मही । दुहुँ के भार सिसिटि थिर रही ॥ 150
जो दरसइ अउ परसइ पाया । पाप हरा निरमर भइ काया ॥

मुहमद तेइ निचिंत पँथ जेहि सँग मुरसिद पीर ।
जेहि रे नाउ अउ खेवक बेगि पाउ सो तीर ॥ १६ ॥

गुरु मोहिदी खेवक मइँ सेवा । चलइ उताइल जेहि कर खेवा ॥
अगुआ भएउ सेख बुरहानू । पंथ लाइ जेहि दीन्ह गिआनू ॥
१५५ अलहदाद भल तेहि कर गुरू । दीन दुनी रोसन सुरखुरू ॥
सइअद मुहमद के वेइ चेला । सिद्ध पुरुख संगम जेइ खेला ॥
दानिआल गुरु पंथ लखाए । हजरत ख्वाज खिजिर तेइ पाए ॥
भए परसन ओहि हजरत ख्वाजे । लेइ मेरए जहँ सइअद राजे ॥
ओहि सउँ मइँ पाई जब करनी । उघरी जीभ कथा कवि बरनी ॥

वेइ सु-गुरू हउँ चेला निति बिनवउँ भा चेर ।
१६० ओहि हुत देखइ पाएउँ दिरिस गोसाईं केर ॥ २० ॥

एक नयन कवि मुहमद गुनी । सोइ बिमोहा जेइ कवि सुनी ॥
चाँद जइस जग बिधि अउतारा । दीन्ह कलंक कीन्ह उँजिआरा ॥
जग सूझा एकइ नयनाँहा । उआ सूक जस नखतन्ह माँहा ॥
जउ लहि आँबहि डाभ न होई । तउ लहि सुगँध बसाइ न सोई ॥
१६५ कीन्ह समुदर पानि जउ खारा । तउ अति भएउ असूझ अपारा ॥
जउ सुमेरु तिरसूल बिनासा । भा कंचन गिरि लागु अकासा ॥
जउ लहि घरी कलंक न परा । काँचु होइ नहिं कंचन करा ॥

एक नयन जस दरपन अउ तेहि निरमर भाउ ।
सब रुपवंतइ पाउँ गहि मुख जोहहिं कइ चाउ ॥ २१ ॥

चारि मीत कवि मुहमद पाए । जोरि मिताई सरि पहुँचाए ॥
१७० युसुफ मलिक पंडित अउ ग्यानी । पहिलइ भेद बात वेइ जानी ॥
पुनि सलार कादिम मति-माँहा । खाँडइ दान उभइ निति बाँहा ॥
मिआँ सलोने सिंघ अपारू । बीर खेत रन खरग जुझारू ॥
सेख बड़े बड़ सिद्ध बखाना । कइ अदेस सिद्धन्ह बड माना ॥

चारि-उ चतुरदस-उ गुन पढे । अउ संजोग गोसाइँ गढे ॥
बिरिख जो आछहि चंदन पासा । चंदन होहि बेधि तेहि बासा ॥ 175

मुहमद चारि-उ मीत मिलि भए जो एकइ चित्तु ।
एहि जग साथ जो निबहा ओहि जग बिछुरहिँ कित्तु ॥ २२ ॥

जाएस नगर धरम-असथानू । तहाँ आइ कबि कीन्ह बखानू ॥
कइ बिनती पँडितन्ह सउँ भजा । टूट सँवारहु मेरवहु सजा ॥
हउँ सब कबितन्ह कर पछ-लगा । किछु कहि चला तबल देइ डगा ॥
हिअ भँडार नग अहइ जो पूँजी । खोली जीभ तारु कइ कूँजी ॥ 180
रतन पदारथ बोली बोला । सुरस पेम मधु भरी अमोला ॥
जेहि कइ बोलि बिरह कइ घाया । कहँ तेहि भूख नीँद कहँ छाया ॥
फेरइ भेस रहइ भा तपा । धूरि लपेटा मानिक छपा ॥

मुहमद कबा जो पेम कइ ना तेहि रकत न माँसु ।
जेहि मुख देखा तेइ हँसा सुनि तेहि आएउ आँसु ॥ २३ ॥

सन नउ सइ सइँतालिस अहे । कथा अरंभ बयन कबि कहे ॥ 185
सिंघल-दीप पदुमिनी रानी । रतन-सेन चितउर गढ आनी ॥
अलउदीन देहिली सुलतानू । राघउ-चेतन कीन्ह बखानू ॥
सुना साहि गढ छेँका आई । हिंदू तुरुकन्ह भई लराई ॥
आदि अंत जस गाथा अही । लिखि भाखा चउपाई कही ॥
कबि बिआस रस कवँला पूरी । दूरि सो निअर निअर सो दूरी ॥ 190
निअरहि दूरि फूल जस काँटा । दूरि जो निअरहि जस गुर चाँटा ॥

भवँर आइ बनखंड सउँ लेइ कवँल रस बास ।
दादुर बास न पावई भलहि जो आछइ पास ॥ २४ ॥

इति असतुति खंड ॥ १ ॥

अथ सिंघल-दीप-बरनन खंड ॥ २ ॥

सिंघल-दीप कथा अब गावउँ । अउ सो पदुमिनि बरनि सुनावउँ ॥
बरनक दरपन भाँति बिसेखा । जो जेहि रूप सो तइसइ देखा ॥
धनि सो दीप जहँ दीपक नारी । अउ सो पदुमिनि दइ अउतारी ॥
सात दीप बरनइ सब लोगू । एक-उ दीप न ओहि सरि जोगू ॥
5 दिया-दीप नहिँ तस उँजिआरा । सरन-दीप सरि होइ न पारा ॥
जंबू-दीप कहउँ तस नाहीँ । लंक-दीप नहिँ ओहि परिछाहीँ ॥
दीप-कुँभसथल आरन परा । दीप-महुसथल मानुस-हरा ॥
सब संसार पिरिथुमीँ आए सात-उ दीप ।
एक-उ दीप न ऊतिम सिंघल-दीप समीप ॥ २५ ॥

गँधरबँ-सेन सुगंध नरेसू । सो राजा वह ता कर देसू ॥
10 लंका सुना जो रावन राजू । ते-हु चाहि बड ता कर साजू ॥
छप्पन कोंड कटक दर साजा । सबइ छतर-पति अउ गढ-राजा ॥
सोरह सहस घोर घोर-सारा । सावँ-करन अउ बाँक तुखारा ॥
सात सहस हसती सिंघली । जनु कबिलास इरावति बली ॥
असु-पती क सिर-मउर कहावइ । गज-पती क आँकुस गज नावइ ॥
15 नर-पती क अउ कहउँ नरिंदू । भू-पती क जग दोसर इंदू ॥
अइस चकवइ राजा चहूँ खंड भय होइ ।
सबइ आइ सिर नावहीँ सरिबर करइ न कोइ ॥ २६ ॥

जब-हि दीप निअरावा जाई। जनु कबिलास निअर भा आई॥
घन अँबराउँ लाग चहुँ पासा। उठे पुहुमि हुति लागु अकासा॥
तरिवर सबइ मलय-गिरि लाई। भइ जग छाँह रइनि होइ छाई॥
मलय समीर सोहाई छाँहा। जेठ जाड लागइ तेहि माँहा॥ 20
ओही छाँह रइनि होइ आवइ। हरिअर सबइ अकास देखावइ॥
पंथिक जउँ पहुँचइ सहि घामू। दुख बिसरइ सुख होइ बिसरामू॥
जेइ वह पाई छाँह अनूपा। बहुरि न आइ सहहि यह धूपा॥

अस अँबराउँ सघन घन बरनि न पारउँ अंत।
फूलइ फरइ छब-उ रितु जानउँ सदा बसंत॥ २७॥

फरे आँब अति सघन सोहाए। अउ जस फरे अधिक सिर नाए॥ 25
कटहर डार पीँड सउँ पाके। बडहर सो अनूप अति ताके॥
खिरनी पाकि खाँड असि मीठी। जाउँनि पाकि भवँर असि डीठी॥
नरिअर फरे फरी फरुहुरी। फरी जानु इँदरासन-पुरी॥
पुनि महुआ चुअ अधिक मिठासू। मधु जस मीठ पुहुप जस बासू॥
अउरु खजहजा आउ न नाऊँ। देखा सब राउन अँबराऊँ॥ 30
लाग सबइ जस अंम्रित साखा। रहइ लोभाइ सोइ जो चाखा॥

गुआ सुपारी जाइ-फर सब फर फरे अपूरि।
आस पास घनि इबिँली अउ घन तार खजूरि॥ २८॥

बसहिँ पंखि बोलहिँ बहु भाखा। करहिँ हुलास देखि कइ साखा॥
भोर होत बासहिँ चुहिचूही। बोलहिँ पाँडुकि एकइ तूही॥
सारउ सुआ जो रहचह करहीँ। कुरहिँ परेवा अउ करबरहीँ॥ 35
पिउ पिउ लागइ करइ पपीहा। तुहीँ तुहीँ करि गुडरू खीहा॥
कुहू कुहू करि कोइलि राखा। अउ भँगराज बोल बहु भाखा॥
दही दही कइ महरि पुकारा। हारिल बिनवइ आपनि हारा॥
कुहुकहिँ मोर सोहावन लागा। होइ कोराहर बोलहिँ कागा॥

जावँत पंखि कही सब बइठे भरि अवँराउँ।
40 आपनि आपनि भाखा लेहिँ दई कर नाउँ॥ २९॥

पइग पइग कुआँ बाउरी। साजे बइठक अउ पाउँरी॥
अउरु कुंड सब ठाउँहिँ ठाऊँ। सब तीरथ अउ तिन्ह के नाऊँ॥
मठ मंडफ चहुँ पास सँवारे। तपा जपा सब आसन मारे॥
कोइ सु-रिखेसुर कोइ सनिआसी। कोइ सु-राम-जति कोइ मसवासी॥
45 कोइ सु-महेसुर जंगम जती। कोइ एक परखइ देवी सती॥
कोई ब्रह्मचरज पँथ लागे। कोइ सु-दिगंबर आछहिँ नाँगे॥
कोई संत सिद्ध कोइ जोगी। कोइ निरास पँथ बइठ बिओगी॥
सेवरा खेवरा बान पर सिधि-साधक अउधूत।
आसन मारे बइठ सब जारहिँ आतम-भूत॥ ३०॥

मान-सरोदक देखे काहा। भरा समुद अस अति अउगाहा॥
50 पानि मोति असि निरमर तासू। अंब्रित आनि कपूर सु-बासू॥
लंक-दीप कइ सिला अनाई। बाँधा सरवर घाट बनाई॥
खँड खँड सीढ़ी भईँ गरेरी। उतरहिँ चढ़हिँ लोग चहुँ फेरी॥
फूले कँवल रहे होइ राते। सहस सहस पखुरिन्ह कइ छाते॥
उलथहिँ सीप मोति उतराहीँ। चुगहिँ हंस अउ केलि कराहीँ॥
55 कनक पंख पइरहिँ अति लोने। जानउँ चितर कीन्ह गढ़ि सोने॥
ऊपर पाल चहूँ दिसा अंब्रित फर सब रूख।
देखि रूप सरवर कर गइ पिआस अउ भूख॥ ३१॥

पानि भरइ आवहिँ पनिहारी। रूप सरूप पदुमिनी नारी॥
पदुम गंध तिन्ह अंग बसाहीँ। भवँर लागि तिन्ह संग फिराहीँ॥
लंक-सिंघिनी सारँग-नयनी। हंस-गामिनी कोकिल-बयनी॥
60 आवहिँ झुंड सु पाँतिहिँ पाँती। गवँन सोहाइ सु भाँतिहिँ भाँती॥
कनक-कलस मुख-चंद दिपाहीँ। रहसि केलि सउँ आवहिँ जाहीँ॥

जा सउँ बेइ हेरहिँ चखु नारी। बाँक नयन जनु हनहिँ कटारी॥
केस मेघावरि सिर ता पाईँ। चमकहिँ दसन बीजु कइ नाईँ॥
मानउँ मयन मूरती अछरी बरन अनूप।
जेहि कइ असि पनिहारी सो रानी केहि रूप॥ ३२॥
ताल तलाउ सो बरनि न जाहीँ। सूझइ वार पार तेहिँ नाहीँ॥ 65
फूले कुमुद केति उँजिआरे। जानउँ उए गगन महँ तारे॥
उतरहिँ मेघ चढहिँ लेइ पानी। चमकहिँ मंछ बीजु कइ बानी॥
पइरहिँ पंखि सो संगहि संगा। सेत पीत राते सब रंगा॥
चकई चकवा केलि कराहीँ। निसि क बिछोहा दिनहिँ मिलाहीँ॥
कुरलहिँ सारस भरे हुलासा। जिअन हमार मुअहिँ एक पासा॥ 70
केवा सोन ढेँक बग लेदी। रहे अपूरि मीन जल-भेदी॥
नग अमोल तिन्ह तालहिँ दिनहिँ बरहिँ जस दीप।
जो मरजीआ होइ तहँ सो पावइ वह सीप॥ ३३॥
पुनि जो लागु बहु अंब्रित बारी। फरीँ अनूप होइ रखवारी॥
नउ-रँग नीउँ सुरंग जँभीरी। अउ बदाम बहु भेद अँजीरी॥
गलगल तुरुँज सदा-फर फरे। नारँग अति राते रस भरे॥ 75
किसिमिसि सेउ फरे नउ पाता। दारिउँ दाख देखि मन राता॥
लागु सोहाई हरिफा-रेउरी। उनइ रही केला कइ घउरी॥
फरे तूत कमरख अउ नउँजी। राइ-करउँदा बेरि चिरउँजी॥
संख-दराउ छोहारा डीठे। अउरु खजहजा खाटे मीठे॥
पानि देहिँ खँडवानी कुअँहिँ खाँड बहु मेलि।
लागी घरी रहँट कइ सीँचहिँ अंब्रित बेलि॥ ३४॥ 80
पुन फुल-वारि लागु चहुँ पासा। बिरिख बेधि चंदन भइ बासा॥
बहुत फूल फूली घन-बेइली। केवरा चंपा कुंद चबेँइली॥
सुरँग गुलाल कदम अउ कूजा। सुगँध-बकाउरि गँधरब पूजा॥

नागेसर सतिबरग नेवारी। अउ सिंगार-हार फुलवारी ॥

८५ सोनिजरद फूली सेवती। रूप-मंजरी अउरु मालती ॥

जाही जूही बकुचन्ह लावा। पुहुप सुदरसन लागु सोहावा ॥

मउलसिरी बेइलि अउ करना। सबइ फूल फूले बहु बरना ॥

तेहि सिर फूल चढहिँ वेइ जेहि माँथहि मनि भागु।

आछहिँ सदा सुगंध भइ जनु बसंत अउ फागु ॥ ३५ ॥

सिंघल नगर देखु पुनि बसा। धनि राजा असि जा करि दसा ॥

९० ऊँची पवँरी ऊँच अवासा। जनु कबिलास इँदर कर बासा ॥

राउ राँक सब घर घर सुखी। जो दीखइ सो हँसता-मुखी ॥

रचि रचि साजे चंदन चउरा। पोते अगर मेद अउ गउरा ॥

सब चउपारिन्ह चंदन खँम्भा। ओठँघि सभा-पति बइठे सम्भा ॥

जनउ सभा देओतन्हि कइ जूरी। परइ दिसिटि इँदरासन पूरी ॥

९५ सबइ गुनी पंडित अउ ग्याता। संसकिरित सब के मुख बाता ॥

अहक पंथ सँवारइ जनु सिउ-लोक अनूप।

घर घर नारी पदुमिनी मोहहिँ दरसन रूप ॥ ३६ ॥

पुनि देखी सिंघल कइ हाटा। नउ-उ निद्धि लछिमी सब पाटा ॥

कनक हाट सब कुंहुँहि लीपी। बइठ महाजन सिंघल-दीपी ॥

रचहिँ हथउडा रूपहि ढारी। चितर कटाउ अनेक सँवारी ॥

१०० सोन रूप भल भयउ पसारा। धवर सिरी पोतहिँ घर-बारा ॥

रतन पदारथ मानिक मोती। हीरा पवँरि सो अनबन जोती ॥

अउ कपूर बेना कसतूरी। चंदन अगर रहा भरि पूरी ॥

जेइ न हाट एहि लीन्ह बेसाहा। ता कहँ आन हाट कित लाहा ॥

कोई करइ बेसाहना काहू केर बिकाइ।

कोई चलइ लाभ सउँ कोई मूर गवाँइ ॥ ३७ ॥

१०५ पुनि सिंगार हाट धनि देसा। कइ सिंगार तहँ बइठीं बेसा ॥

मुख तँबोल तन चीर कुसुंभी। कानन्ह कनक जराऊ खुंभी॥
हाथ बीन सुनि मिरिग भुलाहीं। सुर मोहहिं सुनि पइग न जाहीं॥
भउँहँ धनुख तिन्ह नयन अहेरी। मारहिं बान सानि सउँ फेरी॥
अलक कपोल डोलु हँसि देहीं। लाइ कटाछ मारि जिउ लेहीं॥
कुच कंचुकि जानउँ जुग सारी। अंचल देहिं सुभाव-हि ढारी॥ 110
केत खेलार हारि तिन्ह पासा। हाथ झारि होइ चलहिं निरासा॥

चेटक लाइ हरहिं मन　जउ लहि गँठि होइ फेंटि।
साँठि-नाँठि उठि भए बटाऊ　ना पहिचानि न भेंटि॥ ३८॥

लेइ लेइ फूल बइठि फुलवारी। पान अपूरब धरे सँवारी॥
सोंधा सबइ बइठु लेइ गाँधी। बहुल कपूर खिरउरी बाँधी॥
कतहूँ पंडित पढहिं पुरानू। धरम पंथ कर करहिं बखानू॥ 115
कतहूँ कथा कहइ किछु कोई। कतहूँ नाँच कोड भल होई॥
कतहुँ छरहटा पेखन लावा। कतहुँ पखंडी काठ नचावा॥
कतहूँ नाद सबद होइ भला। कतहूँ नाटक चेटक कला॥
कतहुँ काहु ठग बिदिआ लाई। कतहुँ लेहिं मानुस बउराई॥

चरपट चोर गँठि-छोरा　मिले रहहिं तेहि नाँच।
जो तेहि हाट सजग रहइ　गँठि ता करि पइ बाँच॥ ३९॥ 120

पुनि आए सिंघल-गढ पासा। का बरनउँ जनु लागु अकासा॥
तरहि कुरुम बासुकि कइ पीठी। ऊपर इँदर-लोक पर डीठी॥
परा खोह चहुँ दिसि अस बाँका। काँपइ जाँघ जाइ नहिं झाँका॥
अगम असूझ देखि डर खाई। परइ सो सपत पतारहि जाई॥
नउ पउरी बाँकी नउ खंडा। नउ-उ जो चढइ जाइ ब्रहमंडा॥ 125
कंचन कोट जरे कउ सीसा। नखतन्ह भरी बीजु जनु दीसा॥
लंका चाहि ऊँच गढ ताका। निरखि न जाइ दिसिटि मन थाका॥

हिअ न समाइ दिसिटि नहिं　जानउँ ठाढ सुमेरु।
कहँ लगि कहउँ उँचाई　कहँ लगि बरनउँ फेरु॥ ४०॥

निति गढ़ बाँचि चलइ ससि सूरा। नाहिं त होइ बाजि रथ चूरा॥
१३० पउरी नउ-उ बजर कइ साजी। सहस सहस तहँ बइठे पाजी॥
फिरहिं पाँच कोटवार सो भवँरी। काँपइ पाउँ चँपत वेइ पँउरी॥
पउरिहि पउरि सिंह गढ़ि काढ़े। डरपहिं राइ देखि तिन्ह ठाढ़े॥
बहु बिधान वेइ नाहर गढ़े। जनु गाजहिं चाहहिं सिर चढ़े॥
टारहिं पूँछि पसारहिं जीहा। कुंजर डरहिं कि गुंजरि लीहा॥
१३५ कनक-सिला गढ़ि सीढ़ी लाईं। जगमगाहिं गढ़ ऊपर ताईं॥

नउ-उ खंड नउ पउरी अउ तेहि बजर केंवार।
चारि बसेरे सउँ चढ़इ सत सउँ चढ़इ जो पार॥ ४१॥

नवउँ पउरि पर दसउँ दुआरा। तेहि पर बाजु राज-घरिआरा॥
घरी सो बइठि गनइ घरिआरी। पहर पहर सो आपनि बारी॥
जबहिं घरी पूजइ वह मारा। घरी घरी घरिआर पुकारा॥
१४० परा जो डाँड जगत सब डाँडा। का निचिंत माँटी के भाँडा॥
तुम्ह तेहि चाक चढ़े हौ काँचे। आएउ फिरइ न थिर हौइ बाँचे॥
घरी जो भरइ घटइ तुम्ह आऊ। का निचिंत सोअहु रे बटाऊ॥
पहरहि पहर गजर निति होई। हिआ निसोगा जागु न सोई॥

मुहमद जीअन जल भरन रहँट घरी कइ रीति।
घरी जो आइ जीअन भरी ढरी जनम गा बीति॥ ४२॥

१४५ गढ़ पर नीर खीर दुइ नदी। पानि भरहिं जइसे दुरुपदी।
अउरु कुंड एक मोती चूरू। पानी अंब्रित कीचु कपूरू॥
ओहि क पानि राजा पइ पीआ। बिरिध होइ नहिं जउ लहि जीआ॥
कंचन बिरिछ एक तेहि पासा। जस कलप-तरु इँदर कबिलासा॥
मूल पतार सरग ओहि साखा। अमर बेलि को पाउ को चाखा॥
१५० चाँद पात अउ फूल तराईं। होइ उँजियार नगर जहँ ताईं॥
वह फर पावइ तपि कइ कोई। बिरिध खाइ नउ जोबन होई॥

राजा भए भिखारी सुनि ओहि अंब्रित भोग।
जेइ पावा सो अमर भा न किछु बिआधि न रोग ॥ ४३ ॥

गढ पर बसहिँ झारि गढ-पती। असु-पति गज-पति भू-नर-पती ॥
सब क धउरहर सोनइ साजा। अउ अपने अपने घर राजा ॥
रूपवंत धनवंत सभागे। परस-पखान पउरि तिन्ह लागे ॥ 155
भोग बिरास सदा सब माना। दुख चिंता कोइ जनम न जाना ॥
मँदिर मँदिर सब के चउपारी। बइठि कुअँर सब खेलहिँ सारी ॥
पासा ढरइ खेलि भलि होई। खरग दान सरि पूज न कोई ॥
भाँट बरनि कहि कीरति भली। पावहिँ घोर हसति सिंघली ॥

मँदिर मँदिर फुलवारी चोआ चंदन बास।
निसि दिन रहइ बसंत तहँ छवौ रितु बरहौ मास ॥ ४४ ॥ 160

पुनि चलि देखा राज-दुआरू। महि घूबिँअ पाइअ नहिँ बारू ॥
हसति सिंघली बाँधे बारा। जनु सजीउ सब ठाढ पहारा ॥
कवन-उ सेत पीत रतनारे। कवन-उ हरे धूम अउ कारे ॥
बरनहिँ बरन गगन जनु मेघा। अउ तेहि गगन पीठि जस ठेँघा ॥
सिंघल के बरनउँ सिंघली। एक एक चाहि एक एक बली ॥ 165
गिरि पहार बेइ पइगहि पेलहिँ। बिरिख उचारि फारि मुख मेलहिँ ॥
माँते निमते गरजहिँ बाँधे। निसि दिन रहहिँ महाउत काँधे ॥

धरनी भार न अँगवई पाउँ धरत उठ हालि।
कुरुम टूट फन फाटई तिन्ह हसतिन्ह के चालि ॥ ४५ ॥

पुनि बाँधे रजवार तुरंगा। का बरनउँ जस उन्ह के रंगा ॥
लीले समुँद चाल जग जाने। हाँसुल भवँर किआह बखाने ॥ 170
हरे कुरंग महुअ बहु भाँती। गरर कोकाह बुलाह सो पाँती ॥
तीख तुखार चाँडि अउ बाँके। तरपहिँ तबहिँ नाँचि बिनु हाँके ॥
मन तहँ अगुमन डोलहिँ बागा। देत उसाँस गगन सिर लागा ॥

पावहिँ साँस समुँद पर धावहिँ। बूड न पाउँ पार होइ आवहिँ॥
175 थिर न रहहिँ रिस लोहि चबाहीँ। भाँजहिँ पूँछि सीस उपराहीँ॥
अस तुखार सब देखे जनु मन के रथ-वाह।
नयन पलक पहुँचावहीँ जहँ पहुँचइ कोइ चाह॥ ४६॥

राज-सभा पुनि देख बइठी। इँदर-सभा जनु परि गइ डीठी॥
धनि राजा असि सभा सँवारी। जानउँ फूलि रही फुलवारी॥
मुकुट बाँधि सब बइठे राजा। दर निसान सब जिन्ह के बाजा॥
180 रूपवंत मनि दिपइ लिलाटा। माँथइ छात बइठ सब पाटा॥
माँनउँ कवँल सरो-वर फूले। सभा क रूप देखि मन भूले॥
पान कपूर मेद कसतूरी। सुगँध बास सब रही अपूरी॥
माँझ ऊँच इँदरासन साजा। गँधरब-सेन बइठ तहँ राजा॥
छतर गगन लग ता कर सूर तवइ जस आपु।
सभा कवँल अस बिगसइ माँथइ बड परतापु॥ ४७॥
185 साजा राज-मँदिर कबिलासू। सोनइ कर सब पुहुमि अकासू॥
सात खंड धउराहर साजा। उहइ सँवारि सकइ अस राजा॥
हीरा ईंटि कपूर गिलावा। अउ नग लाइ सरग लेइ लावा॥
जावँत सबइ उरेह उरेहे। भाँति भाँति नग लाग उबेहे॥
भा कटाउ सब अनवन भाँती। चितर होत गा पाँतिन्ह पाँती॥
190 लाग खंभ मनि मानिक जरे। जनु दीआ दिन रइनि धरे॥
देखि धउराहर कर उँजिआरा। छपि गा चाँद सुरुज अउ तारा॥
सुने सात बइकुंठ जस तस साजे खँड सात।
बीहर बीहर भाउ तस खँड खँड ऊपर जात॥ ४८॥
बरनउँ राज-मँदिर रनिवासू। अछरिन्ह भरा जानु कबिलासू॥
सोरह सहस पदुमिनी रानी। एक एक तइँ रूप बखानी॥
195 अति सु-रूप अउ अति सु-कुआँरी। पान फूल के रहहिँ अधारी॥

तिन्ह ऊपर चंपावति रानी। महा सुरूप पाट परधानी॥
पाट बइठि रह किए सिँगारू। सब रानी ओहि करहिँ जोहारू॥
निति नउ रंग सु-रंग मँ सोई। परथम बयस न सरवरि कोई॥
सकल दीप महँ चुनि चुनि आनी। तिन्ह महँ दीपक बारह बानी॥
कुवँरि बतीस-उ लक्खिनी अस सब माँह अनूप।
जावँत सिंघल-दीप महँ सबइ बखानहिँ रूप॥ ४९॥ 200

इति सिंघल-दीप-बरनन खंड॥ २॥

अथ जनम खंड ॥ ३ ॥

चंपावति जो रूप सँवारी। पदुमावति चाहइ अउतारी ॥
भइ चाहइ असि कथा सलोनी। मेटि न जाइ लिखी जसि होनी ॥
सिंघल-दीप भएउ तब नाऊँ। जो अस दिआ बरा तेहि ठाऊँ ॥
प्रथम सो जोति गगन निरमई। पुनि सो पिता माँथइ मनि भई ॥
5 पुनि वह जोति मातु घट आई। तेहि ओदर आदर बहु पाई ॥
जस अउधानु पूर मा तासू। दिन दिन हिअइ होइ परगासू ॥
जस अंचल झीनइ महँ दीआ। तस उँजिआर देखावइ हीआ ॥
सोनइ मँदिर सँवारहीँ अउ चंदन सब लीप।
दिआ जो मनि सिउलोक महँ उपना सिंघल-दीप ॥ ५० ॥

भए दस मास पूरि भइ घरी। पदुमावति कनिआ अउतरी ॥
10 जानउँ सुरुज किरिनि हुत काढ़ी। सुरुज करा घाटि वह बाढ़ी ॥
भा निसि महँ दिन कर परगासू। सब उँजिआर भएउ कबिलासू ॥
इते रूप मूरति परगटी। पूनिउँ ससि सो खीन होइ घटी ॥
घटतहि घटत अमावस भई। दुइ दिन लाज गाडि भुइँ गई ॥
पुनि जो उठी दूइज होइ नई। निहकलंक ससि बिधि निरमई ॥
15 पदुम-गंध बेधा जग बासा। भवँर पतंग भए चहुँ पासा ॥
इते रूप भइ कनिआ जेहि सरि पूज न कोइ।
धनि सो देस रुपवंता जहाँ जनम अस होइ ॥ ५१ ॥

भइ छठि राति छठी सुख मानी। रहसि कूद सउँ रइनि बिहानी॥
भा बिहान पंडित सब आए। काढि पुरान जनम अरथाए॥
ऊतिम घरी जनम भा तासू। चाँद उआ भुइँ दिपा अकासू॥
कनिआ रासि उदय जग किआ। पदुमावती नाउँ भा दिआ॥ 20
सूर परस सउँ भएउ गुरीरा। किरिनि जामि उपना नग हीरा॥
तेहि तइँ अधिक पदारथ करा। रतन जोग उपना निरमरा॥
सिंघल-दीप भएउ अउतारा। जंबू-दीप जाइ जमुआरा॥

रामा आए अजूधिआ लखन बतीस-उ संग।
रावन रूप सौं भूलेहि दीपक जइस पतंग॥ ५२॥

अही जनम-पतरी सो लिखी। देइ असीस बहुरे जोतिखी॥ 25
पाँच बरिस महँ भई सो बारी। दीन्ह पुरान पढइ बइसारी॥
भइ पदुमावति पंडित गुनी। चहूँ खंड के राजन्ह सुनी॥
सिंघल-दीप राज घर बारी। महा सुरूप दई अउतारी॥
एक पदुमिनि अउ पंडित पढी। दहुँ केइ जोग दई असि गढी॥
जा कहँ लिखी लच्छि घर होनी। सो असि पाउ पढी अउ लोनी॥ 30
सपत दीप के बर जौं ओनाहीँ। उतर न पावहिँ फिरि फिरि जाहीँ॥

राजा कहइ गरब सउँ हउँ रे इँदर सिउ-लोक।
को सरि मो सउँ पावई का सउँ करउँ बरोक॥ ५३॥

बारह बरिस माँह भइ रानी। राजइ सुना सँजोग सयानी॥
सात खंड धउराहर तासू। सो पदुमिनि कहँ दीन्ह निवासू॥
अउ दीन्ही सँग सखी सहेली। जो सँग करहिँ रहसि रस केली॥ 35
सबइ नउलि पिअ संग न सोईँ। कवँल पास जनु बिगसीँ कोईँ॥
सुआ एक पदुमावति ठाऊँ। महा-पँडित हीरामनि नाऊँ॥
दई दीन्ह पँखिहि असि जोती। नयन रतन मुख मानिक मोती॥
कंचन बरन सुआ अति लोना। मानउँ मिला सोहागहि सोना॥

रहहिँ एक सँग दुअऊ पढहिँ सासतर बेद।

40 बरम्हा सीस डोलावई सुनत लाग तस भेद ॥ ५४ ॥

भइ उनंत पदुमावति बारी। धुज धवरी सब करी सँवारी ॥

जग बेधा तेहि अंग सो बासा। भवँर आइ लुबुधे चहुँ पासा ॥

बेनी नाग मलय-गिरि पइठी। ससि माँथहि होइ दूइज बइठी ॥

भउँहइँ धनुउ साधि सर फेरी। नयन कुरंगि भूलि जनु हेरी ॥

45 नासिक कीर कवँल मुख सोहा। पदुमिनि रूप देखि जग मोहा ॥

मानिक अधर दसन जनु हीरा। हिअ हुलसइ कुच कनक जँभीरा ॥

केहरि लंक गवँन गज हारे। सुर नर देखि माँथ भुइँ धारे ॥

जग कोइ दिसिटि न आवई अछरी नयन अकास।

जोगि जती सनिआसी तप साधहिँ तेहि आस ॥ ५५ ॥

एक दिवस पदुमावति रानी। हीरामनि तइँ कहा सयानी ॥

50 सुनु हीरामनि कहउँ बुझाई। दिन दिन मदन सतावइ आई ॥

पिता हमार न चालइ बाता। त्रासहि बोलि सकइ नहिँ माता ॥

देस देस के बर मोहि आवहिँ। पिता हमार न आँखि लगावहिँ ॥

जोबन मोर भयउ जस गंगा। देह देह हम लागु अनंगा ॥

हीरामनि तब कहा बुझाई। बिधि कर लिखा मेटि नहिँ जाई ॥

55 अगिआ देउ देखउँ फिरि देसा। तोहि लायक बर मिलइ नरेसा ॥

जउँ लगि मइँ फिरि आऊँ मन चित धरहु निवारि।

सुनत रहा कोइ दुरजन राजहि कहा बिचारि ॥ ५६ ॥

राजइ सुना दिसिटि भइ आना। बुधि जो देइ सँग सुआ सयाना ॥

भयउ रजाएसु मारहु सूआ। सूर सुनाउ चाँद जहँ ऊआ ॥

सतुर सुआ के नाऊ बारी। सुनि धाए जस धाउ मँजारी ॥

60 तब लगि रानी सुआ छपावा। जब लगि आउ मँजारि न पावा ॥

पिता कि आएसु माँथइ मोरे। कहहु जाइ बिनवँइ कर जोरे ॥

पंखि न कोई होइ सुजानू। जानइ भुगुति कि जानु उडानू॥
सुआ जो पढइ पढाए बयना। तेहि कित बुधि जेहि हिअइ न नयना॥
मानिक मोती देखि वह हिए न गिआन करेइ।
दारिउँ दाख जानि कइ तब-हिँ ठोर भरि लेइ॥ ५७॥
बेइ तो फिरे उतर अस पावा। बिनवाँ सुअइ हिअइ डरु खावा॥ 65
रानी तुम्ह जुग जुग सुख आऊँ। हउँ अब बनोवास कहँ जाऊँ॥
मोतिहि जो मलीन होइ करा। पुनि सो पानि कहाँ निरमरा॥
ठाकुर अंत चहइ जेहि मारा। तेहि सेवक कहँ कहाँ उबारा॥
जेहि घर काल मँजारी नाँचा। पंखी नाउँ जीउ नहिँ बाँचा॥
मइँ तुम्ह राज बहुत सुख देखा। जउँ पूँछहु देइ जाइ न लेखा॥ 70
जो हीँछा मन कीन्ह सो जेँवा। यह पछिताउ चलउँ बिनु सेवा॥
मारइ सोई निसोगा डरइ न अपने दोस।
केला केलि करइ का जो भा बेरि परोस॥ ५८॥
रानी उतर दीन्ह कइ मया। जउँ जिउ जाइ रहइ किमि कया॥
हीरामनि तुँ परान परेवा। धोख न लागु करत तोहि सेवा॥
तोहि सेवा बिछुरन नहिँ आखउँ। पीँजर हिअइ घालि कइ राखउँ॥ 75
हउँ मानुस तूँ पंखि पिआरा। धरम पिरीति तहाँ को मारा॥
का पिरीति तन माँह बिलाई। सो पिरीति जिउ साथ जो जाई॥
पिरिति भार लेइ हिअइ न सोचू। ओहि पंथ भल होइ कि पोचू॥
पिरिति पहार भार जो काँधा। तेहि कित छूट लाइ जिउ बाँधा॥
सुआ न रहइ खुरुकि जिउइ अब-हिँ काल सो आउ।
सतुर अहइ जो करिया कब-हुँ सो बोरइ नाउ॥ ५९॥ 80

इति जनम खंड॥ ३॥

रहहिँ एक सँग दुअऊ पढहिँ सासतर बेद ।
40 बरम्हा सीस डोलावई सुनत लाग तस भेद ॥ ५४ ॥

भइ उनंत पदुमावति बारी । धुज धवरी सब करी सँवारी ॥
जग बेधा तेहि अंग सो बासा । भवँर आइ लुबुधे चहुँ पासा ॥
बेनी नाग मलय-गिरि पइठी । ससि माँथहि होइ दूइज बइठी ॥
भउँहइँ धनुख साधि सर फेरी । नयन कुरंगि भूलि जनु हेरी ॥
45 नासिक कीर कवँल मुख सोहा । पदुमिनि रूप देखि जग मोहा
मानिक अधर दसन जनु हीरा । हिअ हुलसइ कुच कनक जँभीरा
केहरि लंक गवँन गज हारे । सुर नर देखि माँथ भुइँ धारे
जग कोइ दिसिटि न आवई अछरी नयन अकास ।
जोगि जती सनिआसी तप साधहिँ तेहि आस ॥ ५५ ॥

एक दिवस पदुमावति रानी । हीरामनि तइँ कहा सयानी
50 सुनु हीरामनि कहउँ बुझाई । दिन दिन मदन सतावइ आई
पिता हमार न चालइ बाता । त्रासहि बोलि सकइ नहिँ माता ॥
देस देस के बर मोहि आवहिँ । पिता हमार न आँखि लगावहिँ ॥
जोबन मोर भअउ जस गंगा । देह देह हम लागु अनंगा ॥
हीरामनि तब कहा बुझाई । बिधि कर लिखा मेटि नहिँ जाई ॥
55 अगिआ देउ देखउँ फिरि देसा । तोहि लायक बर मिलइ नरेसा ॥
जउँ लगि मइँ फिरि आऊँ मन चित धरहु निवारि ।
सुनत रहा कोइ दुरजन राजहि कहा बिचारि ॥ ५६ ॥

राजइ सुना दिसिटि भइ आना । बुधि जो देइ सँग सुआ सयाना ॥
भअउ रजाअसु मारहु सुआ । सूर सुनाउ चाँद जहँ ऊआ ॥
सतुर सुआ के नाऊ बारी । सुनि धाए जस धाउ मँजारी ॥
60 तब लगि रानी सुआ छपावा । जब लगि आउ मँजारि न पावा ॥
पिता कि आअसु माँथइ मोरे । कहहु जाइ बिनवँइ कर जोरे ॥

मिलहिँ रहसि सब चढहिँ हिँडोरी। झूलि लेहिँ सुख बारी भोरी ॥
झूलि लेहु नइहर जब ताईं। फिरि नहिँ झूलन दीही साईं ॥
पुनि सासुर लेइ राखिहि तहाँ। नइहर चाह न पाउबि जहाँ ॥
कित यह धूप कहाँ यह छाहाँ। रहबि सखी बिनु मंदिर माहाँ ॥ 20
गुनि पूँछिहि अउ लाइहि दोखू। कउनु उतर पाउबि कित मोखू ॥
सासु ननद कित भउँहँ सकोरे। रहबि सँकोचि दुअउ कर जोरे ॥
कित यह रहसि जो आउबि करना। ससुरइ अंत जनम दुख भरना ॥

कित नइहर पुनि आउबि कित सासुर यह खेलि।
आपु आपु कहँ होइहि परबि पंखि जस डेलि ॥ ६२ ॥

सरवर तीर पदुमिनी आई। खोपा छोरि केस मुख लाई ॥ 25
ससि मुख अंग मलय-गिरि रानी। नागिनि झाँपि लीन्ह अरघानी ॥
ओनए मेघ परी जग छाहाँ। ससि कइ सरन लीन्ह जनु राहाँ ॥
छपि गइ दिन-हिँ भानु कइ दसा। लेइ निसि नखत चाँद परगसा ॥
भूलि चकोर दिसिटि तहँ लावा। मेघ घटा महँ चंद देखावा ॥
दसन दामिनी कोकिल भाखी। भउँहइँ धनुख गगन लेइ राखी ॥ 30
नयन खँजन दुइ केलि करेहीँ। कुच नारँग मधुकर रस लेहीँ ॥

सरवर रूप बिमोहा हिअइ हिलोर करेइ।
पाउँ छुअइ मकु पावउँ एहि मिस लहरइ देइ ॥ ६३ ॥

धरीँ तीर सब कंचुकि सारी। सरवर महँ पइठीँ सब बारी ॥
पाइ नीर जानउँ सब बेली। हुलसहिँ करहिँ काम कइ केली ॥
करिल केस बिसहर बिस भरे। लहरइ लेहिँ कवँल मुख धरे ॥ 35
उठी कोँपि जस दारिउँ दाखा। भई उनंत पेम कइ साखा ॥
नवल बसंत सँवारइ करी। होइ परगट जानउँ रस भरी ॥
सरवर नहिँ समाइ संसारा। चाँद नहाइ पइठि लेइ तारा ॥
धनि सो नीर ससि तरई ऊईँ। अब कित दिसिटि कवँल अउ कूईँ ॥